उत्कृष्ट
शंका-समाधान

'मानव मन को आन्दोलित करने वाले
लौकिक-पारलोकिक प्रश्नों के सटीक उत्तर'

समाधानकर्ता
स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक
डॉ. राधावल्लभ चौधरी
(एम.बी.बी.एस)

प्रकाशक
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७
दूरभाष : (०२७७०) २८७४१८, २८७५१८
चलभाष : ९४०९४ १५०११, ९४०९४ १५०१७
Email : darshanyog@gmail.com • **Website :** www.darshanyog.org
Youtube : darshanyog2009 • **Facebook / Orkut / Skype :** darshanyog

पुस्तक	:	उत्कृष्ट शंका-समाधान
उपदेशक	:	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक निदेशक, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्रा.- सागपुर, जिला- साबरकांठा, (गुजरात)
संपादन एवं संकलन	:	डॉ. राधावल्लभ चौधरी (एम.बी.बी.एस)
प्रकाशन तिथि	:	पौष 2069 (जनवरी 2013) सृष्टि संवत् 1960853113
संस्करण	:	द्वितीय
लागत मूल्य	:	65/- रुपये

प्राप्तिस्थान

वैदिक संस्थान : ५, प्रथम तल, आदर्श कॉम्प्लेक्स, ओढव, अहमदाबाद -१५

आर्यसमाज मंदिर : महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर,अहमदाबाद.(गुज)

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द : ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

आर्य प्रकाशन : ८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-६

ऋषि उद्यान : आना सागर, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान)

आर्य प्रतिनिधि सभा : १५, हनुमान रोड, दिल्ली

श्रुति न्यास : सी-७३, सै.-१५, राउरकेला (उड़ीसा)

गुरुकुल आश्रम आमसेना : खरियार रोड, जि. नवापारा, उड़ीसा-७६६१०९

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय : खर्राघाट, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म.प्र.) ४६१००१

सर्वोदय साहित्य मंदिर : रेलवे प्लेटफार्म नं. १, अहमदाबाद. (गुजरात)

श्री चंद्रेश आर्य : ३१०/वार्ड नं. ११ बी, साधु वासवाणी सोसा.,गोपालपुरी, गाँधीधाम

वानप्रस्थ साधक आश्रम : आर्यवन, रोजड, पत्रा. सागपुर, जि.साबरकांठा(गुज)

विजय वस्त्र भंडार : निलंगा, ४१३५२१ (महाराष्ट्र)

आर्य समाज मन्दिर : पोरबंदर, राजकोट, भरुच, मोरबी, टंकारा, जूनागढ़, गांधीनगर, आणंद, जामनगर आदि

विषय सूची

संक्षिप्त परिचय

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक दर्शनाचार्य, (योग विशारद)

अध्ययन :

पूज्य स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक से योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त और मीमांसा दर्शन, 11 उपनिषदों; (ईश, केन, कठ आदि) का अध्ययन किया। ऋग्वेद और यजुर्वेद का कुछ अध्ययन किया।

वर्तमान कार्य :

1. **अध्यापन :** दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, साबरकांठा, गुजरात में उपाध्याय के पद पर सन् 1988 से 2011 तक तथा अप्रैल 2011 से निदेशक पद पर कार्यरत है। वहाँ दर्शन, उपनिषद एवं वेदादि शास्त्रों का अध्यापन करते हैं और महर्षि पतंजलि जी के द्वारा बताए गए अष्टांग योग का क्रियात्मक रूप से प्रशिक्षण देते हैं।
2. **वेद प्रचार कार्य :** देश भर में प्रतिवर्ष प्रवचन एवं शिविरों के माध्यम से वैदिक योग विद्या का प्रचार प्रसार करते हैं। कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, व्यापारिक- औद्योगिक- प्रतिष्ठानों, क्लबों, छात्रालयों, न्यायालयों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों उच्च तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों आदि बुद्धिजीवियों में और गुजरात विधानसभा सचिवालय के एवं संसद भवन, दिल्ली सचिवालय के अधिकारियों आदि में विशेष रूप से मानव धर्म का प्रचार करते हैं।
3. **शास्त्रार्थ :** 8 मार्च 2005 को दिल्ली के रामलीला मैदान में शिवरात्रि के अवसर पर शास्त्रार्थ किया। विषय था- "काल अकाल मृत्यु"। 19 नवम्बर 2006 को दिल्ली में आर्य समाज अनारकली में शास्त्रार्थ हुआ। विषय था-"ईश्वर अवतार लेता है या नहीं"। दोनों शास्त्रार्थों में स्वामी विवेकानन्द जी का पक्ष प्रबल रहा।
4. **शंका-समाधान :** अक्टूबर 2006 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में एक अलग विशेष मंच पर 3 दिनों में लगभग 8 घण्टे तक विशेष कार्यक्रम में देश-विदेश के श्रोताओं ने सैकड़ों प्रकार के आध्यात्मिक तथा दार्शनिक प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया। अक्टूबर 2012 के दिल्ली वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में एक अलग मंच पर 4 दिनों में लगभग 11 घण्टे तक देश-विदेश के जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान किया और जिज्ञासुओं को अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करके बहुत सन्तोष हुआ। स्वामी जी आध्यात्मिक शंका समाधान के विशेषज्ञ हैं।

विदेश प्रचार यात्रा : नेपाल और इंग्लैण्ड।

लेखन कार्य : तत्त्वज्ञान, दुःख कारण और निवारण आदि पुस्तिकाएँ, क्रोध को कैसे दूर करें, सत्य बोलने से लाभ, दर्शन-सार आदि पत्रक, विभिन्न पत्रिकाओं में योग और अध्यात्म सम्बन्धी लेख।

जीवन प्रसंग

1. बाल्यकाल से ही दैनिक यज्ञ, सन्ध्या, स्वाध्याय-सत्संग आर्य समाज में जाना, विद्वानों की सेवा करना इत्यादि। प्रातः यज्ञ के बिना नाश्ता नहीं। सायं सन्ध्या के बिना भोजन नहीं। ऐसा नियम घर पर था।
2. बाल्यकाल से ही वेदपाठ-प्रतियोगिता, गीत-प्रतियोगिता, भाषण-प्रतियोगिता आदि में भाग लेना और लगभग सर्वत्र प्रथम/द्वितीय आदि पुरस्कार प्राप्त करना।
3. घर में रहते हुए नागरिक स्कूली शिक्षा होते हुए भी लगभग गुरूकुलीय दिनचर्या बाल्यकाल से ही रही। जैसे प्रातः 5 बजे जागरण, रात्रि 10 बजे शयन इत्यादि।
4. लगभग 10 वर्ष की आयु से लेकर 18-19 वर्ष की आयु तक लगातार 101 बार सम्पूर्ण यजुर्वेद के मन्त्रों से यज्ञ किया। 3-4 बार चारों वेदों का सम्पूर्ण मन्त्र-पाठ किया।

संस्कारी परिवार :

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के परिवार में 7 व्यक्तियों ने गृह त्याग किया। जिनमें से 4 संन्यासी बने और 3 वानप्रस्थी। एक ही परिवार के 7 व्यक्तियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी वैदिक विद्वान बनकर वेद प्रचार किया, यह एक ऐतिहासिक और प्रेरक तथ्य है।

पुरस्कार एवं सम्मान :

(क) सन् 2004 में "डॉ. मुमुक्षु आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति पुरस्कार" परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर प्राप्त हुआ।

(ख) 20 अप्रैल 2008 को "स्वामी सत्यानन्द स्मृति पुरस्कार", बयाना नगर, राजस्थान से प्राप्त।

(ग) 15 जून 2008 को "वैदिक प्रचार प्रसार सम्मान", आर्य समाज भुज, कच्छ, गुजरात से प्राप्त।

(घ) 8 नवम्बर 2008 को ऋषि मेले के अवसर पर "आर्य विद्वान् (दर्शन) सम्मान" परोपकारिणी सभा अजमेर, राजस्थान से प्राप्त।

(ङ) गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से 13 सितम्बर 2009 को गाँधीनगर, गुजरात में "वेद दर्शन प्रचारक संन्यासी" सम्मान प्राप्त। ...

शंका समाधान कर्ता की ओर से स्पष्टीकरण

इस पुस्तक में मुझसे ध्यान-योग शिविरों में श्रोताओं द्वारा पूछी गयी शंकाओं के समाधान हैं। शंकाओं में शब्दावली लगभग यूँ की यूँ रखी गई है, एकाध जगह पर कुछ शब्दों में प्रश्न के स्पष्टीकरण के लिए भले ही कोई शब्द बदला हो। समाधान में भी वही भाषा छापी गयी है, जो शिविर में शंका-समाधान के लिए बोली (रिकार्ड की) गई थी।

जब व्यक्ति सामने बैठा हो तो कुछ उसके स्तर की भाषा बोलनी पड़ती है। जब उसे पुस्तक रूप दिया जाता है, तो कुछ अलग स्थिति होती है। इसलिए बोलने और लिखने में अंतर आ जाता है। फिर भी शंकाओं के जो समाधान किये गए हैं, उनको छापते समय भी हमने भाषा में कहीं कुछ थोड़ा बहुत अंतर किया है, जो कि विषय को समझने की दृष्टि से आवश्यक था।

वैसे तो मैं हिन्दी ही बोलने की प्रेरणा देता हूँ। परन्तु जिन लोगों में मैं काम करता हूँ, वे लोग शुद्ध हिंदी समझते नहीं हैं। इसलिए मैं भी इसी खिचड़ी भाषा का प्रयोग अधिक करता हूँ। हॉं, जहॉं मुझे हिंदी, संस्कृत समझने वाले और बोलने वाले मिलते हैं, वहॉं पर मैं शुद्ध हिंदी, संस्कृत में भी बात करता हूँ, परन्तु यह शंका-समाधान का कार्यक्रम क्योंकि सामान्य लोगों में हुआ था, इसलिए इसकी भाषा भी वही खिचड़ी है।

संपादक श्री (डॉ). राधावल्लभ चौधरी के द्वारा भी विषय को और अधिक सरल तथा जनसामान्य की समझ के अनुरूप बनाने के लिए पुस्तक की भाषा में और प्रस्तुतिकरण में थोड़ा बदलाव किया है।

भाषा अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का एक माध्यम है। यदि श्रोता मेरी भाषा को समझता ही नहीं है, तो मेरा बोलना व्यर्थ समय नष्ट करना है। यह श्रोताओं के साथ अन्याय है। इसलिए श्रोता जिस भाषा को समझता हूँ, मैं वही भाषा बोलने का प्रयास करता हूँ। जब श्रोता मेरी बात समझ कर लाभ उठा लेता है, तो मुझे अपना परिश्रम भी सार्थक लगता है। इसलिए मैंने इन समाधानों में खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया है।

दूसरी बात, मैं एक ईमानदार योगाभ्यासी हूँ, यम-नियमों का पालन श्रद्धापूर्वक करता हूँ, मैं कोई सर्वज्ञ नहीं हूँ,। इसलिए मेरे द्वारा किये गए समाधानों में यदि अल्पज्ञता से कहीं कोई भूल रह गई हो और वह मुझे समझ में आ जाएगी, तो मैं उसे दूर करने का प्रयत्न करूँगा। शेष इन समाधानों में जो बातें मैंने कही या बताई हैं, वे सब वेद आदि शास्त्रों के आधार पर प्रमाणिक हैं। आशा है, बुद्धिमान लोग इन समाधानों से लाभ उठाएंगे और दुःखों से छूट कर सुख की प्राप्ति करने का प्रयत्न करेंगे।

आपका शुभचिंतक

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

मेरे अपने भाव

करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व जब मैं अपने कहे जाने वाले लोगों की उपेक्षा, तिरस्कार, परिचितों के विश्वासघात और अपनी अज्ञानता, अयोग्यता, विपन्नता और रोगों से पीड़ित होकर दुःख और निराशा के गहरे समुन्दर में गोते लगाता हुआ इनसे पीछा छुड़ाने का असफल प्रयत्न कर रहा था कि तभी प्रभु कृपा से परम कारुणिक आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी का मुझे सहारा मिला। उन्होंने मुझे दर्शन योग महाविद्यालय में ड़ेढ़ माह अपने सान्निध्य में रहने की अनुमति दी। इस दौरान मैं जैसे-जैसे महाविद्यालय के नियमानुसार सुबह चार बजे जागरण, स्नान, व्यायाम, ध्यान, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि नियमित दिनचर्या के अंगो का पालन करता चला गया, दुःखद स्मृति, चिंता, अज्ञानता, अयोग्यता और रोग घटते चले गए तथा सहनशीलता, सुख, शांति, एकाग्रता, बुद्धि, स्मृति, ज्ञान और वैराग्य बढ़ते चले गए, शारीरिक उन्नति भी होती चली गई। इसके बाद तो साल में एक बार एक-दो माह विद्यालय में ही रहने का नियम बना लिया।

मैं सोचता था कि कितना अच्छा होता कि जो लोग यहॉं नहीं आ पाते हैं, उन्हे भी यह लाभ मिलता। उन्हे भी संसार की वास्तविकता का ज्ञान मिल सके ताकि वे भी अपने को दुःखी होने से बचा सकें और मस्ती से अपनी जिन्दगी को जी सकें। मैं पूज्य स्वामी विवेकानंद जी का हमेशा आभारी रहूँगा, जो उन्होंने मेरे द्वारा संपादित शंका समाधान विषयक प्रवचनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की अनुमति दी। श्रद्धालुजन धर्म प्रचार के इस कार्य की गति को तीव्र करने हेतु अपनी सामर्थ्यानुसार विद्यालय को सहयोग कर पुण्य-लाभ अर्जित कर सकते हैं।

पुस्तक निर्माण में सहयोग प्रदान करने वाले सभी लोगों का मैं आभारी हूँ। उत्कृष्ट शंका-समाधान के तीनों भागों को एक ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में कोई त्रुटि हो गई हो तो पाठकगण मुझे अवगत कराने का उपकार करने की कृपा करें, ताकि अगले संस्करण में उसे शुद्ध किया जा सके।

दिनांक 15 जुलाई, 2012

संपादक
डॉ राधावल्लभ चौधरी
मो. 094243 06170
E-mail: cdrradhavallabh@yahoo.in

॥ ओ३म् ॥

उत्कृष्ट शंका-समाधान

1. शंका- 'शंका-समाधान' क्या है, इससे क्या लाभ होते हैं। कृपया इसके नियम बताइए?

समाधान- 'शंका-समाधान' एक आवश्यक कार्यक्रम है। ऋषि कहते हैं कि, जब-जब विद्वानों के समीप जाएं, तब-तब सबके कल्याण के लिए प्रश्नोत्तर अवश्य करें। "जब-जब विद्वानों के समीप जाएं, तब-तब सबके कल्याण के लिए" यह वाक्यांश खास ध्यान देने का है। अपने और सबके हित के लिए प्रश्न पूछें। इससे अपनी शंका का समाधान तो होगा ही, साथ ही दूसरों को भी लाभ मिलेगा। इस दृष्टि से प्रश्नोत्तर कर सकते हैं।

- 'शंका-समाधान' कार्यक्रम के बारे में कुछ बातें भूमिका के रूप में समझें। दरअसल, इसमें दो हिस्से हैं। एक हिस्सा है- शंका पूछना, और दूसरा हिस्सा है- उसका समाधान करना यानि कि उत्तर देना।

सवाल उठता है कि, इसमें से कौन सा हिस्सा सरल है? वस्तुतः शंका पूछना सरल है, जबकि उत्तर देना कठिन। सरल काम आपके हिस्से में है, और कठिन काम मेरे हिस्से में है, क्योंकि उत्तर मुझे देना है।

कोई भी काम अगर नियमपूर्वक किया जाए, तो उसमें बहुत लाभ होता ही है। यदि नियम तोड़कर काम करेंगे, तो उससे लाभ तो होगा नहीं, उलटे नुकसान ही होगा। कार्यक्रम 'शंका-समाधान' आपके लाभ के लिये शुरु किया गया है। अतः स्पष्ट है कि -

यदि 'शंका-समाधान' के नियमों का पालन करेंगे, तो बहुत लाभ होगा। इसके विपरीत, विहित नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो नुकसान होगा।

भगवान की कृपा से, गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है। उसके आधार पर मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूँगा। पर हम दोनों इस बात का ध्यान रखेंगे कि 'शंका-समाधान' के नियमों का पालन हो।

'शंका-समाधान' के मोटे-मोटे नियम बताता हूँ :-

- शंका पूछने वाला व्यक्ति 'जिज्ञासा भाव' से प्रश्न पूछे कि -

"हम तो बस जानना चाहते हैं।" **अपनी समस्या को सुलझाने के लिए प्रश्न होना चाहिए।** उत्तर देने वाला व्यक्ति भी इसी भावना से उत्तर दे कि सामने वाले की शंका दूर करनी है, उसकी समस्या को सुलझाना है। वह किसी और भावना से उत्तर नहीं दे।

आपकी जो समस्या जहाँ अटकी है, उसको सुलझाने के लिए ही उत्तर दिया जाएगा। उत्तर देने वाला भी इसी भावना से उत्तर दे कि मुझे इसकी शंका का समाधान करना है। जो समस्या अटक रही है, उसको सुलझाना है। **उसका मार्ग स्पष्ट करना है, वो कहाँ अटका हुआ है, उसकी वो उलझन दूर करनी है। इस भावना से उत्तर देना चाहिए।**

- पूछने वाला व्यक्ति कभी-कभी अपनी भावनाएं गलत बना लेता है। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि - "मैं ऐसा प्रश्न पूछूँगा, जिसका सामने वाले को उत्तर ही नहीं सूझे।" वे लोग गलत सोचते हैं कि "हम ऐसा कठिन, टेढ़ा-मेढ़ा सवाल पूछेंगे कि सामने वाला जिसका उत्तर ही नहीं दे पाएगा। और जब वो उत्तर नहीं दे पाएगा, तब सब तमाशा देखेंगे। सब लोग उस पर हँसेंगे, तो बड़ा मजा आएगा। "याद रखें कि ऐसी भावना से प्रश्न पूछने से लाभ नहीं होता, बल्कि नुकसान ही होता है। इसलिए ऐसी भावना से प्रश्न पूछना ठीक नहीं है।

- आप भी एक गारंटी दें कि आप प्रश्न 'जिज्ञासा-भाव' से पूछेंगे और मन में कोई गलत उद्देश्य नहीं बनायेंगे।' **दुःख देने के लिए, हार-जीत के लिए, सामने वाले को अपमानित करने के लिए, उसको नीचा और अपने को ऊँचा दिखाने के लिए प्रश्न-उत्तर नहीं करना है।** मैं आपको अपनी ओर से गारंटी देता हूँ कि, आपकी समस्याओं को सुलझाने के लिए ही आप के प्रश्नों के उत्तर दूँगा। किसी को दुःख देना, अपमानित करना आदि एक प्रतिशत भी मेरा उद्देश्य नहीं है।

- कभी-कभी ऐसे प्रश्न भी सामने आ सकते हैं कि पूछने वाले ने एक प्रश्न पूछ लिया और बताने वाले को उत्तर समझ में नहीं आया। वहाँ पर मान-अपमान के कारण उसको झूठ नहीं बोलना चाहिए। उल्टा-पुल्टा कोई भी जवाब दे दें, ऐसा भी नहीं करना चाहिए। **उत्तर नहीं सूझता तो साफ बोल दें - "भई, हमको उत्तर समझ में नहीं आया।"**

पहले से मेरा स्पष्टीकरण सुन लीजिए। उत्तर मालूम है तो बता देंगे, नहीं मालूम तो साफ बोल देंगे कि, नहीं आता। झूठ नहीं बोलेंगे, जानबूझकर धोखा नहीं देंगे, यह गारंटी है। उत्तर आता नहीं है और तोड़मरोड़ करते रहें, ऐसा काम हमें नहीं आता है। ऐसा करना यम-नियम के विरुद्ध है।

- गुरुजी ने मुझे बहुत मजबूत बना दिया है। इसलिए मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता। जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं पता है, मैं तो साफ बोल देता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता। **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने की कोई गारंटी नहीं है।**

जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता तो भविष्य में और पढ़ेंगे, सीखेंगे और कभी उत्तर समझ में आ जाएगा तो फिर आपको बताएंगे। जितना समझ में आएगा, उतना बता देंगे। यह हमारी ओर से गारंटी है। पक्की बात बताएंगे, पूरा जोर लगाएंगे।

हम बुद्धि से, तर्क से, शास्त्रों के आधार पर प्रामाणिक बात बताएंगे, ठीक बताएंगे, धोखा नहीं देंगे, छल नहीं करेंगे, गलत उत्तर नहीं देंगे। हाँ, अनजाने में कोई भूल हो जाए, तो वो एक अलग बात है।

- **अज्ञानतावश कोई भूल हो गई, बाद में समझ में आ गई कि, यह तो गलत बात कह दी, तो उसका सुधार कर उसको ठीक कर देंगे।** हम जानबूझकर गलत बात नहीं कहेंगे।

- योग-शिविर में प्रश्न लिखकर भेंजे तो अच्छा रहेगा। प्रश्न पूछने वाले प्रश्न के नीचे अपना नाम अवश्य लिखें, जिससे कि जरूरत पड़े तो पूछा जा सके कि- "भई, यह प्रश्न तो मुझे समझ में नहीं आया। इसका स्पष्टीकरण दीजिए।"

- हो सकता है कि, आपके विचारों और हमारे विचारों में अंतर हो। कई बातों में विरोध भी हो सकता है, टकराव हो सकता है, लेकिन कोई बात नहीं। आपने अब तक जैसा सुना-सीखा, आप वैसी बात जानते-मानते हैं। हमने जैसा सुना-सीखा, हम वैसा जानते-मानते हैं। परस्पर कुछ विचारों में अंतर हो सकता है। उसकी कोई चिंता नहीं। फिर भी आप प्रेमपूर्वक अपनी शंका पूछें और उतने ही प्रेमपूर्वक उसका उत्तर भी सुनें।

मान लो कि कोई बात आपने 20-30 साल से सुन रखी है, और वो बात आपको ठीक लगती है। और हमने यहाँ उसके विरुद्ध कोई बात बता दी कि, यह बात ठीक नहीं है। अतः आपको हमारी वो बात जचती नहीं है।

आपको बात समझ में नहीं आई तो कोई बात नहीं। उसके दो विकल्प हैं। पहला- या तो अलग से बैठकर कुछ विस्तार से बातचीत कर लेंगे। आगे और बताने का प्रयास करेंगे, प्रमाण देंगे, तर्क देंगे। हो सकता है कि बात कुछ समझ में आ जाए।

- समझाने पर भी समझ में नहीं आया तो झगड़ा नहीं करेंगे। आपकी ओर से भी ऐसी गारंटी मिलनी चाहिए कि आप भी झगड़ा नही

करेंगे, झगड़े के लिए प्रश्न नहीं पूछेंगे। आप केवल जिज्ञासा-भाव से प्रश्न पूछेंगे।

- दूसरा विकल्प है – जो बात समझ में नहीं आई, उसको साइड में विचाराधीन (पेंडिंग) के रूप में रख दें। आगे उस पर और विचार करते रहेंगे। जरूरी नहीं कि हर एक बात आपको समझ में आ ही जाए। आपने प्रश्न पूछा, हमने उत्तर दिया। हम इस बात की कोई गारंटी नहीं लेते कि आपको हमारी सारी बातें आज ही समझ में आ जाएंगी। ऐसा बिलकुल नहीं होगा।

- कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिनको समझने में समय लगता है। जो बात समझ में न आये, तो कोई बात नहीं। यह न कहें कि, आपका उत्तर गलत है। आपका यह कहना अनुचित है। यह आपका अधिकार नहीं है।

- अगर आप मुझसे यह कहते हैं कि 'आपका उत्तर गलत है', तो इसका मतलब यही हुआ कि सही उत्तर क्या है, वह आप पहले से जानते हैं। और जब आप सही उत्तर जानते हैं, तो फिर प्रश्न पूछा क्यों? मेरी परीक्षा लेने के लिए नहीं आए आप। यह गलत बात है। यदि आप परीक्षा लेने की भावना से प्रश्न पूछेंगे, तो आपको नुकसान हो सकता है। इसलिए परीक्षा लेने के उद्देश्य से कोई प्रश्न न पूछें। अपनी समस्या को सुलझाने के लिए पूछें और इसी भावना से मैं आपको प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

- उत्तर समझ में आया तो बहुत अच्छा, नहीं आया तो चिंतन करें, विचार करें। जो लोग कुछ स्वाध्याय करते हैं, शास्त्रों को पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं, कुछ पृष्ठभूमि बनी हुई है, उनको हमारी बात जल्दी समझ में आएगी।

जो स्वाध्याय नहीं करते, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, दर्शन, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते, तो उनको बात समझने में देर लगेगी। उनका बैकग्राउण्ड नहीं है। अगर आपने पहले से कुछ स्वाध्याय किया है, आपका कुछ पूर्वचिन्तन है, तो हो सकता है कि बात आज ही आज आपको समझ में आ जाए। अगर स्वाध्याय कम है तो हो सकता है कि आज समझ में नहीं आए।

- आज आप उस बात को सुनें, उस पर विचार करें, लेकिन फिर भी समझ में नहीं आए। हो सकता है कि एक हफ्ते में समझ में आ जाए। समझने में अधिक समय भी लग सकता है। दो हफ्ते, पन्द्रह दिन, एक माह, दो माह, छह माह भी लग सकते हैं। कोई-कोई बात ज्यादा कठिन

होती है कि, वो छह महीने में भी समझ में नहीं आती। ऐसी कठिन-कठिन बातें भी होती हैं, जिनको समझने में कई-कई वर्ष लग जाते हैं। कुछ बातें दिमाग में कई वर्षों के बाद बैठती हैं।

- बात समझ में नहीं आयी, तो कोई चिंता की बात नहीं है। झगड़ा नहीं करना, यह नहीं कहना कि आपका उत्तर गलत है। यह कहना ठीक है कि – "आपने उत्तर दिया, मगर वो हमारी समझ में नहीं आया। इस पर हम और सोचेंगे, विचार करेंगे, पढ़ेंगे, अध्ययन करेंगे। धीरे-धीरे समझ में आएगा।" एक उदाहरण दे रहा हूँ। प्रश्न है – संसार में व्यक्ति को सम्मान की इच्छा करनी चाहिए या अपमान की इच्छा करनी चाहिए? प्रायः सबका उत्तर यही होगा कि सम्मान की इच्छा करनी चाहिए। यह उत्तर गलत है। सही उत्तर है- अपमान की इच्छा (आध्यात्मिक व्यक्ति को) करनी चाहिए। दरअसल, यह बात आपकी समझ में आज तो नहीं बैठेगी। इसको दिमाग में बैठाने के लिए कई साल चाहिए। कई साल तपस्या करनी पड़ेगी, तब यह बात समझ में आएगी कि अपमान की इच्छा करनी चाहिए। यह मेरे अपने घर की बात नहीं है। यह महर्षि मनु जी की बात है। मनुस्मृति में कहा है –

> सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव ।
> अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा ॥

"ब्राह्मण, योगाभ्यासी सम्मान से ऐसे डरता रहे, जैसे व्यक्ति विष से डरता है। जैसे जहर से डर लगता है, ऐसे ही व्यक्तिको सम्मान से डरना चाहिये। अपमान की इच्छा ऐसे करनी चाहिए, जैसे व्यक्ति अमृत की इच्छा करता है।" यह बात समझने में बड़ी कठिन है।

- ऐसे ही और भी बहुत सी बातें होंगी जो आपको आज समझ में न आएं, तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है। वो बातें सच्ची हैं, प्रमाणिक हैं। धीरे-धीरे समझ में आएंगी। कुछ सरल बातें होती हैं, कुछ कठिन बातें होती हैं। सरल बातें जल्दी समझ में आ जाती हैं, कठिन बातों को समझने में समय लगता है। यही सिद्धांत है।

- 'शंका-समाधान' का एक नियम यह है कि प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति शंका के रूप में अपनी बात को रखे कि – "यह बात हमारी समझ में नहीं आयी। कृपया हमको समझाइए।" इस तरह से बात नहीं रखे कि – "मैं ऐसा-ऐसा मानता हूँ।" इसका मतलब यह कि आपने तो अपने पक्ष की स्थापना कर दी, यह तो 'शंका-समाधान' नहीं रहा। इसका नाम है – 'शास्त्रार्थ'।

● जब आप अपने पक्ष की स्थापना करते हैं कि "मैं ऐसा मानता हूँ", तो फिर यह शास्त्रार्थ हो गया। आप ऐसा मानते हो और मैं ऐसा मानता हूँ, तो फिर दोनों के विचारों में टक्कर है। यहाँ टक्कर नहीं करनी है।

● अगर किसी को टक्कर करने का शौक है, तो अलग से बैठकर करेंगे। मैं टकराने के लिए भी तैयार हूँ, डरता नहीं हूँ। पर इस समय टकराने का काम नहीं है। इस समय तो 'शंका-समाधान' का काम है। इसी उद्देश्य से हम इस कार्यक्रम को चलाएंगे। इस प्रकार इन नियमों का पालन करें। आपको बहुत लाभ होगा।

2. शंका- क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है। माँ की गोद में भी नहीं?

समाधान- संसार में कहीं भी सुरक्षा नहीं है। पूरी सुरक्षा केवल 'मोक्ष'

में है। तीन प्रकार से हम पर आपत्ति आ सकती है :-

(1) एक तो अपनी मूर्खता से, अपनी गलतियों से हम नुकसान उठा लेते हैं। सड़क पर चलते हुए दुकान या बोर्ड देख रहे हैं। जिससे सड़क पर पड़े ऊँचे-नीचे पत्थरों पर हमने ध्यान नहीं दिया और पाँव टकराया, धड़ाम से गिरे, हाथ-पाँव टूट गए। किसकी गलती हुई? हमारी गलती।

सड़क पर केले का छिलका आ गया, हमने उस पर ध्यान नहीं दिया, पाँव पड़ गया, धड़ाम से गिर गए और कमर की हड्डी टूट गई। किसकी गलती से? हमारी गलती से।

इस तरह एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ हम अपनी गलतियों से नुकसान उठाते हैं। अपनी मूर्खता से जो गलतियाँ की, उससे जो दुःख मिला, उसका नाम है- 'आध्यात्मिक दुःख'।

(2) दूसरा क्षेत्र ऐसा है, जहाँ दूसरे प्राणियों की गलतियों से हमको दुःख भोगना पड़ता है। आपका प्रश्न है कि क्या माँ की गोद में हमको नुकसान हो सकता है? उत्तर है कि - माँ ने कोई गलत दवा या खान-पान में कुछ गलत चीज खा ली तो बच्चे को नुकसान हो गया। पिता की भूल से हमको नुकसान हो सकता है। किसी पड़ोस के बच्चे ने क्रिकेट में बॉलिंग की और उसकी बॉल हमारी आँख में लगी। पूरी आँख बेकार हो गई। उसकी गलती से जीवन भर के लिए हमको नुकसान हो सकता है। सड़क पर चल रहे हैं। पीछे से चुपचाप एक कुत्ता आया और उसने टाँग काट ली। स्कूटर वाला, कार वाला हमको ठोंक दे। हम ऐसे किसी गलत गुरु-आचार्य के पल्ले पड़ गए और उसने हमको उल्टे पाठ पढ़ा दिए और मोक्ष के मार्ग से कहीं और भटका दिया। उससे भी हमको नुकसान हो सकता है।

दूसरे व्यक्तियों के कारण से, साँप से, बिच्छुओं से, शेर आदि दूसरे प्राणियों के कारण से, इनके अन्याय से भी हमको दुःख भोगने पड़ सकते हैं। इसे 'आधिभौतिक-दुःख' कहते हैं।

(3) तीसरी हैं - प्राकृतिक दुर्घटनाएं। जैसे - भूकंप, तूफान, बाढ़, आँधी, चक्रवात, सूखा, अकाल, वर्षा आदि। मकान गिर जाते हैं, बाढ़ का पानी भर जाता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको नुकसान उठाना पड़ता है तो दुःख होता है। इसी का नाम है- 'आधिदैविक-दुःख'।

उपरोक्त तीन प्रकार के दुःख हैं। आपने जन्म ले लिया तो कहीं भी सुरक्षा नहीं। कोई न कोई दुःख आएगा ही।

महर्षि कपिल कहते हैं - 'कुत्रापि कोऽपि सुखी न'। सीधा सरल वाक्य है। धरती पर कहीं भी कोई भी व्यक्ति पूरा सुखी नहीं है। एक सुख मिलता है, उसके पीछे चार दुःख आते हैं तो सौदा मँहगा पड़ता है। चार रुपए की खरीदी और बिक्री मूल्य एक रुपया। ये कैसा घाटे वाला व्यापार है। सुख मिलता है - 'एक' और दुःख मिलते हैं - 'चार'। इसलिए चारों ओर दुःख ही दुःख है। धरती पर कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से सारे दुःखी हैं। दर्शन शास्त्र मानसिक सुख-दुःख की बात कर रहा है। मन में अविद्या, क्रोध, लोभ आदि के कारण सारे लोग दुःखी हैं। इस दृष्टि से दुःख अधिक है।

'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि दयानंद जी ने लिखा है कि संसार में

सुख अधिक है। उनका तात्पर्य है कि - शारीरिक स्तर पर, बाह्य स्तर पर सुख अधिक है। महर्षि दयानंद बाह्य स्तर की बात कर रहे हैं और

महर्षि कपिल, महर्षि पतञ्जलि आन्तरिक स्तर की बात कह रहे हैं। दोनों ठीक कह रहे हैं। बाह्य स्तर पर तो सुख अधिक है और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। शारीरिक और मानसिक दोनों दुःख की तुलना करते हैं तो मानसिक ज्यादा हानिकारक है। और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। इसलिए कपिल मुनि जी कहते हैं - तीन दुःखों से छूटो।

यह मनुष्य का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। पूरी सुरक्षा केवल मोक्ष में है। इसलिए फटाफट मोक्ष में सरक जाओ।

3. शंका- सृष्टि (जगत्) में सभी जीव, परमात्मा के लिए संतानवत् हैं तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है-दयालुता या न्यायकारिता? कई जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों?

☯ **समाधान-** प्रश्नकर्ता ने पूछा है कि इससे ईश्वर अपनी दयालुता दिखाना चाहता है या न्यायकारिता। इसका अर्थ कहीं न्यायकारिता हो सकता है और कहीं यह भी हो सकता है कि भगवान ने पहले ही कह रखा था कि मैं सृष्टि बनाऊँगा और इसमें दुर्घटनाएं होंगी। आपका काम है, दुर्घटना से बच के चलना।

एक इंजीनियर ने कार बनाकर उससे सम्बन्धित पूरा विवरण बुकलेट में छापकर खरीददार को दे दिया। खरीददार को बता दिया गया कि पहले बुकलेट पढ़नी है और इसको समझ के फिर कार का इस्तेमाल करना है।

बुकलेट में पहले से ही यह सूचना दे रखी है कि जब कार का इंजन स्टार्ट होगा तो इंजन में गर्मी बढ़ेगी। और जब गर्मी बढ़ेगी तो उसके

रेडिएटर में कूलेन्ट डालकर रखना, उसका इंजन ठंडा रखना और मीटर पर देखते रहना कि कितना तापमान है? पेट्रोल इंजन में अगर सौ डिग्री से ऊपर तापमान गया, तो इंजन में आग लगेगी।

कार चलाने वाला व्यक्ति कूलेंट तो डाले नहीं, रेडिएटर को चेक करे नहीं, मीटर देखे नहीं कि तापमान कितना बढ़ रहा है, इस अवस्था में अगर कार में आग लगती है, तो इसमें किसका दोष है? यह ड्राइवर और कस्टमर का दोष है। कार बनाने वाले इंजीनियर का दोष तो नहीं है।

इसी प्रकार से भगवान ने जब यह सृष्टि बनाई, तो उसने कहा- इस सृष्टि के अंदर भूकंप, तूफान, आँधी, सुनामी, टोरनेडो जैसी कई प्राकृतिक विपदाएं आने की सम्भावना है। आपका काम है - सावधानी से चलते रहना । पता लगाना हमारा काम है कि कहाँ तूफान आ सकता है, कहाँ भूकंप आने वाला है, कहाँ बाढ़ की स्थिति बन सकती है, फिर उससे बच के रहना। अगर हम ध्यान न दें तो किसकी गलती, हमारी या ईश्वर की? हमारी गलती। इसलिए ईश्वर पर दोष नहीं आता है।

हमारा काम है, दुर्घटनाओं से बचना। जब हम सड़क पर चलते हैं तो मोटर गाड़ी से बचकर चलते हैं। ऐसे ही संसार में रहते हैं तो प्राकृतिक दुर्घटनाओं से बचकर चलना भी हमारा ही काम है।

भूकंप के लिए भी पता लगाओ, यह कब आएगा। उसके लिए साइंटिस्ट लोग लगे हैं, रिसर्च कर रहे हैं। दो-चार साल में, पाँच साल में, बीस साल में वो सफल हो जाएंगे। पहले पता लग जाएगा कि कहाँ भूकंप आने वाला है और कितनी तीव्रता से आएगा। चौबीस घंटे पहले भूकंप का पता लग गया तो ठीक है, अपनी जान बचा के भाग जाएंगे। सोए हुए हैं और रात को एक बजे भूकंप आएगा, तो मरेंगे ही। यदि पहले पता लग जाए कि रात को एक बजे भूकंप आएगा तो लोग बाहर भाग जाएंगे या मकान से बाहर सोएंगे, मकान में नहीं सोएंगे।

इस प्रकार से अपनी रक्षा करना हमारा काम है। भगवान ने इसीलिए तो बुद्धि दी है कि सावधानी से चलो। इसीलिए तो कहा जाता है कि- मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो संसार मे पड़े-पड़े दुःख मत भोगो। समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में चले जाओ।

4. शंका- क्या ज्यादा धन जजकमाना ठीक नहीं है? यदि सच्चाई के साथ यम-नियमों के पालन का पूर्ण प्रयास करते हुए कमाया जाए तो?

☯ **समाधान-** अच्छे कामों के लिए धन तो आवश्यक है ही। धन कमाना चाहिए परन्तु यम-नियम का पालन करते हुए, ठीक ईमानदारी से, मेहनत से धन कमाएं, तो कमा सकते हैं, अधिक भी कमा सकते हैं।

● यहाँ नियम यह है कि - **"जितना अधिक कमाएंगे, उतनी आपकी समस्या बढ़ती जाएगी। आवश्यकता से अधिक धन जमा करेंगे, तो फिर वो आपके लिए बाधक बनेगा।"**

पहले तो समय अधिक खर्च करना पड़ेगा।वह खुद भी खाएगा नहीं, जमा करता रहेगा। जमा किया हुआ धन, फिर उसके लिए कार्य में बाधक होता है। वो 'परिग्रह' का पालन करता रहता है। फिर उसकी सुरक्षा की चिन्ता हो जाएगी। और बस उसकी सुरक्षा में ही लगा रहेगा। कोई धन छीन ले जाए तो दुःखी, कोई चुरा ले जाए तो दुःखी, कोई उधार ले जाए और लौटाए नहीं तो दुःखी। इसलिए एक विद्वान ने बड़ा अच्छा श्लोक लिखा है - **"अर्थानाम् अर्जने दुःखम् अर्जितानां च रक्षणे।आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थान् कष्टसंश्रयान्।।"** अर्थात् पैसा कमाने में दुःख उठाओ, और कमाए हुए धन की रक्षा करने में दुःख उठाओ। इस तरह **इन्कम हो तो दुःख, और खर्चा हो तो और दुःख।** जो धन हमेशा कष्ट ही देता है, ऐसे धन को धिक्कार है। ऐसा धन क्या करेंगे ? इसलिए हमारे अनुभव से लाभ उठाईए, अधिक मत कमाइए।

हम पूरे देश में घूमते हैं। बड़े-बड़े सेठ लोगों के यहाँ जाते हैं। **हमारा अनुभव यह है कि - 'जो जितना बड़ा सेठ है, वो उतना अधिक दुःखी है'।** जितने बड़े सेठ से मैं मिला, उसे उतना ज्यादा दुःखी पाया। ऐसा मुझे उन सेठों ने अपनी जुबानी कहा है। एक सेठ ने मुझे कहा - "मेरा नाम तो है शाँतिलाल, लेकिन मुझे आधा घंटा भी शाँति नहीं है।" इसलिए ज्यादा धन मत कमाइए, आवश्यकतानुसार कमाइए।

● **आपको जितनी आवश्यकता है, उतना धन कमाइए।** और फिर जितनी समय-शक्ति शेष बचती है, उसको आध्यात्मिक-क्षेत्र में लगाइए।

● धन के पीछे मत पड़िए। वो तो बुद्धि खराब ही करता है। **जब व्यक्ति के पास पैसे नहीं होते तो उसका विचार कुछ और होता है, और जब जेब में पैसे आ जाते हैं, तो उसका विचार बदल जाता है। कैसे?**

एक व्यक्ति के पास बहुत पैसे नहीं थे, तो वो सोचता था - "हे भगवान! मेरी दस लाख रुपये की लॉटरी लग जाए तो पाँच लाख दान कर दूँगा।" यह विचार तब तक है, जब तक दस लाख रुपये जेब में नहीं आ जाते हैं। और कल्पना कीजिए, दस लाख रुपये की लॉटरी लग गई। अब वो पाँच लाख रुपये भी दान में नहीं देना चाहेगा, अब उसका विचार बदल जाएगा। लॉटरी से कमाना तो वैसे ही गलत है, क्योंकि वो तो जुआ है।

मेहनत से, ईमानदारी से भी जब व्यक्ति धन कमा लेता है, तो भी उसकी बुद्धि बदल जाती है, विचार बदल जाते हैं। **पहले सोचता था-जितना कमाऊंगा, उसमें से बीस, पच्चीस, पचास प्रतिशत दान कर दूँगा। लेकिन जब प्रैक्टिकली जेब में पैसे आ जाते हैं, तो विचार बदल जाता है। अब दान का प्रतिशत दो-तीन पर आकर फिसल जाता है।** वो भी मुश्किल से, घिस-घिस करके दान देगा। इसलिए इतना धन न कमाएं कि उपयोग ही न कर सकें।

5. शंका- धन का उपयोग 'सत्कर्म' में भी तो कर सकते हैं?

☯ **समाधान-** उत्तर है :-

● 'सत्कर्म' में धन का उपयोग कर सकते हैं, परन्तु प्रायः करते नहीं हैं। कारण कि, **पैसा हाथ में आते ही बुद्धि घूम जाती है।**

● वेद यह कहता है कि **खूब धन कमाओ। पर केवल परीक्षण करने के लिए कि क्या धन से हमारी तृप्ति हो सकती है?** धन ऐश्वर्य के स्वामी बनो। ऐसा इसलिए कहा गया है कि, मनुष्यों को यह शंका है कि धन मिला तो सब कुछ मिला। खूब धन कमाने से मनुष्य सुखी हो जाता है।

● धन का परीक्षण करना चाहिए। यदि बहुत सा धन कमा कर भी वह सुख नहीं मिला, जिसकी कल्पना की थी तो परिणाम निकालो कि भोगों में सुख नहीं है। भोग-विलास में सुख एक है और दुःख चार हैं। इस परिणाम के आधार पर मोक्ष की तैयारी करो।

● **जब तक व्यक्ति इस संसार में भोगों से दुःख प्राप्त नहीं कर लेगा, भोगों से थक नहीं जाएगा, तब तक मोक्ष की इच्छा उत्पन्न नहीं हो सकती। वेद में धन कमाने और वैराग्य प्राप्त करने, इन दोनों**

बातों की चर्चा है। पर लोग वैराग्य को भूल जाते हैं, और धन कमाने की बात याद रखते हैं। जब भोग-विलास में सुख नहीं मिलता, तब वेद की दूसरी बात भी तो याद करनी चाहिए। और राजा भर्तृहरि व राजा जनक के समान वैराग्य ले लेना चाहिए। नचिकेता ने अपने पिछले जन्म में भोग किया, पर उसे सुख नहीं मिला। और जब वह अपने नचिकेता वाले जन्म में आया, तो गुरुजी ने उसे बहुत से प्रलोभन दिए, पर उसने कहा कि 'धन से कोई तृप्त नहीं हुआ।' अतः सार यह है कि -

- धन उतना कमाओ, जिससे मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इससे अधिक कमाएंगे, तो मोह-माया में फँस जाएंगे।

विदेशियों ने खूब धन कमाया, भोग किया, और अंत में सुख नहीं मिला तो वे भारत की ओर आने लगे कि यहाँ ऋषि-मुनि रहते हैं, और इन्हीं से सुख प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु भारत के लोग विदेशियों की नकल कर रहे हैं। वे भोग-विलास, धन-ऐश्वर्य के पीछे भाग रहे हैं, पर उनके परिणाम को नहीं देख रहे हैं। इस प्रकार, जिन लोगों ने संसार का सुख भोग लिया है, वे वैराग्य को प्राप्त करेंगे, और जिन्होंने अभी कुछ भोगा नहीं है, वे पहले भोगेंगे और फिर वैराग्य और मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

6. शंकाः- ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, फिर ईश्वर ने ऐसा संसार क्यों नहीं बनाया, जिसमें केवल सुख ही होता, दुःख बिल्कुल न होता। भौतिक सुखों में दुःख क्यों है?

☯ **समाधान-** संसार में सुख के साथ-साथ दुःख भी भोगने को मिलता है। कारण कि :-

(1) पहली बात- इसका एक कारण प्रकृति है। प्रकृति जो बेसिक मैटीरियल (मूल द्रव्य) है। प्रकृति से इस संसार को बनाया गया है।

- प्रकृति के तीन पार्टिकल्स (अवयव-कण) हैं। एक है- सत्त्व गुण, दूसरा है- रजो गुण, तीसरा है- तमोगुण।

- संसार को बनाने वाले इन तीनों कणों की प्रापर्टीज (विशेषताएँ) अलग-अलग हैं। सत्त्व गुण का स्वभाव हैं- सुख देना। रजो गुण का स्वभाव है- दुःख देना। तमो गुण का स्वभाव है- मूर्खता, पागलपन पैदा करना।

अब देखिए, प्रकृति रूपी मैटीरियल ही ऐसा है कि उसमें सुख भी

मिलता है, दुःख भी मिलता है, और मूर्खता भी पैदा होती है। तो भगवान इसमें क्या करे? तीनों पार्टीकल्स में अच्छा केवल एक ही है-सत्त्व गुण। रजो गुण बेकार है, क्योंकि वो दुःख देता है। और तमोगुण भी बेकार है, क्योंकि वो पागलपन और नशा पैदा करता है। तीन कण में से दो तो खराब हैं, केवल एक ही अच्छा है। तैंतीस प्रतिशत मैटीरियल अच्छा है, षड़सठ प्रतिशत तो बेकार है। इसलिए उसमें दुःख तो मिलना ही मिलना है।

- भगवान ने तो इतनी अच्छी कलाकारी दिखाई कि, इस बेकार मैटीरियल से इतनी बढ़िया दुनिया बना दी। ऐसी प्यारी दुनिया, कि अधिकांश लोग इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं हैं।

- भगवान ने इतनी अच्छी दुनिया बना कर कह दियाः- तुमको संसार का सुख लेना हो, ले लो। जब तक इसमें दुःख समझ में नहीं आए, तब तक संसार का सुख भोगो। और जब समझ में आ जाए, तब इसको छोड़ देना। फिर मेरे पास आ जाना। मैं मोक्ष का बढ़िया आनन्द दे दूँगा।

(2) दूसरी बात- भौतिक सुखों में दुःख होने का दूसरा कारण हमारे कर्म हैं। हमने 'सकाम कर्म' किये। 'सकाम कर्म' अर्थात् सांसारिक सुख को लक्ष्य बनाकर अच्छे और बुरे कर्म किये। जब हमारे कर्म ही अच्छे और बुरे हैं, तो फल भी दोनों (सुख व दुःख) ही होंगे। केवल सुख फल कैसे हो सकता है? इसलिये संसार में सुख के साथ-साथ दुःख भी मिलता है। यदि केवल सुख चाहिए, तो मोक्ष में जाओ। वहाँ केवल सुख मिलता है।

(3) तीसरी बात- यदि आप कहते हैं कि, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वो ऐसा संसार बना दे, जिसमें दुःख हो ही न। इसका उत्तर यह है कि, सर्वशक्तिमान का अर्थ यह नहीं कि ईश्वर नियम के विरुद्ध, जो चाहे सो कर दे। यदि आप ऐसा मानते हैं कि ईश्वर जो चाहे, सो कर सकता है, तो मैं आपसे पूछता हूँ कि, क्या ईश्वर बिना प्रकृति (उपादान कारण) के भी जगत् को बना सकता है? नहीं।

जैसे ईश्वर बिना प्रकृति के जगत् को नहीं बना सकता। ऐसे ही वह प्रकृति की विशेषताओं (सत्त्व-सुख देना, रज-दुःख देना, तम-नशा उत्पन्न करना आदि) को भी नहीं बदल सकता। इसीलिए वह दुःख-रहित, केवल सुखमय, संसार को नहीं बना सकता।

7. शंका- सृष्टि का प्रयोजन जीवात्माओं को लौकिक सुख और मोक्ष का सुख देने के लिए है। किन्तु योग-दर्शन में कहा गया है कि लौकिक सुख, दुःख से मिश्रित है, इसलिए लौकिक सुख हेय-कोटि में आते हैं। इस विरोधाभास को सुलझाने का प्रयत्न करें?

☯ **समाधान-** शास्त्रों में यह बात कही गई है कि यह संसार, लौकिक सुख के लिए और मोक्ष प्राप्ति के प्रयोजन से बनाया गया है। योगदर्शन में भी कहा गया है कि जो संसार का सुख है, वो शुद्ध सुख नहीं है। उस सुख में दुःख मिश्रित है। इसमें थोड़ा विरोधाभास जैसा प्रतीत होता है। यह प्रश्न है।

इसका समाधान यह है कि :-

● एक व्यक्ति को भूख लगी थी, उसने अच्छी तरह से पेट भरकर खाना खा लिया। दूसरा व्यक्ति अभी भूखा बैठा है, उसने अभी खाया नहीं। दोनों के सामने फिर से भोजन रख दिया जाए, तो दोनों व्यक्ति अलग-अलग व्यवहार करेंगे। जो खा चुका है, वो तो नहीं खाएगा। और जिसने नहीं खाया, वो खाएगा। वही भोजन, एक जैसा भोजन, एक व्यक्ति खा रहा है, लेकिन दूसरा नहीं खा रहा है। क्योंकि उन दोनों की आवश्यकता अलग-अलग है। जो खा चुका, उसका पेट भर गया, इसलिए अब वो नहीं खाएगा। और जिसको भूख लगी है, खाना नहीं खाया है, वो खाएगा।

● इसी प्रकार से संसार में जो सुख है, वो दुःख से मिश्रित है, यह बात बिल्कुल सत्य है। लेकिन हर व्यक्ति का ज्ञान-विज्ञान का जो स्तर है, वो अलग-अलग है। एक व्यक्ति कहता है कि मुझे सुख चाहिए। इन्द्रियों से जो भोगा जाता है, मुझे तो वो लौकिक सुख चाहिए। जैसे - खाना, पीना, घूमना, फिरना आदि, इन चीजों से जो सुख मिलता है, वो मुझे चाहिए। इससे स्पष्ट है कि उस व्यक्ति को संसार में केवल सुख ही दिखता है, दुःख दिखता ही नहीं।

● यद्यपि संसार में सुख भी है और दुःख भी है। लेकिन उसको केवल सुख ही दिखता है। अब यहाँ पर दृष्टिकोण का अन्तर है। जिसको संसार में सुख ही दिखता है, वो उस सुख को भोगेगा। लेकिन जिसका ज्ञान बदल गया, उसको दुःख भी दिखने लगा तो वो

भोगना बंद कर देगा। अब वो बोलेगा-"ये नहीं चाहिए। मुझे शुद्ध सुख चाहिए, लेकिन यह सुख, दुःख मिश्रित है। यह बात मुझे समझ में आ गई।" इसलिए अब वो उस सुख को नहीं भोगेगा।

● जब लोग कहते हैं कि हमको प्राकृतिक सुख चाहिए, तो भगवान तो फिर देने वाला है न। वो तो यह सृष्टि बनाकर देगा ही। शास्त्रों में यह जो कहा है कि लौकिक-सुख को भोगने के लिए यह संसार बनाया गया। उसका अर्थ है कि हम सांसारिक सुख-दुःख को भोगने वाले, सकाम कर्म कर चुके हैं। उन कर्मों का फल भोगना है। आपने ऐसे कर्म किए। इसलिए उसका सुख भोगो, खाओ-पियो, घूमो-फिरो, सभी इन्द्रियों का सुख लो। पिछले कर्मों का फल भोगने के लिए यह संसार बनाया। जैसा कर्म है, वैसा ही तो ईश्वर फल देगा। अच्छे कर्म किए, उसका सुख ले लो, बुरे कर्म किए उसका दुःख भी भोगो। और खाते-पीते, भोगते आपको जब इस सांसारिक सुख में दुःख दिखने लगे, तब इसको छोड़ देना और मोक्ष को पकड़ लेना। तब आपका लक्ष्य बदल जाएगा। पर जब तक आपको इसमें दुःख नहीं दिखता, तब तक यही आपका लक्ष्य है।

● एक उदाहरण से बात और समझ में आएगी। मान लीजिए, अहमदाबाद में एक बहुत अच्छी हलवाई की दुकान से कोई बढ़िया सी मिठाई लेकर आए और प्लेट में आपके सामने रख दे। और बोले-"लो जी खाओ, बड़ी स्वादिष्ट, सुगंधित और देखने में भी सुन्दर मिठाई है।" आपको उसमें सुख दिखता है, इसलिए अब आपने उसे खाने के लिए हाथ बढ़ाया। इतने में उस दुकान का एक नौकर, दौड़ता-दौड़ता आया, और कहने लगा- "ठहरो....ठहरो....ठहरो, जो मिठाई आप हमारी दुकान से लाए हैं, उस मिठाई में थोड़ा सा पोटैशियम सायनाइड मिला है।" अब बताइए, क्या आप मिठाई खा सकते हैं ? अब आपको क्या दिखने लग गया? अब आपको उसमें दुःख दिखने लग गया। पहले सुख दिख रहा था। प्लेट वही, मिठाई वही, केवल आपका विचार, आपका ज्ञान और आपकी दृष्टि बदल गई। पहले जो चीज आपको सुखदायी दिख रही थी, वही अब दुःखदायी दिख रही है। इसलिए अब आप उसे नहीं भोगेंगे। अब आप कहेंगे-यह दुःख मिश्रित मिठाई है, हमें यह नहीं चाहिए। हो सकता है-आप तीव्रता से, उग्रता से उसका नाम ही बदल दें। आप कहेंगे- यह मिठाई नहीं है, यह तो जहर है। कोई कहेगा-"भाई ! जहर क्यों बोलते हो, यह मिठाई ही तो है।" आप कहेंगे-" श.. श.... मिठाई का नाम मत लो, इसे जहर बोलो।"जहर बोलेंगे, तो इच्छा नहीं होगी, छूट जाएगी। मिठाई बोलेंगे, तो खाने की इच्छा होगी। फिर खाएँगे, फिर परिणाम भोगना पड़ेगा।

इस प्रकार जिस व्यक्ति की मिठाई खाने की इच्छा है, उसको पता नहीं

कि इसमें पोटैशियम सायनाइड है, वो खाएगा और मरेगा। जिसको मालूम है कि इसमें पोटैशियम सायनाइड है, न खाएगा, न मरेगा, वह तो बच जाएगा।

संसार के, इन्द्रियों से भोगे जाने वाले, जो भी लौकिक-सुख हैं, ये दुःख से मिश्रित हैं। इनमें दुःख का जहर मिला हुआ है। जिसको वो जहर नहीं दिखता है, जिसको वो दुःख नहीं दिखता है, वो इनका सुख भोगेगा, और इसलिए उसे दुःख भी भोगना होगा। वो मिठाई भी खाएगा और जहर भी खाएगा।

● भगवान ने तो उनको सावधान कर रखा है-"ऐ भाई, इनके पीछे मत पड़ो, नहीं तो तुम्हें परिणाम में दुःख भोगना पड़ेगा। एक सुख के बदले चार-चार दुःख भोगने पड़ेंगे।" अब लोग न पढ़ें, न सुनें, इस बात पर ध्यान न दें, तो भगवान क्या करे? उसका दोष थोड़े ही है, यह लोगों का दोष है।

● **यदि वेद-शास्त्रों को पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि उसमें मोक्ष को ही अंतिम लक्ष्य बताया है,** कोई और लक्ष्य बताया ही नहीं।अब मोक्ष वाले निष्काम कर्म करो, तो ईश्वर आपको मोक्ष का सुख भी देंगे।

● लोगों की योग्यता कम है, **लोगों के ज्ञान का स्तर कम है, इसलिए उन्हें ऐसा लगता है कि खाने-पीने में बड़ा सुख है। इसलिए वे खाने-पीने के, भौतिक-सुखों के पीछे पड़ जाते हैं।**

एक और उदाहरण देता हूँ। जब हम छोटे बच्चे थे, तो हमारी खुशी के लिए हमारे माता-पिता क्या करते थे? छोटे-छोटे खिलौने लाकर देते थे। बच्चा उन खिलौनों से खेल सकता है, और उसमें खुश हो सकता है। मगर बीस साल के जवान को वही गुड्डे-गुड़िया, वगैरह दो, तो क्या वह उनसे खेलेगा, और उनसे खुश हो जाएगा? नहीं होगा न। वे खिलौने छोटे बच्चे को प्रसन्न कर सकते हैं, युवा और वृद्ध व्यक्ति को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी तरह से जो ज्ञान की दृष्टि से छोटा है, ज्ञान का स्तर जिसमें कम है, जिसको संसार में सुख दिखता है, उसको तो ये संसार की वस्तुएँ सुख दे सकती हैं, बिल्कुल खिलौनों की तरह।जिसका ज्ञान विकसित हो गया, वो बीस साल का युवा व्यक्ति जैसा हो गया। खाना-पीना, घूमना-फिरना, गपशप मारना, संगीत सुनना, इसमें जो सुख ले रहे हैं, यह तो बच्चों की खिलौनों वाली बात है। हमारी उम्र बीस साल की हो गई, अब ये खिलौने हमको खुश नहीं कर सकते। अब तो हमको भगवान का सुख चाहिए। यह दुनिया का सुख तो बच्चों के खिलौने वाला जैसा सुख है। यह हमको नहीं चाहिए। हमको ये चीजें ज्यादा आकर्षित नहीं कर सकतीं। यह ज्ञान के स्तर की बात है।

४०

● जिस-जिस व्यक्ति को यह समझ में आ जाता है कि ये संसार के सुख, खिलौनों की तरह हैं। अब मुझे ये नहीं चाहिए, मैं इनसे थक गया हूँ, मुझे तो ईश्वर का मोक्ष वाला सुख चाहिए। वह सांसारिक सुख भोगना छोड़ देता है। जब सांसारिक सुख छोड़ देता है, तो उसके साथ जो दुःख मिल रहा था, वह भी छूट जाता है। फिर वो ईश्वर को पकड़ता है और समाधि लगाकर मोक्ष में चला जाता है।

● इस तरह **ईश्वर ने पिछले कर्मों का फल भुगवाने के लिए और मोक्ष की प्राप्ति कराने के लिए यह सृष्टि बनाई।**

८. शंका- इन्द्रियों के सुखों को भोगकर उनसे तृप्त होना अच्छा है, दमन (सप्रेशन) करना अच्छा नहीं, ओशो, फ्रायड ने ऐसी बातें कही हैं। क्या सही है?

☯ **समाधान-** हम कहते हैं-ओशो, फ्रायड आदि का यह कहना गलत है। कारण किः-

● सारी दुनिया भोगों को भोग कर इन्द्रियों को तृप्त करने की कोशिश कर रही है। **सारी दुनिया यही तो कर रही है। और क्या कर रही है? सुखों को भोगकर क्या किसी की तृप्ति हो गयी?** क्या सुख से मन पूरी तरह भर गया?

● क्या यह हमारा पहला जन्म है? पहले कितने ही जन्म हो गए। पिछले जन्मों में हमनें और क्या किया? यही तो किया, खाया-पिया और भोगा। **पिछले सैकड़ों-हजारों जन्मों से आज तक तो तृप्ति हुई नहीं।** आगे और दो सौ, पाँच सौ, हजार जन्म ले लो, और भोग लो भोगों को, क्या तृप्ति हो जायेगी? नहीं, इसलिए ओशो, फ्रायड की बात गलत है।

● ऋषि लोग और मैं भी यही कहता हूँ कि- "भोगों को भोगने

४१

से इच्छाएं शांत नहीं होतीं बल्कि और भड़कती हैं, और बढ़ती जाती हैं।" इसलिए इन लोगों का कहना ठीक नहीं है। यह ऋषियों के, वेद के, मनोविज्ञान के विरुद्ध है। हाँ, अगर कोई परीक्षा की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो अलग बात है।

- सुख-भोग के दो दृष्टिकोण हैं। एक होता है - अधाधुंध सुख भोगना, यह मानकर भोगना कि विषयों में बहुत सुख है। इस भावना से कभी भी तृप्ति (संतुष्टि) नहीं होगी। और दूसरी पद्धति यह है कि विषयों का परीक्षण किया जाए कि- इनमें कितना सुख है। इन विषयों के भोग से तृप्ति होती है कि नहीं होती ?

अगर कोई परीक्षण करने की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो उसको 'सत्य' समझ में आ जाएगा। तब तो सुख का भोग करने में लाभ है। दो बार, पाँच बार, पच्चीस बार, पचास बार परीक्षण करेगा और उसको समझ में आ जाएगा कि इनमें तृप्ति नहीं है। इस दृष्टि से तो भोग कर सकते हैं। इसमें आपत्ति नहीं है, पर जैसा कि यहाँ प्रश्न में लिखा है, वो पद्धति ठीक नहीं है। ऐसे कोई तृप्ति नहीं होती।

9. शंका- मानव तो उन्नति कर रहा है, अत: भगवान को तो खुश होना चाहिए?

☯ **समाधान**- आज जो हो रहा है, वह उन्नति नहीं है।

- उन्नति की सही परिभाषा है कि:- "जिससे लौकिक सुख बढ़े, दुःख-तनाव कम हो, और 'मोक्ष' की सिद्धि (प्राप्ति) हो, वह उन्नति है।"

आधिभौतिक उन्नति वहाँ तक करो, जहाँ तक मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिले। जो ऐश्वर्य और मोह-माया आपको मोक्ष तक जाने से ही रोक दे, वह उन्नति नहीं है। ऐश्वर्य उतना ही बढ़ना चाहिए, जितना कि वह मोक्ष प्राप्ति में सहायक हो, और संसार को सुचारु रूप से चला सकने में समर्थ हो।

- आज तो ऐसा देखने में नहीं आ रहा। आज तो सम्पत्ति से लोगों का सुख नहीं बढ़ रहा। दुःख-तनाव, असंतोष, अशांति एवं अपराध ही बढ़ रहे हैं।
- यह स्थिति मोक्ष-प्राप्ति में भी सहायक नहीं है। इसलिए आज की स्थिति को हम 'उन्नति' नहीं कह सकते।
- स्वामी दयानंद जी ने कहा है कि-"जब ऐश्वर्य मात्रा से

अधिक बढ़ता है, तो मनुष्य में प्रमाद और आलस्य आदि दोष उत्पन्न होते हैं।" महाभारत युद्ध का कारण भी यही था। उस समय शक्ति और ऐश्वर्य अधिक बढ़ गया था। इसलिए युद्ध हुआ। महाभारत युद्ध का परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं। अतः अधाधुंध धन बढ़ाते जाना उन्नति नहीं है।

10. शंका- संसार की घटनाओं से हमें कैसे और क्या सीखना चाहिए? क्या संसार में प्राप्त होने वाले सुख-दुःख को हमें याद रखना चाहिए या भूल जाना चाहिए?

☯ **समाधान**- सीखने वाला व्यक्ति हर घटना से सीखता है, फिर चाहे वह सुखदायक हो या दुःखदायक। इसलिए सुख को याद भी रखो और भूल भी जाओ। इसी प्रकार दुःख को याद भी रखो और भूल भी जाओ। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने हमें दुःख दिया, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि इसने हमारा नुकसान किया है। अत: भविष्य में इससे सावधान रहा जाए। यदि इस दृष्टि से याद रखें, तो ठीक है। पर यह सोचकर याद नहीं रखना चाहिए कि वह बड़ा खराब है, यदि मौका मिला, तो मैं इससे बदला जरूर लूँगा। इस प्रकार के दुःख को याद नहीं रखना चाहिए। इससे द्वेष पैदा होता है। इसलिए इसे भूल जाना ही बेहतर है।

इसी प्रकार यदि हम संसार की वस्तुओं को यह सोचकर भोगेंगे कि इसमें बड़ा सुख है और यह हमें बार-बार प्राप्त होना चाहिए, तो

ऐसा करना गलत है। इस प्रकार सोचने पर हमें राग हो जाएगा और हम माया के जंजाल में फँस जायेंगे। इसलिए सुख को इस रूप में याद रखो कि हमने पदार्थों का उपभोग किया और स्वस्थ जीवन जिया। इसी का नाम सामान्य सुख है।

जीवन में केवल सामान्य सुख याद रखना चाहिए, बस। बाकी जो इंद्रिय-सुख है, उसे भूल जाना ही बेहतर है। ऐसा करने पर ही 'वैराग्य' होगा और 'मोक्ष' की ओर बढ़ना संभव हो पाएगा।

11. शंका- 'आत्मा' और 'शरीर' बुरी तरह एक दूसरे में घुले-मिले हैं, इनको अलग-अलग कैसे मानें?

☯ **समाधान**- 'आत्मा' और 'शरीर' को अलग-अलग मानने के लिए कुछ मोटी-मोटी बातें अवश्य समझ लें। सवाल उठता है कि - क्या 'आत्मा' उत्पन्न होती है? जवाब है, नहीं। क्या 'शरीर' उत्पन्न होता है? जवाब है, हाँ। 'आत्मा' न उत्पन्न होती है, न मरती है, जबकि 'शरीर' उत्पन्न होता है और मरता है। इसी तरह आत्मा बूढ़ी नहीं होती, शरीर बूढ़ा होता है। आत्मा आँख से दिखती नहीं, शरीर आँख से दिखता है। इस तरह हो गए न, दोनों अलग-अलग।

४४

12. शंका- एक वाक्य लिखा है कि मेरी आत्मा नहीं मानती। यह वाक्य कौन कहता है-मेरी आत्मा नहीं मानती। इसका मतलब, मैं आत्मा से भी अलग चीज हूँ?

☯ **समाधान**- प्रश्न यह उठाया है कि यह वाक्य बोला जाता है कि- 'मेरी आत्मा नहीं मानती'। इससे फिर शंका पैदा होती है कि 'मैं' आत्मा से भी कोई और अलग चीज हो गया। जैसे 'मेरा पेन', 'मेरा शरीर', ऐसे ही 'मेरी आत्मा'। इसका समाधान हैः-

- मेरे हाथ में पेन है। मैं एक वाक्य बोलता हूँ- यह मेरा पेन है। इस वाक्य का अर्थ क्या हुआ? क्या मैं पेन हूँ या पेन से अलग हूँ?

उत्तर है - मैं पेन से अलग हूँ।
दूसरा वाक्य है - यह मेरी घड़ी है। तो क्या मैं घड़ी हूँ?
उत्तर है - नहीं, घड़ी से अलग हूँ।
ऐसे ही तीसरा वाक्य - यह मेरा हाथ है। क्या मैं हाथ हूँ?
उत्तर है - नहीं, हाथ से अलग हूँ।
ऐसे ही चौथा वाक्य - यह मेरा शरीर है। क्या मैं शरीर हूँ?
उत्तर है - नहीं, मैं शरीर से अलग हूँ।
तो मैं कौन हूँ? उत्तर है - मैं आत्मा हूँ।

जैसे यह मेरा पेन है, यह मेरी घड़ी है, यह मेरा हाथ है, यह मेरा शरीर है। चारों जगह पर 'मेरा' शब्द है। यह मेरा पेन है, मैं पेन से अलग हूँ। यह मेरी घड़ी है, मैं घड़ी से अलग हूँ। यह मेरा हाथ है, मैं हाथ से अलग हूँ। यह मेरा शरीर है, मैं शरीर से अलग हूँ, तो फिर शरीर से अलग रहने वाला मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हँ

- यह जो शंका लिखी है कि मेरी आत्मा नहीं मानती, यह वाक्य गौण है। यह मुख्य कथन नहीं है। अपने भाषा साहित्य में दो प्रकार के वाक्य होते हैं:- एक मुख्य और दूसरे गौण।

मुख्य-वाक्य का मतलब होता है, जिस वाक्य का सीधा-सीधा अर्थ लिया जाए और गौण-वाक्य का मतलब होता है, जिसका सीधा अर्थ नहीं ले सकते। थोड़ा अर्थ बदल करके लेना पड़ता है। उसमें सीधा-सीधा अर्थ लागू नहीं होता। कैसे? 'जैसे लोहे के चने चबाना' एक मुहावरा है। अब लोहे के चने मुँह में डाल के दाँत के नीचे चबाएंगे क्या? फिर भी यह एक प्रचलित मुहावरा है।

४५

● कुछ बोलचाल में ऐसे अजीब-अजीब शब्द होते हैं लेकिन उन वाक्यों का सीधा-सीधा अर्थ नहीं लिया जाता। आप लोग मुम्बई से रेलगाड़ी में बैठे। जब रेलगाड़ी अहमदाबाद पहुँच गई तो आपने क्या बोला, चलो-चलो उतरो, अहमदाबाद आ गया। क्या अहमदाबाद आ गया ? अरे ! अहमदाबाद तो वहीं खड़ा है। अहमदाबाद कहाँ चलकर आया ? आप चल करके आए हैं अहमदाबाद। दिल्ली वाले भी अहमदाबाद आए, मुम्बई वाले भी अहमदाबाद आए। और बोलते क्या हैं कि उतरो-उतरो अहमदाबाद आ गया। वो तो वहीं खड़ा है, मुम्बई वहीं खड़ी है, दिल्ली वहीं खड़ी है। कोई भी नहीं चलता, पर हम बोलने में ऐसा बोलते हैं। इसको बोलते हैं, गौण-भाषा। यह मुख्य भाषा नहीं है। यहाँ पर अर्थ बदलना पड़ता है। जब आपको ऑटो-रिक्शा पकड़ना होता है, तो क्या आवाज लगाते हैं, ओ रिक्शा! रिक्शा सुनता है क्या ? फिर किसको बोल रहे हैं, ओ रिक्शा! जैसे यह गौण कथन है। यह वास्तविक नहीं है, वैसे ही – 'मेरी आत्मा नहीं मानती' यह भी गौण कथन है। मुख्य कथन है कि – "मैं" मानने को तैयार नहीं हूँ। मैं ही तो 'आत्मा' हूँ, मेरी आत्मा मुझसे कोई अलग वस्तु नहीं है।

13. शंका- जो हम चाहते हैं, वो हमें नहीं मिलता। जो हम नहीं चाहते, वो हमें मिल जाता है। ऐसा क्यों?

☯ **समाधान**- ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि:-

● हम सर्वशक्तिमान नहीं हैं। हम इस दुनिया के मालिक या राजा नहीं हैं। सब लोग हमारे आधीन नहीं हैं कि, जैसा हम चाहें, वैसा ही हो।

● हम जो नहीं चाहते, दूसरे वो हमको जबरदस्ती थोप देते हैं। हमें वो काम करना पड़ता है। क्या करें, हम सबसे बड़े नहीं हैं। हम कईयों के नीचे रहते हैं। छोटे हैं तो हमें बड़ों की बात माननी पड़ती है, चाहे हमारी इच्छा हो, या न हो।

● दूसरे लोग स्वतंत्र हैं, इसलिए वो अपनी इच्छा से काम करते हैं। हम जैसा चाहते हैं, वे वैसा सहयोग नहीं देते। यह उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा है। इसलिए सब कुछ हमारी इच्छानुसार नहीं हो सकता।

14. शंका- सारे लोग हमारी इच्छा के अनुकूल व्यवहार करें, क्या ऐसा हो सकता है?

☯ **समाधान**- बिल्कुल नहीं हो सकता। कारण यह कि:-

● हर एक का अपना-अपना स्वभाव है। हर एक की बुद्धि दूसरे से अलग है, हर एक के विचार अलग हैं, हर एक के संस्कार अलग हैं, हर एक का ज्ञान-विज्ञान का स्तर अलग है। किन्हीं दो व्यक्तियों के विचार सौ प्रतिशत एक समान नहीं हो सकते। उसमें दो, पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस प्रतिशत यानि कुछ न कुछ तो अंतर रहेगा ही।

● जिस व्यक्ति के साथ व्यवहार कर रहें हैं, उसके सिर में आपका दिमाग नहीं रखा है, तो फिर वह आपकी इच्छा के अनुकूल व्यवहार कैसे करेगा? उसके सिर में उसका दिमाग है, इसलिए वह अपने ढंग से व्यवहार करेगा और आपके सिर में आपका दिमाग है, इसलिए आप अपने ढंग में व्यवहार करेंगे। जिसकी जितनी बुद्धि, उतना ही तो वह करेगा।

हाँ, अगर ऐसा हो जाए कि आपकी बुद्धि उसके दिमाग में फिट कर दी जाए, फिर तो जैसा आप चाहते हैं, वैसा व्यवहार भी वह कर ले, लेकिन ऐसा तो हो नहीं सकता।

● चाहे कहीं भी रहो, परस्पर विचार-भिन्नता और लड़ाई, झगड़े होंगे। घर-परिवार में राग-द्वेष, अविद्या अधिक होती है। इसलिए वहाँ कलह ज्यादा होती है।

एक आदमी घर में पंद्रह साल रहा। जहाँ-जहाँ विचारों में टकराव आता था, वहाँ-वहाँ उसने समझाने का प्रयास किया लेकिन वो नहीं सुधरे। घर में रहते हुए समाधान नहीं मिल पाया, इसलिए उसने थोड़ा विचार किया कि – "भई, घर की स्थिति देखते-देखते चार-पाँच साल हो गए। वो अब सुधरने वाली नहीं है। इसलिए वहाँ रहने से कोई लाभ नहीं है। चलो, आश्रम चलतें हैं।" आश्रम में वे नई स्थिति में आ गए, नए लोगों के बीच में आ गए। जब वे इनसे थोड़ा व्यवहार करेंगे, तब झगड़ा तो यहाँ भी होगा, लेकिन थोड़ा कम होगा। क्योंकि साथ रहने वाले मनुष्य ही तो हैं। और सारे मनुष्यों में कुछ न कुछ अविद्या तो अभी बची हुई है। अगर अविद्या खत्म हो गई होती तो इस संसार में जन्म नहीं होता, तब मोक्ष ही मिल जाता। अविद्या अभी बाकी है तो राग-द्वेष भी होंगे ही।

अब चाहे दूसरे नगर में जाओ, गॉव में जाओ, जंगल में जाओ, जिन

भी व्यक्तियों के साथ रहेंगे,उनमें थोड़ा बहुत राग-द्वेष तो रहेगा ही। अंतर इतना ही है कि घर में ज्यादा अविद्या, राग-द्वेष और झगड़ा था, आश्रम में रहने आ गए तो थोड़े कम अविद्या, राग-द्वेष वाले लोग मिले तो, कम झगड़ा हुआ। यहाँ भी सहन (एडजस्टमेंट) नहीं किया तो लोगों से फिर तनातनी हो गई। फिर गुस्सा आ गया, तो फिर झगड़ा हो गया। अब व्यक्ति वहाँ भी नहीं टिकेगा।

- बहुत लोगों को घूमते देखा है हमने। घर छोड़े बीस साल हो गए, फिर भी बेचारे आज तक एक जगह से दूसरी जगह भटक ही रहें हैं। एक भी स्थाई जगह नहीं बन पाई। वे कहीं खाने की व्यवस्था में, कहीं प्रबंध व्यवस्था में, कहीं आचार्य के विषय में, कहीं शोर-शराबे के विषय में दोष निकालते रहते हैं। वे कहीं भी 'एडजस्ट' नहीं कर पाते। इसलिए मानकर के चलो, व्यक्ति कोई भी हो, वह कुछ न कुछ ऊँचा-नीचा व्यवहार तो करेगा ही।

- दो व्यक्तियों के विचारों में कुछ न कुछ अंतर रहेगा ही। दरअसल, उसी को तो हमें समझना है। जो इस अंतर को समझ लेता है, सहन कर लेता है, समायोजन कर लेता है, वो सुखी है, सफल है, उसका जीवन ठीक है, वह आगे बढ़ जाएगा, उन्नति कर पाएगा। इस अन्तर को हमें सहन करना है, वस्तुतः यही 'तपस्या' है। इससे व्यक्ति की गाड़ी चल निकलेगी।

- प्रतिकूलता को सहन नहीं करना टकराव पैदा करेगा, झगड़े पैदा करेगा। तो वो उन्हीं झगड़ों में उलझकर के रह जाएगा, आगे नहीं बढ़ पाएगा। उसकी वास्तविक उन्नति नहीं हो पाएगी। अपने विचारों का समायोजन (एडजस्टमेंट) झगड़े से बचने का मुख्य उपाय है।

४८

15. शंका- रेलगाड़ी और शरीर दोनों ही जड़ पदार्थ हैं। शरीर की वृद्धि होती है, गाड़ी की वृद्धि क्यों नहीं होती?

☯ **समाधान-** शरीर की वृद्धि इसलिए होती है कि उसमें चेतन'आत्मा' है। गाड़ी में आत्मा है नहीं, इसलिए उसकी वृद्धि नहीं होती है। गाड़ी में इंजन होता है, वह भी जड़ (चेतना-रहित) है।

16. शंका- स्व-स्वामी संबंध अर्थात् मैं इस शरीर का स्वामी नहीं हूँ। यह बात तो ठीक है, लेकिन मैं अपने मन का स्वामी हूँ, यह कैसे ठीक हुआ?

☯ **समाधान-** 'स्वामी' का एक अर्थ होता है 'मालिक'। जबकि दूसरा अर्थ होता है - कार्य में उपयोग करने का अधिकारी, यानि 'ऑपरेटर'। एक होता है - 'ऑपरेटिंग राइट' और दूसरा होता है - 'ओनिंग राइट'। मालिक होना और कार्य का अधिकारी होना, इन दोनों में बहुत अंतर है।

- एक सेठ ने बहुत बड़ी फैक्ट्री लगाई। बहुत सारे श्रमिक, कुछ क्लर्क, कुछ ऑफीसर और एक मैनेजर रख लिया। उस प्रबंधक (मैनेजर) को यह अधिकार दे दिया कि यह तुम्हारा ऑफिस है, यह मोटर-गाड़ी है, यह टेलीफोन है, यह स्टेशनरी है, यह फर्नीचर है, तुम इन सबका उपयोग करो। हमारी फैक्ट्री का प्रबंधन करो।

जिस सेठ ने फैक्ट्री लगाई है, वह उसका मालिक है। और जो उसका सहायक है, प्रबन्धक है, वो है उसका 'ऑपरेटिंग मैनेजर'। वो केवल उन वस्तुओं का प्रयोग करने का अधिकारी है।

४९

वास्तव में वो प्रबंधक उनका मालिक नहीं है, लेकिन उसको अधिकार दिया गया है कि वो इन सब चीजों का फैक्ट्री के प्रबंध के लिए प्रयोग कर सकता है। जैसे उन सारी चीजों का असली मालिक तो सेठ है। उसी ने सारा प्रबंध करके, फैक्ट्री सेटअप करके, ऑफिस बनाकर के मैनेजर को दिया। ठीक उसी प्रकार से जब यह कहा जाता है कि 'मैं इस शरीर का मालिक नहीं हूँ' तो इसका अर्थ है कि "मैं सेठ की तरह नहीं हूँ, बल्कि उस मैनेजर की तरह हूँ।"

जब यह कहा जाता है कि "मैं अपने मन रूपी साधन का स्वामी हूँ,' तब भी अर्थ वही है, कि 'मैं आत्मा नामक मैनेजर, मन का प्रयोग करने का अधिकारी हूँ।" तो प्रश्न हुआ - कि फिर सेठ कौन है? उत्तर- ईश्वर। सेठ ने फैक्ट्री लगाकर मैनेजर को प्रबंधन करने के लिए दी। ऐसे ही ईश्वर ने हमें शरीर, मन आदि बनाकर प्रयोग करने के लिए दिए।

जब बाहर का कोई दूसरा आदमी ऑफिस में कुर्सी तोड़ने लगता है, तब मैनेजर कहता है - "ऐ! कुर्सी मत तोड़ना, यह मेरी कुर्सी है।" वो किस अधिकार से ऐसा कह रहा है? वो ऑपरेटिंग मैनेजर है, इसलिए ऑपरेट करने के अधिकार का प्रयोग कर रहा है। वह उपयोग करने का मालिक है, वास्तव में मालिक नहीं है। जैसे मैनेजर उस ऑफिस की वस्तुओं का अपनी इच्छानुसार प्रयोग करता है। इसी प्रकार से यह जीवात्मा आपरेटिंग मैनेजर है। इसलिए वो सब उपयोग करेगा, क्योंकि उसका अधिकार ईश्वर ने जीवात्मा को दिया है। मालिक यानि ईश्वर के अभिप्राय के अनुसार ही, वो इन सब चीजों का प्रयोग करेगा। दोनों वाक्यों का तात्पर्य एक ही है। दोनों परिस्थितियों में स्मरण रहे कि हम इन वस्तुओं का प्रयोग करने के अधिकारी हैं। लेकिन हम इसके असली मालिक (ओनर) नहीं हैं।

५०

17. शंका- आत्मा हाड़-मांस से बने इस शरीर में रहना क्यों पसंद करती है?

☯ **समाधान**- आत्मा को अविद्या के कारण यह हाड़-मांस का शरीर बहुत अच्छा लगता है। जब उसे समझ में आ जाता है तो उसकी अविद्या दूर होनी शुरु हो जाती है। जब अविद्या दूर हो जाती है तो आत्मा इस शरीर में नहीं रहना चाहती। प्रश्न उठता है कि कहाँ जाना चाहती है? उत्तर यह है, फिर 'मोक्ष' में जाना चाहती है।

❖ **संपादकीय टिप्पणी**- अठारहवें कठिन प्रश्न और उसके उत्तर को समग्र रूप से समझने के लिए इस संसार में मौजूद शरीर, दौलत, शोहरत, परिधान और कोठी आदि सब चीजों को विद्या-अविद्या के दृष्टिकोण से देखना पड़ेगा। इन्हें विवेकपूर्वक देखने से यह ज्ञात होगा कि-तकरीबन सब के सब लोग इन शरीर, शोहरत आदि चीजों को हासिल करने के पीछे लगे हुए हैं, और इनके पीछे लगने की वजह से इन व्यक्तियों के पीछे दुःख लगा हुआ है। और एक दुःख नहीं, बल्कि एक के पीछे दूसरा, और दूसरे के पीछे तीसरा दुःख लगा हुआ है। आइए, इसे समझें:-

● पहली बात यह है कि - प्रथम दुःख तो इस 'अनित्य-संसार' के 'अस्थायी' रहने का 'दुःख' है। वस्तुतः यह अपनी हरेक पसंदीदा चीजों के 'बदलने' और 'न रहने का' दुःख है।

इसके बाद इन 'अस्थायी-चीजों' से 'लगातार' सुख न मिलने का 'दुःख' और लगातार सुख लेने के प्रयास में लगे रहने पर उनसे 'ऊबने' का 'दुःख' है।

इस दुःख की वजह यह है कि - सभी सांसारिक वस्तुओं से सुख मिलना थोड़ी देर के बाद बन्द हो जाता है। इसके बाद आगे उस वस्तु के सम्पर्क से व्यक्ति ऊबने लगता है। यह तो 'अनित्यता' की वजह से सांसारिक वस्तुओं से मिलने वाले दुःख की चर्चा हुई।

● दूसरी बात यह है कि- सभी सांसारिक वस्तुओं को कमाने, उन्हें खर्च करने (भोगने), उनकी रक्षा करने और उनकी बढ़ोत्तरी करने का जो काम किया जाता है, वह मेहनत भी कष्टदायक होती है। 'मेहनत' करने से 'कष्ट' मिलता है। मेहनत चाहे शारीरिक हो या मानसिक, सबको कष्ट देती है।इसी तरह सांसारिक वस्तुओं की 'अशुद्धता' के कारण 'दुःख' मिलता है। जैसे - मनुष्य शरीर के पसीने, मल आदि से निकली बदबू आदमी को दुःखी कर देती है।

५१

सुखदायक वस्तुओं का भोग करने से राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक 'क्लेश' पैदा होते हैं। और उनसे फिर हिंसा, झूठ आदि वितर्क पैदा होते हैं। व्यक्ति इन्हें 'हितकर' मानकर ग्रहण करता है।

इन राग, द्वेषादि क्लेशों से और हिंसादि वितर्कों से उसे 'हानि' होती है। उस हानि से उसे इस जीवन में 'दुःख' मिलता है। साथ ही उनसे जाति, आयु और भोग रूपी 'दुःख' भी मिलता है। जाति यानी संसार में 'जन्म' लेने से फिर दोबारा आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक 'दुःख' मिलता है। यह सारे दुःख संसार की, सांसारिक वस्तुओं की 'अशुद्धता'और 'अहितकरता' के कारण से मिलने वाले दुःख हैं।

● तीसरी बात यह है कि - अर्जित किए गए अनित्य और अशुद्ध सांसारिक भोगों में सुख लेने के कारण भोगों में अतृप्ति होती है। इस 'अतृप्ति' से 'दुःख' महसूस होता है। फिर इस अतृप्ति के कारण उस भोग को और ज्यादा मात्रा में भोगने की इच्छा होती है। उस 'बढ़ी हुई इच्छा' की मौजूदगी से भी 'दुःख' प्राप्त होता है, और उस बढ़ी हुई इच्छा की 'पूर्ति न होने से' भी 'दुःख'। यह दुःख 'परिणाम दुःख' कहलाता है। इन सुखदायक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहने पर भी कई बार उनकी प्राप्ति में कोई न कोई बाधा आ जाती है तो इस 'अड़ंगे' के आने पर व्यक्ति 'दुःखी' हो जाता है। यह दुःख 'ताप दुःख' कहलाता है।

चूँकि सारा संसार अनित्य है, इसलिए संसार की कोई भी चीज चाहे वह सजीव हो या निर्जीव या दूसरे से बने हमारे संबंध, चाहे वे पारिवारिक हों या व्यावसायिक, वे सब के सब स्थायी नहीं हैं। इसलिए हमें जो सुख और सुख-साधन पहली बार मिला, वही आगे भी मिले, यह जरूरी नहीं है। 'सुख के दोबारा न मिलने' पर 'दुःख' यानी उससे वंचित होने पर फिर दुःख मिलता है। इस प्रकार के दुःख को 'संस्कार दुःख' कहते हैं।

एक वस्तु के प्रति परस्पर दो तरह के विचार मन में पैदा होने के कारण, 'विरोधी विचारों' की वजह से अर्न्तद्वन्द्व या मतभिन्नता होने से हमें 'दुःख' होता है। इसे 'गुण वृत्ति विरोध' दुःख कहते हैं। यह तीसरे प्रकार की अविद्या यानी 'दुःख को सुख मानने' से प्राप्त होने वाले दुःख हैं।

● चौथी बात यह है कि - जो पत्नी, पुत्र, रिश्तेदार, धन, सम्मान, मकान आदि वस्तुएं हमारी आत्मा का हिस्सा नहीं हैं, उन्हें अपनी आत्मा का हिस्सा मानकर, उनके नष्ट होने पर व्यक्ति अपने आत्मा को 'नष्ट' व 'लुटा-पिटा' मानकर 'दुःखी' होता रहता है। इतना ही नहीं, अपने माने गये इन पुत्र आदि संबंधियों के पुत्र, पौत्रों, और उनके पास में मौजूद धन-सम्पत्ति और मान-प्रतिष्ठा आदि को भी वह अपना मानता है।

जब उनके पुत्र, धन आदि नष्ट होते हैं तो उनके साधनों को अपने साधन मानने वाला वह व्यक्ति 'पराए के लुटने' को अपना लुटना मानकर, 'दुःख' मनाता है। यह चौथी अविद्या यानी 'अनात्मा को आत्मा' मानने के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख है।

● पाँचवी बात यह है किः- जीवात्मा 'अविकारी' यानी 'अपरिणामी' होने से उसकी मूल स्थिति में कभी भी कोई 'बदलाव नहीं' होता है। आत्मा तो दूर से ही सुख व सुखदायक वस्तु को देखता भर है, उसका ज्ञान-मात्र प्राप्त करता रहता है, पर वह उसे अपने अन्दर बिल्कुल भी नहीं लेता है।

इस प्रकार जो भी सुखदायक वस्तु का हम सेवन कर रहे हैं, वह वस्तु तो ज्ञान-इन्द्रिय तक, और उस वस्तु का ज्ञान केवल बुद्धि तक आकर के बाहर ही वहीं पर रुक जायेगा। वहाँ से आत्मा के भीतर जाकर नहीं घुसेगा। आत्मा केवल उसे दूर से देखेगा।

यह जो दूध, घी, मिठाई, फल आदि हम खा रहे हैं। इनका कुछ भी हिस्सा हमारी आत्मा में नहीं जाता है। सुख का कोई साधन या उससे मिलने वाला सुख आत्मा में कुछ भी संग्रह नहीं होता है। अब चाहे एक किलो दूध पी लो या आधा किलो, एक गुलाबजामुन खा लो या फिर दस खा लो, सुन्दर रूप देख लो, पसंदीदा गाना सुन लो, आत्मा में तो कुछ नहीं घुसने वाला। इनको खाने-देखने से आत्मा जरा भी मोटी-ताजी नहीं होगी।

अगर वह सुखद वस्तु या उसका सुख आत्मा से जुड़ जाता तो आत्मा में सदा आनंद बना रहता, पर वह पदार्थ आत्मा में नहीं घुसता, मिश्रित नहीं होता। यही वजह है कि सुखदायक वस्तु से हमारा सम्पर्क खत्म होते ही उससे मिलने वाला आनंद भी समाप्त हो जाता है।

लौकिक सुख-दुःख, हानि-लाभ जो होते हैं, वे हमारी बुद्धि में घटित (चित्रित) हो रहे होते हैं। लेकिन व्यक्ति उसे अपनी आत्मा में घटित मानता है। इसलिए सुखद विषय-वस्तु में मौजूद सारे गुण उसे अपने लगने लगते हैं। इसलिए व्यक्ति जब खीर आदि पदार्थों को खायेगा तो महसूस करेगा कि यह जो खीर वह खा रहा है, वह मेरी आत्मा में प्रविष्ट हो रहा है। वह मानने लगता है कि - इसका सुख मेरे अन्दर यानी मेरी आत्मा के अन्दर पहुँचकर, मेरे अन्दर ही मुझे अनुभव हो रहा है। सोचता है - यह सुख मेरे भीतर ही है। तब वह बुद्धि में सुख आया न बोलकर, आत्मा में सुख आया बोलता है। इस प्रकार वह बुद्धि के विकार को आत्मा का विकार मान कर झूठ-मूठसुखी-दुःखी होकर अपनी सारी जिन्दगी बिता देता है।

मरते समय जब शरीर और सुख-साधन छूट कर आत्मा से अलग हो जाते हैं तो उसे पता चलता है कि "सुख और सुख-साधनों के घटने-बढ़ने से मैं आत्मा छोटा-बड़ा, सुखी-दुःखी नहीं होता हूँ"

इस प्रकार संसार के चक्कर में पड़कर जीवात्मा सब तरफ से लुट-पिटकर लक्कड़ जैसा हतप्रभ खड़ा रह जाता है, भौंचक्का रह जाता है।

इतनी भूमिका को जानकर आइए, अब अगली शंका को समझने की ओर रुख करें :-

18. शंका- मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम-कृति है। वह इस संसार में रहते हुए मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करता है। तब 'यह संसार मूढ़ व्यक्ति के लिए है' यह बात कैसे उचित हुई?

☯ **समाधान**- ये दो अलग-अलग बातें हैं। प्रश्नकर्ता ने इन दोनों को मिला दिया है। इस संसार में मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। यह एक अलग बात है, अलग प्रसंग है।

- गाय, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, सुअर, मक्खी आदि की तुलना में मनुष्य सबसे उत्तम है, यह बात ठीक है। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

- अब दूसरी बात देखिए कि- क्या मनुष्य पूरी तरह से सुखी है ? सारी पृथ्वी पर राज्य करने वाला कोई चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो, चाहे बुश जैसा हो या बिलगेट्स जैसा हो, चाहे कितना ही बलवान हो, कितना ही प्रतिष्ठित हो, क्या वो पूरी तरह सुखी है ? नहीं है न।

- क्या मनुष्य सब दुःखों से छूट गया है? नहीं। जो भी मनुष्य शरीरधारी है, कहीं न कहीं, कुछ न कुछ दुःख उसको भोगने ही पड़ते हैं।

- अब आपको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य होगा कि 'संसार में रहना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।' क्यों नहीं है, समझ लीजिए। क्या दुःख भोगना बुद्धिमत्ता है या सुख भोगना ? सुख भोगना बुद्धिमत्ता है। और क्या संसार में सुख मिलता है ? नहीं। संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जो पूरी तरह सुखी हो। इसका अर्थ हुआ कि - पूर्ण बुद्धिमान तो कोई हुआ ही नहीं। तो बताओ, संसार में रहना बुद्धिमत्ता कैसे हुई!

- संसार में दुःख मिलता है। दुःख भोगना बुद्धिमत्ता नहीं है। इसलिए कहा जाता है कि - "यह संसार मूढ़ व्यक्तियों के लिए है।" क्योंकि जिसने संसार में जन्म लिया, उसने कुछ न कुछ दुःख भोगा ही है। दुःख भोगना ही पड़ेगा। उसने संसार में जन्म लेकर दुःख भोगा है, तो इसका मतलब हुआ कि अभी उसमें कुछ न कुछ मूढ़ता अर्थात कुछ अविद्या बाकी है।

- अविद्या को मारने के लिए ही हमें मनुष्य जन्म मिला है। मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में जाओ। संसार मे पड़े-पड़े दुःख मत भोगो।

जो अपनी अविद्या को यहाँ पर मार डालता है, उखाड़ देता है, फिर वह पूर्ण बुद्धिमान हो जाता है। फिर उसकी मुक्ति हो जाती है। जब मुक्ति हो जाती है, तो वो इस दुःखमय संसार से छूट गया।

- मुक्ति में उसको शाश्वत सुख मिलता है। मनुष्य अविद्या को यहाँ पर उखाड़ कर पूर्ण बुद्धिमान होकर मोक्ष में जाकर पूर्ण सुख भोगता है।

- और जो संसार में बाकी बच गए, वो मूढ़ बार-बार जन्म लेकर दुःख भोगेंगे। इन मूढ़ व्यक्तियों में से जो बुद्धिमान हो जाता है, वह संसार में जन्म नहीं लेना चाहता, मुक्ति में जाता है। इसलिए कहा जाता है कि संसार मूढ़ व्यक्तियों के लिए है, बुद्धिमानों के लिए नहीं है। संसार में जन्म लिया अर्थात् अभी मूढ़ता बाकी है। उसको दूर करना है। यही तो मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।

19. शंका- ईश्वर ने मनुष्यों और अन्य प्राणियों को सुख-दुःख भोगने के लिए जन्म दिया है। ऐसा क्यों है?

☯ **समाधान**- इसका समाधान है किः-

- सुख-दुःख भोगने के लिए मनुष्यों को संसार में ईश्वर ने जन्म दिया है। जन्म हमारे सकाम कर्मों का फल है। हम पर भगवान ने कुछ थोपा नहीं है। पुण्य कर्म किए हैं तो सुख भोगो। पाप कर्म किए हैं तो दुःख भोगो। निष्काम कर्म किए हैं, तो मोक्ष में जाओ।

- भगवान कब कहता है, कि आप संसार में पड़े रहो। भगवान कहता है - निष्काम कर्म करो, मोक्ष में जाओ। क्यों बार-बार संसार में जन्म लो?

- संसार में नहीं, मोक्ष में रहना 'बुद्धिमत्ता' है। क्योंकि मोक्ष में सुख मिलता है। यहाँ संसार में दुःख मिलता है। इसलिए जितना जल्दी हो सके, मोक्ष में जाओ। योगी समाधि में थोड़ी देर के लिए सुख भोगते हैं। लेकिन इस शरीर से पीछा छुड़ाना चाहते हैं, इसलिए बैठकर समाधि लगाते हैं।

- यहाँ एक व्यक्ति ने पूछा - संसार मे रहना अच्छा है। संसार में तो हम काम करते हैं। मोक्ष में निकम्मे बैठकर क्या करेंगे? तो मैंने कहा- मोक्ष में काम नहीं करना है। वहाँ मौज-मस्ती करनी है। इसे निकम्मापन नहीं कह सकते। मोक्ष वास्तव में छुट्टियाँ मनाने का अवसर है।

संसार में रहते हुए, पता नहीं कितने जन्म हो गए। यहाँ रहते-रहते इतने लाखों-करोड़ों साल हो गए। थक गए, बोर हो गए। इसलिए अब इससे मुक्ति चाहिए। इसे इस तरह समझिए-

आप पाँच दिन काम करते हैं, तो दो दिन छुट्टी क्यों मनाते हैं? उसे आप निकम्मापन कहते हैं क्या? विदेशों में फाइव डेज वीक होता है। अपने यहाँ छह दिन काम करते हैं, एक दिन छुट्टी मनाते हैं। तो क्या छुट्टी को निकम्मापन कहेंगे? नहीं, वो निकम्मापन नहीं है। वो फ्रेश होने के लिए जरूरी है। आप सातवें दिन, आठवें दिन काम नहीं कर सकते। छह दिन आदमी काम कर-करके थक जाता है। एक दिन छुट्टी मनाने को चाहिए। मौज मस्ती करो, फ्रेश हो जाओ, आठवें दिन काम करेंगे।

५६

20. शंका- क्या वेदों में नाचने (डांस) का विधान है? अगर है, तो किसलिए?

☯ **समाधान**- वेद में सिर्फ इतना नहीं लिखा कि सारे बस मोक्ष में ही जाओ। वेद में ऐसा नहीं लिखा कि डांस मत करो, धंधा भी मत करो। वेद में सब विहित कर्मों का विधान है अर्थात् नौकरी करो, व्यापार करो, खेती करो, उद्योग-धंधे चलाओ, फैक्ट्रियाँ चलाओ, कारखाने चलाओ, विद्वान बनो, राजा बनो, क्षत्रिय बनो, साइंटिस्ट बनो, पायलट बनो, शादी करो, बच्चे पैदा करो, उनका पालन करो, विद्वान बनाओ, उनको देशभक्त बनाओ, ईमानदार बनाओ और गीत भी गाओ, संगीत बजाओ और डांस भी करो।

- इन सारे कार्यों को करो, पर इनकी सीमाएं हैं और विकल्प (ऑप्शन) हैं। जिसको यहाँ संसार के सारे सुख लेने हों, वो संसार का सुख ले और जिसको मोक्ष में जाना हो, वो मोक्ष में जाए। दोनों के लिए अलग-अलग विकल्प हैं। सबके लिए सारे काम अनिवार्य (कम्पलसरी) नहीं हैं। जिसकी डांस करने की इच्छा नहीं है, उस पर थोपा-थोपी नहीं है कि तुम्हें डांस करना ही पड़ेगा। जिसकी मोक्ष में जाने की रुचि नहीं, तो उसके लिए भी कोई जबरदस्ती नहीं है कि तुमको मोक्ष में जाना ही पड़ेगा। आपकी इच्छा है, मत जाओ।

- डांस करने की भी सीमा है। अपने जो प्राचीन भारतीय नृत्य होते थे - शास्त्रीय नृत्य, उनकी परंपरा अभी भी कुछ बची हुई है। जैसे कि कत्थक कली, भरत नाट्यम। इस तरह के जो शास्त्रीय नृत्य (क्लासिकल डांस) होते हैं, वो अच्छे होते हैं। उनकी तो वेदों में छूट है। ऐसे डांस कर सकते हैं। उसमें सभ्यता भी होती है, शरीर भी अच्छी तरह से ढका होता है, कपड़े भी ठीक पहने होते हैं और अच्छी सुंदर व्यवस्था भी होती है। सब अच्छी तरह से करते हैं, वो अच्छा लगता है।

- जिसकी अभी मोक्ष में रुचि नहीं है, जिसको वैराग्य नहीं हुआ, तो वह अपना टाइमपास कैसे करेगा? उसको अपना टाइमपास करने के लिए मनोरंजन चाहिए। वो अच्छे गीत गाए और अच्छे डांस करे।

- वेस्टर्न वाले डांस नहीं। ऐसे उल्टे-सीधे, वो हड्डियाँ-वड्डियाँ तोड़ के करते हैं, वैसा ब्रेक-डांस नहीं करना। उससे मन, बुद्धि खराब होती है।

- जो अपने भारतीय ढंग के डांस हैं, वे अच्छे हैं। उससे चित्त शुद्ध रहता है। अपने भारतीय संगीत हैं, शास्त्रीय संगीत (क्लासिकल म्यूजिक) हैं। जिनमें राग-भैरवी, बागेश्वरी और इस प्रकार अच्छे-अच्छे

५७

मालकौंस आदि राग हैं, वे सब गा सकते हैं। उनमें भी प्रधानता ईश्वर-भक्ति की रहनी चाहिए। भरतनाट्यम्, कत्थककली और दूसरे कुच्ची-पुड़ी आदि भारतीय डांस होते हैं, इनमें बहुत सारी ईश्वर उपासना की बातें होती हैं। इनमें बहुत सारी धार्मिक लोककथाओं के माध्यम से ईश्वर-भक्ति का मंचन होता हैं अर्थात् भरतनाट्यम् आदि डांस में जो हाव-भाव दिखाए जाते हैं, वे हमें ईश्वर की ओर श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न करते हैं। वे पश्चिमी नृत्यों की तरह काम-वासना को नहीं जगाते। इसलिए जिनकी डांस में रुचि हो, वे ऐसे अच्छे डांस कर सकते हैं।

21. शंका- क्या सोचने में दोष होने से, व्यक्ति सुख से जीना चाहने पर भी, सुख से नहीं जी सकता?

☯ **समाधान**- हाँ, यह बिल्कुल ठीक बात है। अगर सोचने में दोष है, सोचना ठीक से नहीं आता तो आप कितना ही सुख से जीना चाहें, इच्छा आपकी कुछ भी हो, लेकिन सुख से नहीं जी सकते। सोचने को पहले ठीक करना पड़ेगा।

● **जिसका सोचने का ढंग ठीक है, वो सुखी है।** और जिसका सोचने का ढंग गलत है, वो दुःखी है।

● प्रश्न उठता है कि - सोचने का सही ढंग क्या है? उत्तर है- वही तीन शब्द **"कोई बात नहीं"**। आपने 'गीता सार' पढ़ा होगा कि-

"क्या हो गया, उसने तुम्हारा क्या छीन लिया, जो कुछ लिया, यहीं से लिया और जो कुछ दिया, यहीं पर दिया, तुम क्या लाये थे, जो तुम्हारा खो गया, तुम्हारा क्या चला गया, तुम क्यों रोते हो, कुछ नहीं गया, सब भगवान का था और छीन लिया तो भगवान का गया, आपका कुछ नहीं गया।"

● ये ध्यान रहे कि, **यहाँ आध्यात्मिक-भाषा चल रही है। इसको लौकिक-भाषा में फिट मत कर देना, नहीं तो गड़बड़ हो जाएगी।** आप कहेंगे कि पाकिस्तान, कश्मीर को छीन कर ले गया, तो तुम्हारा क्या ले गया। **वहाँ यह नियम नहीं चलेगा।** वो लौकिक-क्षेत्र है। वो क्षेत्र अलग है, आध्यात्मिक क्षेत्र अलग है।

● हम जब संसार में आए, जन्म लिया, हमारे पास कुछ भी नहीं था। खाली हाथ आए थे और जब जाएंगे, तब खाली हाथ जाएंगे। फिर हमारा तो कुछ था ही नहीं। **आध्यात्मिक दृष्टि से तुम्हारा कुछ नहीं था।** और अगर किसी ने थोड़ा बहुत छीन भी लिया, तो भगवान बैठे नहीं हैं क्या? वे देखते नहीं हैं क्या?

● आप संध्या में छह बार तो सुबह बोलते हैं और छह बार शाम को बोलते हैं - "योस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः" अर्थात् जो हमसे द्वेष करते हैं, हम पर अन्याय करते हैं, जो भी गड़बड़ करते हैं, उसको हम ईश्वर के न्याय पर छोड़ देते हैं। **आप अपने साथ किए गए अन्याय को ईश्वर के न्याय पर तभी तो छोड़ेंगे, जब आप बोलेगें-"कोई बात नहीं।"** यह उसी का अनुवाद है। भगवान बैठे हैं, नुकसान या द्वेष को ईश्वर के न्याय पर छोड़ दो। **भगवान अपने आप न्याय करेगा।**

● **हम झगड़े में पड़ेंगे तो हमारा योगाभ्यास बिगड़ जायेगा।** हम ध्यान नहीं कर पायेंगे। हर समय हमारे मन में वही व्यक्ति याद आएगा, जिसने हम पर अन्याय किया, जिसने हमसे द्वेष किया। हम बस उसी को याद करते रहेंगे, और संध्या, ध्यान आदि कुछ नहीं होगा।

सीख यही है कि, ठीक ढंग से सोचेंगे, तो हम सुख से जिएंगे। और गलत ढंग से सोचेंगे, तो हम कितना ही सुख से जीना चाहें, नहीं जी पाएंगे। आओ हम, पहले सोचने का दोष ठीक करें।

22. शंका- सूक्ष्म-इच्छाओं से मुक्त कैसे हुआ जाए। क्या संसार में रहते हुए यह संभव है?

☯ **समाधान-** वस्तुतः चाहे स्थूल इच्छाएँ हों, चाहे सूक्ष्म इच्छाएँ, दोनों के पीछे एक मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) है। पहले यह जानिए कि इच्छा की उत्पत्ति क्यों होती है? उस साइकोलॉजी को पकड़िए, फिर उत्तर समझ में आएगाः-

- दरअसल, जहाँ हमको सुख दिखता है, **जिस वस्तु में हमको सुख प्रतीत होता है, जहाँ हमको सुख मिला है या भविष्य में सुख मिलने की आशा है, वहाँ उस-उस वस्तु को प्राप्त करने की हमारी इच्छा होती है।**

- अगला प्रश्न उठता है कि, **इच्छा से छूटें कैसे? उत्तर है - इससे उल्टा काम करो। जहाँ-जहाँ सुख दिखता है, वहाँ-वहाँ दुःख देखना शुरु करो।** जब दुःख देखना शुरु करेंगे, तो इच्छा स्वतः खत्म हो जाएगी। कैसे? जैसे कि एक व्यक्ति ने सोचा किः-

"बढ़िया आठ लाख की होंडा-सिटी कार खरीदेंगे। एयरकंडीशन कार है, बढ़िया चमकदार है। ठाठ से जाएंगे। लोग भी वाह-वाह करेंगे कि- देखो साहब, इसके पास बढ़िया गाड़ी है। प्रशंसा भी होगी, कार का सुख भी मिलेगा, धूप में, गर्मी में नहीं मरना पड़ेगा, बस में धक्का नहीं खाना पड़ेगा, आराम से जाएंगे।"

कार में सुख देखकर उसने कार खरीद ली। जब कार खरीद ली, तो फिर आया दुःख। क्या दुःख आया?

जब वो हाइवे पर चल रहा था, तो उसको टेंशन हो गई, पीछे से एक ट्रक ड्राइवर बेहिसाब ट्रक चला रहा है, वो कहीं पीछे से कार को ठोंकेगा तो नहीं? उसको हर समय डर लगता है। कोई दांई ओर से ठोंकेगा, कोई बायीं ओर से ठोंकेगा, कोई पीछे से ठोंकेगा, कोई आगे से। क्योंकि इनका कोई भरोसा नहीं, सब आजकल बेहिसाब गाड़ी चलाते हैं।

फिर कार पार्किंग में खड़ी कर दी। और गए शॉपिंग-मॉल में सामान खरीदने। तब यह डर लगता है कि पीछे से कार चोरी न हो जाए। फिर कहीं पार्क के पास खड़ी कर दी। और गार्डन में सैर करने गए, तो तीसरा डर यूँ लगता है कि वो छोटे-छोटे बच्चे आए हैं, वो कार पर लकीर (स्क्रेच) न मार दें। वे इतनी बढ़िया कार की हालत बिगाड़ देंगे।

शरारती बच्चों को समझ तो है नहीं, वे तो अपना खेल समझते हैं।

वे यह थोड़ी जानते हैं कि गाड़ी आठ लाख की है, इसमें लकीर नहीं मारनी चाहिए। जैसे वे दीवार पर लकीर मारते हैं, वैसे कार पर भी मार देंगे।

फिर उसके पड़ोस में एक मित्र के परिवार में, उसके बेटे की शादी थी। एक और टेंशन आ गई। मित्र के घर में शादी है। यह मित्र तीन-चार दिन के लिए कार उधार माँगने आएगा। अब बोलिए, कार में सुख दिख रहा है, कि दुःख दिख रहा है? दुःख दिखाई दिया न। बस ऐसे ही दुःख देखना शुरु करो, तो आपकी कार खरीदने की इच्छा खत्म हो जाएगी। इसलिए अगर आप मिश्रित दुःख-सुख भोगना नहीं चाहते, तो कार की इच्छा छोड़ दो।

- **आपके सामने कुल तीन विकल्प (ऑप्शन) हैं:-**

पहला है - केवल 'सुख' मिलना चाहिए।

दूसरा है - केवल 'दुःख' मिलना चाहिए।

तीसरा है - 'सुख और दुःख' दोनों मिश्रित होने चाहिए।

बताइए, तीन में से कौन सा विकल्प आपको स्वीकार है? पहले वाला, केवल सुख। तो कार में केवल सुख मिलता है क्या? नहीं मिलता न। या तो दुःख मिलेगा या फिर सुख-दुःख दोनों मिश्रित (मिक्स) मिलेंगे।

एक बार मैंने भी कार खरीदी थी और दो साल कार चलाई। यह सारा दुःख मेरी समझ में आ गया। मैंने कहा-'निकालो इसको, **यह 'कार' नहीं 'बेकार' है।'** निकाल दी। अब मैं सुखी हो गया हूँ। अब कार नहीं है, खूब शाँति और आराम से जी रहा हूँ।

- **कार वाला बनने में सुख तो है, पर उसके साथ भीषण दुःख भी है।** मैं मना थोड़ी कर रहा हूँ मैं सिर्फ बता देता हूँ कि कार खरीदोगे, तो ये दुःख भी आएँगे। जिसको दुःख भोगना हो वह कार खरीद ले। और जिसको दुःख से छूटना हो, वो कार छोड़ दे। मुझे छूटना था, मैंने कार छोड़ दी। अब मैं सुखी हो गया।

- मैं जहाँ जाता हूँ, वहीं कार मिल जाती है। बोलो, क्या घाटा है ? आपके पास तो घर में दो कारें होंगी, तीन कारें होंगी। मेरे पास तो एक हजार कारें हैं। जिस नगर में जाता हूँ, वहीं सामने छह कारें खड़ी रहती हैं। एक व्यक्ति कहता है-आप मेरी गाड़ी में बैठो, दूसरा कहता है-मेरी गाड़ी में बैठो। अब आप ही बताओ, मुझे क्या कमी है? फिर मैं क्यों कार खरीदूँ। समझ में आई बात।

● आप सोचते होंगे - हम भी ऐसा ही कर लेंगे। अगर ऐसा करना है, तो मेरी तरह 'संन्यासी' बनना पड़ेगा। यह घर-बार छोड़ना पड़ेगा, वैराग्य उत्पन्न करना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी। इतनी सारी कारें ऐसे ही नहीं मिलती हैं।

● इच्छाओं को इस तरह से जितना हो सके, कम करें। संसार में सुख नहीं, दुःख देखें। केवल मोक्ष में, ईश्वर में सुख देखें। इसके अलावा इच्छाओं से छूटने का और कोई तरीका नहीं है।

23. शंका- सुंदर शरीर, कपड़े, गाड़ी, सुंदर काले बाल, पूरी लंबाई का क्या महत्व है?

☯ **समाधान-** सुंदर शरीर, सुंदर कपड़े, गाड़ी, चमकदार मकान, बॅगला, काले बाल और अच्छी हाइट (लंबाई) इसका महत्व है कि :-

● इसको देखकर व्यक्ति संसार में फँसता है। चमक-दमक वाली चीजों को देखकर व्यक्ति का दुनिया में राग बढ़ता है। जो कि बन्धन में बाँधने वाला है। अगर भगवान ने हमको सुंदर शरीर दिया है तो वो हमारे कर्मों का फल है। पर यह इसलिए नहीं दिया कि हम फैशन कर-करके दुनिया को फँसाते रहें, संसार के लोगों को यहाँ बंधन में डालते रहें। इसलिए ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

● एक अन्य दृष्टि से शरीर अच्छा हो, बलवान हो, स्वस्थ हो, तो उससे व्यक्ति तेजी से काम करेगा, अच्छा काम करेगा।

● अच्छा शरीर इसलिए दिया है, ताकि पौष्टिक भोजन खाओ, शरीर को स्वस्थ बनाओ, बलवान बनाओ, मोक्ष प्राप्ति करो, समाज की सेवा करो, समाधि लगाओ। यह है इसका लाभ।

24. शंका- आत्मा हर समय सुविचारों को ही क्यों नहीं उठाता, क्योंकि आत्मा को पवित्र बताया गया है? मन में अशुद्ध विचार जैसे - चोरी-व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित विचार क्यों आते हैं?

☯ **समाधान-** यहाँ प्रश्न पूछा है कि आत्मा मन के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है। सुना है कि आत्मा नित्य है, शुद्ध है, बुद्ध है, इसलिए मन में अच्छे ही विचार आने चाहिए। आत्मा अपने स्वरूप से शुद्ध व पवित्र है तो हमारे मन में बुरे विचार क्यों आते हैं? इसके बहुत सारे कारण हैंः-

● अपनी इच्छा से जीवात्मा खराब काम नहीं करना चाहता, गलती नहीं करना चाहता। स्वयं तो वो अच्छी बात ही चाहता है, सुख ही चाहता है, अच्छे काम ही करना चाहता है।

● 'अविद्या' नाम का एक दोष है, जो जीवात्मा के साथ जुड़ जाता है। आत्मा यद्यपि स्वरूप से शुद्ध है। शुद्ध होते हुए भी, आत्मा के पास जो ज्ञान है, वह कुछ शुद्ध है, कुछ अशुद्ध है। यानी आत्मा में कुछ तो विद्या है और कुछ उसमें अविद्या भी है। अविद्या (उल्टे ज्ञान) के कारण वो मलीन हो जाता है।

● यह दोनों विद्या-अविद्या नैमित्तिक हैं यानि कि यह बाहर से जीवात्मा में आती हैं। कहीं वह अड़ोस-पड़ोस के लोगों से कुछ बुरी बातें सीख लेता है। उसके कारण बुरे विचार करता है। कुछ टेलीवीजन से, कुछ कंप्यूटर से, कुछ मोबाईल से, कुछ इंटरनेट से, कुछ पढ़ाई-लिखाई के सिलेबस से, कुछ मित्र-मण्डली से, कुछ सरकार के कानूनों से, ऐसे-ऐसे बहुत सारे कारण हैं, जिनसे व्यक्ति बुरे विचार भी कर लेता है। प्राकृतिक रजोगुण, तमोगुण की वजह से भी जीवात्मा में यह अविद्या, राग-द्वेष आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इस गड़बड़ी के कारण कभी-कभी वो बुरे विचार उठा लेता है, बुरे काम भी कर लेता है, गलत भाषा भी बोल देता है।

● जब यह अविद्या ऊपर से चिपक जाती है, तो उस अविद्या के कारण, उन संस्कारों के कारण जीवात्मा बुरे विचार यानी गड़बड़ विचार (उल्टी सोच) करता है। इसी अविद्या के दोष के कारण वो अच्छे विचार भी उठा लेता है और बुरे विचार भी उठा लेता है। अविद्या के कारण उसमें राग और द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार कुछ विद्या भी है और कुछ अविद्या भी है।

● अविद्या के प्रभाव से प्रेरित होकर जीवात्मा झूठ बोलता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, अन्याय करता है, शोषण करता है, छल-कपट करता है, हिंसा करता है, निंदा- चुगली करता है। अविद्या जीवात्मा को लपेट लेती है, क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ है। जीवात्मा बेचारा कमजोर है, इसलिए अविद्या उसको आकर दबा लेती है, वो बेचारा पिट जाता है। अविद्या के नीचे दबकर जीवात्मा उल्टे-सीधे काम करता है।

● ईश्वर सर्वज्ञ है, उसको अविद्या नहीं लपेट सकती, उसको अविद्या नहीं दबा सकती। उसमें ज्ञान की पराकाष्ठा होने से अविद्या उसे नहीं सताती।

● अनेक जन्मों से अविद्या हमारे अंदर चली आ रही है। जब व्यक्ति अविद्या को दूर कर लेता है तो हर समय सुविचार ही उठाता है।

● कोशिश करनी चाहिए कि बुरे विचारों से बचें, बुरे विचारों को रोकें, अच्छे विचार करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छे कर्म करें। ऐसा हमको पूरा प्रयत्न करना चाहिए। इसका उपाय है-वेदों का अध्ययन, ईश्वर का ध्यान और निष्काम-सेवा करना।

25. शंका- ज्ञान बिना कर्म नहीं, तो मोक्ष के लिए पतंजलि निर्दिष्ट अष्टांग योग पढ़ना, समझना, आचरण में लाना क्यों काफी नहीं है? हर एक दर्शन, वेदज पढ़ना क्यों जरूरी है? इसमें तो काफी समय लगेगा?

☯ **समाधान-** इन दो प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैंः-

● मुक्ति भी कोई जल्दी थोड़े मिलने वाली है। मुक्ति प्राप्त करने में समय तो लगेगा।

● सारे दर्शन पढ़ना होगा। केवल योग-दर्शन से काम नहीं चलेगा। केवल एक शास्त्र पढ़ने से हमारा ज्ञान-विज्ञान उतना विकसित नहीं होता। उसका ज्ञान बहुत संक्षिप्त और सीमित रहता है। बहुत सी बातें समझ में नहीं आतीं। मन में प्रश्न उठेंगे- ईश्वर को क्यों मान लो, पुनर्जन्म को क्यों मान लो, मुक्ति को क्यों मान लो। इन प्रश्नों का उत्तर कहाँ से लाएंगे? इनका उत्तर योग-दर्शन तो नहीं देगा। और योग-दर्शन देगा तो, सीधा-सीधा वाक्य बोल देगा- हाँ भाई, ईश्वर होता है, सबका गुरु है, अनादिकाल से है, अनंतकाल तक रहेगा। इतने में तो आपको संतोष नहीं होगा।

● आज तो साइंस का विद्यार्थी पहले पूछता है कि 'क्यों' मान लें ? क्यों का उत्तर, योग-दर्शन नहीं देगा। उसका उत्तर देगा- 'न्याय दर्शन'। अगर आपको 'क्यों' का उत्तर नहीं मिलेगा, तो आपको 'संतोष' नहीं होगा। बात आपके दिमाग में जमेगी नहीं।

आप कहेंगे- "यह तो बस ऐसे ही थोपा-थोपी वाली बात है। मान लो, हॉ, भगवान है, मान लो, अगला जन्म है। भई, हमको नहीं जँचती, यह "मान लो वाली" बात। इतने से बात नहीं बनेगी। क्यों मान लो ? उसका कारण हमको स्पष्ट होना चाहिए। दिमाग में बैठना चाहिए, तब मानेंगे। "

इसके लिए व्यक्ति को अन्य दर्शन भी पढ़ने होंगे। इसमें कोई शंका नहीं है कि- पढ़ने में लंबा समय लगेगा और वो समय लगाना पड़ेगा, आपको भी और मुझे भी मेहनत करनी है, कीजिए।

● प्रश्न यह भी किया है कि जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है तो क्या संस्कृत पढ़ना, चारों वेद पढ़ना, सभी दर्शन पढ़ना जरूरी है ? सारे न भी पढ़ो तो कम से कम इतना तो पढ़ लो कि दुनिया समझ में आ जाए, ईश्वर समझ में आ जाए, जीव समझ में आ जाए।

इतना तो व्यवहारिक रूप से समझ में आना चाहिए कि -

"तीन वस्तुएं अनादि हैं, तीनों के गुण, कर्म, स्वभाव ये-ये हैं। प्रकृति दुःखदायी है, चारों ओर दुःख ही दुःख है।"

महर्षि पतंजलि लिखते हैं - 'दुखमेव सर्वम् विवेकिनः'। बुद्धिमान व्यक्ति की दृष्टि में चारों ओर दुःख ही दुःख है। और इतना समझने के लिए भले ही आप चारों वेद न भी पूरे पढ़ें, परन्तु कुछ दर्शन, कुछ संस्कृत, कुछ उपनिषद्, कुछ वेद तो पढ़ना ही होगा। इसके बिना बात नहीं बनेगी।

● सांख्य दर्शन का पहला सूत्र है - 'अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।"अर्थात तीन प्रकार के दुःखों से पूरी तरह छूट जाना, यह मनुष्य का सबसे अंतिम लक्ष्य है। इसलिए दुःखों से छूटो और मोक्ष की प्राप्ति करो। बार-बार शुरू से आखिर तक सभी दर्शन, वेद, उपनिषद्, यही कहते हैं।

अष्टांग-योग का पालन करिए। थोड़ी संस्कृत भाषा सीख लीजिए। चार-पाँच दर्शन पढ़ लीजिए। इतना तो जरूरी है बाकी अपना योगाभ्यास कीजिए, समाज की सेवा कीजिए, मोक्ष मिल जाएगा।

26. शंका- क्या मुक्ति के लिए मनुष्य योनि ही अनिवार्य है? अन्य योनियों में मुक्ति नहीं हो सकती?

☯ **समाधान**- मुक्ति केवल मनुष्य योनि में ही होती है और किसी प्राणी के शरीर से मुक्ति नहीं होने वाली है। गाय के शरीर से डायरेक्ट मुक्ति नहीं होगी। मनुष्य शरीर में भी केवल संन्यासी का मोक्ष होता है, और किसी का नहीं होता है।

27. शंका- क्या कीट-पतंग, सर्प, जीव-जंतु आदि मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, यदि हाँ तो कैसे?

☯ **समाधान**- नहीं, क्योंकिः-

- कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, जीव-जंतु कोई भी हों, वे योगाभ्यास, यम-नियम का पालन नहीं करते। **वे इस योनि से सीधे मोक्ष में नहीं जा सकते।** मोक्ष के लिए सबका एक ही रास्ता है। सबको उसी रास्ते से चलना पड़ता है। ईश्वर का न्याय सबके लिए एक समान है। वहाँ कोई अन्याय नहीं, कोई पक्षपात नहीं।

- ये कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी अपने कर्मों का दण्ड भोगकर लौटकर वापस मनुष्य बनेंगे। पशु-पक्षी अपना दंड भोगकर के जब मनुष्य योनि में आएंगे, तो किसके घर में जन्म लेंगे?

ये कीड़े-मकोड़े जब मनुष्य बनेंगे तो पहले-पहले शूद्र परिवार में (शूद्र माता-पिता के घर में) जन्म लेंगें। शूद्र परिवार में, जिसको फोर्थ क्लास बोलते हैं, उन मजदूर, चपरासी आदि के घर में जन्म लेंगे। फिर वहाँ अच्छे कर्म करेंगे, तो प्रमोशन हो जाएगा।

- **शूद्र व्यक्ति जब पुण्य-कर्म जमा करेंगे, तो फोर्थ क्लास से थर्ड क्लास-वैश्य परिवार में आ जाऐंगे। फिर आगे और अच्छे कर्म करेंगे तो सेकण्ड क्लास-क्षत्रिय परिवार में प्रमोशन हो जाएगा। उसके बाद और अच्छे काम करेंगे, तो फर्स्ट क्लास- ब्राह्मण परिवार में जन्म होगा।** ब्राह्मण में भी और ऊँचे ब्राह्मण के यहाँ जन्म ले लेंगे, जब और अच्छे काम करेंगे। उसको फर्स्ट क्लास सुपर बोलते हैं। **और अच्छे काम करेंगे,**

तो फिर संन्यासी बन जाऐंगे। और संन्यासी बनकर के समाधि लगाएंगे। तब मोक्ष मिलेगा। सबके सब लोगों को इसी एक रास्ते पर चलना है।

- **लोग अच्छे कर्म करेंगे, तो अच्छे घर में जन्म मिलेगा।** वहाँ से और अच्छे संस्कार मिलेंगे। फिर और अच्छे कर्म करेंगे। एक बच्चे ने न्यायाधीश के घर में जन्म लिया और एक बच्चे को धोबी के घर में जन्म मिला। क्या यह दोनों का कर्म फल नहीं है? है न। तो उनके कर्मों में कुछ ऊँचा-नीचापन तो होगा ही। उसको ऊँचे परिवार में जन्म क्यों मिला? उसने पूर्व जन्म में अच्छे काम किए होंगे। अब इस न्यायाधीश के घर में जन्म लेकर उसे बचपन से ही अच्छे बुद्धिमान माता-पिता मिल गए। वे उसको अच्छे संस्कार देंगे। अच्छी बात सिखाएंगे और वो खूब तेजी से आगे बढ़ेगा। और जिसको धोबी के घर में जन्म मिला, उसने अच्छे कर्म नहीं किए। इसलिए अच्छे परिवार में जन्म नहीं मिला। यह है पूर्व जन्म में किए कर्मों का फल।

- **जिसने जितना कर्म किया, उतना उसको फल मिला। आगे उसको नया चान्स है। फिर आगे पुरुषार्थ करें।** इस प्रकार से पशु-पक्षी, कीट-पतंग भी मनुष्य बनकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

28. शंका- मोक्ष से लौटने के बाद पहला जन्म शूद्र परिवार में क्यों मिलेगा?

☯ **समाधान**- मोक्ष से लौटने के बाद पहला जन्म शूद्र परिवार में मिलेगा। क्योंकि,

- महर्षि दयानंद जी ने ऋग्वेद (पहला मंडल, चौबीसवाँ सूक्त, मंत्र संख्या दो) के भाष्य में लिखा है कि - जो आत्माएँ मुक्ति से लौटती हैं, उनके पुण्य और पाप तुल्य (बराबर) होते हैं। पहले के लौकिक-सुख प्राप्ति के लिए किए गए सकाम कर्म-जनित पाप-पुण्य उनके जमा रहते हैं। और अपने कर्मानुसार पुण्य-पाप तुल्य होने से शूद्र माता-पिता के यहाँ जन्म लेकर वो शरीर धारण करते हैं।

जब पाप-पुण्य तुल्य होते हैं, तब साधारण मनुष्य का जन्म होता है। यह वेद की बात है, हमारे घर की बात नहीं है।

- **कोई भी यात्रा शून्य (ज़ीरो) किलोमीटर से आरंभ (स्टार्ट) होती है।** शूद्र परिवार ज़ीरो किलोमीटर है। जीरो मध्य में होता है। बाईं तरफ माइनस (-) और दाईं तरफ प्लस (+) होता है। शूद्र से बाईं तरफ पशु-पक्षी, पेड़-पौधे यानी माइनस (-) है। और दाईं तरफ ब्राह्मण परिवार

प्लस (+) है। <u>इसलिए मोक्ष से लौटकर पहला जन्म जीरो शूद्र परिवार में मिलेगा।</u>

आप घर से चले मुंबई, तो कहाँ से किलोमीटर गिनना शुरू करेंगे? अपने घर से, वो है जीरो। फिर एक किलोमीटर चले, तो एक किलोमीटर यात्रा पूरी हो गई। तो शुरुआत कहाँ से होती है? जीरो से। इसी प्रकार से मुक्ति से जब लौट के आए, तो नई यात्रा चली। मुक्ति के लिए भी यात्रा जीरो से शुरु होगी। जीरो मतलब शूद्र परिवार, सामान्य जन्म, साधारण मनुष्य। यहाँ से यात्रा शुरु होती है। इसलिए मुक्ति से लौटकर आने वाले आत्मा को भगवान शूद्र के घर में जन्म देता है। अब यहाँ से आपकी यात्रा शुरु हुई।

● अब मेहनत करो। कोई एक जन्म में दस मील पार करेगा, कोई बीस मील पार करेगा। पशु-पक्षी से लौटकर शूद्र बना। शूद्र के बाद वैश्य बना। फिर क्षत्रिय बना। फिर ब्राह्मण, फिर संन्यासी बना और फिर मोक्ष की प्राप्ति। जैसा कि पहले बताया था। दस-दस मील पार करते जाएँ। यह सामान्य नियम है कि- शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण, फिर संन्यासी और फिर मोक्ष।

● <u>एक व्यक्ति ज्यादा जोर से दौड़ लगाएगा, तो वो सीधा चालीस मील पार कर जाएगा। लेकिन आगे जाकर ठंडा पड़ गया, दूसरे काम शुरु किए, तो बीस मील वापस भी आ जाएगा। यह अप-डाउन तो होता रहता है। सामान्य नियम है कि क्रमशः उत्तरोत्तर उन्नति होगी। और उसमें जो ऊँचे-नीचे स्तर बन रहे हैं, वो कर्म के आधार पर हैं, जन्म के आधार पर नहीं हैं।</u>

● कर्म से व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र माना जाता है। यदि अच्छे कर्म करेगा, तो अच्छे बुद्धिमान के यहाँ जन्म लेगा। यह कर्म-फल है, मुफ्त में नहीं मिलता। <u>कर्म के आधार पर ही उसको अगला फल - जन्म मिला। और आगे उन्नति का अवसर जन्म से ही मिलेगा।</u> वो पिछले कर्म का फल भोगेगा।

● और कोई अपवाद यूँ भी होता है कि पहले दो सौ, पांच सौ, हजार जन्म भोग चुका। अच्छे कर्म भी किए, बुरे भी किए। सब तरह के कर्म कर बहुत सारे संस्कार जमा कर लिए। फिर एक जन्म में शूद्र के घर में पैदा हुआ। अब पिछली बहुत सारी सम्पत्ति (संस्कार) थी। उसके बाद फिर कोई घटना देख ली। जैसे महर्षि दयानंद जी ने देख ली। महात्मा बुद्ध ने देख ली। ऐसी और कई लोगों ने संसार की घटनाऐं देख

लीं। उन घटनाओं को देखकर उनके मन में वैराग्य जाग गया। जो पिछले हजारों जन्मों की कमाई थी। वो जाग गई। अब <u>इसी जन्म में उसने खूब पुरुषार्थ किया, तो शूद्र या क्षत्रिय परिवार में पैदा होकर के सीधा ब्राह्मण बन सकता है। यह अपवाद है।</u> हमारे गुरुजी-स्वामी सत्यपति जी महाराज का जन्म तो ऐसे ही साधारण मुस्लिम परिवार में हुआ था। अब फिर घटनाएं देखीं, तो वैराग्य हो गया। फिर खूब जोर लगाया। आज देखो कहाँ पहुँच गए।

जिस व्यक्ति ने 20 वर्ष की उम्र तक क, ख, ग भी नहीं सीखा हो। आज वह वेदों का विद्वान और कितने ऊँचे स्तर का योगी, तपस्वी और कितना शास्त्रों का पंडित, और कितना काम करने वाला व्यक्ति, कितनी संस्कृत भाषा जानने वाला बन गया। यह कोई साधारण बात है? हो सकता है, इसी जन्म में इनकी मुक्ति हो जाए। यह इनका अंतिम जन्म हो। और अगर मान लिया, कुछ कमी रह गई, तो एक दो जन्म और लेना पड़ेगा, बस फिर गाड़ी मोक्ष के स्टेशन पर जाकर रुकेगी।

● अब जब इतने महान पुरुष देख रहे हैं, तो इनको देखकर हम प्रेरणा ले सकते हैं। मुक्ति वाला तो आएगा नहीं, हमें प्रेरणा देने के लिए। उसके लिए तो भगवान ने मना कर दिया कि तुम मत करो संसार को प्रेरणा। तुम्हारे बस का नहीं है। यह हमारा ही काम है। हम कर लेंगे। तो <u>ऐसे-ऐसे महान पुरुषों को देख करके हम बहुत सी प्रेरणा ले सकते हैं कि इतने साधारण परिवार में जन्म लेकर भी इतनी ऊँचाई तक पहुँच गए।</u>

तात्पर्य है कि व्यक्ति बहुत तीव्र गति से भी उन्नति कर सकता है। पर वो अपवाद है। ऐसे लोगो की संख्या बहुत कम होती है। सामान्य नियम तो वो ही है। स्टेप बाई स्टेप चलना अर्थात् पहले शूद्र, फिर वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण, संन्यासी और फिर मोक्ष।

29. शंका- आपने कहा कि मोक्ष से लौटने पर पहला जन्म शूद्र का होता है, परंतु मोक्ष फल तो अति उत्तम कर्मों से मिलता है। और ऐसी आत्माएं यदि फिर जन्म लें, तो उच्च कोटि के मनुष्य के रूप में ही होनी चाहिए?

☯ **समाधान**- मान लीजिए, एक गरीब आदमी दिल्ली में झुग्गी-झोपड़ी में रहता है। उसने अच्छा पुरुषार्थ किया, कुछ रुपया कमा लिया, जिसका फल मिला- एक सप्ताह तक मुम्बई की सैर। वह एक सप्ताह तक मुंबई घूमा। खूब खाया-पीया, अच्छी तरह होटल में भी रहा। एक सप्ताह पूरा हो गया, तो वापस दिल्ली आ गया।

यहाँ सवाल ये उठता है कि अब दिल्ली लौट आया, तो क्या दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जाएगा, या वापस अपनी झुग्गी- झोपड़ी में जायेगा? वापस तो वहीं जाना पड़ेगा न। जिस कर्म से उसको एक सप्ताह की मौज-मस्ती मुंबई में मिली थी, अब उसके आधार पर उसको दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जगह नहीं मिलेगी। अब तो वापस वहीं रहना है, जहाँ से चले थे। इसी प्रकार से, जो व्यक्ति मोक्ष में जाता है, उसने जिन कर्मों का फल मोक्ष में भोग लिया, वह खत्म हो गया। अब जब मोक्ष से वापस लौटेगा, तो फिर वापस सामान्य जन्म में जाएगा। क्योंकि यहाँ से जब चला था, तब भी झुग्गी-झोपड़ी से ही चला था, जीरो से ही चला था।

कोई भी यात्रा जीरो किलोमीटर से स्टार्ट होती है। जीरो पर खड़ा हुआ व्यक्ति प्लस (वैश्य परिवार, क्षत्रिय परिवार, ब्राह्मण परिवार) की ओर भी चल सकता है और माइनस (पशु-पक्षी योनि में जन्म) की ओर भी चल सकता है।

मोक्ष से जो लौटेगा - जन्म लेगा, वो सकाम कर्मों का फल है। और मोक्ष में जो आनंद भोगा, वो निष्काम कर्मों का फल था। वो तो भोग लिया, खत्म हो गया।

अब दोबारा आपको मोक्ष में जाना है, तो दोबारा नए सिरे से निष्काम कर्म करो, फिर वेद पढ़ो, अपना ज्ञान ठीक करो, समाधि लगाओ, सेवा करो, परोपकार करो और फिर दोबारा मोक्ष में जाओ। पर वापस लौटने के समय पहला जन्म तो वो ही झुग्गी-झोपड़ी में जाना पड़ेगा अर्थात् शूद्र परिवार में जन्म मिलेगा।

30. शंका- एक विदेशी महिला भारत में रहते हुए अपने जीवन-काल में दूसरों की सेवा करती रहीं। उन्होंने शायद ईश्वर उपासना नहीं की। यम, नियम का पालन नहीं किया। तो क्या वे मोक्ष की अधिकारी थीं?

☯ **समाधान**- उत्तर है, नहीं। दरअसल, मोक्ष के लिए तीन काम अनिवार्य (कम्पलसरी) हैंः-

(1) पहला काम-वेद के अनुसार हमारा ज्ञान-विज्ञान हो। जो हमारे सिद्धांत व मान्यताएं हैं, वे वेदानुकूल हों अर्थात् हमारा ज्ञान शुद्ध होना चाहिए।

(2) मोक्ष प्राप्ति के लिए दूसरा काम-निष्काम कर्म होने चाहिए। उन्होंने इतना तो अच्छा किया कि गरीबों, रोगियों की सेवा की। परन्तु मनुष्य जाति की सेवा के पीछे उनकी भावना दूसरी थी। शुद्ध भावना नहीं थी। सेवा के पीछे अपने धर्म-संप्रदाय का प्रचार करने, की भावना थी। इसलिए सांप्रदायिक उद्देश्य होने के कारण वे शुद्ध (निष्काम) कर्म नहीं थे।

(3) तीसरा काम है-शुद्ध उपासना। अर्थात् जैसा ईश्वर का स्वरूप वेदों में बताया है, वैसे ईश्वर की उपासना करना। अगर वह भी उनका नहीं होगा तो उन्हें मोक्ष नहीं मिलेगा।

31. शंका- मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती। ऐसा क्यों कहा जाता है?

☯ **समाधान**- यही तो बात है, जो लोगों के दिमाग में नहीं बैठती। शरीर मरता है और आत्मा नया जन्म ले लेती है। जैसे स्कूटर को गैराज में रखकर हम उससे अलग हो जाते हैं। वैसे ही मृत्यु होने पर शरीर और आत्मा दोनों अलग-अलग हो जाते हैं। अंतर इतना है कि स्कूटर पर तो हम रोज बैठते हैं, फिर अलग हो जाते हैं। उससे तो जल्दी अलग हो जाते हैं, पर शरीर से पचास, साठ, अस्सी या सौ साल के बाद अलग होते हैं।

तात्पर्य है कि, एक न एक दिन आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। उसी क्षण का नाम 'मृत्यु' है। उसके बाद, अगला 'जन्म' होता है। ठीक वैसे ही, जैसे आप पुराने स्कूटर को छोड़कर नया स्कूटर खरीदते हैं। गीता में इसी बात को पुराने कपड़े त्यागकर नये वस्त्र धारण करने के उदाहरण से समझाया गया है। स्कूटर घिस-पिट गया, नया ले लिया। ऐसे ही शरीर जर्जर हो गया, तो छोड़ दिया। फिर नया शरीर मिल जाएगा। मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती, ऐसा इसीलिए कहा जाता है।

32. शंका- खराब काम करने वाले को खराब योनि मिलती है। आज पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति खराब काम करते हैं, फिर भी संसार में मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ती ही जा रही है? क्या सभी अधिकारी जीवों का मुक्ति-काल समाप्त हो गया है, क्या वे मुक्ति से लौटकर आ रहे हैं?

☯ **समाधान-** पिछले पचास वर्षों में तो मनुष्यों की संख्या (पॉपुलेशन) बढ़ती जा रही है। पहले भारत की संख्या तीस करोड़ थी, आज सौ करोड़ से ऊपर चली गयी। पूरी धरती की संख्या पहले तीन अरब थी, आज सात अरब हो गई। जनसंख्या इतनी क्यों बढ़ रही है, क्या अच्छे काम ज्यादा हो रहे हैं ? इस सवाल का जवाब है:-

- एक कारण है कि 'आत्मा' मुक्ति से लौट रहे हैं। इसलिए संख्या बढ़ रही है। सारे मुक्ति से नहीं आ रहे हैं। मनुष्यों की संख्या इस कारण से नहीं बढ़ रही है। दरअसल, मुक्ति में से तो कोई-कोई आता होगा। लेकिन वो हमें पता नहीं चलता। गत वर्षों में मनुष्यों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, उसके कई कारण हैं।

- **दूसरा कारण:-** एक व्यक्ति ने दस साल तक मेहनत की, व्यापार में खूब पैसा कमा लिया और आगे जाकर उसने व्यापार बंद कर दिया। अब वो व्यापार नहीं कर रहा। लेकिन पिछले दस साल में उसने जो कमाया, उसको बैठ के खा रहा है। उसे इसका पूरा अधिकार है।

इसी तरह इस समय जो मनुष्य लोग हैं, वो पहले कमाई करके आए हैं। **वे अच्छे कर्म करके आए हैं। इसीलिए मनुष्य योनि में आए हैं।** वे पिछली कमाई खा रहे हैं। लेकिन **यदि इस जन्म में वे अच्छे काम नहीं कर रहे हैं, तो आगे उनको मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा। वे मोक्ष के अधिकारी नहीं होंगे। वे पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े की योनि में स्थानांतरित (ट्रांसफर) हो जाएंगे।** उनको बुरे कर्मों का यह दण्ड मिलेगा। और जब दण्ड भोग लेंगे, कर्म-दण्ड पूरा हो जाएगा, तब वे फिर मनुष्य योनि में आ जाएंगे। इसका न आपको पता चलेगा और न मुझे।

अनुमान प्रमाण है कि ईश्वर न्यायकारी है, वह बिना कर्म के फल नहीं देता। जिसने बुरा कर्म किया, उसको बुरा फल दिया। जिसने अच्छा कर्म किया, उसको अच्छा फल दिया।

- **आजकल जो तेजी से मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है, उसका कारण यह नहीं है कि, मनुष्य लोग अच्छे कर्म कर रहे हैं। दरअसल, जो बुरे कर्म करके पशु-पक्षी, कीड़ों-मकोड़ों और पेड़-पौधों की योनि में गए थे, वे अपना दण्ड भोगकर, कर्मफल पूरा करके मनुष्य योनि में आ गए हैं। यह मनुष्यों की संख्या बढ़ने का एक कारण है।**

यहाँ कर्मफल के तीन नियम समझने पड़ेंगे:-

(1) **पहला नियम-** एक व्यक्ति अपने पूरे जीवन में यदि पचास प्रतिशत अच्छे और पचास प्रतिशत बुरे कर्म करता है यानी बराबर मात्रा में (इक्वल) पचास-पचास अच्छे-बुरे कर्म हैं। यहॉं पहला नियम कहता है कि:-

"समान मात्रा में अच्छे बुरे कर्मों को करने से व्यक्ति को तुरंत अगला जन्म साधारण मनुष्य का मिलेगा।"

साधारण मनुष्य का मतलब जिसे आप आजकल की भाषा में फोर्थ-क्लास फैमिली जैसे- मजदूर, चपरासी, पटेवाला कहते हैं। एक तरीका मनुष्य बनने का यह है।

(2) **दूसरा नियम-** यदि कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन में पचास प्रतिशत से अधिक अच्छे कर्म करता है, जैसे - मान लिया कि साठ प्रतिशत अच्छे कर्म करता है, और चालीस प्रतिशत बुरे कर्म करता है। उसके अच्छे कर्म अधिक हैं, इसलिए प्रमोशन होगा। फोर्थ क्लास से थर्ड क्लास फैमिली में आ जाएगा। मजदूर, चपरासी से ऊँचे घर में, कोई बुद्धिमान, सेठ, धनवान, किसी क्षत्रिय के घर में जन्म होगा। इसी तरह से यदि अच्छे कर्म का प्रतिशत बढ़ता जाएगा, साठ की बजाय सत्तर प्रतिशत अच्छे कर्म किए तो और ऊँचे घर में जन्म मिलेगा। अस्सी प्रतिशत अच्छे कर्म किए तो और ऊँचे घर में जन्म मिलेगा। जहाँ पर धार्मिक, विद्वान माता-पिता हों, सदाचारी हों, देशभक्त हों, ईश्वर-भक्त हों, ईमानदार हों, ऐसे-ऐसे अच्छे परिवार में जन्म मिलेगा। और यदि सौ प्रतिशत अच्छे और निष्काम कर्म करेगा, तो उसका मोक्ष हो जाएगा। यह दूसरा नियम है:-

"यदि आपके कर्म पचास प्रतिशत से ज्यादा अच्छे हैं, और बुरे कम हैं, तो भी मनुष्य बनेंगे।"

तो इस नियम से भी तुरंत मनुष्य बन सकते हैं।

(3) **तीसरा नियम-** यदि कोई व्यक्ति बुरे कर्म पचास प्रतिशत से अधिक करता है, और अच्छे कर्म पचास प्रतिशत से कम। मान लीजिए साठ

प्रतिशत बुरे कर्म किए, और चालीस प्रतिशत अच्छे कर्म किए। अब साठ और चालीस में कितना अंतर है? बीस प्रतिशत का। तो बीस प्रतिशत बुरे कर्म अच्छे कर्मों की तुलना में उसने अधिक किए। अब यहाँ बीस प्रतिशत पाप अतिरिक्त हैं,अधिक है, तो कर्म-फल का तीसरा नियम कहता है, कि-"जब बुरे कर्म अधिक हो जायेंगे, तो तुरंत अगला जन्म मनुष्य का नहीं मिलेगा।" अब उसका दंड भोगने के लिए नीचे उतरना पड़ेगा। कुत्ता, बिल्ली, हाथी, गाय, घोड़ा, मक्खी, मच्छर, बंदर, सुअर, साँप, आम, पीपल आदि-आदि बनना पड़ेगा। जब तक नीचे इन बीस प्रतिशत पापों का दंड पूरा नहीं भोग लेगा, तब तक वापस लौट के मनुष्य नहीं बनेगा। तब तक वहीं चक्कर काटेगा।

यदि कोई पशु-पक्षी, कीड़ा-मकोड़ा बना हुआ था, तो वो कैसे बना था, पहले यह समझ लीजिए। पुण्य की तुलना में अधिक पाप किए, तो तीसरा नियम यह कहता है किः-

"जब पाप अधिक बढ़ जाएगा, तो पहले उसका दंड भोगने के लिए कुत्ता-बिल्ली, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े बनना पड़ेगा।"

पहले अन्य योनियों में बीस प्रतिशत पाप का दंड भोगो, जब वो निपट जाए, तब एकाउंट बैलेंस (बराबर) हो जाएगा। चालीस प्रतिशत पाप, चालीस प्रतिशत पुण्य का खाता जब बराबर हो जाएगा, तो फिर लौट के मनुष्य बनेंगे।

तो इस समय जो आप कह रहे हैं न कि मनुष्य की संख्या बढ़ती जा रही है, यह इस नियम से बढ़ रही है। कीड़े-मकोड़े, मक्खी, मच्छर अपना दण्ड भोगकर, मनुष्य योनि में लौट के वापस आ रहे हैं। उनका नंबर आ गया है मनुष्य बनने का।

मुक्ति से लौटना एक कारण, मनुष्य से मनुष्य बनना, दूसरा कारण और मनुष्यों में ज्यादा अच्छे कर्म करके फिर अच्छे परिवार में जन्म लेना तीसरा कारण, कीड़े-मकोड़े से लौटकर वापस मनुष्य बनना-चौथा कारण। और किसी अन्य लोक- लोकांतर से यहाँ ट्रांसफर होकर यहाँ मनुष्य जन्म लेना, यह मनुष्य की संख्या बढ़ने का पाँचवा कारण है। ऐसे बहुत सारे कारण हैं, जिसकी वजह से यहाँ जनसंख्या (पॉपुलेशन) बढ़ रही है। चौथा वाला कारण ज्यादा ठीक लग रहा है। और भी कारण थोड़े-थोड़े होंगे।

33. शंका- बहुत जन्मों के बाद अच्छे कर्म करने से मनुष्य जन्म मिलता है। धरती पर अब बहुत कम मात्रा में अच्छे कर्म हो रहे हैं, बुरे कर्म ज्यादा हो रहे हैं, इस हिसाब से मनुष्यों की बस्ती (संख्या) कम होनी चाहिए, लेकिन मानव बस्ती तो बढ़ती जा रही है?

☯ **समाधान-** प्रश्न है कि मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है, जबकि अच्छे काम घट रहे हैं, बुरे काम ज्यादा हो रहे हैं। उत्तर समझने के लिएः-

- अच्छा यह बताइए कि, मनुष्यों की संख्या अधिक है या दूसरे कीड़े-मकोड़ों की? उत्तर होगा- कीड़े-मकोड़ों की। इससे बात साफ है, अच्छे कर्म कम होते हैं, इसलिए मनुष्य कम हैं। बुरे काम ज्यादा होते हैं, इसलिए संसार में कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी ज्यादा हैं। एक तो यह मोटी-मोटी बात है।

- अब यह बताइए कि, पिछले पचास सालों में मनुष्यों की जो संख्या बढ़ी, यह सामान्य मजदूर गरीबों के घर में बढ़ी या आई.ए.एस, आई.पी.एस ऑफीसरों के घर में बढ़ी? यह तो सामान्य परिवारों में बढ़ी। इसका मतलब निकला कि - पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े के शरीर से लौटकर जीवात्मा आ रहे हैं। इसलिए सामान्य मजदूर गरीबों के घर में मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है।

संख्या अच्छे कर्मों के कारण नहीं बढ़ रही। पाप-दंड भोग करके, निपटा करके, अब उनका मनुष्य बनने का नंबर आया। इसलिए वो लौटकर मनुष्य बन रहे हैं। इन मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है।

- इस समय जो पाप कर रहे हैं, वो मरने के बाद यहाँ से वहाँ ट्रांसफर हो रहे हैं, कुत्ते-बिल्ली में, गाय-घोड़े के शरीर में। संसार के लोगों को यह सत्य दिखता नहीं। इसलिए लोग पाप करना छोड़ते नहीं।

लोग तो यह समझते हैं कि, हरिद्वार में जाओ, गंगा जी में स्नान करो तो सारे पाप खत्म हो जाएंगे। इसलिए लोग खूब पाप करते हैं। अगर उनको समझ में आ जाए कि भगवान छोड़ेगा नहीं, कुत्ता-बिल्ली बनाएगा, दंड देगा, माफ नहीं करेगा तो वो पाप करना बंद कर देंगे।

● मैंने एक नियम बताया था – 'दंड के बिना कोई सुधरता नहीं है।' अगर दंड दिखता है, तो व्यक्ति सुधरेगा। देखिए, यह बिजली का तार है। क्या बिजली के तार को आप छुएंगे? क्यों नहीं छुएंगे ? साफ दंड दिख रहा है न, कि छूते ही दंड मिलेगा। जब दंड दिख रहा है तो आप नहीं छुएंगे। और ऐसे ही अगर यह दंड भी दिखने लग जाए कि हम झूठ, छल-कपट, चोरी, बेईमानी करेंगे तो भगवान कुत्ता, साँप, बिच्छू, भेड़िया आदि बना देगा। तो आप पाप क्यों करेंगे? कोई भी नहीं करेगा। सब सीधे हो जाएंगे, सब सुधर जाएंगे। तो संख्या के बढ़ने-घटने का यह कारण है।

34. शंका- क्या सृष्टि में जीवों की जनसंख्या निश्चित है। संसार में मानव, पशुओं, पक्षियों, जीव-जंतुओं की संख्या दिन- प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तो एक बार संख्या निश्चित होती है तो बढ़ती कैसे है?

☯ **समाधान**– यह जो प्रश्न उठाया है कि सबकी संख्या बढ़ती जा रही है, यह बात ठीक नहीं है। कारण किः–

● आपके पास इन प्राणियों की संख्या का कोई हिसाब-किताब नहीं है। आप बता सकते हैं, दिल्ली में एक दिन में कितने मच्छर मरते हैं और कितने नए पैदा होते हैं? मच्छरों की संख्या का पता नहीं, और यहाँ तो हजारों, लाखों योनियाँ हैं।

● आत्माओं की संख्या निश्चित है। यह तो आप मानते हैं कि आत्माएँ न पैदा होती हैं, न मरती हैं। अगर आत्माएँ नई पैदा होने लग जाएं तो आत्माओं की संख्या बढ़नी शुरू हो जाएगी। जब नई आत्मा पैदा होगी तो संख्या बढ़ेगी। और जितनी आत्माएँ हैं, अगर उनमें से कुछ मरनी शुरु हो जाएं, तो घटने लगेंगी।

"जब आत्मा पैदा नहीं होती तो आत्माओं की संख्या बढ़ेगी नहीं, और जब आत्मा मरती नहीं तो संख्या घटेगी नहीं। इसलिए आत्माओं की संख्या तो उतनी ही रहेगी, एक कम नहीं होगी, एक बढ़ेगी भी नहीं।"

● रही बात शरीरों की। शरीर पैदा भी होते हैं और मरते भी हैं। इसलिए शरीर कभी घट जाते हैं, कभी बढ़ जाते हैं। एक जगह संख्या बढ़ रही है तो समझ लेना, दूसरी जगह जरूर घट रही है।

आत्माएँ तो उतनी ही हैं। एक आत्मा एक समय में छह शरीरों में तो रह नहीं सकती। कभी आत्माएँ पशु, पक्षियों की योनियों में से मर करके अर्थात् शरीर छोड़ करके मनुष्य शरीर में आ जाती है तो मनुष्यों की संख्या बढ़ जाती है। और मनुष्य वाली आत्मा मनुष्य शरीर छोड़ करके पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े में चली जाती है तो इधर मनुष्य घट जाते हैं और उधर पशु-पक्षी, बैक्टीरिया आदि बढ़ जाते हैं। पूरा हिसाब रखना हमारे बस की बात नहीं है। केवल ईश्वर जानता है।

● मोक्ष मिल जाएगा तो आत्मा मोक्ष में चली जाएगी। आत्मा मरेगी फिर भी नहीं। मोक्ष में उसकी सत्ता (अस्तित्व) बनी रहेगी और जब मोक्ष का समय पूरा हो जाएगा, फिर आत्मा लौट के वापस संसार में जन्म लेगी।

● आत्माएं हमारी गिनती से तो अनंत हैं। हम पूरा नहीं गिन पाएंगे लेकिन वास्तव में आत्मा की संख्या निश्चित है। कोई न कोई एक फिगर निश्चित है। अल्पज्ञ होने के कारण उसे हम नहीं जान सकते।

● ईश्वर सर्वज्ञ है और वह आत्मा की संख्या जानता है, और ईश्वर सबका हिसाब रखता है।

35. शंका- क्या सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करने के लिये संन्यास लेना अनिवार्य है या गृहस्थ में रहते हुए भी व्यक्ति सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करके मोक्ष में जा सकता है?

☯ **समाधान**- बिना संन्यास लिए आदमी सौ प्रतिशत अच्छे काम नहीं कर सकता और दुनिया उसको करने भी नहीं देगी। **आप घर में रहो, गृहस्थ बनकर रहो, लोग आपको अच्छे काम करने ही नहीं देंगे।** आपको बुरे कामों में घसीटेंगे। कहेंगेः- "चल भई! हमारे यहाँ रिश्तेदारी में चल।" आप कहोगेः-"नहीं-नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।" वे कहेंगेः-"अरे ! कैसे नहीं जाएगा, तेरे घर में फंक्शन था, तो हम नहीं आए थे क्या ? आज हमारे घर में फंक्शन है, तू कैसे नहीं आएगा ?" इस तरह आप नहीं जाना चाहेंगे तो भी वे जबरदस्ती घसीट के ले जाएंगे।

जब आप मेरी तरह **संन्यासी बन जाएंगे, तो फिर कौन प्रेशर मारेगा?** फिर कोई नहीं प्रेशर मारेगा। मैं कहूँगा-"मैं संन्यासी हूँ। मैं शादी में जाता ही नहीं। मैं अपने सगे भाई की शादी में नहीं गया तो तुम्हारी शादी में क्या आऊँगा।" अब बताओ, कौन मेरे साथ जबरदस्ती करेगा ? इसलिए संन्यास लेना पड़ेगा। तब संसार के लोग आपके ऊपर दबाव नहीं डाल सकेंगे। और तब आप पूरे अच्छे काम कर पाएंगे। अगर आप गृहस्थ बने रहेंगे तो पचास लोग आपको प्रेशर मारेंगे और जबरदस्ती आपसे उल्टे-सीधे काम कराएंगे। इसलिए यदि आप मोक्ष में जाना चाहते हैं तो संन्यास लेना ही पड़ेगा।

36. शंका- क्या समाधि काल में, योगी के पूर्वकृत कर्म नष्ट हो जाते हैं या बचे रहते हैं? क्या समाधि लगाने से, पूर्वकृत कर्म, बिना फल दिए भी नष्ट हो सकते हैं?

☯ **समाधान**- समाधि-काल में बाहर के काम नहीं होते, वो सारे बंद हो जाते हैं।

- एक व्यक्ति समाधि लगाता है, ईश्वर की उपासना करता है, तो उसको ईश्वर की अनुभूति होती है, ईश्वर से आनंद मिलता है, ज्ञान मिलता है, बल मिलता है, उत्साह मिलता है, बहुत सारे अच्छे गुणों की प्राप्ति होती है। **समाधि-काल में ईश्वर की उपासना ही एकमात्र कर्म होता है।**
- समाधि-काल में भी उसके जो पहले किए हुये कर्म हैं, वो जमा रहते हैं। इससे कर्म नष्ट नहीं होते। **दरअसल, कर्म बिना फल भोगे नष्ट होते ही नहीं हैं। वो चाहे समाधि लगाए, या न लगाए। यदि किसी व्यक्ति ने कोई भी कर्म किया है, तो उसका फल निःसंदेह भोगना ही पड़ेगा।**
- कर्म, बिना फल दिए कभी भी नष्ट नहीं होते, वो हमेशा जमा रहते हैं। जब उनका फल मिलता जाता है तो फल भोगने से वो कर्म हट जाते हैं। मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दो हजार कर्म थे। तीन सौ कर्मों का फल मिल गया, सत्रह सौ बाकी रह गए। अब समाधि लगाओ अथवा न लगाओ कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वे बचे हुए सत्रह सौ कर्म, फल भोगकर ही नष्ट होंगे, अन्यथा नहीं।

37. शंका- पूरा प्रयास करने पर कितने सालों में या एक जन्म में मोक्ष पा सकते हैं?

☯ **समाधान-** उत्तर हैः-

● एक जन्म कब से गिनना शुरु करेंगे? यहाँ आर्यवन में, शिविर में आने के बाद एक जन्म गिनना शुरु करेंगे, या जब से मुक्ति से लौटे तब से गिनना शुरु करेंगे? दरअसल, जब से हम मोक्ष से लौटकर इस संसार में आए, एक जन्म की गिनती तब से शुरु होती है। वो पहला जन्म होता है। जीवात्मा जब-जब संसार में मुक्ति से लौटकर आया, और उसने जन्म लिया, वो उसका पहला जन्म है।

● अब समस्या तो ये भी है कि लोगों के दिमाग में यही नहीं बैठता कि हम मुक्ति से लौटकर आए हैं। निश्चित रूप से आप जितने लोग यहाँ बैठे हैं, और जितनी जीवात्माएं संसार में हैं, वो सब की सब मुक्ति से लौटकर आयी हुई हैं, और सबको वापस वहीं जाना भी है।

● उस एक जन्म में तो मुक्ति नहीं हो सकती। सत्यार्थ प्रकाश का नवां समुल्लास (चैप्टर) पढ़िए। उसमें लिखा है, मुक्ति एक जन्म में होती है या अनेक जन्मों में? उत्तर दिया गया-अनेक जन्मों में। मुक्ति के लिए कई जन्म तक तपस्या करनी पड़ेगी। एक जन्म में पूरा जोर लगाने पर भी मोक्ष नहीं हो सकता, उसके लिए और जन्म लेने पड़ेंगे।

● और कितने जन्म लेने पड़ेंगे, वो हमारी और आपकी मेहनत की बात है, हमारे पुरुषार्थ, प्रगति की बात है। मोक्ष के लिए हम कितना परिश्रम करते हैं, कितना आलस्य करते हैं, यह उस पर आधारित है। उसमें पाँच जन्म लगें, या पचास भी लगें, पाँच हजार भी लगें, पाँच लाख भी लगें, पाँच करोड़ भी लगें, कितने भी लग सकते हैं। सबको बराबर काल लगेगा, ऐसा कोई नियम नहीं है।

● 'सांख्य-दर्शन' के चौथे अध्याय में एक सूत्र है- "न कालनियमो वामदेववत्।" अर्थात् काल (समय) का कोई नियम नहीं है, वामदेव ऋषि के समान। वामदेव ऋषि कई जन्मों से तपस्या करते चले आ रहे थे। अब इस जन्म में उन्होंने पिछली तपस्या आदि को भी साथ जोड़ लिया। इस जन्म में पूरा जोर लगाया और उनकी 'मोक्ष' प्राप्ति की योग्यता बन गई, उनको 'समाधि' प्राप्त हो गई। वामदेव ऋषि ने पूरा जोर लगाया, इसलिए वर्तमान जन्म में उनकी योग्यता बन गई।

● अब यह आवश्यक नहीं कि सब लोगों की योग्यता इसी

जन्म में ही बन जाएगी। सबकी स्थिति अलग-अलग है, सबकी रुचि अलग-अलग है, सबकी योग्यता अलग-अलग है, सबके संस्कार अलग-अलग हैं, सबके वैराग्य अलग-अलग हैं, सबका पुरुषार्थ अलग-अलग है। इसलिए सबके लिए समान काल का नियम लागू नहीं है। कोई पहले, कोई पीछे।

मान लीजिए, अहमदाबाद से दिल्ली बहुत सारे लोग जा रहे हैं। सबके पास वाहन अलग-अलग प्रकार के हैं। कोई कार में जा रहा है, कोई स्कूटर पर चल रहा है, कोई बाइक पर जा रहा है, किसी के पास साइकिल है, कोई ट्रेन में जा रहा है, कोई विमान में जा रहा है, और कोई पैदल ही जा रहा है तो कोई पहले पहुँचेगा, कोई पीछे पहुँचेगा। जैसा जिनका साधन, वो उसी हिसाब से पहुँचेंगे। मोक्ष की भी यही बात है।

● यदि अच्छे कर्म करके किसी बुद्धिमान के यहाँ जन्म ले लिया, फिर आगे कर दिए घोटाले, फिर बुरे कर्म कर दिए, तो वापस नीचे। कूद जाओ वापस शूद्र परिवार में। और अधिक बुरे काम कर लिए, तो और नीचे जाओ, जैसे सुअर, बिल्ली बनो। फिर वहाँ जाके दंड भोगो। इस तरह से अप-डाउन, अप-डाउन चलता रहता है। यह सब कर्मों का फल है।

बड़ा आदमी, ऑफीसर बनकर रिश्वत लेता है, डकैती करता है, दूसरों को परेशान करता है और वो पकड़ा जाता है, तो उसको सस्पेंड भी तो कर देते हैं। फिर नीचे उतार देते हैं।

● अब पीछे पता नहीं, कितने जन्म हो गए, वो तो किसी को मालूम नहीं। हमको याद नहीं रहता, याद रखने की जरूरत भी नहीं। अब हम आज कहाँ खड़े हैं, 'मोक्ष' कितनी दूर है, हमारी ताकत कितनी है, हमारी योग्यता कितनी है, सामर्थ्य कितना है, उसको देखना है। उसको ध्यान में रखकर चल दीजिए। लक्ष्य की ओर बढ़ते रहिए, कभी न कभी तो वह हाथ में आएगा ही।

● दुःख से छूटने के लिये, मोक्ष प्राप्ति के लिए, और कोई मार्ग नहीं है। "न अन्यः पंथाः", दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मार्ग एक ही है। यही मार्ग है। अब आप इसको सरल कहो या फिर कठिन कहो, लंबा कहो, या छोटा कहो। जो भी है, हमारे सामने ही है। चलना इसी पर है। इस पर हम चलने का प्रयत्न करेंगे, तो पहुँच जाएंगे।

38. शंका- शुभ कर्म निष्काम भावना से किस प्रकार किए जाते हैं? किराने का व्यापारी अपनी दुकानदारी निष्काम-भावना से किस प्रकार कर सकता है?

☯ **समाधान**- उत्तर है:-

● जो कर्म 'भौतिक-सुख' की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं, वे 'सकाम-कर्म' होते हैं। और जो कर्म 'मोक्ष-सुख' की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं, वे 'निष्काम-कर्म' होते हैं।

● सवाल है कि किराने का व्यापारी अपनी दुकान पर जो सामान बेचता है, वो धन कमाने के लिए बेचता है, या मोक्ष प्राप्ति के लिए बेचता है? निःसंदेह धन की प्राप्ति के लिए। तो उसका यह सकाम-कर्म हुआ।

● सकाम कर्म 'कंडीशनल कर्म' हैं। मतलब, इतना रुपया दोगे, तो माल देंगे, इतना रेट नहीं दोगे, तो माल नहीं देंगे। आप इतनी फीस दोगे तो पढ़ाएंगे, नहीं दोगे तो नहीं पढ़ाएंगे, यह सकाम-कर्म है। हमारा उद्देश्य धन कमाना है, फीस लेना है। इस तरह अगर ट्यूशन फीस लेते हैं, तो वो सकाम-कर्म है।

● अगर फ्री में पढ़ाते हैं, तो निष्काम-कर्म हैं। हम क्यों फ्री में पढ़ा रहें हैं, क्योंकि हमको मोक्ष चाहिए, धन की चिंता नहीं है। जीने के लिए भगवान दो रोटी देता है, यही बहुत है। अब तक जीवन जी लिया, आगे भी जी लेंगे। भगवान खूब दे रहा है, आगे भी दे देगा। धन के लिए काम नहीं करना है, सम्मान के लिए काम नहीं करना है, भौतिक सुख के लिए काम नहीं करना है। अगर मोक्ष की प्राप्ति के लिए काम कर रहे हैं तो यह **'निष्काम-कर्म'** है।

● इसलिए व्यापारी आदि जो लोग हैं, वे तो सकाम-कर्म ही कर पाएंगे, निष्काम-कर्म तो नहीं कर पाएंगे। ऐसा तो नहीं कर पाएंगे कि सामान रखा है, जिसको लेना है, ले जाओ। जितना धन रखना है, रख जाओ। ऐसे तो दुकान नहीं चल पाएगी।

● व्यापार आदि में निष्काम-कर्म करना कठिन है। हाँ, विद्या पढ़ाने में निष्काम-कर्म हो सकता है। विद्या पढ़ाने में कोई हिम्मत वाला ऐसा हो कि कहे -"अच्छा भई, आओ बैठो, पढ़ाएंगे। जिसको कुछ देना हो, तो दे देना, नहीं देना हो, तो मत देना, कोई कंडीशन नहीं है, कोई फीस नहीं है।" उसमें तो चल सकता है।

● अगली बात-व्यापारी ने पैसे कमा लिए सौ रुपये। उसमें से तीस-चालीस रुपए खा-पी लिए, खर्च कर लिए, तीस-चालीस रुपए भविष्य के लिए जमा कर दिए। अब दस-बीस रुपए बच गए, इन्हें वह दान दे दे। इस प्रकार दिया गया दान भी निष्काम-कर्म हो सकता है।

● पूछा है कि गृहस्थ व्यक्ति निष्काम-कर्म कैसे करे? वो इस तरह से कर सकता है। कमाने के बाद जो पैसा दान में देगा, वो सकाम और निष्काम दोनों हो सकता है। यदि वो विद्यालय के लिए दान देते समय कहता है - "साहब ! मेरे नाम का पत्थर लगाओ। यहाँ लिखो कि मैंने सवा लाख रुपये दान दिया।" तो वह सकाम-कर्म हो जाएगा। और अगर वह कहता है-" मेरा नाम नहीं लेना, बताना भी नहीं, बोलना भी नहीं, लिखना भी नहीं, कुछ नहीं, चुपचाप गुप्तदान"। तो वह निष्काम-कर्म हो जाएगा।

एक मजे की बात बताऊँ - एक व्यक्ति की दोनों तरह की स्थिति थी। मतलब कुछ सकाम, कुछ निष्काम। गुरुजी ने उपदेश दिया - "भई निष्काम-कर्म करो, मोक्ष में जाएंगे।" यह सुनकर उसने सौ रुपये दान दिया और पर्ची लिखवा दी, गुप्तदान। एनाउंसमेंट होने लगी। माइक पर आवाज आई, सौ रुपये गुप्तदान आया है। जिसने सौ रूपये दिये थे, वो पीछे बैठा था। उसने अपने पड़ोसी से कहा - "तुम्हें पता है, यह सौ रुपये गुप्तदान किसका है? यह मेरा गुप्तदान है।" इस तरह वो बताना भी चाहता है और गुप्त भी रखना चाहता है। ये बात मिश्रित (मिक्सड) है, न तो पूरी तरह सकाम और न ही निष्काम।

● निष्काम-कर्म का अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि, 'जिस कर्म को करने के पीछे कुछ भी कामना न हो।' कुछ न कुछ कामना तो मन में रहेगी ही। दरअसल, दुनिया में सर्वथा-निष्काम कोई भी नहीं हो सकता। मतलब, ऐसा कोई कर्म हो ही नहीं सकता, और कोई व्यक्ति ऐसा कर्म कर ही नहीं सकता कि जिस कर्म के पीछे मन में कोई भी कामना न हो। वस्तुतः कोई न कोई कामना तो जरूर होगी। व्यक्ति को दो में से एक तो चाहिए, या तो मोक्ष चाहिए, या संसार का सुख चाहिए।

● अगर कोई व्यक्ति यह चाहता है कि मैं कुछ भी कामना न करूँ। फिर तो वो काम ही नहीं करेगा। जब इच्छा ही नहीं है, तो काम क्यों करेंगे? सुबह बिस्तर पर पड़े रहेंगे, उठेंगे ही नहीं। व्यक्ति सुबह उठता है, फिर नहाता-धोता है, रोजमर्रा के सारे काम करता है, फिर देश की सेवा करता है, धर्म करता है, प्रचार करता है, व्यापार करता है, लेन-देन करता है। इच्छा चाहे भौतिक-सुख की हो, चाहे मोक्ष-सुख की हो, लेकिन कोई न कोई इच्छा मन में जरूर होगी।

● महर्षि मनु जी कहते हैं कि – यह 'आँख झपकाना' भी बिना इच्छा के संभव नहीं है। इतना सामान्य सा कार्य है, जब यह भी बिना इच्छा के नहीं होता, तब अन्य कार्यों (यज्ञ करना, दान देना, व्यापार करना आदि कर्मों) में पूर्ण-निष्कामता (इच्छाहीनता) कैसे संभव है ?

● यदि केवल मोक्ष की इच्छा से आपने अच्छे कर्म किए हैं तो वे ही 'निष्काम कर्म' की श्रेणी में आएंगे। मोक्ष वाले कर्म न तो बुरे होते हैं और न मिश्रित। वे तो केवल शुद्ध ही होते हैं, शुभ कर्म ही होते हैं।

● भौतिक सुख की इच्छा से, चाहे आपने अच्छे कर्म किए, चाहे बुरे किए, चाहे मिश्रित किए; तीनों प्रकार के कर्म सकाम-कर्म कहलाएंगे। इस तरह सकाम कर्म तीन प्रकार के यानी अच्छे, बुरे और मिश्रित होते हैं।

अतः टोटल चार तरह के कर्म हुए, एक तो निष्काम कर्म, जो शुद्ध, शुभ कर्म, अच्छे कर्म होते हैं और तीन प्रकार के सकाम कर्म, जो शुभ, अशुभ और मिश्रित होते हैं।

39. शंका- मोक्ष की इच्छा एक कामना है, 'मोक्ष की कामना' से किया हुआ निष्काम-कर्म सकाम हो सकता है?

☯ **समाधान**– पूछना शायद ऐसा चाहते हैं कि मोक्ष की कामना भी तो एक कामना है ? यदि मोक्ष की कामना से कर्म किया गया, तो फिर वह निष्काम-कर्म कैसे हुआ ? कामना तो उसमें भी है। उत्तर हैः–

● महर्षि दयानंद जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में परिभाषा लिखी है कि – "परमेश्वर प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर जो कर्म किए जाते हैं, उसका नाम ही निष्काम कर्म है।"

● बिना कामना के तो कर्म हो ही नहीं सकता, वह असंभव है। व्यक्ति जो भी क्रिया करता है, वो कामनापूर्ण ही होती है। यह बात 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखी है। कामना तो जरूर है।

● कामनाओं में अंतर है। अगर लौकिक-सुख की कामना से किया तो वह सकाम-कर्म है और मोक्ष सुख की कामना से कर्म किया तो निष्काम-कर्म है। ऐसा जानना चाहिए।

40. शंका- क्या कार्य में 'भावना' महत्वपूर्ण होती है, इससे 'फल' में अंतर आता है?

☯ **समाधान**– जी हाँ। दो व्यक्ति आपको एक जैसी क्रिया करते हुए दिखाई देंगे, लेकिन दोनों को फल एक जैसा नहीं मिलेगा, फल अलग-अलग होगा। बाह्य-क्रिया एक जैसी होगी, पर फल में अंतर होगा क्योंकि उनकी भावना में अंतर है।

एक सैनिक ने शत्रु देश के सैनिक को मार डाला और एक नागरिक ने दूसरे नागरिक को मार डाला। हत्या दोनों ने की। बाह्य-क्रिया दोनों घटनाओं में एक जैसी है। लेकिन क्या फल दोनों को एक जैसा मिलेगा ? नहीं, अलग-अलग मिलेगा। सैनिक को ईनाम मिलेगा और नागरिक को दंड मिलेगा। दोनों में भावना का अंतर है। सैनिक की भावना है-देश की रक्षा करना और नागरिक की भावना है-अपने स्वार्थ के लिए मारना।

कर्म का फल केवल आपकी क्रिया पर ही आधारित नहीं है। क्रिया के साथ 'भावना' भी जुड़ती है, तब फल का निर्धारण होता है।

बाह्य-क्रिया एक जैसी होने पर भी अगर भावना में अंतर है, तो फल में अंतर आ ही जाएगा। सकाम-भावना से करोगे तो भिन्न फल होगा और निष्काम-भावना से करोगे तो भिन्न फल होगा। अक्षरधाम में जो घटना हुई उसमें क्या हुआ ? सैनिकों ने आतंकवादियों को मार डाला। शत्रुओं (आतंकवादियों) को मारना, यह देश की रक्षा का काम है। इसमें निःसंदेह सैनिकों को पुण्य मिलेगा। नियम है कि- बड़े से बड़ा काम भी अगर बुरे लक्ष्य के लिए किया जाए, तो ससांर उसे कोई महत्त्व नहीं देता है।

41. शंका- अन्यायपूर्वक मिले दुःख या हानि की ईश्वर क्षतिपूर्ति करता है। जैसे सेठ के यहाँ चोर ने चोरी की, इस अन्याय की क्षतिपूर्ति ईश्वर सेठ को किस प्रकार करेगा?

☯ **समाधान-** भगवान कैसे पूर्ति करेगा, कहाँ करेगा, कब करेगा, वो हम नहीं जानते। यह बात हमारी समझ में नहीं आई।

● कर्मफल तो इतना विचित्र है कि इसको कोई भी मनुष्य पूरा-पूरा नहीं जान सकता। व्यक्ति उसे बहुत मोटा-मोटा ही जान सकता है।

ईश्वर की कर्म-फल व्यवस्था, 'न्याय-व्यवस्था' बड़ा विस्तृत और जटिल विषय है, सूक्ष्म विषय है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने इस विषय पर बहुत चिन्तन किया, बहुत मनन किया और कुछ बातें जो उनको समझ में आई, वो उन्होंने बताई। फिर आगे चलकर के उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिये कि- "भई अपने बस का नहीं है, यह बहुत कठिन है। इसको कोई भी नहीं समझ सकता।"

● इतना जरूर निश्चित है कि जो भी क्षति हुई, जो भी नुकसान हुआ, उसकी पूर्ति तो मिलेगी, इसमें कोई शंका नहीं है। इस बात को एक उदाहरण से समझेंगेः-

एक सेठ के यहाँ चोरी हुई। पुलिस पीछे लग गई। चोर पकड़ा गया और चोरी में जो सामान गया था, वह सामान भी मिल गया। अब न्याय करना है, तो दो पात्र हैं हमारे सामने, एक तो सेठ और एक चोर। सेठ के यहाँ चोरी हुई, चोर ने चोरी की। अब दोनों के साथ न्यायाधीश कुछ न कुछ व्यवहार करेगा। चोर को तो न्यायाधीश जेल में डाल देगा। और जो चोरी का माल बरामद हुआ था, वो माल सेठ साहब को वापस मिलेगा। तभी तो इसे न्याय कहेंगे। यह जिम्मेदारी सरकार की और न्यायाधीश की है। अगर चोरी का माल सरकारी खजाने में चला जाए, तो सेठ कहेगा- "साहब, मेरे साथ तो न्याय नहीं हुआ। मेरी तो संपत्ति व्यर्थ में चली गई।"

● भगवान तो पूर्ण न्यायकारी है। आप भी ईश्वर को न्यायकारी मानते हैं न। तो आपकी जो क्षति हुई, वो ईश्वर पूरी नहीं करेगा क्या ? न्याय का नियम है कि जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति तो मिलनी ही चाहिए। तभी तो न्याय होगा। नहीं तो फिर, अंधेर नगरी चौपट राजा। न्याय तो तभी होता है कि जो सामान चुराया गया है, वह वापस मिले। ईश्वर भी न्यायकारी है, जिसका जो भी नुकसान हुआ, ईश्वर उसकी पूर्ति करेगा। कब करेगा, कहाँ करेगा, कैसे करेगा, यह वही जाने, यह हम नहीं जानते।

42. शंका- हम पर जो अन्याय हुआ, किसी की भी वजह से हमको जो नुकसान उठाना पड़ा, तो जो हमारा नुकसान हुआ, उसका क्या हुआ?

☯ **समाधान-** उत्तर हैः-

● जिसने हम पर अन्याय किया, चाहे माता की भूल से हुआ, चाहे पिता की भूल से हुआ, चाहे गुरु, टीचर, पड़ोसी कोई भी, चोर-डाकू आदि ने जितना दुःख हमको दिया, उतना उसका अपराध है। उस अपराध का उसको दंड मिलेगा।

● अन्याय का दण्ड चाहे समाज दे, राजा दे, सरकार दे, ईश्वर दे, जो भी दे, कोई न कोई उसको दंड देगा। अपराध का दंड समाज ने नहीं दिया, राजा ने नहीं दिया तो अंत में ईश्वर जरूर देगा। वो नहीं छोड़ने वाला। हम किसी पर अन्याय करेंगे तो ईश्वर हमको दंड देगा। कोई दूसरा हम पर अन्याय करेगा तो ईश्वर उसको दंड देगा। अन्यायकारी को दंड मिलेगा।

● दूसरी बात, जिस पर अन्याय हुआ, जिसका नुकसान हुआ, उसको कम्पन्सेशन (क्षतिपूर्ति) मिलेगा। उसके नुकसान की पूर्ति ईश्वर कर देगा। सरकार न्याय कर सकती है तो ठीक है, नहीं कर सकती, तो अंत में ईश्वर करेगा। इस प्रकार कम्पन्सेशन की गारंटी तो है, लेकिन वो भी पूरी सुरक्षा तो नहीं है न। एक बार तो मार खानी पड़ी न।

● पूरी तरह से सुरक्षा केवल मोक्ष में है। वहाँ पर कोई व्यक्ति हम पर आक्रमण कर ही नहीं सकता। अगर आपको ऐसा ठीक समझ में आता हो कि कोई हमारा नुकसान कर ही नहीं पाए तो फिर 'मोक्ष' की तैयारी करो।

● मेरी समझ में खूब अच्छी तरह आ गया है कि यहाँ संसार में कहीं भी पूरी सुरक्षा नहीं है। इसलिए मैं तो मोक्ष में जा रहा हूँ। आपको आना है तो आ जाओ। साथ-साथ करो तैयारी, पीछे-पीछे आप भी चले आओ।

● मैं अकेला मोक्ष में नहीं जाना चाहता। जो अकेला मोक्ष में जाना चाहता है, वह स्वार्थी है। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति को ईश्वर मोक्ष देता भी नहीं। मोक्ष प्राप्ति के लिए निःस्वार्थ भाव से परोपकार करना चाहिए। इसीलिए मैं परोपकार करता हूँ, और आप जैसे अनेक लोगों को मोक्ष में ले जाना चाहता हूँ। आप भी तैयारी करें।

43. शंका- पुर्नजन्म के सिद्धान्तों के व्यावहारिक-प्रमाण क्या हैं?

☯ **समाधान**- बहुत छोटे-छोटे तीन प्रश्नों का आपको उत्तर देना है।

- पहला प्रश्न- न्याय किसे कहते है ? कर्म पहले किया जाए और फल बाद में दिया जाए, यह न्याय है, या फल पहले दिया जाए और कर्म बाद में किया जाए, यह न्याय है ?

पहला उत्तर जो आपने दिया अर्थात् **न्याय है - कर्म पहले, फल बाद में।** आप अपना यह उत्तर याद रखिएगा।

- दूसरी बात-आपको इस समय जो मनुष्य शरीर मिला है, जिस शरीर में आप-हम बैठें है, यह कर्मों का फल मिला है या मुफ्त में मिला है ?

आपने बोला-"मनुष्य शरीर मिलना कर्मों का फल है।" चलिए, आपके दो उत्तर हो गए। ये दोनों उत्तर आपके बिल्कुल सही हैं। इन दोनों को याद रखिएगा।

- इन दो बातों के आधार पर एक तीसरा प्रश्न और है, इसका उत्तर और सोचिए। अब तीसरी प्रश्न यह है कि,

जिन कर्मों का फल आपको यह शरीर मिला है, वो कर्म आपने इस जन्म में तो नहीं किए, तो फिर कब किये थे?

आपने बोला-पिछले जन्म में। और फल मिला अब, इस जन्म में। तो इससे पुर्नजन्म सिद्ध हो गया कि नहीं हो गया ? यह व्यावहारिक प्रमाण है। इससे बड़ा और क्या प्रमाण चाहिए। आपने तीन बातें स्वयं अपने मुँह से बोली। मैंने तो एक भी नहीं बोली, मैंने तो सिर्फ प्रश्न किए, उत्तर आपने दिए। **तीन बातों में सारी बात सुलझ गई कि, पुर्नजन्म होता है।**

यहाँ पर एक व्यक्ति ने प्रश्न किया- कुछ बच्चे अपने पूर्वजन्म की बातें बताते हैं। क्या वह सही है ? मेरा उत्तर- आपने पूछा कि 'कुछ बच्चे बताते हैं कि पिछले जन्म में मैं जयपुर में था, आदर्श नगर में था, 41 नंबर के मकान में था।' यह एक अलग प्रश्न है। पुर्नजन्म होता है, यह तो सिद्ध हो चुका।

अब रही बात यह कि - पिछले जन्म की बात याद आती है, या नहीं ? इस विषय में 'सत्यार्थ प्रकाश' के नौंवे समुल्लास में लिखा है कि **"कोई पिछले जन्म की बात याद करना भी चाहे, तो भी नहीं कर सकता।** " सत्यार्थ प्रकाश में इतना भी साफ लिखा है कि, यह भगवान की बड़ी अच्छी व्यवस्था है कि हम पिछले जन्म की बातें भूल जाते हैं, इसलिए जी रहे हैं।

एक ही जन्म में आदमी इतना परेशान है कि वह दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है। और अगर व्यक्ति को पिछले 10-20 जन्मों के दुःख और याद आ जाएं, तो बताओ वो कैसे जिएगा? वह तो पिछले जन्म के दुःखों को देख-देख के वैसे ही मर जाएगा।

जापान में एक व्यक्ति ने एक पुस्तक लिखी - "हाउ टू सुसाइड ईज़िली" अर्थात् "आसानी से आत्महत्या कैसे करें।" उस लेखक से पूछा गया - "क्या आप जनता को आत्महत्या की प्रेरणा देना चाहते हैं ?" लेखक ने उत्तर दिया - "मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति अपने जीवन से दुःखी हो गया। उसको अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं सूझा। अन्त में उसने सोचा, ऐसे जीवन से तो मृत्यु अच्छी। यह सोचकर उसने आत्महत्या कर ली। पड़ोस का मामला था। सूचना मिलने पर मैं उसके घर गया। उसकी लाश देखी। बेचारे की 12 घण्टे तक जान ही नहीं निकली। क्योंकि बहुत गलत तरीके से उसने मरने की कोशिश की थी। उसे पता नहीं था कि इस तरीके से मरने पर उसे 12 घण्टे तक तड़पना पड़ेगा। बेचारे को मरने में बहुत कष्ट भोगना पड़ा।"

थोड़ा रुक कर वह बोला - "कुछ दिनों बाद एक और पड़ोसी ने आत्महत्या की। वह भी 10 घण्टे तक तड़पा। ऐसे कुछ-कुछ दिनों बाद मुझे 15-20 घटनाओं को देखने का अवसर मिला। सभी मरने वाले घण्टों तक मरने से पहले तड़पते रहे। उन घटनाओं को देखने से मेरे मन में यह पुस्तक लिखने का विचार आया। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि लोग मेरी पुस्तक पढ़कर आत्महत्या करें। बल्कि मैंने यह पुस्तक उन लोगों के लिए लिखी है, जिन्हें अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं मिलता। जो मरने का अन्तिम निर्णय कर चुके हैं। उन लोगों को मैं कहना चाहता हूँ कि यदि उन्हें मरना ही है, तो वे आसानी से मरें। तड़प-तड़पकर, कष्ट भोग कर न मरें।"

इसलिए मैं कहता हूँ कि पिछले जन्मों को याद न करें, तो अच्छा है। अन्यथा लोग या तो आत्महत्या करेंगे या दूसरों को मारेंगे।

44. शंका- क्या व्यक्ति को बुरे कर्म करने के पश्चात अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा अथवा कुछ योनियों के पश्चात् वापस मानव जन्म मिलेगा?

☯ **समाधान**- उत्तर है:-

- एक व्यक्ति ने 20 हजार रुपए की चोरी की, दूसरे व्यक्ति ने दो अरब रुपये की चोरी की। वस्तुतः चोरी दोनों ने की, इसलिए दोनों अपराधी हैं। निःसंदेह दोनों को दण्ड मिलेगा।
- क्या दण्ड की मात्रा दोनों की समान रहेगी, या कम-अधिक ? दण्ड की मात्रा कम-अधिक होगी। यदि दोनों को बराबर दण्ड दिया जाए, तो यह न्याय थोड़े ही होगा, यह तो अन्याय होगा।

एक ने अपराध थोड़ा किया, तो उसको थोड़ा दण्ड। एक ने अपेक्षाकृत अधिक अपराध किया, तो उसको अधिक दण्ड, यह न्याय है।

किसी ने 20 हजार पाप किए तो किसी ने 50 हजार। उन दोनों को ही 84 लाख योनियों में डाल दें, तो फिर यह न्याय कहाँ होगा ? जिसने जितना अपराध किया, उतनी ही योनियों में जाएगा, दण्ड भोगेगा, धक्का खाएगा और लौटकर वापस मनुष्य बनेगा।

- जिसने थोड़ा अपराध किया, वह थोड़ी योनियों में धक्का खाएगा। जिसने ज्यादा अपराध किए, वो ज्यादा योनियों में जाएगा।
- बताते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ हैं, पता नहीं कहाँ-कहाँ नम्बर लगेगा। कई लोग समझते हैं कि एक बार मनुष्य मर गया तो पूरे चौरासी लाख का चक्कर काटकर फिर नंबर आएगा इंसान रूप में। यह गलत है। क्यों गलत है ? इसे जानते हैं:-

क्या सब लोग बराबर मात्रा में पाप करते हैं ? नहीं न। तो सब को बराबर दंड क्यों मिलेगा ? जब पाप कम-अधिक करते हैं, तो फल भी कम-अधिक होना चाहिए। अगर एक मरा वो भी चौरासी लाख योनियों में डाल दिया, दूसरा मरा, वो भी चौरासी लाख योनियों में, तो यह न्याय नहीं है। जिसने जितने कर्म किए हैं, उसको उतना दंड मिलेगा। जिसने बीस प्रतिशत पाप अधिक किए,उसको उतने कर्मों का दंड भोगने के लिए दस-बीच, पच्चीस-पचास योनियों में चक्कर काटना पड़ेगा। इसलिए सब को 84 लाख योनियों में नहीं जाना। वो कितनी योनियों में चक्कर काटेगा, वो भगवान जाने, हम नहीं जानते।

९०

45. शंका- क्या योनियों की संख्या 84 लाख है?

☯ **समाधान**- इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण तो मेरी जानकारी में नहीं है। मैंने सब शास्त्र नहीं पढ़े। कहीं शास्त्रों में लिखा हो भी सकता है। परम्परा से तो यही सुनते आ रहे हैं। लेकिन पक्का नहीं कह सकते कि - 84 लाख हैं, या 80 लाख हैं। जितनी भी हों, फिर भी 'लाखों योनियाँ हैं', ऐसा मानने में तो कोई दोष प्रतीत नहीं होता।

46. शंका- जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना क्या निश्चित होती है? पूर्वजन्म के कर्म फलित होते हैं, ऐसा कहते हैं? कृपया मार्गदर्शन कीजिए?

☯ **समाधान**- उत्तर है:-

- देखिए, जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना निश्चित नहीं होती। हमारे जीवन में जो-जो घटनाएं घटती जा रही हैं, वो पहले से निश्चित नहीं हैं।
- कभी भी, कुछ भी, घटित हो सकता है। अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। पॉजीटिव भी हो सकता है, नेगेटिव भी हो सकता है। हमें सुख भी मिल सकता है, दुःख भी मिल सकता है। सारे जीवन में सुख ही सुख नहीं मिलते। कुछ दुःख भी मिलते हैं। हम दुःख नहीं भोगना चाहते हैं। फिर भी दुःख आ जाते हैं, और भोगने पड़ते हैं।
- बहुत सारे दुःख ऐसे होते हैं, जो हमारे कर्मों के फल नहीं होते, फिर भी भोगने पड़ते हैं। पूर्वजन्म के कर्मों का फल कब और कैसे मिलता है, इस बारे में बहुत भ्रांति है।
- कितने ही सुख-दुःख ऐसे होते हैं, जो पूर्वजन्म के कर्मों का फल नहीं हैं। और उन सुख- दुःख को लोग पूर्वजन्म का कर्म-फल मान लेते हैं।

९१

कल्पना कीजिए कि एक सेठ के यहाँ चोरी कर, दो लाख रुपये की संपत्ति चोर ले गए। सेठ ने सब सुरक्षा भी की थी, उसके बावजूद चोर आए, उन्होंने सब ताले तोड़ दिए, वे सब सामान ले गए। इस पर लोगों ने कहा कि – "इस सेठ ने पिछले जन्म में किसी का माल खाया होगा, दो लाख किसी का हड़प गए होंगे। अब इसको पिछले जन्मों के कर्मों का फल मिला है, इसके यहाँ चोरी हो गई।"

दरअसल, यह सोचना सही नहीं है। वास्तव में सेठ के यहाँ जो चोरी हुई, वो उसके पिछले कर्म का फल नहीं है। क्यों? अच्छा थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि सेठ के यहाँ जो चोरी हुई, वो सेठ के पिछले जन्म के कर्म का फल है। **कर्म-फल के कुछ मोटे-मोटे नियम हैं।** उन नियमों को जानते हैं। उदाहरण के लिए,

(1) **पहली बात –** न्याय करने के लिए पहली शर्त यह है कि जज साहब को पूरा मामला पता होना चाहिए। कर्म का पता होना चाहिए, अपराध का पता होना चाहिए। जो व्यक्ति कर्म का फल देता है, न्यायाधीश बनता है, तो यह आवश्यक है, कि **वो कर्म को जानता हो, तभी तो वो ठीक फल दे सकता है।**

क्या न्यायाधीश बिना कर्म को जाने ही ठीक फल दे सकता है? नहीं। तो इसलिए कर्म को जानना आवश्यक है। जब तक कर्म को नहीं जानेगा, जब तक मुकदमा नहीं सुनेगा, तो ठीक से न्याय कैसे करेगा? कौन अपराधी है, उसने अपराध कैसे किया, कब किया, कहाँ किया, कितना किया, वो सब प्रमाण (एवीडेन्स) होना चाहिए। न्यायाधीश जब तक ये सारी बातें नहीं जान लेगा, तब तक क्या वह ठीक-ठीक न्याय कर सकेगा? नहीं कर सकता।

(2) **दूसरी बात –** जितना अपराध हुआ, उसका दण्ड कितना दिया जाए। पेनल कोड (दण्ड संहिता) में क्या लिखा है? इतने अपराध का इतना दण्ड दो। **जज साहब को दण्ड संहिता का भी पता होना चाहिए।** अगर दण्ड का पता नहीं कि कितना दण्ड हो, तो भी वो न्याय नहीं कर पाएंगे। कर्म-फल के अनुसार ठीक-ठीक न्याय करने का दूसरा नियम यह हुआ।

(3) **तीसरी बात** – क्या प्रत्येक व्यक्ति को दंड देने का अधिकार है? नहीं। **निश्चित व्यक्तियों को दंड देने का अधिकार है, सबको नहीं, और वो ही कर्म का फल दे सकते हैं।** न्यायाधीश महोदय को दण्ड देने का अधिकार दिया गया है। सड़क पर चलता हुआ व्यक्ति अपराधी को दण्ड नहीं दे सकता। वो ही अपराधी को दण्ड देंगे, जिनको अपराधी को दण्ड देने का अधिकार है।

चोर वाली घटना पर इन तीन नियमों को लागू कीजिए। चोरों ने सेठ के यहाँ चोरी की, दो लाख की संपत्ति ले गए। यह सेठ के पिछले जन्म के कर्मों का फल है, ऐसा मानते हैं, तो ये तीनों नियम वहाँ लागू करके देखिए।

क्या चोरों को पता है कि पिछले जन्म में सेठ ने कौन सा अपराध किया था, कितना बुरा किया, जिसका फल हम उन्हें देने के लिए आए हैं। जब चोर को सेठ के कर्म का ही पता नहीं, तो बताइए, कर्म-फल कहाँ लागू हुआ?

दंड का भी चोर को नहीं पता। वो कैसे निर्णय करेगा कि दो लाख की चोरी करूँ कि तीन लाख की या ढाई लाख की चोरी करूँ। कितना दंड दूँ, उसको क्या मालूम। **सेठ साहब ने कौन सा अपराध किया था, उसका चोर को पता नहीं, कितना किया था, यह पता नहीं, कितना दंड दूँ, वो भी नहीं पता।** चोरों को नहीं मालूम कि सेठ ने कौन सा अपराध किया था, तो वो फल कैसे माना जाये? जब दण्ड का पता नहीं, तो न्याय नहीं हुआ, इसलिए वह 'कर्म-फल' नहीं हुआ।

और दूसरी बात यह कि, **क्या चोरों को सेठ के पूर्व जन्म के कर्म का दंड देने का अधिकार है? उत्तर है-नहीं।** इस प्रकार न्याय की कसौटी पर तीनों बातें फेल हो गईं।

(4) **चौथी बात – जो कर्म का फल दिया जाता है, ठीक-ठीक न्याय से दिया जाता है, उसको चुपचाप भोगना पड़ता है, उसका विरोध नहीं कर सकते।**

किसी अपराधी ने अपराध किया, न्यायाधीश ने उसको दंड दिया कि तीन माह जेल में रहो। अब तो तीन माह उसको जेल में रहना ही पड़ेगा। चुपचाप उसको दंड तो भोगना ही पड़ेगा। उसका विरोध तो कोई कर ही नहीं सकता। यदि यह नियम आपको स्वीकार है तो चौथा नियम इस घटना पर लागू करते हैं-

चोरों ने सेठ के यहाँ दो लाख की चोरी की। इस पर कुछ लोगों ने कहा कि – "यह तो सेठ के पिछले जन्म का कर्म-फल है। इसलिए सेठ को चुपचाप दंड भोगना चाहिए, चोरी का विरोध नहीं करना चाहिए, पुलिस में रिपोर्ट नहीं करना चाहिए।"

यदि कर्म-फल मानते हैं, तो चुपचाप भोगो। पुलिस में रिपोर्ट करने जायेंगे, तो फिर कर्म-फल कहाँ हुआ? कर्म-फल का तो विरोध हो नहीं सकता, और आप तो चोरी का विरोध कर रहे हो। अगर कर्म-फल मानते हैं, तो पुलिस में नहीं जाना, कोर्ट में नहीं जाना, मुकदमा नहीं करना। कोई

अपील नहीं करना कि, हमारे यहाँ चोरी हुई। आपका कर्म-फल है, शाँति से उसे भोगो।

(5) पाँचवी बात - एक न्यायाधीश महोदय ने एक आतंकवादी को फाँसी का दंड दिया-"इसको फाँसी पर चढ़ा दिया जाए। इसने बहुत सारे निर्दोष लोगों को मार डाला।" तो जल्लाद ने उस आतंकवादी को फाँसी पर चढ़ा दिया। न्यायाधीश महोदय के आदेश का पालन करने पर जल्लाद को वेतन मिलेगा या दंड मिलेगा?

जल्लाद ने आदेश का पालन किया है, तो उसको वेतन मिलेगा, ईनाम मिलेगा। ऐसे ही चोर ने भी सेठ के यहाँ चोरी की, उसने भगवान के आदेश का पालन किया तो उसको ईनाम दिलवाओ। जो लोग कर्मफल मानते हैं, उनको चोर को ईनाम दिलवाना चाहिए, कोर्ट में मुकदमा नहीं करना चाहिए। अगर स्वीकार हो, तो आप मान सकते हैं कि यह कर्मफल है।

इस कानून से तो आप एक घंटा भी नहीं जी सकते। जो भी चोर चोरी करे, उसको ईनाम दिलवाओ। अपने-अपने नगर में अहमदाबाद में, उदयपुर में, जबलपुर में, मुम्बई में, दिल्ली में एक घंटे के लिए यह नियम लागू कर दो कि जो भी चोर चोरी करेगा, उसको ईनाम मिलेगा, फिर देखो क्या होता है। आपका जीना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए यह बात सत्य नहीं है।

हमें जो सुख-दुःख मिलता है, उसके दो भाग हैंः-

(एक) व्यक्ति के अपने कर्मों का फल है। और

(दूसरा) अन्यों के कारण से भी हमको बिना हमारे दोष (गलती) के दुःख मिलता है।

अगर पूरा का पूरा हमारे ही कर्मों का फल मान लिया जाए, तो अपराधी तो दुनिया में कोई भी नहीं है। तो फिर किसी पर कोर्ट केस क्यों?

किसी सेठ के यहॉ पर चोरी हुई, और उसे यह माना जाए कि सेठ के किसी पूर्वजन्म का दोष होगा। फिर चोर के ऊपर मुकदमा क्यों? उसने तो कर्म का फल दिया। उसको तो वैसे वेतन दो, जैसे न्यायाधीश को दिलवाते हैं। नहीं दिलाएंगे।

सेठ के यहाँ चोरी हुई, यह उसका कर्म-फल नहीं है, तो फिर वह क्या है? इसका नाम है - 'अन्याय'। सेठ के साथ अन्याय हुआ। उसने मेहनत से धन कमाया, अपने धन की सुरक्षा भी की। तब भी चोर

लोग ताला तोड़कर सामान ले गए। यह सरासर अन्याय है। इससे सिद्ध हुआ कि, जितने भी जीवन में सुख-दुःख मिलते हैं, वो सब के सब हमारे कर्मों का फल नहीं होते हैं। कुछ कर्मों का फल है, और कुछ अन्याय से भी हमें मिलता है।

अन्याय किसको कहते हैं? बिना कर्म किए दुःख देना, अथवा किए गए कर्म के अनुसार फल नहीं देना, कर्म से अधिक फल दे देना, या कम फल देना, उसका नाम अन्याय है और कर्म के अनुसार फल दे देना, वो न्याय है।

थोड़े दूसरे शब्दों में और खोल देते हैं किः-

बिना अपराध के, बिना दोष के, किसी को दुःख दे देना अथवा सुख दे देना, भी अन्याय है।

दुःख वाला उदाहरण पकड़कर चलते हैं। बिना अपराध के किसी को दुःख दे देना, अन्याय है। और अपराध करने पर उसके अपराध के अनुसार उसको दंड देना, यह न्याय है।

क्या आप लोग मानते हैं कि, संसार में अन्याय होता है? होता है। इसका अर्थ ये हुआ कि, कुछ घटनाएं संसार में ऐसी भी हैं, जिनमें निर्दोष व्यक्तियों को दुःख दिया जाता है। अगर आप यह मानते हैं कि अन्याय होता है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि, बिना दोष के भी दुःख मिलता है। वो ही तो अन्याय है।

चोरों ने सेठ के यहाँ जो दो लाख रुपये की चोरी की, यह था-अन्याय। सेठ निर्दोष था। उसका कोई दोष नहीं था। फिर भी चोरों ने सेठ के यहाँ चोरी करके सेठ को दुःख दिया। इसका नाम अन्याय है। यह पिछला कर्म-फल नहीं है।

अब इसका विश्लेषण करने के लिए किसी भी घटना को देखिए। उसका अच्छी तरह से परीक्षण कीजिए और यह विचार कीजिए कि, यह जो किसी व्यक्ति को दुःख मिला, वह न्याय से मिला, या अन्याय से मिला? अगर पता चले कि, न्याय से मिला, तब तो वह है कर्म फल। कारण कि, "जो न्याय से सुख-दुःख मिलता है, वो तो कर्म-फल होता है।" और जो अन्याय से मिलता है, वो कर्म-फल नहीं होता है। सेठ के यहाँ चोरी हुई, दो लाख का सामान चोर ले गए। क्या यह न्याय हुआ? नहीं हुआ न। तो समझ लेना, यह सेठ का कर्म-फल नहीं है।

न्याय के विरुद्ध अपील (केस) नहीं होती है। न्याय को तो स्वीकार करना पड़ता है। जब अन्याय होता है, तो उसके विरुद्ध अपील होती है,

जैसे चोर के विरुद्ध कोर्ट में अपील होती है। सेठ जी पुलिस में शिकायत करते हैं, कोर्ट में केस करते हैं कि हमारे यहाँ चोरी हुई, हमारा माल वापस दिलाओ। तो जब अपील करते हैं, मतलब वो अन्याय हुआ।

कर्म-फल के कुछ नियम हैं। उन नियमों को समझ लेंगे, तो आप बहुत सी घटनाओं में इस बात का निर्णय कर लेंगे कि यह कर्म-फल हुआ, या अन्याय हुआ।

इस एक उदाहरण से आप बीस बातें समझ लीजिएगा। रेल में जा रहे हैं, दुर्घटना हो गई, पाँच लोग मर गए, बीस लोग घायल हो गए, शेष ठीक-ठाक बच गए। यहाँ लोग कहेंगे- "जो पाँच मर गए, इनकी मौत यहीं लिखी थी। यह इनका कर्म-फल था।" यह बिल्कुल झूठ बात है, बिल्कुल गलत बात है। इसका भी यही उत्तर है, जो सेठ की चोरी वाला है। अगर पाँच की मौत यहीं लिखी थी, तो किसने लिखी थी? ईश्वर ने। क्या ईश्वर जो लिखता है, वो सही लिखता है, या गलत लिखता है? सही लिखता है, और वो कर्म-फल के अनुसार लिखता है। यह तो उनका कर्म-फल था, यहीं उनको मरना था, अगर यही मानते हैं तो रेल-इंजन के ड्राइवर को ईनाम दो। उसने भगवान के आदेश का पालन किया है। इनकी मौत आयी थी, इसलिए उसने इनको मार दिया। देंगे ईनाम? नहीं देंगे। जो चोर वाली घटना में उत्तर है, वही इस घटना का भी उत्तर है। चाहे वो ट्रक एक्सीडेंट हो, चाहे प्लेन एक्सीडेंट हो, कोई भी दुर्घटना हो।

किसी भी दुर्घटना में कोई भी व्यक्ति मर जाता है, घायल हो जाता है, वो पूर्व में किए गए कर्मों का फल नहीं है। ट्रक वाले ने शराब पीकर बेलगाम गाड़ी चलाई, ठोंक दिया। तो हाथ-पाँव टूट गए, व्यक्ति की मृत्यु हो गई, यह कर्म-फल नहीं है। यह अन्याय है। ऐसे ही सभी समस्याओं को आप सुलझा लेंगे।

यहाँ पर एक श्रोता ने पूछा कि - "एक बच्चा पैदा होते ही चार घण्टे में मर गया तो क्या वह इतनी ही आयु लेकर आया था?" तब मैंने इसका उत्तर दिया कि, यह कठिन (उलझा हुआ) प्रश्न है। इसका तो बहुत विश्लेषण करना पड़ेगा। डॉक्टर की भूल थी कि नहीं थी, इसका निर्णय करना बहुत कठिन है। बच्चे माता-पिता की भूल से भी मरते हैं, गलत दवाई से भी मरते हैं।

हमारी भूल हमें पकड़ में नहीं आती हैं। कैसे होती है भूल? एक रोगी आई.सी.यू. में था। कभी होश में आता था, तो कभी बेहोश हो जाता था। ऐसे-ऐसे झोले खा रहा था जीवन-मृत्यु के बीच में। बीच में राउण्ड पर

डॉक्टर साहब आए, उन्होंने चेक किया और डिक्लेयर (घोषित) कर दिया कि "सिस्टर ले जाओ, रोगी मर गया है।" इतने में वो रोगी होश में आ गया। और उसने सुन भी लिया कि डॉक्टर साहब ने बोल दिया कि रोगी मर गया। इतने में रोगी मरी-मरी सी आवाज में बोला - "डॉक्टर साहब, मैं अभी मरा नहीं हूँ, जिन्दा हूँ।" तो नर्स ने डॉटकर कहा-"चुप रहो, डॉक्टर को तुमसे ज्यादा मालूम है।" अब बताइए, डॉक्टर को ज्यादा मालूम है या रोगी को?

तात्पर्य है कि, डॉक्टर भी मनुष्य है, परमात्मा नहीं है। उससे भी भूल हो सकती है, गलती हो जाती है। केमिस्ट की भूल हो सकती है। कभी एक्सपायरी डेट की दवा दे दी। और जो अनेक नियम पालन करने पड़ते हैं, उनमें भूल हो जाती है। गर्भावस्था में माता ने खाने-पीने में भूल कर दी, उठने-बैठने में भूल कर दी, झटका लग गया। छोटे बालक की मृत्यु के पता नहीं कितने कारण हो सकते हैं। वो व्यक्ति भूल जाता है कि हमने कहाँ गड़बड़ की। और कहता है कि - "साहब मैंने भूल कहाँ की।" जबकि वह की होती है उसने। कभी वह भूल छुपाने की कोशिश करता है। ऐसे बहुत सारे कारण होते हैं।

किसी भी घटना का विश्लेषण करते समय यह ध्यान देना है कि जो दुःख मिल रहा है, वो न्याय से मिल रहा है, या अन्याय से। कसौटी याद रखिएः-

यदि न्याय से दुःख मिल रहा है, तो कर्म-फल, और अन्याय से मिल रहा है तो कर्म-फल नहीं।

सेठ के यहाँ चोरी हुई, यह अन्याय से उसको दुःख दिया। यह कर्म-फल नहीं है।

चोर पकड़ा गया, चोरी करने के बाद, उसको छह माह की जेल हुई या एक वर्ष की जेल हुई। यह क्या हुआ? यह न्याय हुआ। जो न्याय है, वो कर्म-फल है। जिसने चोरी की, उसको जेल हुई। दूसरे ने चोरी नहीं की, उसको जेल नहीं हुई।

चोरी की किसी और ने, लेकिन जेल में गया कोई दूसरा, तो इसे अन्याय कहेंगे।

ऐसे भी किस्से बहुत आते हैं। एक व्यक्ति ने किसी का खून कर दिया और वह बीस साल तक नहीं पकड़ा गया, खुला घूमता रहा। बीस साल बाद हत्या की एक और घटना हुई, और इस बार हत्या किसी दूसरे ने की, तथा यह निर्दोष होते हुए पकड़ा गया। न्यायाधीश ने उसको जेल

कर दी कि यह हत्यारा है। इस पर लोगों ने कहा – "इसको बीस साल पहले वाली घटना का दंड अब मिला है।" यह बिल्कुल झूठ बात है।

पहले बीस साल वाली घटना में वो दोषी था, तब उसको कर्म का दंड नहीं मिला। जबकि दूसरी घटना में वह दोषी नहीं था। निर्दोष होने पर भी उसको दंड मिला, जबरदस्ती उसको जेल हो गई। दोनों जगह गलत हुआ। यह पिछली हत्या का दंड (कर्मफल) नहीं है। वो मामला अलग था, यह मामला अलग है। वहाँ मरने वाला कोई और था, यहाँ मरने वाला कोई और है। दो अलग-अलग केसेस हैं।

(6) **छठा नियम – यदि कर्म करें, तो फल अवश्य मिलेगा।** उसमें छूट-छाट कुछ नहीं। जो कर्म है, उस कर्म को देखिए। उस कर्म का फल देखिए। उस कर्म का फल से संबंध जोड़कर देखिए कि उस व्यक्ति को जो दंड मिल रहा है, वो उस कर्म से संबंधित है, या नहीं। यदि कर्म से संबंधित है, और ठीक न्याय से फल मिल रहा है, तब तो है वह कर्म-फल।

जो कर्मफल के नियम हैं, वो लागू कीजिएगा। अच्छे कर्म का कैसा फल – 'अच्छा फल'। और बुरे कर्म का कैसा फल – 'बुरा फल'। और कर्म ही नहीं करे तो ? 'कोई फल नहीं'। अब इसने यहाँ दूसरी घटना में कर्म तो किया ही नहीं, तो फल किस बात का ?

(7) **सातवाँ नियम – पहले कर्म, बाद में फल ।** उस खूनी व्यक्ति का कर्मफल दण्ड न दिया जाने से जमा हो गया। पुलिस ने उसको नहीं पकड़ा, प्रकरण अदालत नहीं पहुँचा, इसलिए उसको दंड नहीं मिला। अब या तो न्यायाधीश बीस साल पहले वाली फाइल खोले। उसकी फिर से रिसर्च हो कि बीस साल पहले जो हत्या हुई थी, उसका हत्यारा कौन है ? और ढूँढ-ढाँढ के उसी केस का दंड उसको दे, तब तो ठीक है। पर यहाँ तो, केस किसी और का चल रहा है, और दण्ड उसे मिल रहा है। उसका तो केस चल ही नहीं रहा है।

जिन घटनाओं का दंड यहाँ न्यायाधीश और सरकार ने नहीं दिया, नहीं दे पाए, पकड़ में नहीं आए, वो व्यक्ति के खाते में जमा रहेंगे। उनका फल ईश्वर अंत में देगा। इस प्रकार से न्याय-अन्याय को समझना चाहिए।

47. शंका- जीवात्मा भविष्य में जो विचार करेंगे, उसका ज्ञान ईश्वर को पहले से हो सकता है या नहीं?

☯ **समाधान-**

● यह तो ईश्वर को पता है कि चुपचाप खाली तो कोई जीवात्मा बैठता नहीं, भविष्य में वह कुछ तो सोच-विचार करेगा।

● किस-किस तरह के विचार जीवात्मा कर सकते हैं, जीवात्माओं की घटिया से घटिया और बढ़िया से बढ़िया क्या-क्या थिंकिंग हो सकती है, वो पूरी सूची भगवान के पास में पहले से है।

● यह कभी नहीं हो सकता कि जीवात्मा ऐसा कोई विचार कर डाले, जिसे जानकर भगवान को बड़ा आश्चर्य हो कि – "अच्छा ! जीवात्मा ऐसा भी सोच सकता है, यह तो आज ही पता चला।" ऐसा कभी नहीं होगा कि जीवात्मा कोई ऐसा विचार या कार्य कर डाले, जो ईश्वर के लिए नया हो।

● **जीवात्मा कुछ भी विचारे, उसकी 'ए टू जेड' पूरी लिस्ट भगवान के पास है।** उसकी जानकारी में है, क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है, गॉड इज ओम्नीशियैन्ट।

● अब खास समझने की बात यह है कि **यह पहले से तयशुदा (प्री-डिसाइडेड) नहीं है कि कौन जीवात्मा, कब क्या सोचेगा ? इसलिए ईश्वर को यह पहले से पता नहीं।** जीवात्मा जो कुछ भी सोचे, उसकी स्वतंत्रता है। पर वो जो भी सोचेगा, भगवान की लिस्ट में जरूर है। वह उससे बाहर नहीं सोच सकता। जीवात्मा की पूरी क्षमता ईश्वर को मालूम है।

48. शंका- मनुष्य ने इतने अविष्कार किये हैं। क्या ईश्वर यह पहले से जानता था, या वह आश्चर्य करता है?

☯ **समाधान–** मनुष्य क्या कर सकता है, यह ईश्वर पहले से जानता है। मनुष्य के किसी काम से ईश्वर को आश्चर्य नहीं होता। उदाहरण के लिए, यदि मनुष्य ने ट्रैक्टर का अविष्कार कर खेती करना शुरु किया, तो यह बात ईश्वर पहले से जानता था। परन्तु ईश्वर यह भी जानता था कि हल से खेती करने में ज्यादा फायदा होगा और ट्रैक्टर से कम। ईश्वर सर्वज्ञ है। उसके पास अच्छे-बुरे कर्मों की पूरी सूची है। मनुष्य या जीवकृत कोई भी कर्म ईश्वर के लिए नया नहीं है।

ईश्वर हमेशा अच्छा काम करने के लिए कहता है, कठिनाइयों से बचने के लिए उपदेश देता है। वह जानता है कि, लोग चोरी, डकैती, लूट-मार, शोषण व अन्याय करेंगे, पर फिर भी ईश्वर सृष्टि बनाता है और सुझाव भी देता है। वह अच्छे और बुरे कर्मों का परिणाम भी बता देता है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह ईश्वर की बात माने या न माने। यदि वह नहीं मानता, तो उसे दण्ड भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

49. शंका- ईश्वर के ज्ञान में केवल आवृत्ति होती रहती है, सर्वज्ञ ईश्वर को इसकी क्या आवश्यकता है?

☯ **समाधान–** एक व्यक्ति ने चोरी की तो उसके एकांउट में केवल इतना लिखा जाएगा कि इसने चोरी की। ईश्वर केवल यह आवृत्ति करता है, कि इसने चोरी की। ईश्वर को तो पता है कि मनुष्य चोरी कर सकता है। चोरी के कर्म की आपके कर्मफल के खाते यानी एकाउंट में एन्ट्री (दर्ज) करने की आवश्यकता है।

जीव द्वारा दान दिया जाना ईश्वर के लिए कोई नया कर्म नहीं है। जब कोई व्यक्ति दान देता है, तो ईश्वर दान की, कर्म रूपी आवृत्ति करता है। इस व्यक्ति ने दान दिया, चलो इसके एकांउट में इस काम की एन्ट्री करो। बस इतना ही। एन्ट्री करने के लिए उसको आवृत्ति करनी होती है, और कोई कारण नहीं है।

ईश्वर चेतन तत्त्व है। जब चेतन तत्त्व के सामने कोई कर्म होता है, तब वह उसको देख या जानकर कुछ न कुछ विचार करता ही है। यदि वह कर्म उसकी जानकारी में पहले से हो, तो उसे 'ज्ञान की आवृत्ति' कहते हैं। और यदि नई जानकारी हो, तो उसे 'ज्ञान में वृद्धि'

कहते हैं। ईश्वर के लिये जीवकृत कोई भी कर्म नया तो है नहीं। इसलिए जीवकृत कर्मों को जानकर ईश्वर के 'ज्ञान की आवृत्ति' होती रहती है।

यह आवृत्ति इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना ईश्वर 'कर्मों का हिसाब ठीक से रखना और न्यायपूर्वक कर्मों का ठीक-ठीक फल देना' नहीं कर पाएगा। इसलिए ईश्वर के ज्ञान की आवृत्ति होती रहती है।

50. शंका- क्या कोई हमारा भविष्यफल बता सकता है?

☯ **समाधान–** उत्तर है:-

- गणित में नियम है:- संभावना का नियम (लॉ आफ प्रॉबेबिलिटि)। ये ज्योतिषी जितनी भी भविष्यवाणियां करते हैं, वो सारी लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि पर आधारित है। लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं, फिर उसने नया क्या बता दिया ?

एक विद्यार्थी परीक्षा में बैठा है। वो या तो पास होगा या फेल होगा। सौ विद्यार्थी परीक्षा में बैठे हैं। क्या परीक्षा में बैठे सारे के सारे विद्यार्थी फेल हो जाएंगे? कुछ तो पास होंगे, कुछ की तो पास होने की संभावना है। यह है 'संभावना का नियम।' वहाँ 'संभावना का नियम' काम करता है। यदि कोई व्यक्ति बीस संभावनाएँ व्यक्त करता है तो कोई तो सच निकलेगी। वहाँ यह नियम लागू होता है, न कि भविष्यवाणी।

- इस संभावना के नियम पर ये ज्योतिषी भविष्यफल बताते हैं। कथित वचनों में कुछ तो ठीक (सच सिद्ध) होना ही है। अगर सारे विद्यार्थी जाकर ज्योतिषी से पूछें कि - हम पास हो जाएंगे या फेल हो जायेंगे। संभावना के नियम के आधार पर, मान लीजिए ज्योतिषी उन सबको यह कह दे कि- तुम पास हो जाओगे या सारे के सारे फेल हो

जाओगे, तो क्या, सौ में से सौ पास या फेल हो जाएंगे? नहीं होंगे न। कुछ तो पास होंगे, चालीस, पचास, साठ कुछ तो पास होंगे ही। जो पास हुए, वे संभावना के नियम से पास हुए।

● जो पास हुए, क्या ज्योतिषी के कहने पर पास हुए? वे अपनी मेहनत से पास हुए। सारे के सारे इतने फिसड्डी नहीं होते हैं कि फेल हो जाएँ? जो मेहनत करते हैं, वो पास होते हैं, जो नहीं करते वो फेल होते हैं।

● ज्योतिषियों को कुछ नहीं मालूम, इनके चक्कर में नहीं आना। लोगों में ऐसी भ्रांति फैल गई कि फलाने ज्योतिषी ने बताया था, इसलिए पास हो गए। अच्छा उसने सबको पास होने को बोला था, फिर बाकी चालीस जो फेल हो गए, उनका क्या ? उसका क्या जवाब है? उसका कोई जवाब नहीं। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई-लिखाई करने या न करने से पास-फेल होते हैं। उस ज्योतिषी के कहने पर नहीं होते।

● अखबार में भविष्य भी नहीं पढ़ना चाहिए। इसको पढ़ने से नुकसान होता है। क्या नुकसान होता है? एक व्यक्ति ने अखबार पढ़ा। उसकी मेष राशि थी। अखबार में लिखा था कि "मेष राशि वालों को शनिवार को दुर्घटना की संभावना।" वह अच्छा ड्राइवर था, बढ़िया ड्राइविंग करता था। पर उसने पढ़ लिया, तो सुबह से ही नर्वस हो जाएगा। और न होता हो एक्सीडेंट, फिर भी ठोंक देगा। क्योंकि पेपर में लिखा है कि आज तो दुर्घटना होनी ही है। अब न पढ़ता तो नहीं ठोंकता। पढ़ने के कारण बेचारा सुबह-सुबह घबरा गया। इसलिए अखबार में भविष्य नहीं पढ़ना चाहिए, सुनना भी नहीं चाहिए। बिल्कुल बेकार की बातें हैं, व्यर्थ की बातें हैं, हानिकारक हैं। ये सब भविष्यफल सुनने-पढ़ने वाले लोग और ज्योतिषी गलती करते हैं।

● प्रसंगवश एक बात और बता देता हूँ। ये ज्योतिष वाले भविष्यफल बताते हैं। मेष, वृष, तुला, वृश्चिक इत्यादि बारह राशियाँ होती हैं। भारत में कितनी जनसंख्या है? सौ करोड़ से ऊपर। इसमें से अस्सी-पचासी करोड़ आर्य (हिन्दुओं) में से जो इन राशियों को मानते हैं, उनकी संख्या सौ करोड़ में से अस्सी, पचासी करोड़ तो होगी। कुल राशियाँ हैं, बारह। एक राशि में करीब सात करोड़ व्यक्तियों के नाम आएंगे।

अब अखबार उठाइए और भविष्यफल देखिए। अखबार में लिखा है कि, "मंगलवार को तुला राशि वालों को लाभ होगा।" इसलिए मंगलवार को भारत के सात करोड़ व्यक्तियों को लाभ होना चाहिए। लेकिन होता है क्या लाभ? नहीं होता। तो मतलब यह हुआ कि, ये झूठ बोलते हैं।

जब आप और खोज करेंगे, तो पता चलेगा कि, 'मंगलवार को कई तुला राशि वालों का दिवाला पिटता है। लाभ की तो बात क्या? बताइए, आपका भविष्यफल कहाँ गया? जिनका दिवाला पिट गया, वो जाकर क्यों नहीं ज्योतिषियों की गर्दन पकड़ते कि- "तुमने तो लिखा था अखबार में, कि लाभ होगा। तो यहाँ हमारा दिवाला क्यों पिटा?"

● ज्योतिषी उपाय की भी गारंटी नहीं लेते कि यह उपाय करो, आपको निश्चित लाभ होगा। । अगर वो उपाय की गारंटी भी लें, तो हम मान भी लें।

आपके स्कूटर में खराबी हो गई। आप मैकेनिक के पास जाइए। वह गारंटी लेता है कि - "इतने पैसे लूँगा, ठीक करके दूँगा।" ऐसे ही, अगर ज्योतिषी गारंटी दे कि- "हाँ, इतनी फीस लूँगा और यह मेरा उपाय सौ प्रतिशत कारगर होगा। नहीं हुआ, तो मुझ पर डबल फाइन करो।" कोई ज्योतिषी सामने आए, एक भी नहीं आता। सब के सब जनता को धोखा देते हैं। इसलिए इन लोगों से सावधान रहिए। इनके चक्कर में नहीं आना।

51. शंका- क्या योगी व्यक्ति भविष्य की बातों का ज्ञान कर सकता है?

☯ **समाधान**- उत्तर है:-

● कई चमत्कारिक घटनाएं महापुरुषों के साथ भावुक अनुयायी लोग अपनी ओर से जोड़ देते हैं।

● महर्षि दयानंद जी योगी थे। अगर उनको वास्तव में भविष्य की बातों का पता लग जाता होता, तो उन्हें यह क्यों नहीं पता चला कि "कल जगन्नाथ मुझे जहर देगा? "कितनी बार लोगों ने उनको जहर दिया, कितने प्रकार से दिया। यह सब उनको पता क्यों नहीं चला ? इस तरह की अन्तः प्रेरणा (इन्ट्यूशन) नहीं हो सकती।

● यह केवल तुक्का है। सौ बार व्यक्ति अंदेशा लगाता है, दो बार सही निकलता है। यह है - लॉ ऑफ प्रोबेबिलिटी, देयर इज नो इन्ट्यूशन।

आजकल टी.वी. चैनलों पर, अखबारों आदि में जो भी भविष्यफल बताया जाता है, उसके पीछे भी यही संभावना का नियम ही काम करता है।

● यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि वह वास्तव में भविष्य की

घटनाओं को जानता है तो उसकी बातें पूर्ण सत्य सिद्ध होनी चाहिए। जैसे- गणित के अध्यापक गणित के प्रश्नों का पूर्ण सत्य उत्तर देने का दावा करते हैं, और उनके उत्तर पूर्ण सत्य ही होते हैं। परन्तु भविष्यवाणी करने वाले क्या अपना भविष्य भी ठीक प्रकार से जानते हैं ? यदि नहीं जानते, तो दूसरों का भविष्य क्या जान पाएँगे ? और क्या बता पाएँगे ? एक इंजीनियर अपने लिए तथा दूसरों के लिए भी मकान बनाता है। उसकी विद्या सत्य है। भविष्यवक्ता न अपना भविष्य जानता है, न दूसरों का। इसलिए यह भविष्यवाणी झूठी है।

● **व्यावहारिक रूप से ऐसे भविष्य की बातों की कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है - यह सिद्धांत है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह कुछ भी कर सकता है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह सुधर भी सकता है, बिगड़ भी सकता है।**

● यदि भविष्यवाणी सत्य हो, तो इसका अर्थ होगा कि सब कुछ पहले से निश्चित है। तब व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र हो जाएगा। **यदि व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र है, तो उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता। क्योंकि परतन्त्र को दण्ड देना, अन्याय है।**

किसी व्यक्ति ने अपनी बन्दूक से चार व्यक्तियों को मार दिया। अब दण्ड, मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा, या बन्दूक को ? मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा। चारों व्यक्ति गोली से मरे, गोली छूटी बन्दूक से तो बन्दूक को दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु बन्दूक को दण्ड नहीं दिया जाता। क्योंकि बन्दूक परतन्त्र है। बन्दूक स्वतन्त्र नहीं है। बन्दूक चलाने वाला व्यक्ति स्वतंत्र है। इसलिए बन्दूक चलाने वाले को दण्ड दिया जाता है। यही न्याय है। इसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वतन्त्रता से किए गए कर्मों का फल (सुख-दुःख) भोगता है।

● गणित वाला ज्योतिष ठीक है, पर भविष्यफल (प्रिडिक्सन) गलत है। एक अंतिम बात कह देता हूँ, आप समझ जायेंगे। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। स्वतंत्र किसको कहते हैं, जो अपनी इच्छा से काम करे या दूसरे के दबाव से काम करे ? जो अपनी इच्छा से काम करे, वह स्वतंत्र है। तो आपका भविष्य पहले से कोई कैसे लिख देगा ? अगर पहले से लिखा है, और वही होना है, तो आप परतंत्र हो गए।

● सच तो यह है कि आप जब चाहे, अपनी योजना बदल सकते हैं, जब चाहे बना सकते हैं। हमारी मर्जी है। हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं। अपने भविष्य के निर्माता हम स्वयं हैं। एक-एक मिनट में हम अपना भविष्य बनाते हैं। आप भाषा में बिगाड़ कर दीजिए, देखिए आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। आपकी क्रिया ठीक-ठीक चल रही है, आपका भविष्य

अच्छा है। आप गलत क्रिया शुरु करो, देखो आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। इस प्रकार अपना भविष्य बनाना-बिगाड़ना हमारे हाथ में है। एक-दो मिनट में हम अपना भविष्य बना सकते हैं या बिगाड़ सकते हैं। इन कागज के पोथी-पत्रों में कुछ नहीं लिखा।

● **जब तक हम स्वतंत्र हैं, वह ज्योतिषी हमारा भविष्य कैसे जान लेगा? हमने कोई काम अब तक सोचा ही नहीं, योजना ही नहीं बनाई, कोई निर्णय ही नहीं किया कि दो महीने बाद क्या करूँगा। जब मैंने ही नहीं सोचा, तो ज्योतिषी उसको कैसे जान लेगा? ईश्वर भी नहीं जानता, तो ज्योतिषी उसको क्या जानेगा? फिर भी वो बताता है, तो इसका अर्थ है कि वह तुक्का मारता है।** उसकी जितनी बातें ठीक होती है, लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि से ठीक होती है।

"प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र है।" जब वह स्वतन्त्र है, तो पहले से कुछ लिखा या निश्चित नहीं है। जब पहले से कुछ भी निश्चित नहीं है, तो सिद्ध हुआ कि - "भविष्य कथन झूठा है।"

52. शंका- पंचांग-पत्रा, ज्योतिष विद्या को मानने से क्या हानियाँ होती हैं? क्या यह वेद अनुसार है?

☯ **समाधान-** हस्तरेखा, भविष्यफल यह सब झूठ है। हस्तरेखाओं में कुछ नहीं लिखा। किसी का भविष्य इन रेखाओं में नहीं है। भविष्य आपके पुरुषार्थ में है। देशभक्ति का एक गीत याद है - 'नन्हें मुन्हें बच्चे तेरी 'मुट्ठी में क्या है, मुट्ठी में है तकदीर हमारी'। 'मुट्ठी में' का क्या मतलब ? इन लकीरों से नहीं, हमारे हाथ के पुरुषार्थ में है।

वेद कहता है - "कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।" अर्थात् **'कर्म मेरे दायें हाथ में है, तो फल बायें हाथ में'।** पर लोग आलसी हैं, कर्म करना नहीं चाहते। वे केवल लकीरों को देखते रहते हैं।

"ऐ हाथ की लकीरों में किस्मत देखने वालो . . . किस्मत तो उनकी भी होती है, जिनके हाथ नहीं होते।" जब हाथ ही नहीं, तो लकीरें कहाँ है उनकी ? पर उनकी भी किस्मत होती हैं। किस्मत तो हमारे पुरुषार्थ में है। इसलिए इन लकीरों में कुछ नहीं रखा।

एक विमान दुर्घटना (प्लेन क्रैश) हुई, डेढ़ सौ आदमी मर गए। उनमें बच्चे भी थे, बूढ़े भी थे, जवान भी थे। क्या सबकी हस्तरेखाएं एक

जैसी थीं? रेल दुर्घटना, ट्रक दुर्घटना ऐसी बहुत दुर्घटनाएं रोज होती हैं। कितने ही लोग मरते हैं। क्या सबकी हस्त रेखाएं एक जैसी होती हैं ? एक जैसी होनी चाहिए, पर एक जैसी नहीं होती। इसलिए हस्तरेखा में भविष्यफल कुछ नहीं लिखा।

लोग यह मानते हैं कि हमारे भविष्य में ऐसा-ऐसा लिखा है, इतनी उम्र में यह होगा इत्यादि। मान लीजिए- किसी व्यक्ति के भविष्यफल में लिखा है कि उसे चार मर्डर करने हैं। वो चार हत्याएं करेगा, यह किसने लिखा ? भविष्यफल ज्योतिषी नहीं लिखता है। ज्योतिषी तो भविष्य बताता है। वो तो कहता है कि - "भविष्यफल भगवान ने लिखा है, मैं तो बता रहा हूँ कि आपका भविष्य ऐसा लिखा है।" तो लिखने वाला भगवान है।

जब भगवान ने हमारी किस्मत में लिखा है कि हमें चार हत्याएं करनी हैं और हम उतनी-उतनी उम्र में चार हत्या करेंगे तो हम अपराधी तो नहीं हुए न ? ईश्वर की आज्ञा का पालन अपराध नहीं है। ईश्वर ने लिखा है कि - तुम बत्तीस साल की उम्र में चार मर्डर करोगे और हम कर डालेंगे तो हमने कोई अपराध नहीं किया। क्या हमें सरकार छोड़ देगी ? नहीं न। इसलिए भविष्यफल झूठ है।

आपकी बुद्धि, आपके परिश्रम, आपके पुरुषार्थ, आपकी ईमानदारी और आपके संस्कारों से आपका भविष्य बनता है। अपने संस्कारों को देखें, अच्छे विचार जगाएं, बुरे विचारों को रोकें, अच्छे काम करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छा चिंतन करें, आपका भविष्य बहुत अच्छा बनेगा। कोई हस्तरेखा और भविष्यफल देखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए पंचांग-पत्रा आदि भविष्यकथन, ये सब वेद विरुद्ध हैं। इसको मानने से व्यक्ति आलसी, निकम्मा, पुरुषार्थहीन, दीन, दुःखी और दरिद्र हो जाता है।

53. शंका:- "ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते" अर्थात् वेद के ज्ञान प्राप्ति का साधन ज्योतिष नेत्र (आँख) रूप से है, और ज्योतिष वेद का अंग है, तो ज्योतिष का उपयोग आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक पापों से छुड़ाने में क्या हो सकता है? वेद के ज्योतिष को कृपया समझाएँ।

☯ **समाधान**- "ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते"-इसका अर्थ होता है कि वेद को समझने के लिए, सृष्टि को समझने के लिए 'ज्योतिष शास्त्र' को जानना आवश्यक है। ज्योतिष का मतलब जानिएः-

- 'ज्योति' का अर्थ होता है-'प्रकाश' और ज्योतिष शास्त्र का अर्थ होता है- प्रकाशवाले पिण्डों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र। जैसे सूर्य, ज्योति-पिण्ड है, प्रकाश का पिण्ड है। यह प्रकाश फेंकता है। इसी तरह से एक सूर्य, दो सूर्य, तीन सूर्य, हजारों सूर्य, ग्रह और उपग्रह आदि चीजों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र है - 'ज्योतिष शास्त्र'। जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है, सूर्य नक्षत्र आदि की गतिविधियों को जानता है, भूगोल-खगोल-शास्त्र को जानता है, वो व्यक्ति वेद को ठीक-ठीक समझ सकता है। ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते"-इसका तात्पर्य इस तरह से है।

- एक और ज्योतिष, जो फलित ज्योतिष के नाम से आजकल प्रचलित है-जैसे हस्त-रेखा विज्ञान, भविष्य-फल, राशि-फल, जन्म-कुण्डली, इनसे हम किसी का भविष्य नहीं बता सकते। कोई किसी का भविष्य जानता ही नहीं।

- जन्म-कुंडली मिलाते हैं, कुंडली मिलाकर के विवाह करते हैं। अच्छा तो भई, कुण्डली मिलाकर विवाह किया तो, शादी के बाद झगड़ा क्यों हुआ, तलाक क्यों हुआ? भविष्यफल बताकर वो बेकार जनता की बुद्धि खराब करते हैं। उनकी इन बातों में कुछ भी नहीं रखा है, सब व्यर्थ की बातें हैं।

- राम और रावण की एक ही राशि थी, पर देखो दोनों का हाल क्या हुआ? लाखों साल हो गए हैं लेकिन लोग एक को तो दीप जला रहे हैं, और दूसरे को गालियां मिल रही हैं। कंस और कृष्ण की भी एक ही राशि थी। अब उनका भी इतिहास देख लो कि दोनों में कितना फर्क है ? कंस को गालियाँ पड़ती है, कृष्ण जी के गीत गा रहे हैं लोग।

ये जो जन्म कुंडली बनाते हैं और ग्रहों का फल बताते हैं, यह सब भी

बेकार है, झूठ है। जैसे राशियाँ बारह हैं, इसी तरह से ये नौं ग्रह मानते हैं। इनको तो ग्रहों का भी पता नहीं। नौं ग्रहों की गिनती में भी नौं में से पाँच गलती करते हैं। कैसे ?

- ये नौं ग्रह ऐसे गिनाते है, एक ग्रह मानतें है, सूर्य। अब बताइए, सूर्य भी कोई ग्रह है क्या? वो तो नक्षत्र है। जो स्वयं प्रकाश फेंकता है, जिसका अपना प्रकाश हो, उसे कहते है 'नक्षत्र'। सूर्य तो स्वयं अपना प्रकाश फेंकता है, तो सूर्य नक्षत्र है, ग्रह नहीं है। यह है एक गलती।
- दूसरी भूल चन्द्रमा को ये ग्रह बताते हैं। चन्द्रमा ग्रह नहीं, उपग्रह है। जो नक्षत्र के चारों ओर चक्कर लगाए, उसको बोलते हैं 'ग्रह'। और जो ग्रह के चारों ओर चक्कर लगाए, उसको कहते हैं 'उपग्रह'। तो सूर्य नक्षत्र है, हमारी पृथ्वी ग्रह है, चन्द्र हमारी पृथ्वी का उपग्रह है। जो हमारी पृथ्वी के चारों तरफ चक्कर लगाता है। दो भूल हो गईं।
- तीसरी भूल-पृथ्वी ग्रह है, जिसका हम पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। लेकिन नौं ग्रहों में से पृथ्वी ग्रह का नाम ही गायब है। एक आदमी बारह फीट की ऊँचाई से गिरे, तो हड्डी टूटेगी कि नहीं टूटेगी ? तुरंत प्रभाव पड़ेगा पृथ्वी का। लेकिन उसका नाम ही गायब है।
- चौथी और पाँचवी गलती है – ज्योतिष वाले राहु और केतु नामक दो ग्रह बताते है। और इन्हीं से सबसे अधिक डराते हैं। वस्तुतः राहु-केतु नाम का कोई ग्रह है ही नहीं दुनिया में। इसलिए ग्रहों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
- पुरुषार्थ से सारी चीजें सिद्ध हो जाती हैं। पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। पुरुषार्थ करो, भविष्य अच्छा है। तीन बातें सीख लेनी चाहिए-पुरुषार्थ, बुद्धिमत्ता और ईमानदारी। आपका भविष्य बहुत अच्छा है।
- भाग्य तो एक बार जन्म से मिल गया, सो मिल गया। बाकी तो पुरुषार्थ बलवान है। भाग्य से भी बलवान है। पुरुषार्थ अच्छा है, तो भविष्य भी अच्छा है। और पुरुषार्थ खराब है, तो भाग्य भी सो जाएगा। भविष्य जानने के लिए किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। देखो, हम किसी से अपना भविष्य पूछते नहीं।
- लोग पता नहीं क्या-क्या अंगूठियाँ पहनते हैं – लाल, पीली, नीली। हमने आज तक कोई अंगूठी नहीं पहनी। हम कोई हार गलें में नहीं पहनते। तीन सौ पैसठ दिन हमारा धंधा (समाज सेवा कार्य) खूब चलता है। इतना चलता है, कि हमको हाथ जोड़कर माफी माँगनी पड़ती है कि साहब, टाइम नहीं है।

- यहाँ एक श्रोता ने प्रश्न किया – "हमने सुना है, कि ईश्वर का नाम भी राहु और केतु है। क्या यह सच है ?" तो मैंने उत्तर दिया – हाँ, राहु-केतु ईश्वर के दो नाम हैं, यह बात सत्य है पर ज्योतिषियों ने लोगों को डराने के लिए दो ग्रह कल्पित कर रखें है। ऐसे कोई ग्रह नहीं होते।

❖ संपादकीय टिप्पणी – समाज की सुख-शॉति मे बाधा पहुँचाने वाले लोग 'लोक कण्टक' कहलाते हैं। 'लोक कण्टक' यानी काँटे की तरह चुभकर पीड़ा देने वाले। 'मनुस्मृति' (नवम अध्याय का श्लोक 258 से 261) में लिखा है कि – मंगलादेश वृत्ताः' यानी तुम्हे पुत्र या धन की प्राप्ति होगी, जो ऐसा कहने वाले हैं, 'ईक्षणिकेः सह' यानी जो हाथ आदि देखकर भविष्य बताकर धन ठगने वाले हैं, उनको 'लोक कण्टक' यानी प्रजाओं को पीड़ित करने वाले चोर समझें। फिर 'प्रोत्साद्य' यानी उन्हे पकड़कर (वशमानयेत) यानी उन्हें कारागृह में रखें।

54. शंका- क्या आप मेरा भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल बता सकते हैं? अगर नहीं बता सकते, तो क्या आप ऐसे महानुभाव को जानते हैं, जो ऐसा करने में सक्षम है?

☯ **समाधान**- कोई नहीं बता सकता, क्योंकि कोई जानता ही नहीं है। हाँ, मोटा-मोटा तो मैं बता सकता हँ

भूत, भविष्य और वर्तमान-तीनों के बारे में सुनिए। जिस व्यक्ति का यह प्रश्न है, वह वर्तमान काल में इस शिविर में, यहाँ आर्यवन में आया हुआ है। यह वर्तमान काल बता दिया न। भूत काल में उसके अंदर कुछ अच्छे संस्कार थे, इसलिए वह यहाँ इस शिविर में आया। अच्छे संस्कार नहीं होते, तो वह यहाँ आता ही नहीं। अब भविष्य काल सुनिए- अगर वो ऐसे ही शिविर में आता रहेगा, तो उसकी मुक्ति हो जाएगी। ठीक हो गया। तो वर्तमान,भूत, भविष्य की बात इतनी है।

भूतकाल को जानने से कोई लाभ नहीं है। जो बीत गया सो बीत गया। और वर्तमान में क्या हो रहा है, यह तो आप जानते ही हैं। इसको जानने से भी कोई लाभ नहीं है। एक भविष्यकाल की बात रही – अगर आप पुरुषार्थी, बुद्धिमान और ईमानदार हैं, तो आप का भविष्य उज्जवल है, बस। अगर आप में आलसीपन, बुद्धिहीनता और बेईमानी आ गयी, तो आपका भविष्य खराब है। बस, इस एक बात में सब बात आ जाती है।

55. शंका- क्या जादूगरी आँखों का धोखा होता है?

☯ **समाधान-** हाँ है, क्योंकिः-

- एक नियम है - 'कारण और कार्य का सिद्धांत'। घर में आटा नहीं होगा तो क्या रोटी बनेगी? नहीं। अगर लकड़ी नहीं होगी तो क्या फर्नीचर बनेगा? नहीं। यह 'कारण-कार्य सिद्धांत' है। इसी तरह से मैं जेब में हाथ डालूँ और बिल्ली निकल आए तो इसका मतलब जेब में बिल्ली थी। बस, इसी का नाम जादूगरी है। वो थी कहीं न कहीं, इधर-उधर छुपा रखी थी।

- सृष्टि के कारण-कार्य सिद्धांत के बिना कुछ नहीं हो सकता। सृष्टि का नियम है। एक नियम याद कर लीजिए - सृष्टि क्रम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता, और यहाँ तक मैं कह दूँ कि - ईश्वर भी नहीं कर सकता, मनुष्य तो क्या करेगा।

अच्छा बताइए, अग्नि गरम है। क्या इस गरम अग्नि को ईश्वर ठंडा कर सकता है? नहीं। ईश्वर भी ठंडा नहीं कर सकता, सृष्टि नियम के विरुद्ध कार्य ईश्वर भी नहीं कर सकता, तो ये मनुष्य लोग क्या करेंगे। इतने में ही आप समझ लीजिए कि यह सब चालाकी और धोखा है।

- कारण-कार्य सिद्धांत के विरुद्ध जादूगरी कुछ चीज नहीं, केवल आँखों का धोखा है। सब चालाकी और धोखेबाजी है। हर आदमी पकड़ नहीं पाता, वो ऐसी चतुराई से काम कर लेते हैं।

- जादूगरी में या तो हाथ की सफाई होती है या कोई साइंस की बात होती है।

ऐसे दो चार हाथ जादूगरी के मैं भी जानता हूँ। मंत्र बोलकर मैं आग लगाना जानता हूँ। पर वो कोई जादूगरी नहीं है। आग लगाने वाले कहते हैं - यह गाय का घी है और मैं अभी कटोरी में घी टपकाऊँगा और मंत्र बोलूँगा और इसमें आग लग जाएगी।

असल में उस चम्मच में गाय का घी नहीं होता। वो ग्लिसरीन होती है। एक दूसरी पोटैशियम परमैग्नेट (लाल दवा) होती है। वो दाँत के डॉक्टर कुल्ला करने के लिए देते हैं। पोटैशियम परमैग्नेट का पाउडर कटोरी में पहले से रखा होता है। वो जनता को दिखता नहीं और वो ऊपर से दो बूँद ग्लिसरीन टपका देते हैं। जब तक मंत्र बोलते हैं, तब तक उन दोनों में रिएक्शन हो जाता है। पोटैशियम परमैग्नेट में दो बूँद ग्लिसरीन टपकायेंगे तो उसमें आग लगेगी। वो लोग यह चतुराई करते हैं।

११०

- मंत्र बोलने से कोई आग नहीं लगती। अगर मंत्र बोलने से आग लगती हो तो पहले मन्त्र बोलने वाले के मुँह में लगनी चाहिए। पर मुँह में लगती नहीं।

- ऐसे ही भूत-प्रेत की बात करते हैं। कहते हैं कि - शीशी के अंदर मैंने भूत-प्रेत बंद कर रखा है। छोटी सी एक शीशी (दो ढ़ाई इंच की शीशी) का ढक्कन खोल देंगे और हॉरिजोंटल (आड़ी) स्थिति में उस शीशी को रखेंगे। हम चॉक से बोर्ड पर लिखते हैं। उस चॉक के टुकड़े को उस शीशी के मुँह पर रख देंगे और फिर किसी व्यक्ति को बुलाएंगे। कहेंगे कि - "आइए, जरा फूँक मारकर, हवा मारकर इस टुकड़े को इस शीशी के अंदर डालिए।" जब वो फूँक मारकर अंदर डालने का प्रयास करेगा तो वो चॉक का टुकड़ा अन्दर नहीं जाएगा बल्कि बाहर गिरेगा। जब वो बाहर गिरेगा तो कहेगा- "इसमें मैंने एक भूत आत्मा, प्रेत-आत्मा बंद कर रखी है, वो इसको बाहर फेंकती है, अंदर घुसने नहीं देती।" यह सब चालाकी है, झूठ है, धोखा है। अब उस शीशी को आप वर्टीकल (सीधी) खड़ी कर दीजिए। अब वही टुकड़ा डालिए, तो वो तुरंत अंदर चला जाएगा। अब क्यों चला गया। ऐसे क्यों नहीं जा रहा था? यह साइंस की बात है।

चॉक का टुकड़ा भारी है, हवा उससे हल्की है। जब शीशी हॉरिजोन्टल रखी जाती है, फिर वहाँ चॉक का टुकड़ा रखते हैं और जब हम चॉक के टुकड़े को अंदर फेंकने के लिए फँक मारते हैं तो हवा हल्की होने की वजह से वो टुकड़े से पहले अंदर चली जाती है। बाहर की हवा शीशी के अंदर जाती है और अंदर की हवा धक्का खाकर बाहर आती है। जब अंदर की हवा बाहर आती है तो बाहर आती हवा के धक्के से टुकड़ा बाहर ही तो गिरेगा, अंदर थोड़े ही जाएगा। जब शीशी सीधी खड़ी कर देते हैं और तब वो टुकड़ा रखते हैं तो तुरंत अन्दर चला जाता है। अब वहाँ ग्रेविटेशन-फोर्स (गुरुत्वाकर्षण) का नियम लागू होता है। कहाँ गया भूत-प्रेत? खामखां धोखा है। जादूगरी के चक्कर में नहीं आना।

१११

56. शंका क्या झाड़-फूँक करने वाले बाबाजी अथवा टोटके आदि करने वाले बाबाजी सब कोरा ढोंग मात्र हैं। तो फिर झाड़ू मारने से मिर्गी कैसे भाग गई?

☯ **समाधान**- ऐसा तो हो नहीं सकता। ऐसे किस्सों के हमने परीक्षण भी करवाए हैं। यहाँ ध्यान रखें:-

- इसमें कुछ अंश मानसिक-रोग का होता है। वो झाड़फूँक से ठीक हो जाता है। क्योंकि झाड़फूँक भी एक मानसिक-चिकित्सा है।
- जो शारीरिक रोग है, वो शारीरिक चिकित्सा करवाने से ही ठीक होता है। इसलिए यह झाड़फूँक करवाने से अधिक लाभ नहीं है। उससे पाखण्ड को बढ़ावा भी मिलता है। इसलिए उसके चक्कर में नहीं आना।
- मानसिक रोग की 'मानसिक-चिकित्सा'ही करें। और 'मानसिक-चिकित्सा' की सबसे बढ़िया पद्धति 'अष्टांग योग' है। मन के विचारों को रोको, शुद्ध चिंतन करो, ईश्वर, जीव, प्रकृति का विचार करो और करने योग्य कार्य को करो, न करने योग्य कार्य को मत करो, इस तरह से मानसिक-चिकित्सा होती है। यह सबसे उत्तम पद्धति है।

57. शंका- डिस्कवरी चैनल में भूत-प्रेत की कथाएं और कथित घटनाओं का ब्यौरा दे रहे हैं। सारे घटित दृश्य भी दिखाते हैं। क्या यह असत्य है?

☯ **समाधान**- जी हाँ, भूत-प्रेत की सब बातें असत्य हैं। ऐसे बहुत कार्यक्रम देखे गए, पकड़े गए जो बिलकुल झूठे और नकली थे,उन पर कोर्ट-केसेस भी किए गए। अहमदाबाद कोर्ट के एक वकील साहब ने मुझे ऐसी एक फिल्म दिखाई और बताया कि हमने इन लोगों पर कोर्ट-केस किया है। ये जनता को बहकाते हैं। झूठ का प्रयोग करते हैं। बड़ी चालाकी से ये लोग काम करते हैं। आम जनता समझ नहीं पाती।

ये बस चालाकी है, धोखा है, असत्य है। ऐसे लोगों की लपेट में नहीं आना चाहिए।

58. शंका- आज सुबह हम ध्यान में मन नहीं लगा पाए। जब गुरुजी ने कहा कि - अपनी हथेलियाँ घर्षण करके आँखों में लगाओ, उसी समय मैंने कल्पना में देखा कि हम हवन में बैठे हैं और एक लड़की आई और रखा हुआ दीपक बुझा दिया। तब से मेरा मन परेशान है?

☯ **समाधान**- इसमें परेशान होने की बात नहीं है। कभी - कभी मन में ऊँचे-नीचे ख्याल आते रहते हैं। हम मनुष्यों का मन अच्छा भी सोचता है, बुरा भी सोचता है। मन पॉजीटिव भी सोचता है, नेगेटिव भी सोचता है। मन में जो विचार चलते रहते हैं, वे कभी-कभी कल्पना में आ जाते हैं। इसलिए यदि सहसा ऐसा कोई विचार कौंध गया तो उससे घबराने या परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

इससे ऐसा संकेत नहीं समझना चाहिए कि उसने दीपक बुझा दिया तो कोई अनिष्ट या दुर्घटना हो जाएगी। यह तो संयोग की बात है। दुनिया में घटनाएं-दुर्घटनाएं होती रहती हैं। पर दीपक बुझाने से उसका कोई सीधा लेना-देना नहीं है।

59. शंका- क्या किसी मंत्र के जाप से या यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? जबकि सुना यह जाता है - "अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम्।"

☯ **समाधान**- यह बात ठीक है कि हमने जो कर्म किए हैं, उनके फल तो हमें भोगने ही पड़ेंगे। रही बात यह कि, क्या मंत्र के जाप से अथवा यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? उत्तर यह है कि-

(1) **हम यज्ञ करेंगे, मंत्र का जाप करेंगे, तो भगवान हमको सहनशक्ति देगा। सहनशक्ति से कष्ट हमारे लिए हल्का हो जाएगा। कष्ट भोगना तो पड़ेगा, पर वह उतना भारी नहीं रहेगा।**

स्वामी दयानंद जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि - ईश्वर की उपासना से इतना बल प्राप्त होगा कि पहाड़ जैसा दुःख भी राई जैसा प्रतीत होगा। जो दुःख आएगा, वो तो भोगना पड़ेगा। लेकिन वह दुःख इतना भारी नहीं लगेगा, हल्का लगेगा। आराम से निपट जाएगा।

(2) मंत्र के जाप से **आगे के लिए बुद्धि अच्छी हो जाएगी।** फिर हम और अधिक अच्छे-अच्छे काम करेंगे। आगे अपराध करेंगे नहीं, तो आने वाले कष्ट टल जाएंगे। क्योंकि आगे अपराध ही नहीं करेंगे, तो पाप का दंड क्यों मिलेगा? इसलिए मंत्र जाप करना चाहिए, यज्ञ करना चाहिए।

११४

60. शंका- कहा जाता है कि गायत्री मंत्र का एक लाख जाप करने वाला चोरी, ब्रह्महत्या, गुरु पत्नी के साथ व्यभिचार आदि पापकर्म से मुक्त होता है, कृपया मार्गदर्शन करें?

☯ **समाधान**- यह बात जिन भी ग्रंथों में आप पढ़ते-देखतें हैं, वो बात सत्य नहीं है। वेदानुकूल नहीं है, तर्क के भी विरुद्ध है, ऋषियों के भी विरुद्ध है। कारण किः-

- **गायत्री मंत्र का पाठ करना एक अच्छा काम है। चोरी करना- यह बुरा काम है। अच्छे काम से बुरा काम कैंन्सिल नहीं होता।**

मान लीजिए, लोग नाव में बैठकर नदी पार कर रहे थे। नाव में पानी भर जाने से नाव उलट गई। एक बड़ा अच्छा तैरने वाला था। उसने डूबने वाले बीस लोगों को बचा लिया। सरकार को सूचना मिली। सरकार ने कहा - आपको ईनाम मिलेगा।

- अब एक हफ्ते के बाद जिसने बीस लोगों की जान बचाई थी, उसी व्यक्ति ने एक आदमी को मार दिया। वो सरकार के पास गया और बोला - देखिए जी, **मैंने बीस लोगों की जान बचाई है, और एक को जान से मारा है। सीधे बीस में से एक को घटाकर के उन्नीस का ईनाम दे दीजिए।** तो क्या सरकार मान लेगी? नहीं मानेगी न। सरकार ने कहा - बीस की जान बचाई, उसका अलग ईनाम मिलेगा। और एक को मारा, उसका दण्ड अलग मिलेगा। बीस में से एक कैन्सिल नहीं होता है। जब सरकार कैन्सिल नहीं करती,तो भगवान क्यों करेगा? आपने एक लाख **गायत्री जप किया, उसका अलग फल मिलेगा। चोरी की, उसका अलग दण्ड मिलेगा।** इसलिए दोनों कर्मों का फल अलग-अलग है।

११५

61. शंका- "सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।।" (योग. 2/13) इस सूत्र में आए भोग के विषय में जानना चाहता हूँ?

☯ **समाधान-** योग दर्शन के इस सूत्र में आए जाति, आयु और भोग के बारे में थोड़ा सा संक्षिप्त वर्णन कर देता हूँः-

(1) **जाति का मतलब है - शरीर।** मनुष्य का शरीर, गाय का शरीर, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, हाथी, बंदर, मच्छर, मक्खी, सुअर आदि किसी का भी शरीर, यह है जाति।

● जाति एक बार जन्म से मिल गयी, तो मृत्युपर्यंत वो बीच में नहीं बदलती। जाति तो निश्चित है। भगवान ने हमारे कर्मानुसार हमको जन्म से जो जाति दे दी, वो जीवन भर रहेगी।

'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में स्वामी दयानंद जी ने जाति की परिभाषा लिखी है। **जो जन्म से मरणपर्यंत बदलती नहीं, उसको जाति कहते हैं।** मनुष्य का शरीर मिला, तो पूरे जीवन भर जीते जी मनुष्य ही रहेगा, बीच में उसको तोड़-मरोड़कर कुत्ता, बिल्ली नहीं बना सकते।

● **अगले जन्म में जाति (शरीर) बदल सकती है।** बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

(2) **आयु का मतलब - जीने का समय,** जीने का काल।

● कर्मानुसार ईश्वर आयु देता है। पहले लोग अच्छे काम करते थे, खान-पान ठीक था, व्यायाम भी ठीक था, ब्रह्मचर्य का पालन भी करते थे, दिनचर्या का पालन भी करते थे, आदि आदि। लोग आयु बढ़ाने वाले कर्मों का आचरण करते थे तो भगवान सौ वर्ष की आयु देकर भेजता था। अब वो सारा कुछ बदल गया। खान-पान बिगड़ गया, जलवायु बिगड़ गई, दिनचर्या बिगड़ गई, ब्रह्मचर्य का पालन भी नहीं रहा और भी कई चीजें बिगड़ गईं। इसलिए भगवान अब सौ वर्ष की आयु देकर नहीं भेजता।

भगवान किसी-किसी को सौ वर्ष की आयु देता है। जिसके जैसे कर्म होते हैं, उसको वैसी आयु देता है, कम भी देकर भेजता है। **जैसा शरीर होगा, उसी के अनुसार आयु मिलेगी।** मनुष्य शरीर मिला, तो मनुष्य शरीर में जितनी क्षमता है, उतनी आयु मिल जाएगी।

● **आयु भी हर एक व्यक्ति की अलग-अलग है।** किसी का शरीर मजबूत है, तो वो अस्सी साल तक जीएगा। किसी का शरीर कमजोर

है, वो सत्तर साल जीएगा। किसी का और कमजोर है, तो उसका साठ में ही शांतिपाठ हो जाएगा।

● **एक तो जन्म से आयु प्राप्त हुई। जन्म से जैसा, जितना बलवान शरीर मिला। यह तो है, पिछले जन्म के कर्मों का फल।** मान लीजिए, किसी व्यक्ति को जन्म से ऐसा शरीर मिला कि यदि कोई दुर्घटना न होए, और ठीक-ठाक सामान्य रूप से जीता रहे, तो उसमें इतनी ताकत है कि वह सत्तर साल तक जी सकता है। तो यह आयु तो पिछले कर्मों से उसको मिली।

● **भगवान जितनी आयु देकर भेजता है, उसकी भी गारंटी नहीं है, कि व्यक्ति उतने दिन जी ही लेगा।** व्यक्ति तब जी सकता है, जबकि वह दुर्घटनाओं से बचता रहे। एक्सीडेंट होता है, मर जाते हैं। पैदा होते ही मरते हैं, दो साल के भी मरते हैं। उनकी सुरक्षा-देखभाल ठीक से नहीं हो पायी। इंफेक्शन हो गया, मर गए।

● कोई अच्छी तरह व्यायाम करके शरीर को बलवान बना लेगा, तो आयु बढ़ भी सकती है। **अब अगर वह नया व्यायाम करके, पुरुषार्थ करके, ब्रह्मचर्य का पालन करके, ठीक खान-पान रखकर के, रोगों से बचता रहा, दुर्घटनाओं से बचता रहा, तो उसकी आयु दस-बीस वर्ष और बढ़ सकती है। सत्तर की थी, लेकिन वो नब्बे तक जी लिया। जो बीस वर्ष आयु बढ़ गई, यह इस जीवन के नए कर्मों का फल है।**

● **इसी प्रकार से नए कर्मों से आयु को घटाया भी जा सकता है। कोई शराब पीने लगा, माँस अंडे खाने लगा, नशा करने लगा तो सत्तर से पचास में ही पूरा हो जाएगा। और अगर दुर्घटना हो गई, तो कभी भी मर सकता है।**

एक की भूल के कारण दूसरे को नुकसान होता है। हम सड़क पर ठीक-ठाक चलते हैं। पीछे से ट्रक, कार वाला आकर के हमको ठोंकता है। उसकी गलती से हमको नुकसान होता है। ऐसे ही डॉक्टर की भूल से, नर्स की भूल से, मां-बाप की भूल से, बच्चे को नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु हो सकती है, हाथ-पाँव, टेढ़े-मेढ़े हो सकते हैं, कुछ भी हो सकता है। विमान दुर्घटना में मारा गया, कुँए में कूद गया, उसने बिजली का तार पकड़ लिया, जहर पी लिया, कहीं ट्रेन की दुर्घटना में मारा गया, कुछ भी हो सकता है। **दुर्घटनाओं के कारण आयु कभी भी नष्ट हो सकती है।** और यदि दुर्घटनाएं नहीं हुईं, तो अपने नये कर्मों से आयु को घटाया-बढ़ाया जा सकता है। यह हो गई आयु की बात।

(३) अब तीसरी बात है-भोग। भोग का अर्थ होता है- 'सेवन करने योग्य पदार्थ', सुख-दुःख को भोगने के साधन। जैसे -धन-संपत्ति, मकान, मोटर-गाड़ी, अन्न, वस्त्र, सोना-चाँदी फ्रिज, टी.वी., रेडियो इत्यादि। ये जितने सुख-दुःख भोगने के साधन हैं, इनका नाम है- भोग।

- भोग भी इसी प्रकार से घटाया-बढ़ाया जा सकता है। मान लीजिए, एक व्यक्ति के पिछले कर्म बहुत अच्छे नहीं थे, इसलिए जन्म से उसको सामान्य गरीब परिवार में जन्म मिला। पाँच साल की उम्र तक जो घर की सामान्य सुविधाएं थी, उतनी ही मिलीं। अधिक अच्छा खानपान, अधिक अच्छे वस्त्र, अधिक सुविधा नहीं मिली। पाँच साल की उम्र में वह व्यक्ति स्कूल में पढ़ने के लिए गया। पढ़-लिखकर उसने खूब पुरुषार्थ किया। बुद्धिमान हो गया, एम.ए., पी.एच.डी हो गया। आगे चलकर उसको नौकरी भी मिल गयी। उसको अच्छा वेतन मिलने लगा। उसने खूब धन कमा लिया। धीरे-धीरे उसने अपना मकान भी अच्छा बना लिया। फिर धीरे-धीरे और अच्छा कमाकर के मोटरकार भी खरीद ली। ऐसे उसने भोग के साधन बढ़ा लिए।

गरीब आदमी मेहनत करके नए पुरुषार्थ से भोग के साधन बढ़ा सकता है, उसमें वृद्धि और परिवर्तन कर सकता है।

- इसके विपरीत भी हो सकता है। किसी बच्चे के पिछले जन्म के कर्म अच्छे थे। उसको सेठ के घर जन्म मिला। जन्म से उसको खाने-पीने, भोगने की बढ़िया सुविधाएं मिलीं। लेकिन आगे जब वो विद्यार्थी बनकर स्कूल में पढ़ने गया, तब उसने मेहनत नहीं की, पुरुषार्थ नहीं किया, बुद्धि का विकास नहीं किया। जो जन्म से प्राप्त घर की संपत्ति थी, वो भी शराब पीने में, इधर-उधर यार-दोस्तों के साथ घूमने-फिरने में, मौज-मस्ती में नष्ट कर दी।

बुद्धि का विकास किया नहीं, तो वो धीरे-धीरे नीचे आ जाएगा। जो संपत्ति पास में थी, वो भी खो बैठेगा।

इस प्रकार से "सुख-दुःख को भोगने के साधन", भोग कहलाते हैं। वो घटाए जा सकते हैं, बढ़ाए जा सकते हैं। इन साधनों को कोई छीन के भी ले जा सकता है, और कभी-कभी कोई दे भी सकता है।

62. शंका- क्या जाति, आयु, भोग निश्चित हैं, या इन्हें घटाया- बढ़ाया जा सकता है। इसकी सीमा क्या होगी?

☯ **समाधान-** जाति तो निश्चित है, बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

- जन्म के समय कुछ आयु और भोग ईश्वर ने हमको दिये। ये पिछले जन्मों के कर्मों के आधार पर दिए। वो भी सीमित (लिमिटेड) हैं।
- एक बात और, इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को बढ़ा भी सकते हैं।

कल्पना कीजिए, परमात्मा ने हमारे शरीर में जन्म के समय इतनी शक्ति भर दी कि अगर सामान्य रूप से हम उसको खर्च करते रहें, तो हम अस्सी साल तक जी सकते हैं। यह अस्सी साल का जीवन हमारे पिछले कर्मों का फल, इतनी आयु है। अब हम इसको कैसे बढ़ाएंगे?

अखबार में विज्ञापन आते हैं। विज्ञापन के नीचे एक स्टार लगा के लिखा रहता है - 'कंडीशन्स एप्लाइ' (शर्तें लागू)। भगवान भी हमारे कर्मानुसार हमको जाति, आयु, भोग देता है। वह कहता है कि जाति तो पूरे जीवन भर नहीं बदलेगी। लेकिन भोग और आयु बदल सकते हैं। परन्तु "कंडीशन्स एप्लाइ।" वो कंडीशन्स हैः- 'अगर आप भोग बढ़ाने वाले नए कर्म करोगे, तो भोग बढ़ जाएंगे।' अगर नहीं करोगे, तो भोग नहीं बढ़ेगा। आयु बढ़ाने वाले कर्म करोगे, तो आयु बढ़ेगी। और वैसे कर्म नहीं करोगे, तो आयु नहीं बढ़ेगी। वो कंडीशन्स पर डिपेन्ड करता है। भोग बढ़ भी सकते हैं, घट भी सकते हैं।

- आयु कैसे घटती-बढ़ती है, जानिए। मान लो, मैंने पाँच सौ रुपए की घड़ी बाजार से खरीदी। कम्पनी वालों ने कहा कि - "भाई, इस घड़ी की तीन साल की गारंटी है। लेकिन यह गारंटी हम इस शर्त पर देते हैं कि आप इस घड़ी को ठीक तरह से इस्तेमाल करेंगे। इसे संभालकर प्रयोग करेंगे।"

अब आप घड़ी रेल की पटरी पर रख देंगे या हथौड़ा लेकर उस पर ठोंक देंगे, तो गारंटी क्या होगी? फिर एक सेकेंड की भी गारंटी नहीं है। घड़ी को दुर्घटना से बचाओ, धूप में मत फेंको, पानी में मत फेंको, सड़क पर मत फेंको, संभाल कर प्रयोग करो, तो यह तीन साल तक चलेगी। लेकिन तीन साल पूरे होते ही इसमें विस्फोट होने वाला नहीं है। इसके टुकड़े-टुकड़े भी नहीं होंगे। अच्छे ढंग से चलाओ तो घड़ी चार साल भी चलेगी। और वेल मेन्टेन करो, तो पाँच साल भी चलेगी। शरीर भी इसी प्रकार का है, यह भी भगवान की दी हुई एक मशीन है।

भगवान कहता है कि – तुम्हारे शरीर में मैंने अस्सी साल तक जीने की शक्ति भर दी है। <u>अस्सी साल की गारंटी है। परन्तु याद रखो– "कंडीशन्स एप्लाइ"।</u> आप जहर पी लोगे, आप रेल या ट्रक के आगे खड़े हो जाओगे, नदी में गिर जाओगे, तो कोई गारंटी नहीं। संभल के चलेंगे, तो अस्सी साल जिएंगे। फिर इस जन्म के नये कर्म करो, जैसे– व्यायाम करो, खान–पान ठीक रखो, संयम से खाओ, सात्त्विक भोजन खाओ, समय पर खाओ, अपने शरीर की प्रकृति के अनुकूल खाओ, मात्रा से थोड़ा कम खाओ, अधिक मत खाओ, रात को जल्दी सोओ, सुबह जल्दी उठो, ब्रह्मचर्य का पालन करो, ईश्वर की उपासना करो, दिनचर्या का पालन करो, ऋतुचर्या का पालन करो। इससे आपकी आयु बीस साल बढ़ जाएगी, सौ साल जी लेंगे। ऐसे आयु बढ़ती है।

- इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को घटा भी सकते हैं। अगर शराब पियो, माँस–अंडे खाओ, उल्टे–सीधे काम करो, बुरे विचार करो, देर तक जागते रहो, देर तक सोते रहो, भ्रष्ट आचरण करो, अच्छे काम मत करो और बुरे काम करो तो आपकी आयु घट जाएगी। बीस साल कम हो जाएगी, अस्सी साल वाले का बीस साल पहले ही शांति–पाठ हो जाएगा। साठ साल में उसका जीवन पूरा हो जाएगा। यदि सामने वाला गोली मारे या कहीं ट्रेन–एक्सीडेंट की लपेट में आ गए, तो आयु तुरंत घट जाएगी। इस तरह से हमारी आयु घटती है और बढ़ती है।

- अब भोग की बात जानिए। जन्म से जिस माता–पिता के घर में जन्म मिला, उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी। इसलिए हमको पूर्वजन्म के कर्मों से अच्छा भोग मिल गया। अच्छी सम्पत्ति मिल गई।

- भोग घटते कैसे हैं ? आगे इस जन्म के नए कर्म जैसे – हमने पढ़ाई नहीं की, अपनी बुद्धि नहीं बढ़ाई, विकास नहीं किया,धन–संपत्ति को नहीं संभाल सके, जुआ सट्टे में, शराब में, इधर– उधर दूसरे उल्टे–सीधे कामों में संपत्ति खो दी, कोई दूसरे लोग छीन–छान के ले गए, तो हमारे भोग घट गए।

- भोग बढ़ते कैसे हैं ? जिस परिवार में हमको जन्म मिला। जो जन्म से पैतृक संपत्ति मिली। उससे हमने पढ़ाई–लिखाई की, बुद्धि का विकास किया। खूब अच्छी तरह से मेहनत की और खूब धन कमा लिया। अच्छी–अच्छी सुविधाएं घर में इकट्ठी कर लीं। इस प्रकार से हमारे इस जन्म के नए कर्मों से हमारे भोग बढ़ गए।

१२०

63. शंका– मनुष्य की आयु निश्चित है या नहीं? है तो कितनी?

☯ **समाधान–** भारत में करोड़ों लोग ऐसा मानते हैं, कि हर व्यक्ति की मृत्यु कब, कहाँ, कैसे होगी, वो परमात्मा ने निश्चित कर रखी है। हम उसको बिलकुल घटा–बढ़ा नहीं सकते। जिस दिन हमारी मौत जहाँ लिखी है, वहीं पर होगी और उसी तरीके से होगी, जैसी भगवान ने निश्चित कर रखी है। यह बात गलत है। कारण कि:–

- <u>वेदों में लिखा है कि आयु घटती है और बढ़ती है।</u> वेदों में लिखा है कि मनुष्य की आयु फ्लेक्सिबल है। कोई मरने का दिन, समय, स्थान पहले से निर्धारित नहीं है।

- संध्या का एक मंत्र आप रोज बोलते होंगे – "... शतम्, भूयश्च शरदः शतात्।" हे प्रभु ! हम सौ वर्ष तक, औ... अधिक भी जिएं।

अगर किसी की मृत्यु भगवान ने तय कर दी कि यह ... मरेगा, अमुक हाईवे पर मरेगा, ट्रक के नीचे टकराकर मरेगा ... यदि कहे कि – "हे भगवान ! मैं सौ साल जियूँ।" उसको यह ... की प्रार्थना भगवान ने सिखाई। इसका मतलब यह है कि भगव... बुलवाता है। एक ओर तो कहता है कि – "तुम्हें पैंतीस से आगे तो जाने ही नहीं दूँगा।" दूसरी ओर कहता है :– "मुझसे बोलो कि 'मैं सौ साल जियूँ, सौ से ऊपर भी जियूँ।" यह विरोधाभास है।

<u>जब हम प्रार्थना करते हैं – 'हे ईश्वर! हम सौ वर्ष जिएं, सौ से अधिक भी जिएं'। इसका मतलब यह है कि हमारी आयु निर्धारित नहीं है। हम कभी भी उसको घटा–बढ़ा सकते हैं।</u>

- मान लीजिए कि एक व्यक्ति नेशनल–हाईवे पर स्कूटर से जा रहा था और पीछे से उसको ट्रक वाले ने टक्कर मार दी। लोग कहते हैं – साहब देखो, इसकी मौत यहीं लिखी थी। थोड़ी देर के लिए मान लिया कि भगवान ने लिखा था कि इसको इस दिन, यहाँ पर मरना है और ट्रक ड्राइवर ने ईश्वर के आदेश का पालन किया। ट्रक वाले ने उसको मार दिया। अब यह बताइए, जब ट्रक ड्राइवर ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, तो उस पर मुकदमा करना चाहिए या उसको ईनाम देना चाहिए ?

- वेद में लिखा है कि ईश्वर के आदेश का पालन करना धर्म है। और धर्म का फल सुख है। उसको तो सुख देना चाहिए, उस पर मुकदमा

१२१

क्यों करो? क्या आप इस बात को मानने के लिए तैयार हैं कि जो ट्रक वाला किसी को ठोकर मार दे, तो उस पर आप मुकदमा नहीं करेंगे, बल्कि ट्रक ड्राइवर को ईनाम देंगे? क्योंकि आप इस बात को मानते हैं कि इसकी मौत ईश्वर ने यहीं लिखी थी। आप कहते हैं कि ईनाम नहीं देंगे। इसका मतलब हुआ, वह अपराधी है, तभी तो उस पर मुकदमा करते हैं। इसलिए वह मृत्यु ईश्वर की लिखी हुई नहीं है। ट्रक वाले की लापरवाही से दुर्घटना के कारण हुई है।

एक उदाहरण सुनिए - एक आतंकवादी ने बीस लोगों को मार दिया। कालान्तर में वह पकड़ा गया, उस पर कोर्ट में मुकदमा चला और प्रमाणित हो गया कि इसने बीस लोगों को मारा है। न्यायाधीश महोदय ने कागज पर लिख दिया कि इसको इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे फाँसी पर लटका दिया जाए। वह लिखित आदेश जल्लाद के पास आया। जल्लाद ने न्यायाधीश के आदेश का पालन किया और इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे उस आतंकवादी को फाँसी पर लटका दिया। क्या जल्लाद अपराधी है या नहीं है? उस पर मुकदमा करेंगे कि नहीं करेंगे? नहीं करेंगे, बल्कि उसको वेतन देंगे।

जल्लाद न्यायाधीश के आदेश का पालन करता है, और वह अपराधी नहीं कहलाता तो इसी प्रकार जो ट्रक ड्राइवर है, वो भी ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, वह अपराधी क्यों होगा? उसको भी वेतन दो, ईनाम दो, तब तो हम मानें, कि हाँ भगवान का दिया हुआ आदेश है। अगर आप, जो भी मनुष्यों को मारें, उनको ईनाम देना शुरु कर दें, तो मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ, कि हाँ वो भगवान ने लिखा है। तैयार हैं आप लोग? अगर नहीं, तो इसका मतलब, वह कथन झूठ है, ईश्वर का आदेश नहीं है। जैसे आतंकवादी ने कानून तोड़ा और निर्दोष लोगों को मारा, इसलिए वो अपराधी माना गया। ऐसे ही उस ट्रक ड्राइवर ने कानून को तोड़ा और निर्दोष व्यक्तियों को मारा, इसलिए वो अपराधी गिना गया। इसलिए उस पर मुकदमा हुआ। इससे सिद्ध हुआ कि, यह सब भगवान का लिखा हुआ नहीं है।

64. शंका- स्वाभाविक आयु कितनी है?

☯ **समाधान-** उत्तर हैः-

● हर एक की स्वाभाविक आयु अलग-अलग है। क्योंकि हर एक के कर्म अलग-अलग हैं, इसलिए हर एक का फल भी अलग-अलग है। इसलिए हर एक के शरीर में शक्ति अलग-अलग भरी है।

● **परमात्मा ने जन्म के समय हमारे शरीर में जितनी शक्ति भर दी, वो शक्ति जब तक चलेगी, बस तब तक हमारी उमर है।** वो शक्ति कोई सत्तर साल में खर्च करेगा, कोई अस्सी साल तक, कोई सौ साल तक खर्च करेगा।

● आयुर्वेद आयु (जीवन) के बारे में बताता है। आयुर्वेद में एक सौ एक प्रकार की मृत्यु लिखी हुई है। और लिखा है कि उसमें से केवल एक मृत्यु स्वाभाविक (काल मृत्यु) है। केवल एक मृत्यु है स्वाभाविक। **वह हमारे कर्म के फल से होती है और वो अत्यंत वृद्धावस्था में होती है। जब शरीर की सारी शक्ति खत्म हो जाती है, तब जीवात्मा शरीर छोड़ देता है, यही है स्वाभाविक मृत्यु।**

जैसे मान लीजिए, एक व्यक्ति ने अपनी टॉर्च में दो बैटरी सेल डाल रखें हैं। वो टार्च को थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन प्रयोग करता है, धीरे-धीरे बैटरी सेल की शक्ति घटती जाती है और घटते-घटते एक दिन बिलकुल खत्म हो जाती है। अब आगे बैटरी सेल से वो टॉर्च नहीं जलती। जैसे बैटरी सेल की शक्ति धीरे-धीरे खत्म हो जाती है, यह उसकी 'स्वाभाविक-मृत्यु' (नेचुरल-डेथ) है। इसी प्रकार से शरीर की शक्ति धीरे-धीरे खर्च होते-होते, अत्यंत वृद्धावस्था में सारी शक्ति खत्म हो जाती है, बिल्कुल बैटरी सेल की तरह, उसका नाम है- स्वाभाविक मृत्यु (नेचुरल डेथ)।

● बाकी सौ प्रकार की मृत्यु अस्वाभाविक, आकस्मिक, अकाल-मृत्यु या एक्सीडेंटल डेथ है। यह पहले से लिखी हुई (डिसाइडेड) नहीं है। अगर कोई उस बैटरी सेल के ऊपर हथौड़ा मार दे, और तोड़ डाले, तो यह बैटरी सेल की अकाल मृत्यु (एक्सीडेन्टल डेथ) है। स्वाभाविक मृत्यु के पहले सौ प्रकार से मृत्यु हो सकती है। कोई जहर पी ले, कोई पंखे पर लटक जाए, कोई नदी में कूद जाए, कोई पिस्तौल से गोली मार ले, कोई बिजली का तार पकड़ ले, कोई ट्रेन के नीचे कट जाए, कोई प्लेन-क्रेश में मारा जाए, कोई ट्रेन-एक्सीडेंट में मारा जाए, कोई रोड-एक्सीडेंट में मारा जाए, कोई आतंकवादी गोली मार दे, कहीं पहाड़ से खाई में गिर जाए, पता नहीं कितने तरीकों से मर सकता है व्यक्ति। ये सब की सब

दुर्घटना से अकाल मृत्यु यानि एक्सीडेंटल-डेथ हैं। यह पहले से निश्चित नहीं। इसलिए सड़कों पर लिखा रहता है कि – "सावधानी हटी, दुर्घटना घटी"। इसलिए सावधानी से चलो, दुर्घटनाओं से बचो। इस प्रकार हमारी आयु को घटाना-बढ़ाना हमारे हाथों में है।

65. शंका- वन्य पशु-पक्षी अपना जीवन स्वच्छन्दता से जीते हैं। इसके बावजूद क्या वे दुःखी हैं अथवा क्या ईश्वर ने इन्हें सृष्टि-नियमन के लिए बनाया है?

☯ **समाधान-** इन दो प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं:-

- ईश्वर ने इन्हें सृष्टि नियमन के लिए भी बनाया है, और कर्म फल देने के लिए भी बनाया है। **सृष्टि की व्यवस्था, नियंत्रण, संतुलन भी चलता रहे और जीवात्माओं को उनके कर्मों का फल भी दिया जाए, ये दोनों ही कारण हैं।**
- अगला प्रश्न है कि क्या वे दुःखी हैं? हॉ, वे दुःखी तो हैं ही।
- यहाँ प्रश्न उठता है- यह कैसे पता चला, कि वे दुःखी हैं? उत्तर है – सुख का कारण है-बुद्धि। **जिस मनुष्य की बुद्धि अच्छी और अधिक होती है, वो सुखी रहता है। जिसकी बुद्धि खराब और कम होती है, वो दुःखी रहता है। इसी प्रकार से बाकी प्राणियों में तो बुद्धि कम है, इसलिए वे उतने सुखी नहीं हैं।** उनकी बहुत सी समस्याएं हैं।
- मनुष्य को जो बुद्धि उपलब्ध है, जितना पुरुषार्थ करके वह उस बुद्धि का विकास कर सकता है, उतनी बुद्धि दूसरे प्राणियों के पास नहीं है। वे न तो अपनी बुद्धि का उतना विकास कर सकते हैं, न ही अपनी समस्याओं को सुलझा सकते हैं। उनको एक बँधे-बँधाए रूटीन में जीना

होता है। कभी कोई आक्रमण करता है, कभी कोई और आक्रमण करता है। बेचारों को हर समय जान बचाने की टेंशन होती है। इसलिए वो दुःखी तो रहते ही हैं।

- एक व्यक्ति ने मुझसे प्रश्न किया – आप कैसे कह सकते हैं, कि कुत्ता, गौ आदि पशु अधिक दुःखी हैं, और मनुष्य ज़्यादा सुखी है। मैंने उत्तर दिया – मान लीजिए, मोहन ने राजेश से पूछा – आपको मासिक वेतन कितना मिलता है? राजेश ने कहा :- 20,000 रुपये मासिक। मोहन- मैं आपको 25,000 रुपये मासिक दूँगा, क्या आप मेरी कम्पनी में काम करेंगे? हाँ या न? राजेश ने कहा:- हाँ। फिर मोहन ने राजेश से पूछा- मैं आपको 15,000 रुपये मासिक दूँगा, क्या आप मेरी कम्पनी में काम करेंगे? हाँ या न ? राजेश ने कहा :- न। इससे क्या समझ में आया? जब व्यक्ति को लाभ दिखता है, तो वह 'हाँ' बोलता है। जब हानि दिखती है, तो वह 'न' बोलता है। इसी तरह से मैंने उस व्यक्ति को यह दृष्टान्त सुनाकर पूछा- क्या आप अगले जन्म में कुत्ता बनना चाहेंगे ? हाँ या न? वह व्यक्ति बोला-न। इससे सिद्ध हुआ कि कुत्ता, गौ आदि बनने में दुःख अधिक है। और मनुष्य बनने में सुख अधिक है।

66. शंका- अगर पशु योनि में बुद्धि नहीं है, तो उनकी क्रिया जैसे कि लागणी, प्रेम, स्वरक्षण जैसे गुण कहाँ स्थित होते हैं?

☯ **समाधान-** हमने ऐसा तो कभी नहीं कहा कि पशु योनि में बुद्धि नहीं है। मैंने यह नहीं कहा था कि केवल मनुष्यों के पास बुद्धि है, पशु-पक्षियों के पास नहीं। हम तो मानते हैं कि पशुओं में बुद्धि होती है।

मैंने यह कहा था कि **जितनी बुद्धि मनुष्य के पास है, इतनी बुद्धि पशु-पक्षियों के पास नहीं है।** मनुष्यों के पास जैसी बुद्धि है और पढ़-लिखकर मनुष्य जितनी बुद्धि का विकास कर सकते हैं, ऐसी बुद्धि प्राणियों के पास नहीं है और वो इतना विकास नहीं कर सकते, जितना कि मनुष्य कर सकता है।

इसका अर्थ हुआ कि पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों में भी बुद्धि है, पर कम है। इतनी कम बुद्धि के आधार पर वो अपना जीवन चला लेते हैं। पशु-पक्षियों के छोटे-छोटे बच्चे होते हैं, वे उनके प्रति राग रखते हैं, उनको खिलाते-पिलाते हैं, उनकी रक्षा भी करते हैं, अपनी रक्षा भी करते हैं। इतना काम वो कर सकते हैं। इतनी बुद्धि उनमें है।

67. शंका- कई श्रेष्ठ व्यक्ति अपने सेवाभावी कार्यों के लिए जाने जाते हैं। परंतु उन्होंने कभी वेद के अनुसार ईश्वर की उपासना नहीं की। ईश्वर इन्हें दण्ड देगा या पुरस्कार?

☯ **समाधान**- उन्होंने जितने काम अच्छे किए हैं, उतना तो उनको ईश्वर ईनाम देगा। और जो वेद के अनुकूल ईश्वर की उपासना नहीं की, उतना उनको दण्ड मिलेगा। वास्तव में 'कर्म न करने' का दण्ड नहीं होता। दण्ड होता है, 'निषिद्ध कर्म करने का।'

ईश्वर की उपासना' विहित कर्म है। यह उन्होंने नहीं किया। इसलिए ईश्वर से जो आनंद मिलता है, वो इनको नहीं मिलेगा। और जो उन्होंने 'संसार की उपासना' की, यह निषिद्ध कर्म है। यह उन्होंने किया। इसका दण्ड मिलेगा। और वह दण्ड होगा- अविद्या, राग, द्वेष आदि दोषों की वृद्धि, सकाम कर्म करना और बार-बार संसार में जन्म लेकर दुःखों को भोगना। यदि वे लोग वेद के अनुसार ईश्वर की उपासना भी करते, तो उन्हें पुरस्कार (मोक्ष) भी मिलता। अब मोक्ष नहीं मिलेगा।

68. शंका- छोटी बच्ची के साथ दुष्कर्म करना, छोटे बच्चों को पकड़कर अंग काटना, भीख मँगवाना आदि करने वालों के विरुद्ध भगवान अपनी शक्ति क्यों नहीं दिखाता? उन बच्चों ने क्या अपराध किया?

☯ **समाधान**- उत्तर है:-

● एक सिद्धांत है कि, व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। अगर कोई व्यक्ति चोरी करता है, डकैती करता है, लूटमार करता है, शोषण करता है, अंग-भंग करता है, अन्याय करता है, और ईश्वर उसका हाथ पकड़ ले तो क्या तब वो स्वतंत्र माना जाएगा? नहीं माना जाएगा।

● **चाहे चोरी, अन्याय, शोषण या लूटमार कुछ भी करो। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए ईश्वर तत्काल उस समय हाथ नहीं पकड़ता।**

तीन घंटे की परीक्षा है। विद्यार्थी को प्रश्न-पत्र दे दिया। तीन घण्टे तक कुछ भी सही-गलत लिखो। मान लो, अध्यापक ने वहीं चक्कर मारते-मारते देख लिया कि वह गलत उत्तर लिख रहा है तो क्या अध्यापक उसका हाथ पकड़ लेगा कि तुम गलत मत लिखो? तीन घंटे तक आप (विद्यार्थी) कुछ भी लिखो, आपकी मर्जी। इसी प्रकार से व्यक्ति कुछ भी करे, ईश्वर वहाँ अपनी शक्ति नहीं दिखाता।

● कर्म करने में हम 'स्वतंत्र' हैं, फल भोगने में 'परतंत्र' हैं। **जब फल देने का समय आता है, तब ईश्वर फल देता है।** जैसे तीन घंटे पूरे होंगे, तभी तो नंबर मिलेंगे, बीच में नम्बर नहीं मिलते। बीच में उसका हाथ नहीं पकड़ा जाता है। उसके बाद में उत्तर पुस्तिका हमारे (परीक्षक के) पास में आएगी, फिर हमारी (परीक्षक की) मर्जी चलेगी। जो आपने किया उसके आधार पर नम्बर मिलेंगे।

वैसे ही हमारे जीवन के तीन घंटे तब पूरे होते हैं, जब मृत्यु आती है। पहला घंटा बचपन है, दूसरा जवानी है, तीसरा बुढ़ापा है। और उसके बाद जब घंटी बजती है तो शांतिपाठ होता है (मृत्यु होती है), फिर नंबर मिलते हैं। ईश्वर अपनी शक्ति कब दिखाता है? **जब उसका अवसर आता है, तब ईश्वर अपनी शक्ति दिखाता है।**

● जिसने अच्छे कर्म किए, उसको ईश्वर मनुष्य बना देंगे। जिसने चोरी, बदमाशी, उल्टे-सीधे काम किए। उसको सुअर, गधा, बिल्ली, मच्छर, मक्खी, उल्लू, आदि बना देंगे।

● कुछ कर्मों का फल इसी जन्म में भी मिलता है और कुछ का आगे भी मिलता है।

69. शंका- जब तक हम स्थूल (शारीरिक, वाचनिक) रूप से किसी पर प्रभाव नहीं डालते, तब तक गुनाह नहीं हो सकता। मन में एक पल के लिए बुरा विचार आया और अगले ही पल विचार बदल गया। तो विचार मात्र से पाप क्यों माना जाए अर्थात् बिना क्रिया के परिणाम या फल कैसे?

☯ **समाधान**- हमने मन में कुछ बुरा विचार किया और अगले ही पल उस विचार को बदल दिया, यानि कोई बुरा विचार किया, लेकिन उसकी क्रिया नहीं की और फिर वो बुरा विचार मन से हटा दिया। हमारे विचारमात्र से कोई प्रभावित या सुखी-दुःखी नहीं होता तो इसमें पाप क्यों माना जाए? यह प्रश्न है।

● **भले ही हमारे बुरे विचार से दूसरों का कोई नुकसान नहीं हुआ, वाणी से हमने कुछ नहीं कहा, शरीर से किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया, केवल मन ही मन में बुरा सोचा। इससे दूसरों को तो प्रत्यक्ष रूप से कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन हमारा नुकसान जरूर हुआ।**

अगर हम गलत योजना बनाते हैं, बुरी योजना बनाते हैं, तो इससे हमारे संस्कार अवश्य बिगड़ेंगे और आगे हम भविष्य में भी गलत योजनायें बनायेंगे और गलत काम करेंगे। हर बार ऐसा थोड़े होगा कि हमने योजना बनाई, और बदल दी। हर बार बदलेंगे नहीं। कई बार तो कर ही डालेंगे। तो हमारे विचार, संस्कार न बिगड़ें, इसलिए हमको मन मे भी बुरी बात नहीं सोचनी चाहिए।

यहाँ एक और सावधानी रखने की बात यह है कि, मानसिक कर्म में दो स्थितियाँ हैं। एक स्थिति में तो केवल 'विचार' मात्र है, वो कर्म नहीं माना जायेगा। जबकि दूसरी स्थिति में, वो 'कर्म' भी माना जायेगा।

- पहली स्थिति क्या है? एक व्यक्ति ने मन में सोचा- झूठ बोलूँ, या नहीं बोलूँ? यहाँ दिमाग में दो पक्ष हैं कि, मैं झूठ बोलूँ, या फिर नहीं बोलूँ? यहाँ तक तो इसका नाम है - 'विचार'। अभी यह कर्म नहीं बना। इसका कोई दंड नहीं है।

- अगर दो निर्णयों में से एक निर्णय कर लिया कि 'आज झूठ बोलूँगा'। ऐसा निर्णय कर दिया, तो यह 'कर्म' बन गया। इसका दंड जरूर मिलेगा। 'आज चोरी करूँगा', यदि मन में यह फैसला कर लिया, फिर बाद में चाहे हम शरीर से न करें, यानी योजना बदल दें, लेकिन एक बार योजना बन गई, निर्णय कर लिया कि आज चोरी करनी है, तो वो कर्म बन जाएगा, इसलिए इसका दंड भी अवश्य मिलेगा। यह 'मानसिक-कर्म' है। इसका 'मानसिक-दंड' मिलेगा। इससे हमारे संस्कार बिगड़ेंगे।

- सावधानी रखें और गलत योजनाएं कतई नहीं बनाएं। विचार गलत आते हैं, अच्छे आते हैं, वो आते ही रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। मन में उठने वाले प्रत्येक विचार का सतत परीक्षण और निरीक्षण करें कि, मैंने जो विचार उठाया, वह ठीक है या गलत ? गलत है, तो उस पर लगाम (ब्रेक) लगाएं। उसको तुरंत निकाल दें।

- जो ठीक विचार हैं, उनको मन में रखें। ठीक विचारों के अनुसार ही 'योजनाएं' बनाएं और सिर्फ योजनाएं ही नहीं बनाएं 'आचरण' भी करें। बहुत सारे लोग सिर्फ योजनाएं ही बनाते रहते हैं, उसके अनुसार काम नहीं करते। उससे कोई विशेष लाभ नहीं है, विशेष उन्नति नहीं है।

 १२८

70. शंका- किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरुष का जन्म मिलता है?

☯ **समाधान-** भई, ये पूरे-पूरे तो मुझे भी समझ में नहीं आए, तो मैं आपको कैसे बताऊँ कि कौन से कर्म करेंगे तो स्त्री बनेंगे, और कौन से कर्म करेंगे तो पुरुष बनेंगे। मुझे इतना समझ में आया कि बस अच्छे से अच्छा कर्म करो। अब भगवान जो बनाना होगा, बना देगा।

कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी हुई है कि, स्त्री जन्म अच्छा है। कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी है कि पुरुष जन्म अच्छा है। जो सत्य है, वो सत्य है। सत्य को जानना-समझना चाहिए और सत्य को खुलकर स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि उससे हमारी उन्नति होती है।

- वैसे तो स्त्री और पुरुष दोनों एक ही योनि में हैं, मनुष्य योनि में। मनुष्य योनि की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ऊँचा-नीचा नहीं है। क्या स्त्रियों का बस में आधा टिकट लगता है और पुरुषों का पूरा लगता है? नहीं न। इस हिसाब से दोनों भारत के समान नागरिक हैं। दोनों को समान अधिकार है, वोट देने का अधिकार बराबर है। अधिकार की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। जहाँ स्त्रियों का आधा वोट है, वह गलत बात है। यह वेद के अनुसार अन्याय है। वेद में स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर बताया है। अधिकार तो दोनों का एक दूसरे पर बराबर होता है।

व्यावहारिक दृष्टि से किसी-किसी क्षेत्र में स्त्रियाँ ऊपर हैं, पुरुष छोटे हैं। किसी क्षेत्र में पुरुष बड़े हैं तो स्त्रियाँ छोटी हैं। वो अलग-अलग क्षेत्र हैं। कौन सा क्षेत्र है इसमें? अब ये जानेः-

- वेद कहता है - जब बालक के साथ माता-पिता का संबंध हो, तो माता बड़ी और पिता छोटा। माता का नंबर पहला, माता सबसे पहली गुरु है। अगर पहली गुरु बुद्धिमान हो, तो बच्चा बुद्धिमान बनेगा। और पहली गुरु ही मूर्ख हो तो बच्चा मूर्ख बनेगा।

- शास्त्रों में स्त्री को 'पूज्य' कहा है। उसे अधिक सम्मान देने का विधान है। यहाँ पुरुष छोटा और स्त्री बड़ी। यह एक क्षेत्र है।

- और दूसरा क्षेत्र है, पति-पत्नी का। जब पति-पत्नी का आपस में संबंध हो, तो वहाँ पति बड़ा और पत्नी छोटी। वहाँ यह नियम है। अब बताइए, क्या चाहिए आपको, एक तरफ पुरुष बड़े हैं, एक तरफ स्त्रियाँ बड़ी हैं।

- हाँ, यह ठीक है कि कहीं व्यावहारिक दृष्टि से कुछ समस्याएं पुरुषों के साथ कम हैं, और स्त्रियों के साथ कुछ अधिक हैं। कुछ

 १२९

हमारी जिम्मेदारियाँ रहती हैं व्यवहार की। उसमें स्त्रियों पर बंधन अधिक रहते हैं, पुरुषों पर उतने नहीं होते हैं। स्त्रियों का जीवन अधिक बाधित रहता है। इनको माँ बनना पड़ता, पुरुष तो बनेगा नहीं। शुद्धि की दृष्टि से स्त्री का शरीर ज्यादा गंदा होता है। महीने के कुछ दिन शारीरिक दृष्टि से विवशता रहती है। पुरुष का शरीर अधिक सख्त और बलवान होता है, स्त्री में कोमलता होती है। वातावरण को सहन करने की क्षमता पुरुष में अधिक होती है। पुरुष अधिक कार्य कर सकता है। स्त्री का शरीर जल्दी विकसित होता है और बीस-पच्चीस साल के बाद शिथिल हो जाता लेकिन पुरुषों में चालीस साल तक बढ़ता है। इसलिए विद्या आदि पढ़ने का अवसर पुरुष मे अधिक होगा।

● पुरुष तो अकेला घूम लेगा, खा लेगा, कहीं रात को दो बजे प्लेटफार्म पर सो जाएगा, उससे कोई पूछने वाला नहीं। वो तो अकेला ही पूरे देशभर में घूम आएगा। पर स्त्रियों को इतनी सुविधा नहीं है। उस दृष्टि से हमको स्वीकार करना पड़ता है। बाकी तो मनुष्यता की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ज्यादा हीन भावना (इंफीरियरटी कॉम्पलेक्स) की जरूरत नहीं है।

● आयु के कारण अनुभव में भेद होता है। पति अधिक आयु का होता है। इसलिए उसका अनुभव ज्यादा होता है। परीक्षाफल की दृष्टि से स्त्री आगे है क्योंकि पुरुष उतनी मेहनत नहीं करते। इतिहास देखेंगे तो पुरुष ज्यादा विद्वान रहे हैं। विद्या का आरम्भ हमेशा पुरुषों से हुआ है। वेद हमेशा ऋषि (पुरुष) को ईश्वर देता है।

● वेद में लिखा है, स्त्रियाँ बेशक पढ़ सकती हैं। 'सत्यार्थ-प्रकाश' में महर्षि दयानंद जी ने लिखा - अगर ईश्वर का प्रयोजन स्त्रियों को पढ़ाने में न होता, तो इनके शरीर में आँख और कान क्यों रखता। वे भी वेद पढ़ सकती हैं, वे भी वैराग्य प्राप्त कर सकती हैं, वे भी संन्यास ले सकती हैं। पर वे प्रायः संन्यास लेती नहीं, झगड़े करती हैं, तो हम क्या करें? वे प्रायः झगड़ा ज्यादा करती हैं, राग-द्वेष ज्यादा करती हैं, वेद पढ़ती नहीं हैं, तो दोष इनका है। बाकी इनका चाँस पूरा है।

"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" अर्थात् अथर्ववेद में लिखा है कि - "कन्या को भी ब्रह्मचर्य का पालन करके, वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। और विद्या पढ़कर फिर विवाह करना चाहिए।" तो छूट सबको है, बाकी कोई करे या न करे, वो उसकी मर्जी।

● सामान्यतः पुरुष स्त्री नहीं बनना चाहता, लेकिन स्त्री पुरुष बनना चाहती हैं। इस दृष्टि से पुरुष कुछ बड़ा सिद्ध होता है।

71. शंका- स्वामी सत्यपति जी ने इतने अच्छे कर्म किए, फिर भी उन्हें रोगों से क्यों पीड़ित होना पड़ रहा है?

☯ **समाधान-** उन्होंने अपनी ओर से तो अच्छे कर्म किए। पर क्या दूसरों ने भी उनके साथ अच्छे कर्म किए? क्या उनको वैसी सारी अनुकूलताएं मिलीं, जैसी मिलनी चाहिए? नहीं मिलीं। बहुत सारे कारण होते हैं:-

● अपने कारण से भी कहीं-कहीं गलतियाँ होती हैं। व्यक्ति अपने खराब कर्मों के कारण रोगी या दुःखी हो सकता है। भारत-पाकिस्तान जब से डिवाइड हुआ, तब से स्वामी सत्यपति जी ने अपना जीवन बदला। उसके बाद तो उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए, इसमें कोई संशय नहीं है। पर उसके पहले का जीवन गुरुजी बताते हैं,पहले कुछ अनपढ़ थे, स्कूल में गये नहीं, पशु चराते थे और बचपन में कुछ गलतियाँ, कमियाँ हो सकती हैं। कुछ उसका परिणाम है।

● दूसरों के अन्याय से उसको परेशानी भोगनी पड़ सकती है। जैसे स्वामी दयानंद ने अच्छा काम किया, वेद का प्रचार किया। फिर भी कितने लोगों ने उनको पत्थर मारे, जहर खिलाया, साँप फेंके, कितने आरोप लगाए। ये कोई उनके अच्छे कर्मों का फल थोड़े ही था। यह तो ईर्ष्यालु लोगों का अन्याय था। कितनी बार लोगों ने जहर पिला दिया धोखे से। इस प्रकार दूसरों के अन्याय से भी हमको परेशानी होती है, कष्ट होता है, रोग आ जाते हैं, दुःख आ जाते हैं।

कुछ बाद में जो स्वामी सत्यपति जी को खाने-पीने की सुविधा मिलनी चाहिए थी, वो ठीक तरह से नहीं मिली।

● हो सकता है कोई पैतृक-दोष भी हो। जो आनुवांशिक (जेनेटिक) बोलते हैं, हेरीडिटी से सम्बन्धित। हमारे पैतृक-दोष के कारण भी कुछ रोग और दोष आ सकते हैं। कुछ वो कारण भी हो सकते हैं। यह जो हेरीडिटी से आ रहा है, यह प्रारब्ध है। ऐसा नहीं होता कि पिछले जन्म के कर्मों का फल आज अचानक से ईश्वर यूँ चिपका दें। प्रारब्ध का जो फल है, वो हेरीडिटी से मिलेगा, पैतृक रोगों के रूप में मिलेगा, वहीं से आएगा जेनेटिकली।

● कहीं प्राकृतिक कारणों से भी हमको रोग और दुःख आ सकते हैं। और बहुत सारे कारण हैं।

इस जन्म के दुःख के तीन कारण है :- अपनी गलतियाँ, दूसरों के द्वारा किया गया अन्याय और प्राकृतिक दुर्घटनाएं। आनुवांशिक को मिलाकर, दुःख के चार कारण हो सकते हैं। इनमें से कौन सा कारण कितना रोग या दुःख उत्पन्न कर रहा है, यह पूरा-पूरा जानना-समझना और कहना बहुत कठिन है।

72. शंका- कोई व्यक्ति शादी करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या नहीं? श्री राम और कृष्ण जी भी तो गृहस्थ ही थे। फिर उनको योगी क्यों कहा गया है?

☯ **समाधान-** यह निर्विवाद है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों क्षत्रिय थे। दोनों ने महाभारत युद्ध किया और करवाया जिसमें सैकड़ों, हजारों लोग मरे।

- 'सत्यार्थ-प्रकाश' के पॉचवे समुल्लास में महर्षि दयानंद जी लिखते हैं कि - "मोक्ष केवल संन्यासी का होता है, और किसी का नहीं होता। और संन्यास लेने का अधिकार मुख्य रूप से ब्राह्मण को है।" तो दो बातें हो गईं, मोक्ष के लिए संन्यास जरूरी है और संन्यास के लिए ब्राह्मण बनना जरूरी है।

- अब यह बताइए कि श्रीकृष्ण जी ब्राह्मण थे, या क्षत्रिय थे? क्षत्रिय थे। फिर वो बाद में संन्यासी बने या नहीं बने? नहीं बने।

- रही बात श्रीराम और श्रीकृष्ण जी को योगी क्यों कहा गया है? इसका उत्तर है, कि वे गृहस्थ होते हुए भी योगाभ्यास (ईश्वर का ध्यान) करते थे।

- श्री कृष्ण को योगेश्वर कहते हैं। योगेश्वर का मतलब योगाभ्यास करते थे, योग-विद्या जानते थे, अभ्यास (प्रैक्टिकल) करते थे, सत्तर-अस्सी प्रतिशत तक पहुँचे, अभी बीस प्रतिशत बाकी था, सौ प्रतिशत तक नहीं पहुँचे। जो व्यक्ति गणित (मैथ्स) में एम.एस.सी कर लें, क्या उसको गणितज्ञ (मैथेमेटिशियन) नहीं कहेंगे? गणितज्ञ तो कहेंगे, पर अभी उसने मैथ्स में पी.एच.डी. नहीं की। वो थोड़ी बाकी है।

- श्रीकृष्ण जी ने सत्तर-अस्सी प्रतिशत योग्यता बनाई, दस-बीस प्रतिशत बाकी थी। इसलिये उस जन्म में तो उनकी मुक्ति नहीं हुई। वो योग्यता अगले जन्म में, या और एक दो जन्म के बाद, उन्होंने पूरी कर ली होगी। जब पूरी कर ली तो उसके बाद मोक्ष हो सकता है।

- वीरगति का क्या अर्थ है? वीरगति का अर्थ-अच्छे जन्म की प्राप्ति। अगले जन्म में अच्छा उत्तम फल प्राप्त करना, यह वीरगति है।

जो क्षत्रिय अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अर्थात् न्याय की रक्षा के लिए लड़ते हुये युद्ध में जाकर के शहीद हो जाता है, फिर चाहे हारे या जीते, उससे कोई मतलब नहीं है। उसने अपना कर्तव्य पूरा किया, वो वीरगति को प्राप्त होगा। उसको आगे अच्छा फल मिलेगा। उसने कर्तव्य का पूरा पालन किया। कोई पाप नहीं किया, बुरा काम नहीं किया, यह तो हमने बिल्कुल स्वीकार किया।

- मोक्ष की योग्यता पूरी हो जाना, यह एक अलग बात है। उसके लिए ब्राह्मण के बाद फिर संन्यासी बनना अनिवार्य है। ब्राह्मणत्व और संन्यास जब तक हम धारण नहीं करते, तब तक मोक्ष नहीं होगा। इससे पहले मोक्ष नहीं होने वाला। यह सब करने का उद्देश्य पाँच क्लेशों का नाश करना है। संन्यासी बनने के बाद समाधि लगाकर के अविद्या आदि पाँच क्लेश पूरे नष्ट होने चाहिए। यह योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि का कहना है। जब तक पाँच क्लेश पूरे नष्ट नहीं होंगे, किसी का मोक्ष होने वाला नहीं है।

- यूँ तो सारे सम्प्रदाय वाले भ्रांति में हैं। वो सारे यह समझते हैं कि हमारा मोक्ष हो जाएगा, लेकिन हो थोड़ी जाएगा।

श्रीकृष्ण ने अच्छे काम किए, कर्तव्य का पालन किया, धर्म की रक्षा की, अन्याय का विरोध किया, तो इनको अगला जन्म बहुत अच्छा मिला, यहाँ तक तो कोई आपत्ति नहीं है। यहाँ तक हमें स्वीकार है। आगे एक-दो जन्म और जोर लगाया होगा और फिर मोक्ष हो गया होगा। इसको मानने में आपत्ति नहीं है।

● श्रीराम जी का भी वही उत्तर है। श्रीराम जी भी क्षत्रिय थे, वो भी ब्राह्मण पूरे नहीं बने। उन्होंने अयोध्या में तीस वर्ष तक राज्य किया और उसके बाद उन्होंने वानप्रस्थ लिया। वानप्रस्थ श्रीराम ने भी लिया, वानप्रस्थ श्रीकृष्ण जी ने भी लिया, दोनों ने लिया। पर संन्यासी दोनों में से कोई भी नहीं बन पाया।

● **कोई व्यक्ति गृहस्थ में जाकर के भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।** पर उसको गृहस्थ के नियमों का पालन करना पड़ेगा।

● प्रश्न में यह तो लिखा है कि राम और कृष्ण गृहस्थ थे। लेकिन यह नहीं लिखा कि वो कैसे गृहस्थ थे। यह नहीं पता लोगों को। आपको पता है, रामचन्द्र जी ने शादी करने के बाद कितने वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया? चौदह वर्ष वनवास में रहे, पत्नी साथ में थी। बताइए, कितनी संतान उत्पन्न की? एक भी नहीं।

चौदह वर्ष तक श्रीराम ने गृहस्थ होते हुए, पत्नी साथ रखते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन किया। ऐसे ही श्रीकृष्ण जी ने भी शादी के बाद बारह साल तक तपस्या की, ब्रह्मचर्य की साधना की।

● बात करते हैं कि वो गृहस्थ थे। भई! गृहस्थ थे, तो उनके जैसे गृहस्थ बनो, फिर तो ठीक है। गृहस्थ बनकर भी उन जैसे आचरण करें। **ऐसे गृहस्थ आप बनना चाहें तो स्वागत है, खूब बनो। और उसके बाद फिर देश-धर्म के लिय एक अच्छी बढ़िया संतान उत्पन्न करो।** उस संतान का अच्छी तरह पालन करें, उसको विद्वान बनायें, धार्मिक बनाएं, सदाचारी, ईश्वर भक्त, ईमानदार बनाएं।

● श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों राजा थे, दोनों क्षत्रिय थे। और पूरा जीवन न्याय के लिए लड़ते थे। धर्म की रक्षा की, न्याय की रक्षा की, ऐसे आदर्श गृहस्थ बनना हो तो स्वागत है, खूब बनो।

● **लोग यह तो याद रखते हैं कि राम और कृष्ण गृहस्थी थे, यह भूल जाते हैं कि उन्होंने वानप्रस्थ भी लिया।** आज वानप्रस्थ कोई लेता नहीं? आपको वानप्रस्थ लेना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी, साधना करनी पड़ेगी, वैराग्य ऊँचा उठाना पड़ेगा।

● उसके बाद संन्यास लेना पड़ेगा। और संन्यास के बाद पाँच क्लेश राग-द्वेष नष्ट करने पड़ेंगे। तब जाकर मोक्ष होगा। तो यह कठिन काम है, लंबा काम है पर असंभव नहीं है। **गृहस्थी बनने के बाद भी इस तरह से चलेंगे तो मोक्ष हो सकता है।**

● यदि ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासी बनेंगे तो थोड़ा आसान पड़ेगा। गृहस्थी में से होकर जाएंगे तो थोड़ा कठिन पड़ेगा। संभव तो है, पर आज कोई इतना काम करने के लिए तैयार नहीं। ऐसा माहौल भी नहीं, ऐसा राजा भी नहीं, ऐसी प्रजा भी नहीं, ऐसा सहयोग भी नहीं, सारा ही कुछ उल्टा है। तो आज के माहौल में गृहस्थ बनकर मोक्ष प्राप्त करना बहुत कठिन है। फिर भी चलो इस बार जो हुआ, सो हुआ, अगली बार अगले जन्म के लिए तैयारी करो।

● आजकल के लोग तो यह सोचते हैं, कि गृहस्थाश्रम मौज-मस्ती के लिए है। योगाभ्यास (ईश्वर-भक्ति या ध्यान) तो बुढ़ापे में करने की चीज है। ऐसा सोचना गलत है। और कितने ही लोग तो बुढ़ापे में भी ईश्वर का ध्यान नहीं करते, जीवन का बचा-खुचा समय (बुढ़ापा) भी ताश खेलकर नष्ट कर देते हैं। इसका दण्ड तो उनको भोगना ही पड़ेगा।

73. शंका- क्रियात्मक-योगाभ्यास नामक पुस्तक में आया है कि बिना 'ईश्वर दर्शन' के 'अज्ञान' का नाश नहीं होगा। योगाभ्यास तथा ज्ञान के बिना ईश्वर-दर्शन संभव नहीं है। लेकिन ईश्वर के ज्ञान के पश्चात् भी कोई सूक्ष्म-अज्ञान आत्मा से लिपटा रहता है। ऐसा क्यों?

☯ **समाधान**- देखिए, एक कहावत आपने सुनी होगी, कि **पैसा पैसे को कमाता है।** अगर आपके पास पांच-सात लाख रूपये हैं, तो आप आगे बिजनेस करके ज्यादा पैसा कमा सकते हैं। यदि आपके पास पूँजी (कैपिटल) ही नहीं, तो आप निवेश (इन्वेस्टमेंट) कैसे करेंगे? बिजनेस में लाभ (प्रॉफिट) क्या कमायेंगें? नहीं कमा सकते। तो व्यापार में धन कमाने के लिए, पहले इन्वेस्टमेंट करने के लिए कुछ राशि होनी चाहिए। वो राशि आगे नई राशि को कमा सकती है।

इसी प्रकार से कुछ ज्ञान पहले हमारे पास होगा। उस ज्ञान से पुरूषार्थ करके हम ईश्वर का दर्शन कर सकते हैं। अब जब ईश्वर का दर्शन हो

जाएगा, तो उससे नया ज्ञान मिलेगा, जो अविद्या आदि क्लेशों को नष्ट करेगा। दोनों एक दूसरे पर आधारित हैं। पहले ज्ञान, फिर ईश्वर का दर्शन होगा। फिर ईश्वर दर्शन से प्राप्त हुए नये ज्ञान की प्राप्ति से अविद्या आदि का नाश होगा।

हर एक की योग्यता अलग-अलग है। कोई एक ही जन्म में टाटा-बिरला बन सकता है। किसी को पचास जन्म भी लग जायेंगे। वो अपनी-अपनी योग्यता व पुरूषार्थ की बात है। इसी प्रकार से मोक्ष-प्राप्ति की बात भी समझनी चाहिये। कोई ऐसा भी हो सकता है, जो इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर ले। कोई हो सकता है कि- पांच जन्म में मोक्ष प्राप्त कर सके और किसी को पचास जन्म भी लग जायें। वो हर एक की योग्यता और पुरूषार्थ की अलग-अलग स्थिति पर निर्भर है।

74. शंका- 'मिश्रित कर्म' क्या है?

☯ **समाधान**- जब किसी कर्म में कुछ अंश तो अच्छाई का, और कुछ अंश बुराई का हो, यानी दोनों इकट्ठे होते हैं, तो उसको मिश्रित-कर्म कहते हैं।

एक उदाहरण सुनिए - एक परिवार में सब लोग घर में रात को खाना खा चुके थे। इतने में अचानक दरवाजे पर घंटी बजी। जब दरवाजा खोला तो अपना एक रिश्तेदार बड़ी दूर से आ रहा था। वो रात को साढ़े दस बजे अचानक आ गया। उसने पहले दूरभाष के द्वारा अपने आने की सूचना भी नहीं दी।। आकर बोला - "देखो जी, मेरी गाड़ी लेट हो गई, मेरे पास रास्ते में खाना था, वो भी खत्म हो गया। और मुझे जोर से भूख लगी है, मेरे मोबाइल फोन की बैटरी डाउन हो गई, मैं सूचना भी नहीं दे पाया। मेरे लिए खाना लाओ, नहीं तो रात को नींद नहीं आएगी।"

वह कितने बजे रात को बोला ? साढ़े दस बजे। खाना खत्म हो गया था। अब बताइए, फिर दोबारा दाल बनाओ, रोटी बनाओ, सब्जी बनाओ, खाना बनाते-खिलाते रात को बजेंगे साढ़े बारह। सब काम निपटाने में एक भी बज सकता है।

१३६

रिश्तेदार है, भूखा तो सुला ही नहीं सकते। रिश्तेदार आपको भी तंग करेगा कि - "मुझे खाने को दो, मुझे नींद नहीं आ रही है, मैं करूँ क्या। बाजार में अब क्या मिलेगा, साढ़े दस बज रहे हैं, सब दुकानें बंद हो गई।" व्यक्ति मन में क्या सोचता है ? कैसे लोग हैं, पहले से बताते भी नहीं हैं। हम पहले से बनाकर रखते। अब रात के साढ़े दस बजे आकर कहते हैं - "जी खाना खिलाओ।"

अगर रिश्तेदार को खाना नहीं खिलाया तो 'अशुभ-कर्म' है। और खिलाया तो खिलाने के दो ऑप्शन हैं - जो यजमान रात को नए सिरे से भोजन पकाएगा वह या तो खुश होकर के खिलाएगा या दुःखी होकर खिलाएगा? अगर खुश होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'शुभ-कर्म'। और अगर दुःखी होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'मिश्रित- कर्म'। खाना खिलाया, यह तो अच्छी बात है। लेकिन दुःखी होकर के खाना खिलाया, यह बुरी बात है। दोनों मिक्स हो गई न। उतना पुण्य माइनस हो जाएगा, उतना पुण्य कट जाएगा। आप सोच लेना, फिर जैसा करना हो।

75. शंका- जो मनुष्य जन्म से ही अपाहिज होता है, मंद-बुद्धि होता है। जिसका दुःख पैदा होने वाली संतान और माता-पिता दोनों को मिलता है। तो यह किसका कर्मफल है?

☯ **समाधान**- यह माता-पिता और संतान, तीनों का कर्मफल है। इसीलिए जन्म से ही व्यक्ति विकलांग और मंद-बुद्धि हुआ। तीनों के कर्म आपस में मिलते-जुलते हैं। इसलिए ईश्वर ने सोच-समझकर ऐसी संतान, ऐसे माता-पिता के यहाँ भेजी है। संतान के भी कर्म खराब हैं, उसको विकलांग बनाना है और माता-पिता के भी खराब हैं, उनको विकलांग संतान देनी है। तो तीनों मिलके अपना कर्मफल भोगेंगे। यह परमात्मा का कर्मफल विधान है। इसका प्रमाण 'न्याय-दर्शन' में लिखा है।

१३७

76. शंका- मनुष्य का जन्म पहला है कि अन्य प्राणियों का?

समाधान- उत्तर यह है कि पहला जन्म कोई नहीं। पहला जन्म मानते ही भयंकर समस्या उत्पन्न होगी। मान लो, ईश्वर ने किसी आत्मा को पहला जन्म दिया, तो प्रश्न होगा कि, कर्म के आधार पर देगा या बिना कर्म के आधार पर देगा? अगर पहला जन्म दिया तो कर्म कहाँ से आ गया? पिछले कर्म के आधार पर तो पीछे कर्म हुआ न, तो वो पहला जन्म नहीं हुआ न। बस यही उत्तर है। पहला जन्म कोई नहीं है।

जब भी जन्म मिलेगा वो कर्म के आधार पर मिलेगा। और वो कर्म कहाँ से आएगा, उससे पिछले जन्म का। और उससे पिछले जन्म में जो कर्म आया, वो कहाँ से आया, उससे पिछले का। उससे पिछले का, उससे पिछले का। इसलिए पहला जन्म कोई नहीं है।

77. शंका- आपने कहा था कि पचास प्रतिशत पाप और पचास प्रतिशत पुण्य हैं, तो साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। लेकिन यदि चपरासी, मजदूर आदि के यहाँ जन्म लेने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरी लग जाए तो, इसे क्या समझना?

समाधान- जन्म होने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरी लग जाए, तो उसको आधिभौतिक सुख मिलेगा।

- पहली बात-एक करोड़ की लॉटरी लगना कोई कर्म-फल नहीं था। बालक को ईश्वर ने जिस माता-पिता के यहाँ भेजा, उस दिन माता-पिता की जो स्थिति है, वहाँ तक तो उसका कर्मफल है। उसके बाद उसमें बिगाड़ भी हो सकता है, सुधार भी हो सकता है।

मान लीजिए, एक अच्छे सेठ के यहाँ एक आत्मा को ईश्वर ने भेजा। जिस समय आत्मा को सेठ के परिवार में भेजा, उस समय सेठ बहुत संपन्न था। और उसके दो तीन दिनों बाद बेचारे का दिवाला पिट जाने से वो गरीब

हो गया। जिस समय ईश्वर ने आत्मा को उस परिवार में भेजा उस समय उस बालक के कर्मफल के अनुसार भेजा। आगे को घट भी सकता है, बढ़ भी सकता है। उसकी गारंटी कुछ नहीं।

- दूसरी बात-लॉटरी खरीदना तो जुआ है। वेद में 'जुआ खेलना' मना किया गया है। अतः जुए से जो पैसा मिलता है, वह कोई अच्छे कर्म का फल नहीं है। जबकि लोग यह समझते हैं, कि लॉटरी लगने पर मिलने वाला धन किसी पिछले शुभ कर्म का फल है। ऐसा समझना गलत है।

78. शंका- क्या पूर्व जन्म के संस्कार से कोई चार-पांच साल का बच्चा, पच्चीस-तीस साल के साधक जितनी योग्यता प्राप्त कर सकता है?

समाधान- अपवाद के रूप में कभी-कभी ऐसा हो सकता है। यह पूर्व जन्म के संस्कारों व विद्या पर निर्भर है। पूर्व जन्म के संस्कार व विद्या इतने प्रबल हों कि पांच साल के बच्चे को पच्चीस-तीस नहीं, तो बारह-पंद्रह साल के बच्चे जितनी योग्यता प्राप्त हो जाए। वह और मेहनत करे, तो आठ-दस साल की उम्र में पच्चीस-तीस वर्ष के बराबर योग्यता अर्जित कर सकता है।

79. शंका- क्या मनुष्यों के अतिरिक्त कुत्ते आदि पशु-पक्षियों को भी कर्म करने की स्वतंत्रता है? क्या इन्हें पुण्य-पाप लगता है?

☯ **समाधान**- हाँ। कुत्ते आदि अन्य प्राणियों को भी कर्म करने की थोड़ी स्वतन्त्रता है। मुख्य रूप से तो वह भोग-योनि है। परन्तु गौण रूप से (थोड़ी सी) कर्म करने की स्वतंत्रता भी है। जैसे - पुलिस वाले कुत्ते को ट्रेनिंग देते हैं, और वो ट्रेन्ड कुत्ते चोरों को पकड़वा देते हैं। यह उनकी कुछ प्रतिशत की स्वतंत्रता है और इसका उनको ईनाम मिलता है। अच्छी बढ़िया डबल रोटी, बिस्किट खाने को मिलता है। बढ़िया शैम्पू से नहाते हैं, बढ़िया सुविधाओं में रहते हैं।

आप शाँति से अपने रास्ते में जा रहे हैं और एक कुत्ता पीछे से चुपचाप आता है और आपकी टांग पकड़ लेता है, काट लेता है तो आप उसकी डंडे से पिटाई करते हैं न। उसने अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया, इसीलिए तो पिटाई हुई। उसने पाप किया, इसीलिए दण्ड मिला। पुलिस के कुत्ते ने चोर को पकड़वाया, पुण्य किया। इसलिए उसको ईनाम मिला। यह है कुत्ते आदि प्राणियों की कर्म करने की दो-चार-पांच प्रतिशत की स्वतंत्रता।

80. शंका- क्या यह बात सत्य है कि अभिमन्यु माँ के पेट में ही चक्रव्यूह के अंदर जाना सीख गया था?

☯ **समाधान**- माता के गर्भ में रहते हुए, पूरी बात वह नहीं सीख पाया। माता के गर्भ में रहते हुए उसके कुछ-न-कुछ संस्कार जरूर पड़ते हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

'संस्कार विधि' नामक पुस्तक को पढ़ने से आपको पता चलेगा कि गर्भावस्था में भी बालक पर संस्कार पड़ते हैं। इसलिए माता को कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना, बोलना, लिखना-पढ़ना चाहिए, क्या दृश्य देखना चाहिए, क्या नहीं देखना चाहिए, कैसे सोचना चाहिए, कैसे नहीं सोचना चाहिए?

गर्भावस्था से बालक का निर्माण शुरु हो जाता है। उसका प्रभाव पड़ता है। बालक बड़ा होता जाता है, जन्म लेता है। फिर जैसे-जैसे

चलना-फिरना सीखता है, उसके विकास के लिए, उसकी बुद्धि के विकास के लिए, उसके शरीर के विकास के लिए, उसकी सेहत के लिए बहुत सारे संस्कार होते हैं। तो ये संस्कार जरूर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। बाकी यह बात सत्य है कि छोटी उम्र में उसने चक्रव्यूह में घुसना सीख लिया था।

हमारे शास्त्रों में यह भी कहा है कि विद्यार्थी जब गुरुजी के पास जाता है, तो वो भी गुरुजी के गर्भ में रहता है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में ऐसी चर्चा आती है। गुरुजी के गर्भ में रहने का मतलब गुरुजी की सुरक्षा में रहता है, उनके अनुशासन में चलता है। वे जैसा सिखाते हैं, वैसा सीखता है। अभिमन्यु को छोटी उम्र में माता-पिता ने जो बातें सिखाई, उससे उसने चक्रव्यूह में घुसना सीख लिया। कुछ गर्भावस्था में और कुछ जन्म लेने के बाद में। इस तरह से उसने छोटी उम्र में सीखा। यह है इस वाक्य का अभिप्राय।

81. शंका- अच्छे या बुरे कर्मों का फल अगले जन्म में ही मिलता है, इसी जन्म में क्यों नहीं मिलता?

☯ **समाधान**- अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। आपको याद है दिल्ली के दो गड़बड़ व्यक्ति थे, जिनका नाम था रंगा और बिल्ला। रंगा-बिल्ला को इसी जन्म में सजा मिली या नहीं मिली? इंदिरा गाँधी जी का हत्यारा बेअंत सिंह, उसको इसी जन्म में दण्ड मिला कि नहीं मिला? और आप छब्बीस जनवरी को देखिए, कितने वीर सैनिकों को पुरस्कार मिलते हैं, परमवीर चक्र, अशोक चक्र आदि-आदि चक्र मिलते हैं। तो यह देखो, इसी जन्म में कर्म किया, इसी जन्म में फल मिला। आप लोग इसी जन्म में मेहनत करते हैं, और इसी जन्म में खूब वेतन कमाते हैं। व्यापारी लोग व्यापार में पैसे कमाते हैं। इसी जन्म में कर्म करते हैं, इसी जन्म में फल मिलता है। खूब मिलता है।

कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। ऐसा नहीं है कि, सारा अगले जन्म में ही मिलता है। कुछ यहाँ मिलता है, कुछ आगे मिलता है।

82. शंका– संस्कार-विधि में बालक के जात-कर्म संस्कार के समय, तिथि और तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता की आहुति का विधान किया गया है। उन्होंने लिखा है-गृहस्थ व्यक्ति यदि दैनिक यज्ञ नहीं कर सकता है, तो कम से कम पूर्णिमा व अमावस्या के दिन यज्ञ अवश्य करे। इन दो विशेष दिनों का क्या महत्व है? क्या चंद्रमा का घटना और बढ़ना हमारे जीवन पर प्रभाव डालता है?

☯ **समाधान**– 'सत्यार्थ प्रकाश' में बिल्कुल ठीक लिखा है कि ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव नहीं होता, इसलिए बालक की जन्मपत्री नहीं बनवानी चाहिए। उसका नाम शोक-पत्र है। आपकी जन्मपत्री में ऐसा कुछ नहीं लिखा कि कल आपका भविष्य कैसा होगा।

और रही बात कि 'संस्कार विधि' में तिथि और नक्षत्र के देवता आदि के लिए आहुति देना लिखा है। उसका अर्थ यह नहीं है कि उन तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता को यदि हम आहुति देंगे, तो ये देवता प्रसन्न हो जाएंगे और हमारा भविष्य अच्छा बना देंगे। इतिहास की रक्षा के लिए, यह विधान किया गया है, कि उस दिन क्या तिथि थी, उस दिन नक्षत्र कौन सा था। पृथ्वी और ग्रहों की स्थिति क्या थी? इतिहास के स्मरण के लिए यह काम करना चाहिए।

पहले लोग तिथि और नक्षत्र आदि के हिसाब से इतिहास लिखते थे। आज तो अंग्रेजी तारीख में लिखते हैं, जैसे - 26 जनवरी 1902, 25 फरवरी 1925, इससे तारीख पता चलती है, कि इस व्यक्ति का जन्म कब हुआ था, कितने साल पहले हुआ था, आज क्या उम्र है। वह केवल इतिहास की रक्षा के लिए है। उससे हमारा भविष्य सुधरता हो, ऐसी कोई बात नहीं।

अब रही बात कि गृहस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। तो वो बिल्कुल ठीक लिखा है। फिर लिखा है, आपत्तिकाल में यदि वो न कर सके। मान लो गरीब आदमी है, हर रोज हवन करने के लिए साधन नहीं है, तो कोई बात नहीं। ऐसा व्यक्ति पूर्णिमा और अमावस्या यानी पन्द्रह दिन में एक बार तो कम से कम अवश्य करे। उसके लिए यह विकल्प दिया है। कुछ न करने से, कुछ करना अच्छा है। किस दिन करें, तो एक दिन बता दिया। आजकल तो लोग संडे की छुट्टी मनाते हैं। पुराने समय में यह संडे की छुट्टी नहीं होती थी। पूर्णिमा की, अमावस्या की, और अष्टमी की, ऐसे महीने की चार छुट्टियाँ

होती थीं। एक पूर्णिमा, एक अमावस्या और शुक्ल पक्ष में एक अष्टमी, कृष्ण पक्ष में एक अष्टमी आएगी। तो स्वामी दयानन्द जी ने यूँ कह दिया, कि पूर्णिमा और अमावस्या में हवन कर लो, क्योंकि उस दिन छुट्टी होती है।

समुद्र में ज्वार-भाटा तो रोज चढ़ता-घटता है। वो तो रोज चलता है। लेकिन अमावस्या और पूर्णिमा को चन्द्रमा का कुछ विशेष आकर्षण होता है। इसलिए उस दिन ज्वार-भाटा कुछ तेज आता है। तो उसी हिसाब से हमारे जीवन पर ज्वार-भाटे का असर होता है, वो तो ठीक है। वो तो प्राकृतिक घटना है। उसमें कोई आपत्ति नहीं।

ज्वार-भाटे का ऐसा कोई सूक्ष्म प्रभाव नहीं है कि, वह पूर्णिमा को किसी व्यक्ति का व्यापार बहुत अच्छा बना दे, दूसरे का व्यापार बिगाड़ दे। जैसा ये हस्तरेखा, भविष्य-फल वाले लोग बताते हैं। वो सब गड़बड़ है।

83. शंका– कर्म का फल भोगने के बाद संस्कार नष्ट हो जाते हैं या बने रहते हैं?

☯ **समाधान**– संस्कार बने रहते हैं। इसे समझेंः–

- एक व्यक्ति ने चोरी कर ली। चोरी करना अशुभ कर्म है। पुलिस ने खोजबीन की। चोर मिल गया। चोरी का सामान भी बरामद हो गया। कोर्ट में केस हुआ। जज साहब ने कहा– छह महीने की जेल दी जाएगी। छह माह की जेल हो गई। यह उसका फल हो गया। छह माह बाद वो जेल से छूटकर बाहर आया। चोरी-कर्म का दंड (फल) क्या था ? छह महीना जेल में रहना। फल भोग लिया।

- फल तो भोग लिया, संस्कार बने रहेंगे। जैसे-जेल से छूटने के बाद जो चोरी करने का संस्कार है, वो अभी खत्म नहीं हुआ है। जो बिल्कुल पेशेवर (व्यावसायिक) चोर हैं, जिनका धंधा ही चोरी करने का है, वो जेल से छूटते ही चोरी करेंगे। उनको और कोई काम आता ही नहीं, कुछ सीखा ही नहीं, वे मेहनत करना जानते ही नहीं। बस, चोरी करना जानते हैं। वे बार-बार चोरी करते हैं। उससे उनको चोरी करने की जो आदत पड़ जाती है, इसका नाम है - संस्कार। तो यह संस्कार नहीं छूटा।

- इस गलत संस्कार को मिटाने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी। उसके लिए संकल्प करना पड़ेगा कि 'अब बस, बहुत चोरी कर ली। अब नहीं करूँगा।' ऐसा संकल्प करेगा, कुछ कष्ट उठाएगा, थोड़ी तपस्या करेगा, तो वो संस्कार छूट जाएगा। वरना ऐसे नहीं छूटेगा।

84. शंका- ईश्वर, मनुष्य जीवन का निर्माण क्यों करता है?

☯ **समाधान**– मनुष्य जीवन का निर्माण, ईश्वर मोक्ष प्राप्ति कराने के लिए करता है। **मनुष्य अपने पिछले कर्मों का फल भोग ले, और आगे पुरुषार्थ करके मोक्ष को प्राप्त कर ले। इसलिए मनुष्य को ईश्वर ने बनाया।**

हम मनुष्य जन्म प्राप्त करके भी अगर मोक्ष के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते, मोक्ष की ओर दो-चार कदम आगे नहीं बढ़ाते, तो फिर हमारा जीवन सफल नहीं है। **मनुष्य जन्म की सार्थकता यही है, कि कुछ तो मोक्ष की ओर हम आगे बढ़ें।**

जिस काम के लिए भगवान ने जन्म दिया, वो काम तो हमने किया ही नहीं। खाया-पिया और सो गए। इतना तो और प्राणी भी करते हैं। इसलिए अगर मनुष्य जन्म मिला है तो इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

85. शंका- जीवात्मा शरीर छोड़ने के वक्त कहाँ जाता है? और शरीर छोड़ने के बाद उसकी स्थिति, पुर्नजन्म कैसे होता है?

☯ **समाधान**– जैसे ही आत्मा शरीर को छोड़ेगा, वैसे ही बेहोश हो जाएगा। उसको कोई होश नहीं, कोई शक्ति नहीं। अब आत्मा आगे नहीं चल सकता। जीवात्मा स्थूल शरीर के बिना कुछ नहीं कर सकता।

● शरीर छोड़ते ही ईश्वर उसको पकड़ लेगा। वह ईश्वर के नियंत्रण में आ जाएगा। अब ईश्वर उसको ले जाएगा।

ईश्वर उसके कर्मानुसार रूस में, जापान में, अमेरिका में जहाँ कहीं भी अगला जन्म देना होगा, अथवा भारत में ही कहीं अगला जन्म देना होगा, तो उसको वहाँ तक पहुँचाएगा। फिर वहाँ अगला जन्म देगा। उसके कर्मानुसार यह व्यवस्था रहती हैं।

● यह निश्चित है कि – **आत्मा भूत-प्रेत बनके नहीं भटकेगा, किसी के शरीर में घुसकर उसको परेशान नहीं करेगा, यह पक्की बात है।** यह शास्त्रों में लिखा है।

१४४

● **अंतिम-संस्कार जिसको अंत्येष्टि कहते हैं। यह सोलह संस्कारों में अन्तिम है।** ये शब्द ही कह रहा है कि अंत्येष्टि हो गयी यानि कि बात खत्म हो गयी। **अंत्येष्टि के बाद मृतक के लिए हम कुछ नहीं कर सकते।** आत्मा तो दूसरे जन्म में गया और उसका शरीर भी खत्म हो गया, सारे रिश्ते खत्म हो गये। फिर चौथा करो, दसवाँ करो, बारहवाँ करो, तेरहवाँ करो। वो जो बचे हुए जीवित लोग हैं, वो अपने लिए करते हैं, मृतक के फायदे के लिए नहीं।

86. शंका- अकाल मृत्यु हो जाती है, तो उसका जन्म कब होता है, और किस योनि में होता हैं?

☯ **समाधान**– उत्तर यह है कि **जब भी किसी की मृत्यु होती है, चाहे अकाल-मृत्यु हो या काल-मृत्यु हो, उसका जन्म तुरंत होता है।** उसके कर्मानुसार जहाँ उसके कर्म का फल बनता है, न्याय के अनुसार ईश्वर उसको तुरंत अगला जन्म देता है।

प्रश्न यह है कि – अगला जन्म किस योनि में होता है? उत्तर यह है कि- जैसे उसके कर्म, वैसा जन्म होता है। **अगला जन्म लेने के जैसे कर्म है, उस योनि में उसका जन्म हो जाएगा।** इस तरह से यह कर्मों का फल हैं। वह कठिन विषय है। इसको बार-बार पढ़ना, सुनना, चिंतन करना, मनन करना, ऐसा करेंगे तो धीरे- धीरे कुछ समझ में आएगा।

१४५

87. शंका- वरदान या श्राप देना क्या संभव है? नहीं, तो फिर वह क्या है?

☯ **समाधान**– वरदान और श्राप देना संभव है। पर वैसा नहीं जैसा आपने पुराणों में पढ़ रखा है, या पौराणिक कथाओं में सुन रखा है कि – " जाओ, तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा, तुम अमर हो गए हो।" सृष्टि के नियम के विरुद्ध वरदान गलत हैं। ऐसे वरदान नहीं होते हैं।

प्रकृति के नियम से विरुद्ध जो बातें हैं, इस तरह का न वरदान होता है और न श्राप होता है। सृष्टि नियम के अनुकूल वरदान भी होता है और श्राप भी होता है।

वरदान किसको कहते हैं ? आशीर्वाद का नाम वरदान हैं। ऋषि-मुनि जी क्या कहते हैंः-

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य बर्द्धन्त आयुर्विद्या यशो बलम्॥"

यह वरदान है कि – "जो बड़ों का आदर सम्मान करते हैं, माता-पिता को, गुरुजनों को नमस्ते करते हैं, उनके आदेश का पालन करते हैं, उनकी सेवा करते हैं, उनकी चार चीजें बढ़ती हैं। वे हैं – आयु, विद्या, यश और बल।" माता-पिता उनको आशीर्वाद देते हैं, गुरुजन आशीर्वाद देते हैं कि बड़ी उम्र वाले हो, खूब फलो-फूलो, आगे बढ़ो, उन्नति करो, सुखी रहो। ऐसा वरदान ठीक है।

श्राप क्या है ? एक व्यक्ति ने अपराध किया और उसको कहा- देख, तूने अपराध किया है, तुझे दंड मिलेगा। इसे जेल में डाल देना चाहिए। ऐसे ही किसी ने उसको डाँट लगा दी। अब फिर वह बाद में पकड़ा भी गया, उस पर केस चला और उसको जेल भी हो गयी। उसका श्राप सिद्ध हो गया। उसने सच बात कही।

अपराधी को अपराध से बचाने के लिए अथवा उसको समझाने के लिए व्यक्ति उसको डाँटता है, रोकता है। फिर भी वह नहीं मानता है तो फिर उसको कहता है कि – देख तू नहीं मानता, तुझे दंड मिलेगा। और वो तो होता ही है।

कुछ काल्पनिक श्राप ऐसे भी बोले जाते हैं। एक मनुष्य था, वह गड़बड़ यानी बुरे काम करता था, **उसको श्राप दिया – तू अभी-अभी यहाँ पर सुअर बन जा, तू अभी-अभी इसी जन्म में कुत्ता बन जा। ऐसा संभव नहीं होगा।**

व्यक्ति इसी जन्म में तो कुत्ता नहीं बन सकता। हाँ, मरने के बाद भले ही वह बन जाए। भगवान उसको कर्म के अनुसार दंड दे देंगे, वो अलग बात है, पर जीते जी इसी जन्म में उसको तोड़-मरोड़ कर बिल्ली, कुत्ता नहीं बनाया जा सकता। इस तरह के कोई श्राप आपने कथाओं में सुने हों तो वो गलत हैं।

88. शंका- क्या अपनी योगशक्ति के द्वारा योगी शक्तिपात का प्रयोग कर वेदार्थ संबंधी ज्ञान संक्रमित कर सकता है?

☯ **समाधान**– शक्तिपात के द्वारा वेदार्थ का ज्ञान कराने की बात मेरी दृष्टि में ठीक नहीं है।

वेदार्थ ज्ञान करने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने दो विकल्प 'ऋग्वेदादिभाष्य- भूमिका' के पठनपाठन-विषय के अन्त में बताए हैंः-

1. व्याकरण अष्टाध्यायी धातुपाठ उणादिगण – चार ब्राह्मण इन सब ग्रन्थों को क्रम से पढ़ के।
2. अथवा जिन्होंने उन सम्पूर्ण ग्रन्थों को पढ़ के जो सत्य-सत्य वेद व्याख्यान किए हों, उनको देख के वेद का अर्थ यथावत् जान लेवें।

यहाँ **शक्तिपात से वेदार्थ ज्ञान का उल्लेख कहीं भी नहीं है।**

89. शंका- ईश्वर के द्वारा संसार बनाने से पूर्व जीव ने कर्म कहाँ किए, कर्मफल के लिये जगत् कैसे बनाया?

☯ **समाधान**- ईश्वर ने जब यह जगत् बनाया तो जिन कर्मों का फल सृष्टि के आरंभ में दिया, वो कर्म हमने इससे पिछली सृष्टि में किए थे। अब आप यह पूछेंगे कि जब पिछली सृष्टि बनाई तब कर्म कहाँ से आए? उत्तर है कि उससे पिछली सृष्टि से आए। इसी प्रकार से उसके पीछे चलते जाओ।

एक व्यक्ति ने पूछा कि जब भगवान ने पहली बार सृष्टि बनाई, तब कर्म कहाँ से आए तो मैंने कहा - पहली बार सृष्टि बनाई ही नहीं। अब यह उत्तर समझ में नहीं आया, टेढ़ा है न ! इस बात को समझना कठिन है।

पहली बार ईश्वर ने सृष्टि कभी बनाई ही नहीं। यह अनादिकाल से चल रही है। तीन वस्तुएँ अनादि हैं- ईश्वर, जीव, प्रकृति। यह सबसे पहला सिद्धांत (प्रायमरी लॉ) है। अगर यह समझ में आएगा तो आगे बहुत सी बातें समझ में आ जाएंगी। अगर यह समझ में नहीं आएगा तो कुछ समझ में नहीं आएगा।

ईश्वर ने पहली बार कभी भी सृष्टि नहीं बनाई। अनादिकाल से ईश्वर सृष्टि बना रहा है और जीवात्मा अनादिकाल से कर्म कर रहा है और प्रकृति भोग दे रही है। प्रकृति हमारे कर्मों का फल हमको भुगवा रही है। तीनों अनादिकाल से चल रहे हैं।

विपक्ष को सोचने से बात जल्दी समझ में आती है। यह भी एक समझने का तरीका है। कल्पना कीजिए कि - पहली बार ईश्वर ने सृष्टि बनाई। जब पहली बार बनाई, तो ईश्वर केवल मनुष्य बनाएगा या गाय-घोड़ा भी बनाएगा? अकेला मनुष्य बनाएगा तो अकेला मनुष्य तो जी नहीं सकता। उसको गाय भी चाहिए, घोड़ा भी चाहिए, गधा भी चाहिए, गेहूँ भी चाहिए, चना भी चाहिए। मनुष्य का जीवन ठीक-ठाक चलाने के लिए ईश्वर भेड़-बकरी, गाय, गधा-घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, गेहूँ, चना, सब बनाएगा। ऐसी स्थिति में प्रश्न होगा कि पहली बार ईश्वर ने किसी को मनुष्य बना दिया, किसी को बिल्ली बना दिया, किसी को कुत्ता बना दिया, किसी को वृक्ष बना दिया, तो बिना कर्म के उसने फल दिया कि नहीं दिया? इससे तो यह भी मानना पड़ेगा कि ईश्वर ने पहली बार बिना कर्म के फल दिया। और यदि यह मान लिया कि पहली बार ईश्वर ने बिना कर्म के फल दिया तो यह

प्रश्न होगा - क्या ईश्वर न्यायकारी हुआ कि अन्यायकारी हुआ? तब तो वह अन्यायकारी हुआ। जब पहली बार सृष्टि बनाते ही ईश्वर अन्यायकारी हो गया तो दूसरी बार क्या न्यायकारी रहेगा? फिर तीसरी बार क्या हम उस पर भरोसा करेंगे? क्या वह हमारे साथ न्याय करेगा? क्या आप लोग ईश्वर को अन्यायकारी मानने के लिए तैयार हैं। नहीं हैं न। इससे सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने पहली बार सृष्टि नहीं बनाई।

ईश्वर न्यायकारी तभी बना रहेगा, जब कर्म के आधार पर फल मिलें और कर्म कहाँ से आएगा? वो पीछे से आएगा और पीछे से पीछे, पीछे से पीछे सृष्टि और कर्म मानेंगे, तब तो ईश्वर न्यायकारी बना रहेगा अन्यथा अन्यायकारी मानना पड़ेगा। तो ऐसा सोचेंगे तो थोड़ा समझ में आएगा।

90. शंका- यह कैसे साबित हो कि अच्छे कार्य करने से व्यक्ति मोक्ष में जाता है? क्या अभी तक कोई भी व्यक्ति मोक्ष में गया है? अगर हाँ तो आपको कैसे ज्ञान हुआ कि वो व्यक्ति मोक्ष में गया है?

☯ **समाधान**- हम सब के सब मोक्ष में जा चुके हैं और सारे मोक्ष में से लौटकर आए हैं। यही शास्त्र भी कहता है, वेद भी कहता है कि अच्छे काम करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में जाओ।

प्रश्न है - इसका पता कैसे चलेगा? आपको भी बता देता हूँ। आपको भी पता चलेगा, मुझे भी और सबको पता चलेगा। जो व्यक्ति मोक्ष में जा रहा है, वो स्वयं ज्ञान रखता है कि अब मेरा मोक्ष होगा या अभी और जन्म होगा। उसकी कसौटी यही है कि-

- "अगर आपके मन में सांसारिक सुख भोगने की सारी इच्छाएं समाप्त हो गईं हैं तो आपका मोक्ष हो जाएगा।"

अगर ऐसा लगता है कि अभी और सांसारिक सुख भोगने की इच्छा

बाकी है तो समझ लेना अभी और जन्म लेना पड़ेगा। यह कसौटी वेद, योग दर्शनादि शास्त्रों में लिखी है। वहाँ से हमें ज्ञान हुआ।

● अब हर एक को अपना-अपना तो पता चलता ही है। जब भूख लग रही है तो आपको पता चलता है और खाना खाते हैं, पूरा पेट भर जाता है तो आपको पता चलता है कि अब पेट भर गया है, अब और नहीं खाना। ऐसे ही इच्छाएँ समाप्त हो गईं, यह भी पता चलेगा। अब और सांसारिक सुख नहीं भोगना, पूरा हो गया, बस तब समझ लेना कि मुझे अब मोक्ष मिल जाएगा।

● अगर अनादिकाल से आज तक एक भी मोक्ष में नहीं गया, ऐसा मानो तो, भविष्य में क्या कोई जा पाएगा? भविष्य में भी नहीं जाएगा। इसका मतलब है, भगवान यह झूठ बोलता है कि तुम मोक्ष में जाओ। लेकिन ऐसा तो नहीं है। भगवान सच बोलता है।

भगवान कहता है कि पुरुषार्थ करो और मोक्ष में जाओ। इसका मतलब मोक्ष में जाना संभव है। अगर संभव है तो पहले भी बहुत सारे लोग गए और आगे भी लोग जाएंगें। आप भी गए थे, हम भी गए थे, और फिर जाएंगे। जोर लगाएंगे तो जाएंगे।

● यह 'संन्यास' किसलिए लिया जाता है? क्या व्यापार करने के लिए, पैसे कमाने के लिए? नहीं, संन्यास का एक ही उद्देश्य है:- "मोक्ष में जाना"। संन्यास के बाद फिर मोक्ष होता है। संन्यासी बनने से तो लोगों को डर लगता है कि हमको संन्यासी बनवा कर घर छुड़वा देंगे। मोक्ष में जाने के लिए संन्यास लेना अनिवार्य (कम्पलसरी) है। आज लो, बीस जन्म बाद लो, पचास जन्म के बाद लो, लेना तो पड़ेगा और कोई रास्ता नहीं है।

मुझे मोक्ष में जाना है, दुनिया में नहीं रहना है। मेरी समझ में आ गया। आप भी प्रयास करें, आपको भी समझ में आएगा।

● हमारे गुरुजी कहते हैं - स्वार्थी मत बनना। औरों को भी साथ लेकर जाना। इसलिए मेरी ड्यूटी लगा रखी है, जाओ प्रचार करो। दूसरे लोगों को भी साथ लेते चलो, अकेले मोक्ष में मत जाना।

● घर छोड़ना पड़ेगा, संसार छोड़ना पड़ेगा, तब मोक्ष होगा। मेरा प्रवचन सुनकर के, आप जोश में आकर, कल ही घर मत छोड़ देना। अंततः करना यही पड़ेगा, लेकिन कब करें? उसके लिए तैयारी करनी पड़ेगी, योग्यता बनानी पड़ेगी।

● आज से आप सोचना शुरु करें कि हमें घर छोड़ना है, हमें वानप्रस्थ लेना है, हमें संन्यास लेना है, योग्यता बनानी है। आपको घर

छोड़ने की तैयारी करने में भी पाँच-दस वर्ष निकल जाएंगे। इसलिए जोश में आकर कोई काम नहीं करना चाहिए। होश में रहकर बुद्धिमत्ता से अपने सामर्थ्य को ध्यान में रखकर के करना चाहिए। तैयारी तो आप आज से भी शुरु कर सकते हैं, कि हम समय आने पर योग्यता बनाकर वानप्रस्थ लेंगे, संन्यास लेंगे।

91. शंका- एक महिला ने अपने पति की क्रूरता एवं अत्याचार से लाचार होकर एक रात मौका देखकर उसकी हत्या कर दी। उसके अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं बचा था। क्या उसे परमात्मा दंड देगा, जो सजा यहाँ काट ली, क्या वह कम हो जाएगी?

☯ **समाधान-** इस शंका का उत्तर हैः-

● वैसे तो यह वेद सम्मत नहीं है कि पत्नी, पति के अत्याचारों से परेशान हो जाए तो रात को गंडासा लेके उसे काट दे, कोई हथियार लेकर उसको मार डाले। पति को मारना तो नहीं चाहिए।

● अगर पति के अत्याचारों से परेशान है तो वो राजा को शिकायत करे, कोर्ट में जाए कि, साहब मेरा पति मुझे परेशान करता है, उसको ठीक करें, न्याय करें। दरअसल,पत्नी को ऐसा करना चाहिए।

● यदि पत्नी ने पति की हत्या कर ही दी तो फिर अपराध तो किया है, अतः उसका दंड भी मिलेगा। अब क्या दंड मिलेगा ? यह तो

पूरा-पूरा भगवान ही जाने, हम पूरा-पूरा नहीं समझ पाएंगें। कर्मफल बड़ा विचित्र है, बड़ा कठिन है, गंभीर है।

- यहाँ प्रश्न यह किया है कि अगर उसको जो सजा यहाँ मिलती है और वो काट ली तो क्या वो कम (माइनस) हो जाएगी? मान लीजिए, दस रुपये का दंड उसको ईश्वर के न्याय के अनुसार मिलना चाहिए और यहाँ सरकार ने छह रुपए का दंड (दुःख) दे दिया तो बाकी बचा चार रुपया। बस चार रुपए भगवान उसको दंड दे देगा। वो छह रुपए कम क्यों हुआ? दंड भोग लिया न, भोगना ही तो था। दस का भोगना था, छह का भोग लिया, अब चार बाकी बच गया। चार और मिल जाएगा। इस तरह से एक अपराध का दंड एक ही बार मिलता है, यह न्याय कहलाता है।

92. शंका- क्या मोक्ष के बाद जन्म होता है? यदि हाँ, तो जब हमें फिर से सांसारिक दुःख उठाने पड़ेंगे तो फिर मोक्ष का लाभ ही क्या रहा?

☯ **समाधान**- मुझे भी स्वीकार है कि मोक्ष से वापस तो लौटना पड़ेगा। मोक्ष से लौट कर फिर जन्म लेंगे तो पुनः दुःख आ जायेंगे। आप कहते हैं कि - "जब लौट कर वापस आएंगे तो फिर मोक्ष में जाने का फायदा ही क्या हुआ?"इस शंका का उत्तर हैः-

- मेरा एक प्रश्न है - दोपहर में भूख लगी तो आपने खाना खा लिया। क्या शाम को भूख नहीं लगेगी? यदि शाम को भूख लगेगी, तो फिर दोपहर में खाने का क्या लाभ हुआ? खाना, खाना बेकार हुआ न। बताइए, खाना खाया आपने, वो उपयोगी हुआ कि बेकार गया? उपयोगी हुआ। कारण कि, इससे छह घंटे तक उस भूख के दुःख से छुटकारा हो गया। दोपहर बारह बजे भूख लगी तो आपने यह सोचकर भोजन किया कि शाम को फिर भूख लगेगी तो फिर खा लेंगे। अभी छह घंटे तो कम से कम इस भूख से जान छूटे।

- अगर छह घंटे तक भूख के दुःख से छुटकारा पाने के

लिए आप भोजन करते हैं, तो इकतीस नील दस खरब चालीस अरब वर्षों तक दुःख से छुटकारा पाने के लिए (मोक्ष के लिए) प्रयास क्यों न करें? करना चाहिए। इसलिए मोक्ष के लिए अभी प्रयास करो।

- **जब दोबारा भूख लगेगी तो दोबारा खा लेंगे, और जब दोबारा मोक्ष से लौट कर आएंगे तो दोबारा फिर चले जाएंगे।**

- ऐसा तो नहीं है कि मोक्ष केवल एक ही बार मिलेगा, फिर मिलेगा ही नहीं। भगवान ने कोई रोका थोड़े ही है। वो कहता है- दोबारा फिर कर्म करो, फिर आ जाना मोक्ष में। दोबारा रास्ता खुला है। हम बार-बार मोक्ष में जाएंगे और वहाँ अपना कर्मफल भोगेंगे और फिर वापस आ जाएंगे। फिर दोबारा कर्म करेंगे, फिर चले जाएंगे। इसलिए बार-बार मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

93. शंका- आपने कहा था, हम लोग मोक्ष से धरती पर आए हैं। अगर हमें फिर मोक्ष मिले तो हमें मोक्ष में भी इस बात का भय, दुःख, चिंता लगी रहेगी कि हम कहीं वापस धरती पर न चले जाएं?

☯ **समाधान**- चिंता बिलकुल नहीं लगेगी। एक व्यक्ति ने अहमदाबाद से दिल्ली तक रेलवे आरक्षण कराया। उसको सीट मिल गई। उसको पता है कि मैं अहमदाबाद से बैठूँगा और दिल्ली स्टेशन पर जाकर मुझे रेलगाड़ी छोड़ देनी है। जैसे-जैसे दिल्ली का स्टेशन नजदीक आएगा तो क्या उसकी चिंता बढ़ती है? नहीं न। तो मोक्ष में भी चिंता क्यों बढ़ेगी? उसको पता है कि इतने समय का मोक्ष है और अब इतना समय पूरा होने वाला है। जब रेलगाड़ी छोड़ने में आपको चिंता नहीं है तो मोक्ष छोड़ने में भला क्यों चिंता होगी?

अगर आप बुद्धिमान हैं और न्याय से चलते हैं तो आपको चिंता नहीं होगी। **अगर आप पक्षपाती हैं, अन्याय प्रिय हैं तो आपको चिंता होगी।** मोक्ष वाला व्यक्ति पक्षपाती तो होता नहीं है। वो तो न्यायप्रिय होता है और वो न्याय से चलता है। भई जितना कर्म किया था, उसका फल पूरा हो गया, फिर कर्म करो, फिर मोक्ष में आ जाना। इसलिए कोई चिंता नहीं होगी।

94. शंका- कोई धनी व्यक्ति जो कि गरीबों का खून चूसकर धन एकत्र करता है, यदि कोई व्यक्ति उसे लूटकर वोधन गरीबों में बाँट देता है तो क्या उसे भी ईश्वर के द्वारा दंड मिलेगा? इन दोनों में से अधिक दंड किसको मिलेगा?

☯ **समाधान**- इसका समाधान है:-

- गरीबों का शोषण करना, खून चूसना यह भी एक अपराध है। सेठ ने जो अपराध किया, उसका दंड सेठ को मिलेगा।
- किसी ने सेठ का धन लूट लिया, वह भी अपराध है। उसे लूटने का भी दंड मिलेगा।

वह सेठ खून चूसता है या जो भी करता है, इसका जिम्मेदार दूसरा व्यक्ति नहीं है। इसका जिम्मेदार वही व्यक्ति है, जो शोषण कर रहा है। आपको यह अधिकार नहीं है कि आप सेठ की संपत्ति को लूट (चोर) लें ।

- यह राजा (सरकार) का काम है या परमात्मा का काम है, वो उसको दंड देगा। दूसरा व्यक्ति कानून हाथ में नहीं ले सकता।
- दूसरा व्यक्ति अगर गरीबों को दान देना चाहता है तो अपना धन कमाकर दान दे। उसे किसने रोका है ? लूट करके दान देना उसका अधिकार नहीं है। अपना धन कमाओ और गरीब को दो, कौन रोकता है ?
- दान देना 'शुभ कर्म' है, लूटमार करना 'अशुभ कर्म' है। दोनों कर्म अलग-अलग हैं। दोनों का अलग-अलग फल है। अब किसको अधिक दंड मिलेगा, यह तो भगवान जाने। पूरा-पूरा हमको नहीं मालूम।

95. शंका- क्या कभी चर-अचर जीव जब मनुष्य योनि में थे, एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं?

☯ **समाधान**- जी हाँ। इसका आधार है:-

- सभी जीवात्माएं चाहे चर-अचर जिस भी योनि में रहें, वो चाहे वृक्ष आदि में हो, चाहे मनुष्य आदि में हों, किसी में भी हों, वो एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं। वेद, उपनिषद्, दर्शन से यह पता चल जाता है।
- यह बताइए- जीवात्मा अनादि है या किसी काल-विशेष में उत्पन्न हुआ था ? उत्तर है - जीवात्मा अनादि है।
- यह सृष्टि भी अनादि है या किसी दिन पहली बार बनी थी ? उत्तर है - सृष्टि अनादि है। यह सृष्टि खत्म होने वाली नहीं है। सांख्य-दर्शन में कपिल मुनि जी ने एक सूत्र बनाया - 'इदानीमिव सर्वत्र नात्यंतोच्छेदः' अर्थात जैसे इस समय सृष्टि चल रही है, ऐसे ही हमेशा चलती रहती है। यह कभी भी पूरी तरह बंद नहीं होती।
- अनादि में तो इनफाइनाइट (अनन्त) टाइम है। कोई प्रारंभ ही नहीं, कितना लंबा समय है। इतने लंबे समय में कितनी ही बार जा चुके मोक्ष में, एक बार क्यों ? आगे भविष्य में कितने ही बार जायेंगे, आगे भी अनंतकाल है। टाइम की कोई सीमा नहीं है, न भूतकाल में, न भविष्य में। भूतकाल में कितनी ही बार हम मोक्ष में जा चुके हैं और कितनी ही बार भविष्य में फिर जाएंगे।
- सभी जीवात्मा एक जैसे हैं। सबका स्वरूप मूल रूप से समान है। जिस काम को एक जीवात्मा कर सकता है, उस काम को दूसरा भी कर सकता है। अगर एक आत्मा 'महर्षि दयानंद' बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। मैं भी बन सकता हूँ। बारी-बारी से सब बन जाएंगे। एक व्यक्ति एम.ए. कर सकता है तो दूसरा क्यों नहीं कर सकता है ? दूसरा भी कर सकता है, तीसरा भी कर सकता है। जो पुरुषार्थ करेगा, वह एम.ए. कर लेगा, पी.एच.डी कर लेगा, एम.एस.सी. कर लेगा, एम.टेक हो जाएगा, एम.बी.ए हो जाएगा, डॉक्टर भी बन सकता है, मोक्ष में भी जा सकता है। बारी-बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।
- इतना मूर्ख कोई जीवात्मा नहीं है कि वो अनंतकाल तक मार खाता ही रहे और कभी भी उसको अक्ल नहीं आए। कितनी मार खाएगा, उसकी भी लिमिट रहती है। बहुत मार खाएगा, फिर खा-खा के थक जाएगा। फिर उसको अक्ल आ जाएगी कि- भई, मैं दुनिया में अब

थक गया हूँ। अब और जन्म नहीं चाहिए। हर एक को अक्ल आ जाएगी, तो बारी-बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।

- हमारी बुद्धि भी बढ़ती-घटती है, धीरे-धीरे बुद्धि का विकास होता है। आज से दस वर्ष पहले क्या आपका ज्ञान इतना ही था जितना कि आज है ? बढ़ गया न, और अगले दस साल में और कितना बढ़ जाएगा। ऐसे पुरुषार्थ करने से, अनुभव से, ज्ञान का स्तर बढ़ता है। आप में पुरुषार्थ की और थोड़ी ज्ञान-विज्ञान की कमी भी है। ज्ञान बढ़ेगा और व्यक्ति पुरुषार्थ करेगा तो आगे बढ़ जाएगा। और फिर ऐसा भी होता है कि ज्ञान बढ़ने के बाद भी व्यक्ति आलसी-प्रमादी हो सकता है। लेकिन अंत में पुरुषार्थ तो उसे करना पड़ेगा।

- ऐसा भी होता है कि व्यक्ति ने कुछ पुरुषार्थ किया, उसकी गति कम है। उसको थोड़ा ज्ञान हुआ, कुछ-कुछ समझ में आया फिर आगे पुरुषार्थ नहीं किया। एक व्यक्ति पुरुषार्थ तो बहुत करता है, पर बुद्धिपूर्वक नहीं करता, बुद्धि भी साथ में चाहिए। कितने ही लोग खूब मेहनत करते हैं। पर धंधे में बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए बहुत नहीं कमा पाते। कई लोग बुद्धि से काम लेते हैं, मेहनत कम करते हैं, वो बहुत कमा लेते हैं। इसलिए बुद्धि और पुरुषार्थ दोनों चाहिए। ऐसे दोनों को मिलाकर साथ चलेंगे तो फिर जल्दी विकास होगा।

'जड़ बुद्धि' का मतलब जिसकी बुद्धि तीव्र (Sharp) नहीं है यानी कम बुद्धि वाला है, उसका पिछला संस्कार कमजोर है, इच्छा होने पर भी वह विशेष प्रगति नहीं कर पाता तो वह कम प्रगति (प्रोग्रेस) करेगा। उसे अधिक समय लगेगा, पर सीख तो जाएगा। सीखने में रोक-टोक नहीं है। सब सीख सकते हैं।

१५६

96. शंका- यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिला अथवा न्यून मिला तो दोषी कौन है, भाग्य या हम?

☯ **समाधान**- इसका समाधान हैः-

- यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिलता या कम मिलता है, तो निःसंदेह फल देने वाला दोषी है।

- यहाँ समाज ने आपको पूरा फल नहीं दिया। नहीं दिया तो कोई बात नहीं, आपका कर्म बेकार नहीं जाएगा। अगर समाज ने, राजा ने, पंचायत ने, आपको कर्म का पूरा फल नहीं दिया और आपका फल बच गया, तो अंत में आपका फल ईश्वर देगा। उस पर पूरा-पक्का विश्वास करें। आपको फल मिलेगा, फल कहीं नहीं जाएगा।

- लोग क्या सोचते हैं ? हमने अच्छे काम किए, इतनी समाज की सेवा की, इतना दान दिया, इतना पुण्य किया और हमको फल तो मिला ही नहीं। अच्छे कर्म का फल नहीं मिला तो शोर मचाते हैं:- देखो साहब! हमारा कर्म बेकार गया, हमारा फल नहीं मिला।

- वे यह नहीं सोचते कि उन्होंने जो बुरे कर्म किए, उसका फल भी तो नहीं मिला। जो गड़बड़ की, जो गलती की, उसका दंड अभी नहीं मिला, तो क्या आगे भविष्य में मिलेगा या नहीं मिलेगा ? उसके बारे में आप शोर नहीं करते कि दण्ड क्यों नहीं मिला अभी तक?

अगर बुरा फल मिलेगा तो अच्छा भी मिलेगा। दोनों मिलेंगे, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है।

- आपको अच्छा फल चाहिए कि बुरा ? अच्छा चाहिए न। इसलिए अच्छा काम करो, बुरा काम नहीं करना, नहीं तो दंड मिलेगा। बार-बार दोहराता हूँ कि - "दंड के बिना कोई सुधरने वाला नहीं है।" दंड को हमेशा याद रखें, तो ही सुधार होगा।

१५७

97. शंका जब प्रारब्ध से किसी कर्म का फल रोग के रूप में मिलना ही है, कर्म का दंड मिला है तो उसे भोगें, रोगी बने रहें, इलाज क्यों करवाते हैं?

☯ **समाधान**– भगवान ने हमको 'कर्म-दंड' के रूप में रोग दिया है और भगवान ने ही कहा कि इस रोग की चिकित्सा भी करवा लेना। रोगी हो जाएं, तो फिर चिकित्सा करवाएं। चिकित्सा के लिए हजारों प्रकार की औषधियाँ, वनस्पतियाँ भगवान ने बनाई हैं।

हम कर्म गड़बड़ करते हैं तो दंड मिलेगा और दंड मिलेगा तो फिर चिकित्सा कराकर और आगे अवसर भी तो मिलना चाहिए। यदि रोगी हो गए और चिकित्सा नहीं कराई तो मर जाएंगे और मर गए तो फिर आगे 'मोक्ष' के लिए अवसर आपको मिल नहीं पाएगा। इसलिए रोग की चिकित्सा भी करवानी चाहिए।

98. शंका– जब मनुष्य अच्छे कर्म करता है, ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष के समय के बाद वो फिर जन्म लेता है और अच्छे कर्म करता है तो भगवान का मनुष्य को बार-बार जीवन देने का क्या उद्देश्य है?

☯ **समाधान**– मनुष्य को बार-बार जन्म देना भगवान का उद्देश्य नहीं है। उसका उद्देश्य तो 'मोक्ष' में भेजना है। पर जब हम मोक्ष वाले कर्म ही नहीं करेंगे, तो भगवान क्यों मोक्ष में डाल देगा? कमी हमारी ओर से है, भगवान की ओर से नहीं। भगवान ने तो कह रखा है, 'ब्रह्मलोक' में जाओ, 'मोक्ष' में जाओ, यहाँ संसार में मत पड़े रहो, यहाँ तो दुःख भोगना पड़ेगा।

यह हमारी गड़बड़ है, हमारी कमी है। हम मोक्ष के लिए काम नहीं करते, बल्कि पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा के लिए काम करते हैं। इसलिए भगवान हमको बार-बार जन्म देता है।

मोक्ष पाना हमारे हाथ में है, मोक्ष वाले कर्म करेंगे, तो मोक्ष मिल जाएगा। जैसे परीक्षा में अच्छे अंक लाना विद्यार्थी के हाथ में है। परीक्षक तो केवल निर्णायक है। इसी प्रकार से संसार में जन्म लेना या मोक्ष प्राप्त करना हमारे हाथ में है। ईश्वर तो केवल फलदाता निर्णायक है।

99. शंका– प्राणी-मात्र को कर्म के अनुसार दुःख मिलना लिखा ही है तो फिर उनको दुःख भोगने देना चाहिए। तो शास्त्रों में क्यों लिखा है कि प्राणी-मात्र की सेवा, सहायता करनी चाहिए?

☯ **समाधान**– इसका उत्तर है :-

- कल्पना करो कि, अपने कर्मानुसार हम भी कहीं दुःख में फँस गए, तब हम क्या चाहेंगे? तब हम यही चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति हमारी सहायता कर दे, हम भले ही दुःख में फँस गए। जब हम चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति हमारी सहायता करे, तो हमको भी दूसरे की सहायता करनी चाहिए। हम भी अपने कर्मानुसार दुःख में फँसेंगे, वो भी अपने कर्मानुसार दुःख में फँसा है।

- जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही हमें दूसरों के साथ करना चाहिए। यह धर्म की बात है, मनुष्यता की बात है। इसलिए हमें दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

- ईश्वर ने उसके कर्मानुसार उसको दुःख दिया। किसी को विकलांग बना दिया, किसी को रोगी बना दिया। कर्म के अनुसार दुःख देना, यह ईश्वर का काम है। ईश्वर ने अपना काम किया।

जिस ईश्वर ने व्यक्ति को कर्मानुसार दुःख दिया, उसी ईश्वर ने हमको यह सुझाव दिया कि, भई इस रोगी की, इस मुसीबत के मारे की सहायता करना। ईश्वर के आदेश का पालन करना हमारा धर्म है। इसलिये कोई दुःख में फँस जाए, आपत्ति में फँस जाए, तो उसकी सेवा-सहायता जरूर करनी चाहिए।

- ईश्वर के दंड विधान में बाधा उत्पन्न करना तब होता, जब ईश्वर मना कर देता कि रोगी की सहायता मत करो। और फिर भी हम ऐसा करते। यह उसके काम में दखलंदाजी होती। पर जब ईश्वर स्वयं ही कह रहा है कि, "तुम इसकी सहायता करो।" इसलिए उसके काम में हमने कोई गड़बड़ नहीं की, बल्कि उसके आदेश का पालन किया। अपराधी को दंड देना ईश्वर का काम है और दंड मिलने के बाद उसकी सहायता करना हमारा काम है। क्योंकि यह काम हमको ईश्वर ने बताया है। ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं है।

- और एक बात जो खास समझने की है कि – जो भी दुःख हमें प्राप्त होते हैं, वे सब हमारे कर्मों का फल नहीं है। कुछ दुःख हमारे कर्मों

का फल है, कुछ अन्याय से भी हमको भोगने पड़ते हैं। दूसरे व्यक्तियों या प्राणियों के द्वारा अन्याय हो सकता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको दुःख भोगने पड़ते हैं। अतः सहायता करना कोई अपराध नहीं है।

100. शंका- आपके अनुसार हमें परमात्मा का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति करनी चाहिए, परंतु शहीद भगत सिंह और अन्य स्वतंत्रता सेनानी अगर वैराग्य वाले रास्ते पर चलते, तो क्या हमें स्वतंत्रता मिलती?

☯ **समाधान-** ये पूछना चाहते हैं कि मैं उपासना के मार्ग पर चलकर परमपिता को प्राप्त करूँ या फिर भारत वर्ष के इतिहास तथा ज्ञान-गौरव की रक्षा के लिए राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और कुरीतियों को समाप्त करने के लिये क्राँति का मार्ग अपनाऊँ? उत्तर हैः-

● जिस समय हमारा देश परतंत्र था, पराधीन था, और महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, ये सब लोग देश रक्षा के लिए चले। इन्होंने त्याग किया, बलिदान किया। उस समय देश में ब्राह्मण, संन्यासी, उपदेशक, वेद को पढ़ाने वाले भी थे और धोबी, नाई और मिठाई बनाने वाले हलवाई भी थे।

क्या उस परतन्त्रता के समय में धोबियों, नाइयों, हलवाइयों ने अपने-अपने कार्य छोड़ दिए थे? क्या वे सब स्वतन्त्रता की लड़ाई में कूद पड़े थे?

नहीं न ! तो जब धोबी, नाई, हलवाई आदि अपना काम नहीं छोड़ते, तो ब्राह्मण अपना काम क्यों छोड़ें ? यदि ब्राह्मण अपना काम छोड़कर क्षत्रिय का काम शुरु कर देता है, तो यह बुद्धिमत्ता नहीं है। यह ब्राह्मण की उन्नति नहीं, पतन है।

● शहीद भगत सिंह आदि लोग यदि वैराग्य के रास्ते पर चलते, तो हमें स्वतंत्रता नहीं मिलती। ये बात सत्य है। परंतु यदि महर्षि दयानंद जैसे ब्राह्मण संन्यासी न होते, तब भी स्वतंत्रता नहीं मिलती। इसलिए ब्राह्मण और क्षत्रिय आदि सभी लोग चाहिए।

● भगत सिंह आदि ब्राह्मण व संन्यासी क्यों नहीं बन पाए? उनके पूर्व जन्मों के इतने वैराग्य, विद्या आदि के संस्कार नहीं थे। क्षत्रियत्व के संस्कार तो थे। इसलिए क्षत्रिय बनकर उन्होंने देश की रक्षा की। अपनी योग्यता और संस्कारों के अनुसार उन्होंने बहुत अच्छा काम किया।

● यह मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। अंतिम लक्ष्य तो मोक्ष (सब दुःखों से छूटना एवं आनंद की प्राप्ति) है। इसलिए वही प्राप्त करना चाहिए। क्षत्रिय बनकर देश की रक्षा करना, इसमें बाधक नहीं है, बल्कि एक मध्यगत स्तर है।

● वास्तव में समाज को सबकी जरूरत है। ब्राह्मण भी चाहिए, क्षत्रिय भी चाहिए, वैश्य भी चाहिए। आपको अपनी क्षमता (कैपेसिटी) और अपनी योग्यता देखनी है कि, आप इनमें से क्या बन सकते हैं ?

(1) पहली प्राथमिकता है - ब्राह्मण बनने की। आज सच्चा ब्राह्मण नहीं मिलता। आज जितने ब्राह्मण हैं, एकाध को छोड़ दो, बाकी लगभग सब के सब व्यापारी बन गये हैं। सब दुकान खोलकर पैसे कमाने में लगे हैं। आज अच्छे ब्राह्मण नहीं मिलते, इसलिए यह देश और दुनिया बिगड़ गयी।

● देश को बचाने के लिए जितनी राजाओं, क्षत्रियों, वीरों की आवश्यकता है, उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता सच्चे ब्राह्मणों की है। जो सच्चे देशभक्त, ईमानदार, सच्चे ब्राह्मण और ईश्वर भक्त हों, पहला नंबर उनका है। वो देश को बचा सकते हैं।

● आप अपनी क्षमता को देखें। अगर आप ब्राह्मण बन सकते हैं तो प्रथम वरीयता (फर्स्ट प्रिफरेन्स) है- ब्राह्मण बनिए।

(2) अगर इतनी क्षमता, इतनी सामर्थ्य नहीं है, बुद्धि नहीं चलती, इतनी मेहनत नहीं कर सकते, विद्या नहीं पढ़ सकते, तो द्वितीय विकल्प है- अच्छे क्षत्रिय बनिए। फिर वीरों का मार्ग अपनाओ। सेनाओं में जाओ और देश की रक्षा करो।

(३) यदि उतनी भी क्षमता नहीं है तो फिर वैश्य बनिए। पैसे कमाइए और दान दीजिए। अब लोग पैसे तो कमाते हैं, मगर दान नहीं देते। फिर भला देश की रक्षा कैसे होगी?

● मैं जब कहता हूं कि, 'अपरिग्रह' का पालन करो, बहुत पैसे मत कमाओ।" तो फिर लोग कहते हैं – "जी देखो, वेद में लिखा है कि 'शतहस्त समाहर' यानी खूब कमाओ, सौ हाथों से कमाओ।" मैं कहता हूँ – "हाँ, बिल्कुल लिखा है, पर इसके आगे क्या लिखा है, वो भी तो पढ़ो।" वेद में 'शतहस्त समाहर' के आगे लिखा है कि- "सहस्रहस्त संकिर" यानी सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों में बाँटो। लोग आधा पढ़ लेते हैं कि, चारों ओर से कमाओ और अगला पढ़ते नहीं। फिर ऐसे थोड़े ही देश चलता है। ऐसे देश की रक्षा नहीं होती।

● मोक्ष केवल ब्राह्मण को और संन्यासी को मिलेगा। अगर मोक्ष में जाना है, तो ब्राह्मण बनना पड़ेगा। यही एक ही रास्ता है। "नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय" अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसलिए अपनी-अपनी योग्यता बढ़ाओ, तपस्या करो, विद्या पढ़ो, ब्राह्मण बनो और विद्या का प्रचार-प्रसार करो। फिर वैराग्य बढ़ाओ, फिर संन्यासी बनो, तब कहीं मोक्ष का रास्ता खुलेगा। ऐसे नहीं खुलेगा, यह ध्यान रखना।

● पहले बता रहा हँ घर छोड़े बिना किसी का मोक्ष होने वाला नहीं। अनेक पंडित लोग जनता को खुश करने के लिए बोलते हैं कि- "साहब, घर में बैठे-बैठे भी गृहस्थ आश्रम से सीधा मोक्ष हो सकता है।" वे बिल्कुल झूठ बोलते हैं। ऐसा कहीं नहीं लिखा।

"मोक्ष केवल अति उग्र तपश्चरण करने वाले संन्यासियों का ही होता है, अन्यों का नहीं। "आपको मोक्ष में जाना है, तो संन्यासी बनना पड़ेगा। घर में बैठे-बैठे मोक्ष हो जाता, तो मैं ही घर क्यों छोड़ता ? और भूतकाल में लाखों संन्यासी घर क्यों छोड़ते?

101. शंका- कृपया बुद्धि, मन के बारे में विश्लेषण कीजिये?

☯ **समाधान-** बुद्धि और मन दो अलग-अलग वस्तुएं हैं। ये दोनों अंतःकरण कहलाते हैं। अंतःकरण का आशय शरीर के अंदर काम करने वाले साधन से है। 'अंतः' अर्थात् 'अंदर' और 'करण' अर्थात् 'साधन' (काम करने के साधन)।

कुछ बाह्य करण हैं। ये शरीर से बाहर काम करने के साधन हैं। पाँव, आँख आदि-आदि ये जो इन्द्रियाँ हैं, ये बाह्य करण है।

● 'मन-बुद्धि' ये दो अंतःकरण हैं। इसके साथ एक और अंतःकरण भी है, उसका नाम है 'अहंकार'। इस प्रकार अंतःकरण की कुल संख्या तीन है, और नाम चार हैं। मन और चित्त एक ही चीज के दो नाम हैं। दूसरी चीज- बुद्धि है और तीसरी चीज- अहंकार है। चीजें तीन, नाम चार।

102 शंका- क्या मन जड़ है, उसका आकार कितना है?

☯ **समाधान-** मन जड़ है। यह प्रकृति से बना है। प्रकृति' सत्त्व, रज, तम के समूह का नाम है। सबसे छोटे तीन प्रकार के परमाणु (स्मॉलेस्ट पॉर्टिकल-तत्त्व) का नाम है- 'प्रकृति'। उससे महत्तत्त्व यानी'बुद्धि' बनी। बुद्धि से हम निर्णय लेते हैं। महत से एक और 'अन्तःकरण' बना। जिसका नाम है- 'अहंकार'। अहंकार से हम अपने अस्तित्त्व की अनुभूति करते हैं। इस अहंकार से फिर पाँच तन्मात्राएं और दोनों प्रकार की इन्द्रियाँ पहली बाह्य और दूसरी आंतरिक इन्द्रिय बनीं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्म इन्द्रियाँ बाह्य इन्द्रियाँ कहलाती हैं। और आन्तरिक इंद्रिय है- 'मन'। यह मन प्रकृति से बना है। सांख्य दर्शन के सूत्र (1/615) और योग दर्शन के सूत्र (1/2) के व्यास भाष्य में इस बारे में बतलाया गया है।

● चित्त नामक पदार्थ यानि मन, सत्त्व, रज, तम नामक तीन गुणों से बना हुआ है। तीन गुणों के स्वभाव वाला होने से मन त्रिगुणात्मक है। मन जड़ है, यह इसका प्रमाण हैं।

● मन का आकार बहुत छोटा है। यह माइक्रोस्कोप से भी नहीं दिखता है। यह इतना छोटा है कि आप इलेक्ट्रो-माइक्रोस्कोप से देखेंगे, तो भी नहीं दिखने वाला।

● जब आत्मा शरीर छोड़कर के पुर्नजन्म में जायेगा, तो यह 'मन' उसके साथ चला जायेगा। अर्थात् पूरा सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ जाएगा। पाँच इन्द्रियाँ भी जायेंगी, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, एक मन, एक बुद्धि, एक अहंकार और पाँच तनमात्रायें; ये अठारहण चीजें 'आत्मा' के साथ चली जायेंगी। इन अठारह चीजों का नाम है- 'सूक्ष्म शरीर'। यह सूक्ष्म शरीर इस चेतन आत्मा के साथ हर बार पुर्नजन्म में चलता रहता है। जब तक मुक्ति न हो जाये तब तक यह पूरा सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ चलेगा।

● जब आत्मा स्थूल शरीर छोड़कर जाती है तो यह सूक्ष्म शरीर कहाँ चला गया, किसी को पता नहीं चलता। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह कितना सूक्ष्म होगा। इसको आप लोहे के बॉक्स में बंद करो, काँच की पेटी में बंद करो, ये कहीं नहीं रुकने वाला, सब तोड़-फोड़ के निकल जायेगा। तोड़-फोड़ का मतलब यह नहीं कि काँच फट जायेगा। ऐसा कुछ नहीं होगा, वो चुप-चाप निकल जायेगा। ये इतना छोटा है कि उसमें से पार हो जाता है।

103 शंका- मन, बुद्धि और अहंकार क्या काम करते हैं?

☯ **समाधान-** मन दो काम करता है। मन से संकल्प-विकल्प करते हैं। संकल्प पॉजीटिव थॉट है, विकल्प- नेगेटिव थॉट है। जब सकारात्मक विचार करते हैं तो उसका नाम है- 'संकल्प'। जब उससे विपरीत विचार करते हैं तो उसका नाम है- 'विकल्प'। दोनों तरह के विचार होते हैं। उनको करने का साधन है 'मन'। उदाहरण के लिये जब आपको योग शिविर की सूचना मिली थी तो आपने सोचा होगा कि, शिविर में जाऊँ या नहीं जाऊँ। शिविर में जाऊँ - यह संकल्प है। नहीं जाऊँ - यह विकल्प है। जब तक ये दो विचार रहेंगे,तब तक इस विचार को करने का साधन है- 'मन'। तब इसका नाम 'मन' होता है।

● जब यही मन पुरानी घटनाओं को स्मरण करने में सहयोग देता है, स्मृतियाँ उत्पन्न करता है, तब इसको 'चित्त' कहते हैं। जैसे कम्प्यूटर के अंदर हार्डडिस्क होती है और उसके अंदर बहुत सी फाइल सेव कर एकत्र कर देते हैं। और हम आवश्यकता अनुरूप जो चाहें वो फाइल खोल लेते हैं। इसी प्रकार मन भी हार्डडिस्क के समान है। उसमें बहुत सारे संस्कार जमा रहते हैं। जिसे कम्प्युटर की भाषा में 'फाइल' कहते हैं, उसे ही हम आध्यात्मिक भाषा में 'संस्कार' कहते हैं। मन में जमा

संस्कारों में से जो संस्कार हम उठाना चाहें, जो स्मृति लाना चाहें, वो हम ले आते हैं। वो फाइल खुल जाती है अर्थात् वो संस्कार जाग जाते हैं। और हमें वो चीज स्मरण आती है। इस प्रकार जब स्मरण करने का काम करते हैं, तब इसका नाम चित्त होता है। ये दोनों काम एक ही वस्तु करती है। बुद्धि इससे अलग पदार्थ है।

● आपके मन में दो विचार थे, कि योग शिविर में जाऊँ या नहीं जाऊँ? आपको दो में से एक निर्णय लेना पड़ा कि जाऊँ या नहीं जाऊँ। आपने अंतिम निर्णय ले लिया कि जाऊँगा। वहाँ जाने से मुझे कुछ लाभ होगा इसलिये शिविर में जाऊँगा। जब आपने यह डिसीजन लिया, दो में से एक फाइनल हो गया, कि मैं जाऊँगा, वो बुद्धि की सहायता से हुआ। बुद्धि का काम है - निर्णय दिलवाना, निर्णय लेने में सहयोग देना। बुद्धि निर्णय लेने का साधन है। जैसे आँख देखने का साधन है। आँख के बिना आप नहीं देख सकते हैं, मन के बिना विचार नहीं कर सकते, ऐसे ही बुद्धि के बिना डिसीजन नहीं ले सकते। इस प्रकार मन का काम अलग है, बुद्धि का काम अलग है। ये दो अलग-अलग साधन है। दोनों अंतःकरण हैं।

● तीसरा साधन है - अहंकार। अहंकार का काम है- आत्मा को अपनी अस्तित्त्व की अनुभूति कराना। आँख के बिना आप देख नहीं सकते। कान के बिना आप सुन नहीं सकते। अहंकार के बिना आप ये अनुभव नहीं कर सकते कि- मैं हूँ । सबको अनुभूति होती है कि- मैं हूँ। ऐसा तो कोई भी नहीं है जिसको ये लगता हो कि मैं नहीं हूँ। मैं हूँ, ये अनुभूति हमे अहंकार नामक पदार्थ करायेगा। जीवात्मा को उसकी सहायता मिलेगी तो व्यक्ति अनुभव करेगा कि, मैं हूँ। जब अहंकार भी नहीं रहे या अहंकार का काम बंद हो जाये या वो आत्मा से अलग हो जाये, तो आत्मा को भी अनुभूति नहीं होगी कि, मैं हूँ।

104 शंका- चित्त परिवर्तनशील है। कभी सत्त्व गुण, कभी तमोगुण, कभी रजोगुण प्रधान होता रहता है। क्या खान-पान से ऐसा होता है? कहते हैं- 'जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन'।

☯ **समाधान-** यह बात ठीक है। चित्त परिवर्तनशील है। इस पर खान-पान का असर पड़ता है।

● अगर कोई व्यक्ति शराब पी लेगा, कोई भांग खा लेगा, तो उसका असर होगा। तब चित्त तामसिक हो जाएगा। कोई तेज मिर्ची मसाले खाएगा, तो उसका असर होगा। उनका चित्त फिर उतना सात्त्विक नहीं रहेगा, बिगड़ जाएगा। राजसिक भोजन खाएगा-पिएगा, मन बिगड जाएगा। मन में चंचलता आएगी।

● इसलिए सात्त्विक भोजन खाना चाहिए। घी, दूध, फल, मिठाई, शुद्ध, साफ भोजन खायें। उचित मात्रा में खाएँ। दो सूत्र याद रखें-

पहला- <u>थोड़ा खाओ, सुखी रहो</u>।

दूसरा- <u>थोड़ा खाओ, लंबा जीओ</u>।

इस तरह से चलेंगे तो मन ठीक रहेगा। योगाभ्यास ठीक चलेगा और व्यक्ति सुख से जीएगा।

● मन सृष्टि के आरंभ में एक बार उत्पन्न होता है, और शीघ्र नष्ट नहीं होता। ईश्वर ने एक बार मन को बना दिया, अब वो प्रलय काल तक चलेगा। वही मन हर जन्म में बार-बार चलता रहेगा। उसमें थोडी बहुत घिसावट होती है। जो चीज बनती है, वह बिगड़ती ही है, यह नियम है। चित्त भी उत्पन्न हुआ है, तो इसमें भी थोड़ी-थोड़ी घिसावट अवश्य होगी। परन्तु इसमें घिसावट की दर (मात्रा या गति) बहुत कम है।

● <u>चित्त या मन दो ही अवस्थाओं में पूरी तरह नष्ट होता है। या तो उसका मोक्ष हो जाए या तो प्रलय हो जाए। तब आत्मा से मन अलग हो जाएगा</u>। अन्यथा सृष्टि के प्रारंभ से अंत तक वही एक मन आत्मा के साथ हर जन्म में चलता रहेगा।

● जब सृष्टि का प्रलय होगा, तो हर चीज जो बनती है, वो टूटेगी। इसलिए मन भी टूटेगा, बुद्धि भी टूटेगी। सब चीजें नष्ट हो जाएँगी। नई सृष्टि में फिर दोबारा बनेगी। प्रकृति वाला मन मोक्ष में साथ में नहीं जाएगा।

105. शंका- क्या 'मन' पर पड़े 'संस्कारों' के विरुद्ध भी 'आत्मा' कार्य कर सकता है?

☯ **समाधान-** बिल्कुल कर सकता है।

● मन में जो संस्कार है, वो कहता है, चोरी कर लो। आत्मा कहता है- नहीं। आप उसके सामने अड़ जाओ। ठीक वैसे ही जैसे अभिमानी आदमी अड़ जाता है।

● संस्कार अपना स्वभाव जरूर दिखायेंगे। आलंबन उपस्थित होने पर संस्कार जागेंगे। मान लो, अभी आपकी आइसक्रीम खाने की इच्छा नहीं है। लेकिन यदि सामने प्लेट में आइसक्रीम परोस दी जाये, तो इच्छा जाग जायेगी। <u>आइसक्रीम आलंबन है, जिसके सामने उपस्थित होने पर संस्कार जागता और आइसक्रीम खाने की प्रेरणा देता है। उस संस्कार को दबाना, उससे लड़ना, यह आत्मा का काम है। यदि वो चाहे, जोर लगाये, तो वो लड़ सकता है, दबा सकता है, उससे जीत सकता है</u>। इसमें कोई शंका की बात नहीं है। इसी का नाम '<u>पुरूषार्थ</u>' है।

● दार्शनिक-मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा बलवान पुरूषार्थ है। इसलिये पुरूषार्थ करो, इन संस्कारों को दबाओ, इनको मारो। दो में से एक को मार खानी पड़ेगी। अब विकल्प-चयन आपके हाथ में है।

106. शंका- आत्मा ही मन में विचार उठाती है और जीवात्मा शुद्ध-स्वरूप होती है, तो फिर मन में चोरी-व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित अशुद्ध विचार क्यों आते हैं?

☯ **समाधान-** प्रश्न का भाव है कि आत्मा मन के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है। आत्मा शुद्ध है, बुद्ध है, तो मन में अच्छे ही विचार आने चाहिये। तो हमारे मन में बुरे विचार क्यों आते हैं? यदि विचार आत्मा से उठते हैं तो यह हर समय सुविचारों को ही क्यों नहीं उठाता, क्योंकि आत्मा को पवित्र बताया गया है?

● इसके बहुत सारे कारण हैं। बुरे विचार क्यों आते हैं, इसका एक मुख्य कारण हैं, हमारे अपने संस्कार। आत्मा यद्यपि स्वरूप से शुद्ध व पवित्र है। शुद्ध होते हुये भी, उसे जो ज्ञान है, वह कुछ शुद्ध है, कुछ अशुद्ध है। यानी कुछ तो विद्या है और कुछ उसमें अविद्या (उलटा ज्ञान) भी है। अनेक जन्मों की अविद्या हमारे अंदर चली आ रही है। अविद्या नाम का एक दोष है, जो जीवात्मा के साथ जुड़ जाता है। अविद्या (उल्टे ज्ञान) के कारण वो मलीन हो जाता है। अपनी इच्छा से वो खराब काम नहीं करना चाहता, गलती नहीं करना चाहता। स्वयं तो वो अच्छी बात ही चाहता है, सुख ही चाहता है, अच्छे काम ही करना चाहता है। लेकिन जब यह अविद्या ऊपर से चिपक जाती है, तो उसके कारण यह जीवात्मा गड़बड़ विचार (उल्टी सोच) करता है। इसी अविद्या के दोष के कारण वो अच्छे विचार भी उठा लेता है और बुरे विचार भी उठा लेता है। अविद्या के कारण उसमें राग और द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं।

● अविद्या के प्रभाव से प्रेरित होकर जीवात्मा झूठ बोलता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, अन्याय करता है, शोषण करता है, छल-कपट करता है, हिंसा करता है, निंदा- चुगली करता है।

अविद्या जीवात्मा को लपेट लेती है, क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ है।

● ईश्वर सर्वज्ञ है, उसको अविद्या नहीं लपेट सकती, उसको अविद्या नहीं दबा सकती। वो इतना मजबूत है, कि अविद्या उसे नहीं सताती। जीवात्मा बेचारा कमजोर है, इसलिए अविद्या उसको आकर दबा लेती है, वो बेचारा पिट जाता है। इस प्रकार अविद्या के नीचे दबकर जीवात्मा उलटे-सीधे काम करता है। उस अविद्या के कारण, उन संस्कारों के कारण जीवात्मा बुरे विचार भी करता है।

● इस प्रकार कुछ विद्या भी है और कुछ अविद्या भी है। यह दोनों नैमित्तिक हैं यानि यह बाहर से आती हैं। कहीं अड़ोस-पड़ोस के लोगों से कुछ बुरी बातें सीख लेता है। उसके कारण बुरे विचार करता है। कुछ टेलीवीजन से, कुछ कंप्यूटर से, कुछ टेलीफोन-मोबाईल से, कुछ इंटरनेट से, कुछ पढ़ाई लिखाई के सिलेबस से, कुछ मित्र-मण्डली से, कुछ सरकार के कानूनों से, ऐसे बहुत सारे कारण हैं, जिनसे व्यक्ति बुरे विचार भी कर लेता है।

● प्राकृतिक रजोगुण, तमोगुण की वजह से जीवात्मा में यह अविद्या, राग-द्वेष आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इस गड़बड़ी के कारण कभी-कभी वो बुरे विचार भी उठा लेता है, बुरे काम भी कर लेता है, गलत भाषा भी बोल देता है।

● जब व्यक्ति अविद्या को दूर कर लेता है तो हर समय सुविचार ही उठाता है। इसलिए कोशिश करनी चाहिये, कि उन बुरे विचारों से बचें। उन बुरे विचारों को रोकें। अच्छे विचार करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छे कर्म करें। ऐसा हमको पूरा प्रयत्न करना चाहिये। इसका उपाय है-वेदों का अध्ययन, ईश्वर का ध्यान और निष्काम सेवा करना।

107. शंका- मन में आते हुए विचारों को कैसे रोकें? संध्या, ध्यान आदि में अनेक विचारों से एकाग्रता टूट जाती है। क्या करें?

☯ **समाधान-** मन में विचारों की उत्पत्ति के दो कारण है- 'इच्छा' और 'प्रयत्न'। विचारों को रोकने का उपाय यही है, कि- इच्छा को रोक दीजिए और प्रयत्न को रोक दीजिये। इससे मन में आने वाले विचार रुक जाएँगे।

● योगदर्शन में पतंजलि महाराज ने दूसरे दो शब्दों का प्रयोग किया। पहला है- 'वैराग्य' और दूसरा है- 'अभ्यास'। वृत्तियों (विचारों) को रोकने के लिए बस ये दो उपाय अभ्यास और वैराग्य हैं।

● लंबे समय तक दीर्घकाल तक अभ्यास में जुटे रहिये। निरंतर अभ्यास कीजिए। धीरे-धीरे मन एकाग्र होता जाएगा। जो विचार हम उठा लेते हैं, उन्हें मन से हटाते जाइये। इस तरह धीरे- धीरे अभ्यास करेंगे तो लाभ होगा। और थोड़ा वैराग्य बढ़ाइये। वैराग्य का मतलब- संसार से राग भी नहीं और द्वेष भी नहीं करना। इन दोनों से बचना।

● राग से कैसे बचें? संसार की वस्तुओं में सुख न लेवें। इससे धीरे-धीरे राग कम हो जाएगा। द्वेष से कैसे बचें? किसी भी परिस्थिति में दुःखी न हों। कैसे? जब छोटी-मोटी प्रतिकूल घटना हो, तब सोचें- 'कोई बात नहीं'। जब बड़ी घटना होवे, तब अपनी रक्षा का पूर्ण प्रयत्न तो अवश्य करें। फिर भी यदि संसार में न्याय न मिल पाए, तब सोचें- 'ईश्वर न्याय करेगा।' इस प्रकार से 'अभ्यास' और 'वैराग्य' दो उपाय हैं। इनसे वृत्तियों को रोका जा सकता है।

108. शंका- शरीर, आत्मा और मन इनमें क्या संबंध है?

☯ **समाधान-** उपनिषदों में बतलाया है- शरीर एक रथ के समान है। पहले रथ होते थे, आजकल कार होती है। तो चलो कार के उदाहरण से बताएगे। जैसे शरीर है, वैसे कार है। कार में पाँच चीजें हैं। कार का यात्री सेठ-एक, ड्राईवर-दो, स्टेयरिंग-तीन, पहिए-चार और सड़कें पांच। ऐसे ही शरीर में यात्री के समान आत्मा, ड्राइवर के समान बुद्धि, स्टेयरिंग-व्हील के समान मन, पहियों के समान इंद्रियाँ और सड़कों के समान विषय हैं। इस तरह से इनमें सम्बन्ध समझना चाहिए।

109. शंका- 'सूक्ष्म-इच्छाओं' से आपका क्या तात्पर्य है?

☯ **समाधान-** हम जो विचार उठाते हैं, वे या तो 'सूक्ष्म-इच्छाओं' से उठाते हैं या 'स्थूल- इच्छाओं' से उठाते हैं।

● अब प्रश्न उठता है, कि सूक्ष्म-इच्छाओं से क्या तात्पर्य है? **सूक्ष्म इच्छाओं से तात्पर्य है कि- आपने मन में कोई इच्छा रखी हुई है, लेकिन वो आज आपको समझ में नहीं आ रही है, दस साल के बाद में समझ में आएगी।** जिस इच्छा से आपने मुम्बई चौपाटी की स्मृति उठाई थी, या जिस इच्छा से आपने दिल्ली का चिड़ियाघर याद किया था, वो है- 'सूक्ष्म इच्छा'। जो आज समझ में नहीं आ रही। लेकिन जब व्यक्ति लंबा अभ्यास करेगा, तो उसको धीरे-धीरे पकड़ में आएगा कि हाँ, ये छोटी-छोटी सूक्ष्म इच्छाएं भी मैं ही उठाता हूँ। वो बहुत हल्की इच्छाएं होती हैं, जो पहले-पहले समझ में नहीं आती, बाद में समझ आती हैं। एक मोटा उदाहरण देता हूँ -

आपने बचपन में जब पहली-पहली बार साईकिल चलाना सीखा, तो सिखाने वाले व्यक्ति ने आपको साईकिल पर बैठा दिया, हाथ में हैंडल पकड़ा दिया और कहा कि- देखो, नजर सामने रखना, पाँव की तरफ नहीं देखना, पैडल मारते जाना और हैंडल सीधा रखना, टेढ़ा नहीं करना, नहीं तो साइकिल गिर जाएगी। ऐसे-ऐसे उसने आपको संकेत बताये, दिशा-निर्देश दिए और आपको साईकिल पर बैठाकर धक्का मार दिया और कहा- चलाओ। उसने धक्का मारा तो आपने भी दो-चार पैडल मारे। चँकि पहला दिन था, अभ्यास तो था नहीं। इसलिये आपने वही गलती की, जो उसने मना की थी। उसने कहा था कि- सड़क पर देखना और आपने पैडल की तरफ देखा। उसने कहा था, कि हैंडल सीधा रखना और आपने हैंडल टेढ़ा कर दिया। फिर क्या हुआ? गिर गए। जब गिर गए तो सिखाने वाले ने पूछा- तुमने साईकिल क्यों गिराई? पहले दिन व्यक्ति यही कहता है कि- साहब! मैंने साईकिल बिल्कुल नहीं गिराई, यह अपने आप गिरी है। छह महीना अभ्यास करने के बाद वो नहीं कहता है कि यह साईकिल अपने आप गिरती है। उसको छह महीने बाद उसको समझ में आता है, कि पहले दिन भी जो साईकिल गिरी थी, तो मैंने ही गिराई थी। यह अपने आप नहीं गिरती। अब छह महीने में अभ्यास हो गया। अब क्यों नहीं गिरती? क्योंकि अब मेरी प्रैक्टिस हो गई है, अब मैंने संभालना सीख लिया है। पहले नहीं संभाल सकता था, योग्यता नहीं थी, शक्ति नहीं थी, सामर्थ्य नहीं था, ज्ञान-विज्ञान नहीं था। जैसे साईकिल चलाने वाले को पहले दिन नहीं समझ

में आता, छह महीने बाद समझ में आता है। ठीक इसी तरह से आज आपकी योग्यता कम है। आज आप मन में जो विचार उठाते हैं, वो जिन सूक्ष्म इच्छाओं से उठाते हैं, वो सूक्ष्म इच्छाएं आप आज नहीं पकड़ सकते। आज उन्हें पकड़ने की योग्यता नहीं है। दस साल, पन्द्रह साल मेहनत करेंगे और पकड़ने की कोशिश करेंगे, कि मन में कौन सा विचार उठ रहा है। तब जाकर उसको अच्छी तरह पकड़ेंगे। इस तरह धीरे-धीरे समझ में आएगा, कुल मिलाकर यह लंबे समय में समझ में आएगा कि जो भी विचार उठ रहा है, मैं ही उठा रहा हूँ।

● **जो इच्छाएं आज आप नहीं पकड़ पा रहे हैं, वो हैं- 'सूक्ष्म इच्छाएं'। और जो इच्छाएँ आप आज ही पकड़ पा रहे हैं, कि हाँ, यह विचार मैंने उठाया, वो है- 'स्थूल इच्छा'।** उस स्थूल इच्छा के कारण आपने उस विचार को उठाया। मान लीजिये, आप प्रतिदिन शाम को 6 बजे ध्यान में बैठते हैं। एक दिन दोपहर 3 बजे एक विशेष व्यक्ति ने आपको फोन से कहा- 'मैं आज रात को 8 बजे आपसे मिलने आऊँगा। उस दिन शाम को 6 बजे आप ध्यान में उस व्यक्ति के स्वागत की तैयारियाँ करेंगे, कि उसे बिठाना है, क्या खिलाना है, क्या बातें करनी हैं। उस दिन रात को आठ बजे जो व्यक्ति मिलने आयेगा, उसके लिए शाम को छह बजे ध्यान में आपने जो स्वागत की तैयारियाँ की हैं, वह आपकी स्थूल इच्छा थी, उसके कारण आपने सब तैयारी की। तो इस तरह से इच्छायें, 'सूक्ष्म-इच्छाएं' और 'स्थूल-इच्छाएं' दोनों तरह की होती हैं।

110. शंका- क्या सूक्ष्म-इच्छाएँ 'सब-कांशियस-माइंड' में उत्पन्न होती हैं?

☯ **समाधान-** यह 'सब-कांशियस' माइंड क्या है? आजकल के साइकोलॉजी वाले कितने सारे माइंड पढ़ाते हैं। दरअसल, इनको ठीक से पता नहीं है। ये लोग नहीं जानते, कि माइंड इज वन, ऑनली वन। **हमारे शरीर में, एक आत्मा के साथ केवल एक ही मन है।** मन दो-तीन-चार नहीं हैं, लेकिन ये दो-तीन-चार पढ़ाते हैं। एक सब-कांशियस माइंड है, एक कांशियस माइंड है, एक अनकांशियस माइंड है। जबकि मन एक ही है।

● **हालांकि मन की अवस्थायें (स्टेट्स ऑफ माइन्ड) पाँच हैं।** इनके नाम 'योग-दर्शन' के व्यास-भाष्य में लिखे हैं। मन की पहली अवस्था का नाम है- क्षिप्त। दूसरी का नाम है- मूढ़। तीसरी का नाम है- विक्षिप्त। चौथी का नाम है- एकाग्र। पाँचवी अवस्था का नाम है- निरूद्ध।

● प्रकृति में तीन प्रकार के तत्त्व (द्रव्य) हैं, जिनको गुण कहते हैं। उनके नाम हैं- सत्त्व गुण, रजोगुण, तमोगुण। **इस प्रकृति के इन सबसे छोटे-छोटे कणों (सत्त्व, रज और तम) का अपना-अपना अलग-अलग स्वभाव है।**

● **सत्त्व गुण का स्वभाव यह है, कि वो शांति देता है, सुख देता है, जिससे मन में स्थिरता होती है।** जब मन में सत्त्वगुण प्रबल होता है, सत्त्वगुण का प्रभाव अधिक होता है, तो हमको शांति महसूस होती है, अच्छा लगता है, सुख लगता है। मन में सेवा और परोपकार के, दान के, दया के अच्छे-अच्छे भाव आते हैं।

● **जब रजोगुण बलवान हो जाता है और अपना प्रभाव शुरू करता है, तो चंचलता और अशांति आती है।** इससे मन में काम्पटीशन की भावना आती है, स्वार्थ की भावना आती है, छीना-झपटी की भावना आती है, हेरा-फेरी, निंदा-चुगली और गड़बड़ करने की इच्छा होती है।

● **जब तमोगुण प्रबल होता है, तब बहुत बुरे काम करने की इच्छा होती है।** मसलन, चोरी करना, डकैती करना, स्मगलिंग करना, ब्लैक मार्केटिंग करना, हत्यायें करना, आतंकवाद फैलाना इत्यादि।

इन गुणों का प्रभाव हमेशा एक सा नहीं रहता, बल्कि बदलता रहता है। इन गुणों के प्रभाव के बदलते रहने से ये अवस्थायें बदलती रहती हैं। कभी क्षिप्त अवस्था आती है, कभी मूढ़ अवस्था आती है। जिसको आप अनकांशियस माइंड कहते हैं, वास्तव में वो चित्त की मूढ़ अवस्था है। मन कोई दो तीन नहीं हैं।

111. शंका- रजोगुण से चंचलता होती है, तमोगुण से मूढ़ता होती है, तो विक्षिप्त अवस्था किस गुण से होती है?

☯ **समाधान-**

● विक्षिप्त अवस्था में थोड़ा सत्त्व गुण होता है, जिसके कारण कुछ स्थिरता होती है।

● आप सोचेंगे स्थिरता तो तमोगुण से होती है, और हमने कहा कि- विक्षिप्त अवस्था में स्थिरता सत्त्वगुण से होती है। दरअसल, तमोगुण की स्थिरता अलग प्रकार की है। तमोगुण की स्थिति में मन में विचार आता है, कि 'घंटी बज गई, उठो भई उठने का समय हो गया है, और तमोगुण के प्रभाव से व्यक्ति कहता है- पड़े रहो, थके हुए पड़े रहो, सोते रहो, उठना ही नही, जल्दी नहीं है, रोज ही तो उठते हैं, एक दिन नहीं उठेंगे तो क्या फर्क पड़ेगा।' पड़े रहो वाली, यह जो स्थिरता है, वो तमोगुण की है।

● सत्त्वगुण के कारण से जो स्थिरता होती है, वो अलग है। उसका नाम है- एकाग्रता, यानी एक विषय में मन का टिक जाना। मन एक जगह पर ज्ञानपूर्वक टिका रहे, वो स्थिरता सत्त्वगुण की है। दोनों में यही अंतर है।

● सत्त्वगुण के कारण जब मन एक विषय में टिक गया, तो कुछ देर के बाद रजोगुण बीच में कूद पड़ा और जो टिका हुआ मन था, उसको उखाड़ दिया। वो विक्षिप्त अवस्था हो गई या तमोगुण बीच में कूद गया, तो उसके प्रभाव से आलस्य आ गया, नींद आ गई या उसके कारण कोई और गड़बड़ी खड़ी हो गई।

● जब सत्त्वगुण के कारण जो मन टिका हुआ था, वो उखड़ जायेगा, उसको हम विक्षिप्त अवस्था बोलते हैं।

● सार यह निकला कि विक्षिप्त अवस्था कभी रजोगुण के कारण, और कभी तमोगुण के कारण भी होती रहती है।

112. शंका : क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध मन की इन पांच अवस्थाओं को समझाने की कृपा करें?

☯ **समाधान-** **मन एक है, उसकी पाँच अवस्थायें हैं। जो समय-समय पर ऑटोमेटिक रूप से मौसम के कारण, खान-पान आदि परिस्थितियों के कारण, घटनाओं के कारण; और कुछ हमारे अपने विचारों से बदलती रहती हैं।** इसलिए हमको सावधानी से प्रयोग करना है और अच्छी से अच्छी अवस्था बना के रखनी है।

1. **क्षिप्त अवस्था :-** मन की पहली अवस्था है- क्षिप्त अवस्था। क्षिप्त का अर्थ है-मन की चंचल स्थिति, चंचल अवस्था।

● **मन की जब चंचल अवस्था होती है, उसका नाम है- क्षिप्त-अवस्था।** हम मन में जल्दी-जल्दी विचारों को बदलते रहते हैं। आप पांच मिनिट बैठिये। मन में देखिए, आप फटाफट पचास विचार उठा लेंगे। वहाँ जाना है, यह करना है, उसको यह बोलना, उससे यह लेना है, उसको वो देना है, ये खरीदना है, वो काम करना है, अभी यह कर लूँ, यह खा लूँ, फिर वहाँ सो जाऊँ, फिर यूँ बात कर लूँ। फटाफट विचार बदलते रहना मन की 'क्षिप्त-अवस्था' है।

● क्षिप्त अवस्था में रजोगुण की प्रधानता होती है। चंचल-अवस्था में व्यक्ति जल्दी-जल्दी मन में विचार बदलता है, वो जल्दी-जल्दी स्मृतियाँ उठाता है। कभी इसको याद किया, कभी उसको याद किया, कभी और चीज याद की, कभी और चीज याद की।

2. **मूढ़ अवस्था :- दूसरी अवस्था है-मूढ़ अवस्था।** जब तमोगुण का प्रभाव अधिक होता है, तब मूढ़ अवस्था उत्पन्न होती है। मूर्च्छा जैसी, थोड़ी नशीली, नशे जैसी अवस्था या तमोगुणी अवस्था मूढ़ता प्रधान अवस्था है।

जैसे-थोड़ी नींद सी आ रही है, झटके आ रहे हैं, आलस्य आ रहा है। या कोई शराब पी लेता है तो नशे की स्थिति हो जाती है। ये सारी मूढ़-अवस्था कहलाती है। उस समय व्यक्ति का मन पूरा स्वस्थ नहीं होता। बुद्धि काम नहीं करती, समझ नहीं आता है, उसको पता नहीं चलता, कि क्या करना, क्या नहीं करना। इस तरह की जो स्थिति है, उसको 'मूढ़-अवस्था' कहते हैं।

3. **विक्षिप्त अवस्था :- फिर तीसरी है- विक्षिप्त अवस्था**। विक्षिप्त

अवस्था में सत्त्वगुण प्रभावशील होता है, सत्त्व गुण प्रधान होता है। लेकिन बीच-बीच में रजोगुण और तमोगुण स्थिति को बिगाड़ते रहते हैं। जैसे कोई व्यक्ति ध्यान में दो-चार मिनट बैठा, उसका मन ठीक लगा। उसका मन थोड़ा-थोड़ा टिकने लगता है, फिर किसी कारण से वो ध्यान टूट जाता है, इसलिए उसकी एकाग्रता बिगड़ जाती है। इसको बोलते हैं-'विक्षिप्त अवस्था'।

दो-चार मिनट बाद उसने फिर कोई वृत्ति उठा ली और वो स्थिति बिगड़ गई। इस बिगड़ी हुई अवस्था का नाम है- विक्षिप्त। विक्षिप्त का अर्थ 'बिगड़ा हुआ' होता है। इस तरह रजोगुण के कारण ध्यान की अवस्था जब बिगड़ती है, मन की शांत-स्थिर अवस्था जब बिगड़ती है, तब उसका नाम है- 'विक्षिप्त अवस्था'।

4. **एकाग्र अवस्था :- फिर चौथी है- एकाग्र अवस्था।** जिसमें पूरा सत्त्वगुण का प्रभाव होता है। अब रज और तम पूरे चुपचाप बैठ गए, ठंडे हो गए। अब वो बीच में गड़बड़ नहीं कर सकते। मन के ऊपर आत्मा का पूरा प्रभाव है, पूरा कंट्रोल है, पूरा नियंत्रण है।

● 'एकाग्र-अवस्था' का मतलब है, कि मन अब पूरा नियंत्रण में आ गया, पूरा अधिकार में आ गया। मन अब हमारी इच्छा के विरुद्ध कहीं इधर-उधर नहीं जाता। जैसे पहले लगता था, कि हम विचार उठाना नहीं चाहते, फिर भी आ जाते हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं होता है। अब तो हम जो चाहते हैं, वही विचार लाते हैं। इस अवस्था का नाम है-'एकाग्र -अवस्था'।

● **अब "दिल है, कि मानता नहीं" वाली शिकायत खत्म हो गई।** पहले शिकायत थी न, दिल है कि मानता नहीं, वो क्षिप्त अवस्था थी। और अब दिल पूरा मान लेता है, सौ प्रतिशत कंट्रोल में आ जाता है। इस अवस्था का नाम है- एकाग्र अवस्था। यानि अब सत्त्वगुण प्रबल है। व्यक्ति का मन के ऊपर वैसा ही कंट्रोल है, जैसा कार वाले का कार के ऊपर है। ऐसा ही आत्मा का मन के ऊपर जब पूरा कंट्रोल होता है, तो वो 'एकाग्र-अवस्था' है।

● इस अवस्था में जीवात्मा को समाधि में अपने आत्मस्वरूप की अनुभूति होती है और सूक्ष्म प्राकृतिक तत्त्वों की भी अनुभूति होती है। इस चौथी अवस्था में प्राकृतिक तत्त्वों और आत्मा, इन दो चीजों का अनुभव होता है। इसका नाम एकाग्र अवस्था। इस अवस्था में एक समाधि होती है, उसको बोलते हैं-'संप्रज्ञात- समाधि' ।

5. **निरूद्ध-अवस्था :- मन की पाँचवी अवस्था है- निरूद्ध अवस्था।** यह एकाग्र अवस्था से भी और ऊंची अवस्था है। इसमें भी मन पर पूरा नियंत्रण होता है। इसमें भी एकाग्र की तरह से ही मन पर पूरा कंट्रोल है तो एकाग्र में और निरूद्ध में अंतर क्या है ? अंतर इतना है, एकाग्र अवस्था में प्राकृतिक तत्त्वों और जीवात्मा, इन दो चीजों की अनुभूति होती है। लेकिन इस अवस्था में समाधि का विषय बदल जाता है। असंप्रज्ञात समाधि यानी निरूद्ध अवस्था में 'ईश्वर' का अनुभव होता है। जब ईश्वर की अनुभूति होती है, उस अवस्था का नाम है- निरूद्ध अवस्था। और उस समय जो समाधि होती है, उसका नाम है- 'असंप्रज्ञात-समाधि'।

● इस तरह से मन की ये पांच अवस्थाऐं हैं। इनमें से चौथी और पांचवी एकाग्र और निरूद्ध, इन दो अवस्थाओं में समाधि होती है, बाकी तीन में समाधि नहीं है।

● क्षिप्त और मूढ़ अवस्था तो खराब ही है। उनसे अच्छी तो है विक्षिप्त अवस्था। और इससे अच्छी है चौथी- एकाग्र अवस्था। और सबसे अच्छी है- निरूद्ध अवस्था।

● योगाभ्यास में यही करना है। 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् मन के विचारों को रोको। जैसे-जैसे रोकते जाएंगे, वैसे-वैसे हमारी स्थिति ऊँची-ऊँची होती जाएगी। जैसे-जैसे थोड़े-थोड़े विचार रुकेंगे, तो विक्षिप्त अवस्था आ जाएगी और जब पूरे विचार रोक देंगे तो समाधि शुरू हो जाएगी अर्थात एकाग्र अवस्था आ जाएगी। फिर ईश्वर की अनुभूति हो जाएगी, तो निरूद्ध अवस्था आएगी। इस तरह से मन की बात समझनी चाहिए। मन एक ही है, दो तीन नहीं।

113. शंका- मन जड़ है। इसमें क्षण-क्षण में अलग-अलग स्मृति व विचार उठते हैं और वह इधर-उधर दौड़ता है, यह कैसे?

☯ **समाधान-** घर में बिजली काम कर रही है। जिस बिजली से हमारे साधन काम कर रहे हैं जैसे कि- माइक्रोफोन चल रहा है, ट्यूबलाइट्स जल रही हैं, पंखे चल रहे हैं, कारखानों में मशीनें चल रही हैं। बताइये कि यह जो बिजली है, यह जड़ है या चेतन? जड़ है। और अगर हम बिजली के तार का यहाँ से लेकर के दिल्ली तक पूरा कनेक्शन लगा दें, और यहाँ से बटन ऑन कर दें, तो करंट कितनी देर में दिल्ली पहुँच जायेगा? एक सेकंड से भी पहले पहुँच जायेगा। बिजली एक सेकंड में एक लाख, छियासी हजार, दो सौ मील चली जाती है। और दिल्ली तो मात्र एक हजार किलोमीटर ही है।

● जड़ होते हुए भी, बिजली कितनी चंचल है, कितनी तीव्रता से काम करती है। जब बिजली जड़ होते हुए इतनी तीव्रता से चल सकती है, तो फिर मन भी जड़ है, तो वो तीव्रता से काम क्यों नहीं कर सकता?

● मन की अपनी गति है, घोड़े की अपनी गति है, शरीर की अपनी गति है। वस्तुतः हर चीज की अपनी अलग-अलग गति है। शरीर इतनी तेज नहीं दौड़ सकता, स्कूटर शरीर से ज्यादा तेज दौड़ सकता है। स्कूटर से कार ज्यादा तेज दौड़ सकती है, और कार से विमान और तेज चल सकता है। मन की भी अपनी गति है, वो बहुत तेज चलता है, फटाफट विचार करता है। भगवान ने मन के अंदर ऐसी क्षमता दी है, कि जीवात्मा मन से जल्दी-जल्दी विचार कर सके। यदि इतनी जल्दी विचार न कर सके, तो उसके सांसारिक व्यवहार सिद्ध न हों।

● पायलट विमान चलाता है, और विमान की गति आप जानते हैं, वो आठ सौ, एक हजार, बारह सौ, पन्द्रह सौ किलोमीटर प्रति घंटे की तेजी (स्पीड) से चलता है। मान लो, दो हजार किलोमीटर प्रति घंटे की गति से विमान चलता है, तो जो पायलट उसको चला रहा है, उसका दिमाग विमान से तीव्र चलना चाहिये या धीमे चलना चाहिये? तीव्र चलना चाहिये। तभी तो वो विमान को नियंत्रित कर पायेगा, नहीं तो दुर्घटनाग्रस्त हो जायेगा। दिमाग तेज चलेगा, तभी तो वो सामने आने वाली वस्तुओं से बचा पायेगा, नहीं तो टकरा जायेगा।

● भगवान ने मन इसलिये तीव्रता से कार्य करने वाला बनाया, कि हम विमान को भी चला सकें, हम रॉकेट भी चला सकें, हम सेटेलाइट भी चला सकें, हम कम्प्यूटर भी चला सकें, तीव्रता से काम करने वाली मशीनों पर नियंत्रण कर सकें। और ऐसे ही समाधि भी लगा सकें, उसके लिए भी मन तीव्र गति वाला होना चाहिये।

● मन जड़ होते हुये भी बहुत तीव्रता से कार्य करता है, बिल्कुल बिजली की तरह। बिजली बहुत तीव्र गति से चलती है। और यहाँ से एक सेकंड में अमेरिका तक, लंदन तक पहुँच जायेगी, पर है जड़। मन भी ऐसा ही है। आत्मा उसको चलाता है। और वो एक-एक क्षण में फटाफट विचार बदलता है, स्मृतियाँ उठाता है, स्मृतियाँ बदलता रहता है। आत्मा चेतन है, वो उसको चलाता है। मन में इतनी क्षमता है, कि वो ये सब कार्य इतनी तेजी से कर सकता है।

114. शंका- 'कारण-शरीर' और 'सूक्ष्म-शरीर' कैसे बनते हैं। और आत्मा के साथ इनका सम्बन्ध कब तक रहता है?

☯ **समाधान-**

● कारण शरीर "प्रकृति" का नाम है। सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण, इन तीनों के समुदाय का नाम प्रकृति है। ये सूक्ष्मतम कण हैं। उसी का नाम 'कारण-शरीर' है।

● अब उस प्रकृति रूपी कारण शरीर से दूसरा जो शरीर उत्पन्न हुआ, उसका नाम 'सूक्ष्म शरीर' है। आपने शरीर पर सूती कुर्ता (कपड़ा) पहन रखा है। इसका कारण है धागा। और धागे का कारण है- रूई। रूई, धागा और कॉटन-कुर्ता ये तीन वस्तु हो गयीं। कुर्ता, धागा और रूई, तो ऐसे तीन शरीर हैं- स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर। **स्थूल शरीर है कुर्ता, सूक्ष्म शरीर है धागा, और कारण शरीर है- रूई।**

● जो संबंध कुर्ते, धागे और रूई में है, वो ही संबंध इन तीनों शरीर में है। क्या रूई के बिना धागा बन जायेगा, और क्या धागे के बिना कुर्ता बनेगा? कारण शरीर के बिना सूक्ष्म शरीर नहीं बनेगा। सूक्ष्म शरीर

के बिना स्थूल शरीर नहीं बनेगा। कहा हैः- कारण शरीर प्रकृति सत्त्वरजसतमः। सत्त्व, रज और तम से अठारह चीजें बनी। उसका नाम है- सूक्ष्म शरीर।

● सृष्टि के आरंभ में जब भगवान ने ये सारी दुनिया बनायी तो कारण शरीर प्रकृति से अठारह पदार्थ उत्पन्न किये। उनके नाम हैं- बुद्धि, अहंकार, मन, पाँच ज्ञान- इन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच तन्मात्रा। इनका नाम सूक्ष्म शरीर है। ये सारे पदार्थ प्रकृति से बनते हैं। रूप, रस, गंध आदि पाँच तन्मात्राओं से पाँच महाभूत बनते हैं। जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश, इन पाँच महाभूतों के नाम है। इन्हीं पाँच पदार्थो का समुदाय ये स्थूल शरीर है। जो आपको आँख से दिखता है, वो स्थूल रूप। तो ये इन तीनों का संबंध है।

● जब तक जीवात्मा पुर्नजन्म धारण करेगा, यानी एक शरीर छोड़ दिया, दूसरा शरीर धारण कर लिया, तो स्थूल शरीर छूट जायेगा। अतः मृत्यु होने पर ये छूट जायेगा। सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर, ये दोनों जीवात्मा के साथ जुड़े रहेंगे। पुर्नजन्म हुआ फिर नया स्थूल शरीर मिल गया, फिर अगला शरीर, फिर अगला। जब तक मुक्ति नहीं होगी तब तक सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर साथ रहेगा। जब मुक्ति हो जायेगी तब तीनों शरीर छूट जायेंगे। धागा वही रहता है, कुर्ते बदलते रहते हैं।

● सूक्ष्म-शरीर और कारण-शरीर तब तक साथ रहेंगे, जब तक पुर्नजन्म होता रहेगा। जब मोक्ष हो जायेगा तब तीनों दूर हो जायेंगे। अथवा मोक्ष नहीं हुआ और आ गई प्रलय तो प्रलय में तीनों शरीर छूट जायेगा। स्थूल शरीर तो वैसे ही थोड़े-थोड़े दिनों में छूटते रहता हैं। तब सूक्ष्म शरीर भी टूट-फूट कर नष्ट हो जायेगा और कारण शरीर रूपी प्रकृति बचेगी। सूक्ष्म शरीर वापस टूट-फूट कर कारण शरीर के रूप में परिवर्तित हो जायेगा। जैसे मिट्टी का हमने ढ़ेला लिया और उसकी ईंट पका ली और फिर ईंट तोड़कर वापस मिट्टी बना दी, तो वापस ये मिट्टी बन गई यानि कारण शरीर बन गया। जीवात्मा प्रलय के समय तो अलग हो गया पर मुक्ति नहीं मिली। फिर एक नयी सृष्टि बनेगी, तो उसके साथ जीवात्मा को ईश्वर फिर दोबारा जोड़ देगा। तब तक वह बंधन की स्थिति में है। जब तक मोक्ष न हो जाये अथवा प्रलय न हो जाये तब तक ये दोनों शरीर आत्मा के साथ जुड़े रहेंगे। मोक्ष में या प्रलय में ये छूट जायेंगे। मोक्ष होने पर तो फिर हजारों सृष्टियों तक ये तीनों शरीर फिर जुड़ते नहीं हैं।

● अब रही बात राग और द्वेष की। राग और द्वेष भी जीवात्मा

की शक्ति है। राग और द्वेष दो प्रकार का है :- एक स्वाभाविक और दूसरा नैमित्तिक। जो स्वाभाविक राग-द्वेष है, वो जीवात्मा से नहीं छूटेगा। वो मुक्ति में भी जीवात्मा में रहेगा। और स्वाभाविक राग-द्वेष में रहते-रहते मुक्ति हो जायेगी। इसमें कोई आपत्ति नहीं है, कोई बाधा नहीं है। जो नैमित्तिक राग-द्वेष है, वो बाधक है। उसे हटाना पड़ेगा, मुक्ति में वो छूट जायेगा।

● स्वाभाविक राग-द्वेष क्या है? और नैमित्तिक राग-द्वेष क्या है? उत्तर है कि जीवात्मा को हमेशा सुख चाहिये। यह उसको सूक्ष्म राग है। ये स्वाभाविक राग है। ये मुक्ति में बाधक नहीं है। जीवात्मा को दुःख कभी भी नहीं चाहिये। दुःख में उसको स्वाभाविक द्वेष है। ये भी मुक्ति में बाधक नहीं। ये स्वाभाविक राग और द्वेष रहेंगे, मुक्ति हो जायेगी। कोई परवाह नहीं।

● अमुक व्यक्ति ने मेरी हानि कर दी, मैं उसकी गर्दन तोडूँगा, ये सोचना नैमित्तिक द्वेष है। खीर, पूड़ी, लड्डू, हलुआ मुझे मिलना चाहिये, मुझे अधिक मिलना चाहिये, उसको कम, ये सोच नैमित्तिक राग है। ये मुक्ति में बाधक है। ये हट जायेगा, फिर मुक्ति होगी। इसके रहते मुक्ति नहीं होगी। इसको छोड़ देंगे तो मुक्ति हो जायेगी।

115. शंका- क्या कोई आत्मा अन्य आत्मा में प्रवेश कर उस जीवात्मा को प्रभावित करके सता सकता है। क्या मृत शरीर में अन्य आत्मा घुस सकता है?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर है- नहीं। ये भूत-प्रेत (घोस्ट) की मान्यता बिल्कुल गलत है।

● किसी जीवित शरीर में कोई आत्मा, भूत-प्रेत बनकर घुस जाये और उसको परेशान करे, ऐसा कभी नहीं हो सकता। किसी मृत शरीर में कोई आत्मा घुस जाए और वो शरीर चल पड़े और सारे काम शुरू कर दे, ऐसा भी नहीं हो सकता।

● कभी-कभी मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति अस्वाभाविक क्रियाऐं करने लगते हैं। जो आत्मा के बारे में ठीक से नहीं जानते-समझते, वे मानते हैं, कि हममें कोई भूत-प्रेत घुस गया है। दरअसल, कोई भूत-प्रेत नहीं घुसता। यह केवल भ्रांति की बात है। इस भ्रांति से दूर रहिए।

● भूत-प्रेत होता ही नहीं है। जो नहीं मानते, उनको कोई नहीं

सताता। जो लोग मानते हैं, उनको यह सताता है। केवल मन का भूत है, मन की कल्पना है, भ्रम है, और कुछ नहीं। यह मानसिक रोग है, इसकी चिकित्सा कराओ।

● भूत लगना केवल मनोवैज्ञानिक-रोग की स्थिति है। जिसमें व्यक्ति रोग से ग्रस्त होकर विक्षिप्त-अवस्था में कुछ का कुछ बोलने लगता है।

● भूत-प्रेत उतारने वाले को ओझा कहते हैं। गुजरात में भुआ कहते हैं। ओझा या भुआ उस पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं और उसको कहते हैं, अब तुम ठीक हो गए और वो भी मान लेता है, कि हाँ मैं ठीक हो गया। उसका भूत-प्रेत सब निकल गया। भूत-प्रेत कुछ नहीं होता। इसलिये इसके चक्कर में नहीं आना।

● मैं पिछले बीस वर्षों से यह चैलेंज करता आ रहा हूँ अगर कोई भूत-प्रेत उतारने या डालने वाला व्यक्ति यह दावा करता है, कि मैं भूत-प्रेत डाल सकता हूँ, निकाल सकता हूँ, तो मेरे शरीर में एक भूत-प्रेत डाल दो। मैं सामने से ऑफर करता हूँ उसको मेरी तरफ से एक लाख रुपये ईनाम। और जो नुकसान होगा, वो मेरा। उसके ऊपर कोई आपत्ति नहीं। कोर्ट में चलेंगे, मजिस्ट्रेट साहब के सामने कॉन्ट्रेक्ट साईन करेंगे। दो गवाह उनके, दो गवाह हमारे। चाहो तो प्रयोग कर लो। अगर मेरे शरीर में भूत डाल दे, तो लाख रूपए ईनाम। और अगर नहीं डाल सका तो पांच लाख रुपये जुर्माना भरो। वन-वे ट्रेफिक नहीं चलेगा। बीस साल हो गए मुझे चैलेन्ज करते हुए। अब तक तो मेरे सामने कोई नहीं आया है, जो भूत-प्रेत डाल दे। इसलिए व्यर्थ की बात है, इसको छोड़ दीजिए।

● जैसे एक आत्मा शरीरधारी है। वो अपनी आत्मा दूसरे शरीर में प्रविष्ट करा दे, यह संभव नहीं। सवाल है कि एक शरीरधारी जीवात्मा दूसरे जीवित शरीर में अपनी आत्मा को डालेगा कि मृत शरीर में? मृत में डालेगा न, जीवित में तो नहीं डालेगा। चलो एक बात तो कैंसिल हुई कि वो जीवित शरीर में तो नहीं घुसेगा। अब मृत शरीर में डाले तो इसमें कौन सी समझदारी है? मृत शरीर तो पहले ही सड़-गल जायेगा। आप कहो कि सड़ा-गला नहीं है, अभी-अभी बिलकुल ताजा मरा है। बेचारे को ढूँढ़ना पड़ेगा ताकि कोई ताजा मरा हुआ शरीर मिले तो वह अपनी आत्मा को उसमें डाले। उसमें डालने से उसको लाभ क्या है? कोई लाभ नहीं है, और इतनी क्षमता भी नहीं है कि वह अपनी आत्मा मृत शरीर में से निकाल कर वापस अपने शरीर में डाल दे। अगर वो योगी अपनी आत्मा को निकालकर

उस मृत शरीर में डालेगा, तो उसका अपना शरीर मर जायेगा। और एक बार निकल गया, तो वापस आने की कला उसको आती नहीं। यह परकाया प्रवेश आदि की बातें सब कहानियाँ हैं। इनमें विश्वास नहीं करना चाहिये। न इससे कोई लाभ है। ऐसी इतिहास में पता नहीं कितनी कहानियाँ आती हैं। भूत-प्रेत की कहानियों की कमी नहीं है। टेलीविजन में भी बहुत से हॉरर सीरियल भूत-प्रेतों के आते हैं। वो सब झूठ बात है। संसार में सच्चा-झूठा दोनों चलता है।

● मरने के बाद आत्मा इधर-उधर नहीं भटकती। मृत्यु के बाद जीवात्मा ईश्वर के नियंत्रण में चला आता है। अब उसके कर्मानुसार अगला जन्म कहॉ देना है, ईश्वर उसकी व्यवस्था करेगा। मान लीजिये एक व्यक्ति की भारत में मृत्यु हुई। अगला जन्म उसको देना है जापान में। तो भारत से लेकर जापान तक की यात्रा वह जीवात्मा स्वयं नहीं करेगा, बल्कि ईश्वर उसको लेकर जाएगा। मरने के बाद जीवात्मा को तो होश ही नहीं होता है। अगला जन्म कहाँ लेना है- उसके वश की बात थोड़े ही है। फल देने वाला न्यायाधीश 'ईश्वर' है। ईश्वर बताएगा कि उसको कहाँ जाना है। और वो खुद पहुँचाता है। ईश्वर यमदूत नहीं रखता, असिस्टेंट नहीं रखता। वो अपना काम खुद करता है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है। ईश्वर उसको पहुँचाता है, जहाँ पहुँचाना है।

● एक शरीर की आत्मा दूसरे शरीर में नहीं जाती है। हाँ, अगर आत्मा ने एक बार शरीर छोड़ दिया तो फिर छोड़ दिया। आत्मा वापस उसमें नहीं जा सकती। उसको वापस जाने का तरीका नहीं मालूम। जो आत्मा शरीर छोड़ दे, उसको वापस दोबारा उस शरीर में डाल दे, ईश्वर ऐसा काम नहीं करता है। अगर एक आत्मा ने एक शरीर छोड़ दिया तो दूसरे जन्म में फिर उसका नया शरीर बनेगा, उस शरीर में ही जायेगी।

116. शंका- क्या कोई व्यक्ति दूसरे के मन को नियंत्रित करके चला सकता है? यदि हाँ, तो बिना आत्मा के प्रवेश के यह कैसे संभव है?

☯ **समाधान-** आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई श्रद्धालु व्यक्ति अपने गुरूजी में बहुत श्रद्धा रखता है, उनके वचनों का पालन करता है, उनको आदर्श मानता है। गुरूजी जो कहते हैं, वह श्रद्धालु व्यक्ति उसको मानता है। ऐसा हो सकता है। परन्तु इस प्रक्रिया में श्रद्धालु का मन रहेगा उसी के आधीन। गुरूजी पर श्रद्धा होने के कारण, वह अपने मन को उनके निर्देशानुसार चला देगा।

इस प्रक्रिया में गुरूजी का आत्मा उनके अपने शरीर में और श्रद्धालु का आत्मा उसके अपने शरीर में ही रहेगा। दोनों आत्माएँ अलग-अलग शरीर में रहेंगी। इसी प्रकार से एक आत्मा दूसरे के मन को नियंत्रित करके कुछ-कुछ तो चला सकता है पर पूरी तरह से नहीं। क्योंकि प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है। और प्रत्येक व्यक्ति का मन पूरा-पूरा आत्मा के आधीन है, दूसरे के आधीन नहीं। जैसे सेनाधिकारी का आत्मा, सेनाधिकारी के शरीर में रहेगा, सैनिक के शरीर में नहीं घुस जाएगा। दोनों का आत्मा अलग-अलग है। दोनों का आत्मा अपने-अपने शरीर में रहेगा। केवल निर्देश से, संकेत से वो दूसरे व्यक्ति का थोड़ा सा नियंत्रण कर सकता है, लेकिन पूरा नियंत्रण नहीं कर सकता।

117. शंका- क्या हम किसी को अपने वश में कर सकते हैं?

☯ **समाधान-** जी हाँ, कर तो सकते हैं, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप किसी को अपने वश में क्यों करना चाहते हैं? अगर कोई आपको अपने वश में कर ले, तो क्या आपको ठीक लगेगा? इसलिये दूसरे को वश में करने की बात न सोचें। वैसे जो चतुर लोग होते हैं, चालाक लोग होते हैं, वे दूसरों को वश में कर लेते हैं। पर दूसरे को वश में करना अच्छी बात नहीं है। 'आत्मा' स्वभाव से स्वतंत्र है, उसको 'स्वतंत्र' ही रहने देना चाहिये।

किसी के वश में वे लोग हो सकते हैं जिनमें 'आत्मविश्वास' की कमी होती है, सेल्फ कॉन्फीडेन्स, विल पॉवर की कमी होती है। आप अपना सेल्फ कॉन्फीडेन्स बनाकर रखें। दूसरे के वश में नहीं हों और खामखां किसी को अपने वश में करने की बात भी न सोचें।

118. शंका- माँसाहार पाप है और लाश खाने के समान है। आजकल दुनिया में अधिकांश लोगों को ऐसा करते देखते हैं, तो क्या उनको मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती?

☯ **समाधान-** आपने बिल्कुल ठीक कहा। ऐसे लोगों को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। <u>मांस, अंडे खाने वाले, भ्रष्टाचार करने वाले इनको किसी को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।</u> यम नियम में खान-पान की शुद्धि, मन की शुद्धि, अंदर- बाहर की शुद्धि, अहिंसादि, ये बातें बताई गई हैं। यह सब करना ही पड़ेगा, तभी मोक्ष होगा।

119. शंका- क्या घर में धर्मपत्नी के साथ किया गया हवन ही "सम्पूर्ण-यज्ञ" कहलाता है। 'यज्ञ' करने से क्या 'लाभ' होता है?

☯ **समाधान-** <u>पति-पत्नी दोनों को साथ में बैठकर हवन करना चाहिए</u>। तभी यज्ञ समग्र रूप से संपन्न माना जाता है। जब घर में भोजन सभी लोग मिलकर करते हैं, तो हवन भी सभी को करना चाहिए। आजकल तो बच्चे भी घर पर ही रहते हैं। गुरूकुल में बहुत कम लोग बच्चे भेजते हैं। उनको भी हवन करना चाहिए। हर व्यक्ति को हवन करना चाहिए।

यज्ञ करने से उत्तम मनुष्य का जन्म मिलता है। जो लोग उत्तम मनुष्य बनना चाहते हैं, उन्हें यज्ञ करना अनिवार्य है। आप ईश्वर को कैसा मानते हैं, न्यायकारी या अन्यायकारी? न्यायकारी मानते हैं न। तो न्याय के कुछ नियम हैं:-

- <u>पहला नियम</u> - अच्छे कर्म का फल अच्छा, बुरे कर्म का फल बुरा। और सबसे अच्छे कर्म का सबसे अच्छा फल।
- <u>दूसरा नियम</u> - कर्म नहीं, तो फल नहीं।
- <u>तीसरा नियम</u> - जो व्यक्ति कर्म करे, उसी को फल।
- <u>चौथा नियम</u> - पहले कर्म, बाद में फल।
- <u>पाँचवाँ नियम</u> - कर्म करेगा, तो फल अवश्य मिलेगा।

सारे प्राणियों में से सबसे अच्छा प्राणी कौन? मनुष्य। मनुष्यों में भी उत्तम कौन? अच्छे विद्वान्, धार्मिक माता-पिता के घर जन्म मिलना। तो सबसे अच्छा फल हुआ- 'उत्तम मनुष्य जन्म'। यहाँ एक बात तो पकड़ में आ गई, कि नियम कहता है कि- सबसे अच्छे कर्म का, सबसे अच्छा फल। सबसे अच्छा फल है- 'उत्तम मनुष्य जन्म'। यदि सबसे अच्छा फल प्राप्त करना हो, तो कर्म कैसा करना होगा? 'सबसे अच्छा'।

सबसे अच्छा कर्म क्या? 'यज्ञ करना।' कैसे? अच्छा तो आप ही बताइये। मैं कुछ अच्छे कर्मों का उदाहरण देता हूँ। (क) किसी को भोजन खिलना। (ख) पानी पिलाना। (ग) वस्त्र दान करना। (घ) शुद्ध वायु देना। इनमें से सबसे अच्छा कर्म कौन सा है? शुद्ध वायु देना। शुद्ध वायु दी जाती है, यज्ञ करने से। इस प्रकार से सबसे अच्छा कर्म हुआ- यज्ञ करना। तो बात समझ में आ गई, कि अगर उत्तम मनुष्य बनना हो, तो सबसे अच्छा कर्म करना होगा। **सबसे अच्छा कर्म है- यज्ञ करना। इसलिए मैंने कहा था, जो यज्ञ करेगा वो मनुष्य बनेगा। इसके अतिरिक्त मन की शुद्धि, त्याग की भावना, संगठन, अनुशासन की वृद्धि, प्रेम, बड़ों का सम्मान करने की भावना की वृद्धि इत्यादि अनेक लाभ यज्ञ करने से होते हैं।**

120. शंका - यज्ञ करने से योगाभ्यास में क्या सहायता मिलती है?

☯ **समाधान-** इस संदर्भ में यह जानना चाहिए कि 'यज्ञ' करने से व्यक्ति के अंदर 'त्याग' की वृत्ति आती है।

- यज्ञ के मंत्रों में हम बोलते हैं- "इदं अग्नये स्वाहा"। "इदम् अग्नये, इदन्नमम", अर्थात् यह मेरा नहीं है। यह भगवान का दिया हुआ है। तो पहले तो केवल आहुति के बारे में कहते हैं। अब इस भावना को और आगे बढ़ाकर हमको यहाँ तक पहुँचना है, कि **मेरे पास जितनी भी सम्पत्ति है, ये सब भगवान की है।** फिर उससे और आगे बढ़ते हैं, कि **यह मेरा शरीर भी मेरा नहीं है। जो बुद्धि मेरे पास है, विद्या मेरे पास है और जो भी कुछ मेरे पास है, वो सब मेरा नहीं है। सब भगवान का दिया हुआ है। यज्ञ करने से यह भावना, सेवा व त्याग की वृत्ति हमारे अंदर आती है।**

- बढ़ते-बढ़ते जब संपूर्ण भावना आ जाती है, तब यज्ञ का प्रयोजन सम्पन्न हो जाता है। उसका उद्देश्य पूरा हो जाता है। त्याग और सेवा की भावना जब आ जाए तो यज्ञों को पूरा मान लिया जाता है। फिर

उस व्यक्ति को यज्ञ छुड़वा देते हैं। कहते हैं- भाई! अब यज्ञ से तुमको जो चीज सीखनी थी, सीख ली। अब सब छोड़ दो। **अब यह बात पूरी उसके जीवन में उतर गई तो फिर उसको 'संन्यास आश्रम' में प्रवेश दे देते हैं।** अब उसके लिए यज्ञ बंद हो जाता है।

- अब उसने सब कुछ उद्देश्य के लिए यानि धर्म के लिए अर्पित कर दिया। अब उसके पास कुछ है ही नहीं, तो कैसे बोले, किस वस्तु के लिए कहे- 'इदन्नमम'। हाँ, फिर उसका 'अध्यात्मिक-यज्ञ' चलता है, जबकि 'भौतिक-यज्ञ' बंद हो जाता है। **इस प्रकार यज्ञ करने से आध्यात्मिक लाभ होता है।** इसलिए यज्ञ करना चाहिए। तीन आश्रम वालों के लिए यज्ञ करने का विधान इसीलिए रखा गया है।

121. जब मैं 'ध्यान' में बैठता हूँ तो स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते समय 'रोना' आता है? ऐसा क्यों होता है?

☯ **समाधान-** व्यक्ति के अंदर अच्छे संस्कार भी होते हैं और बुरे संस्कार भी।

- जब व्यक्ति अच्छे संस्कार को जगाकर भगवान की स्तुति प्रार्थना-उपासना करता है तो कभी-कभी आतंरिक भावनाएँ जागती हैं। गहरी भावुकता के उन क्षणों में कभी-कभी रोना आ जाता है। उसको एहसास होता है कि, ओह! मैने इतना समय व्यर्थ में खो दिया। मैं संसार के चक्कर में पड़ा रहा। भगवान को याद ही नहीं किया। अब जाकर मुझे होश आया, कि भगवान तो इतना मूल्यवान है।

- व्यक्ति सोचता है :- **बहुत साल हो गए, पहले से अगर भगवान का ध्यान करता होता, तो मुझे बहुत आनंद मिलता। अब उसको प्रायश्चित्त होता है, पश्चाताप होता है। इस कारण उसको कभी-कभी रोना आता है, आँसू आते हैं।** यह कोई बुरी बात नहीं है। ऐसे ही और भी कारण हो सकते हैं।

आँसू खुशी में भी आते हैं। भगवान का ध्यान करने से आनंद मिलता है। सात्त्विक वृत्ति बढ़ती है, उससे भी आंसू आते हैं। उनके पीछे पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड) यही रहती है, कि आज मुझे इतना आनंद मिला। यह अब तक मैने क्यों खोया। खुशी के आंसू के पीछे यही कारण होता है। व्यक्ति सोचता है, कि अब ठीक रास्ते पर आ गया हूँ तो उसमें प्रायश्चित्त का भाव जाग्रत होता है। जिससे आँसू आ जाते हैं। वो कोई बुरी बात नहीं है।

● शुरू में अगर ऐसा हो, दो, पाँच, सात दिन या पंद्रह दिन तो कोई आपत्ति नहीं है। धीरे-धीरे जब व्यक्ति अभ्यास करता जाएगा, तो वो रोना बंद हो जाएगा। आँसू आने बंद हो जाऐंगे। और व्यक्ति में स्थिरता आ जाएगी।

122. शंका- एक कसाई गाय को ले जा रहा है। गाय दौड़ गई और एक साधक ने देख लिया। अब गाय की जान बचानी है, तो साधक सच बोले या झूठ बोले?

☯ **समाधान-** इस स्थिति में साधक को क्या करना चाहिए, इसके तीन-चार उत्तर हैं।

<u>पहला उत्तर</u> - यह है, कि मौन रहेगा, तो भी कसाई गाय को नहीं छोड़ेगा। चौराहे पर जो साधक बैठा है। मान लीजिये वह ब्राह्मण है, और उसने देख लिया है कि- गाय इस तरफ गई है, और उसके पीछे कसाई आ रहा है। वह ब्राह्मण आने वाले कसाई को उपदेश दे। उसको यह समझाए, कि गाय को मत मारो, गाय को मारना अच्छा नहीं है। गाय जिएगी, तो तुम भी जिओगे। कसाई से वह पूछे, कि-
त ु ह
दूध, घी, मक्खन, मलाई, पनीर, बर्फी, खोवा खाने को चाहिए, कि नहीं चाहिए ? कसाई कहेगा- चाहिए। अरे भाई ! तुमको ये सब चाहिए। और अगर गाय मर जाएगी, तो तुमको ये सब कहाँ से मिलेंगे ? इसलिये गाय को मत मारो। यह किसका उत्तर है ? ब्राह्मण का।

 १८८

<u>दूसरा उत्तर</u> - मान लीजिए, चौराहे पर बैठा हुआ व्यक्ति क्षत्रिय है। कसाई ने पूछा- बोलो गाय कहाँ गई ? तो क्षत्रिय कहेगा- आओ सामने अखाड़े में, तुम गाय को मारोगे ? पहले हमसे दो-दो हाथ करो। मेरे होते हुए तुम गाय को हाथ लगाओगे! जहाँ से आए हो, वहीं चले जाओ, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं। क्षत्रिय है, तो ऐसा बोलना चाहिए। झूठ क्यों बोलेगा ?

<u>तीसरा उत्तर</u> - मान लीजिए वैश्य है, लड़ भी नहीं सकता, इतनी बुद्धि भी नहीं है, समझा भी नहीं सकता। तो वो कहेगा- देखो भाई तुम गाय को मारते हो, गाय को मारने से तुमको क्या मिलेगा ? कसाई कहेगा- हजार रुपया मिलेगा। वैश्य कहेगा- ये हजार रुपये ले लो, गाय हमारी हो गई। गाय हमने खरीद ली, तुमको हजार रुपये मिल गए। अब गाय को मत मारो, जाओ।

अगर गाय की रक्षा करनी हो, तो थोड़ी सी ताकत लगानी पड़ेगी। झूठ नहीं बोलना है।

<u>चौथा उत्तर</u> - मान लीजिए, चौराहे पर बैठा हुआ व्यक्ति शूद्र है। न तो वो ब्राह्मण है, न वो क्षत्रिय है, न वैश्य है। न वो उपदेश दे सकता है, न लड़ सकता है, न पैसा दे सकता है। यदि कसाई आता है, तो वह वहाँ से उठकर भाग जाये। क्षत्रियों के मोहल्ले में जाकर सूचना दे, कि- देखो-देखो कसाई आ रहा है, गाय को मार डालेगा, उसकी रक्षा करो। क्या शूद्र इतना भी नहीं कर सकता ?

● हम बचपन से अपने पाठ्‌यक्रम में पढ़ते आ रहे हैं, कि- "भारत की सीमा पर चीन के सैनिक घुस आए। गाँव के बच्चे जो बॉर्डर पर रहते थे, उन्होंने चीन के पाँच-सात सैनिक घुसते देखे। बच्चों ने भागे-भागे जाकर भारतीय सेना की चौकी पर सूचना दी, कि फलाने बॉर्डर से विदेशी सैनिक घुस आए, जाओ देश की रक्षा करो।"

इतने छोटे-छोटे बच्चे, पाँच साल के आठ साल के बच्चे दौड़कर सैनिकों को इतनी सूचना दे सकते हैं। तो एक चालीस साल का शूद्र क्या इतना निकम्मा है, कि वह यह भी नहीं कर सकता, कि जाये और क्षत्रिय को सूचना दे, कि गाय खतरे में है।

● कभी भी झूठ नहीं बोलने का, सच बोलो। हिम्मत से मुकाबला करना। वेद में कहीं नहीं लिखा है, झूठ बोलने को। "हन्ति रक्षो हन्ति असद् वदन्तम्।" ये अथर्ववेद का मन्त्र है। 'हन्ति असद् वदन्तम्' जो झूठ बोलता है, भगवान उसको दण्ड देता है। "सत्यम वक्ष्यामि नानृतम्" यह भी अथर्ववेद का मंत्र है। इस मंत्र का अर्थ है कि 'सच बोलूँगा, झूठ नहीं बोलूँगा।' झूठ बोलने का विधान कहीं नहीं है।

 १८९

123. शंका- अपने देश-धर्म के लिये झूठ बोलना पाप है या नहीं?

☯ **समाधान-** झूठ बोलना तो पाप ही है। चाहे देश के लिये बोलो या धर्म के लिये बोलो। दोष तो लगेगा ही।

● यह 'मिश्रित-कर्म' माना जायेगा। यदि आपके झूठ बोलने से देश की रक्षा होती है, देश का भला होता है, तो ठीक है, जितना भला होता है, उतना पुण्य। और जितना झूठ बोला, उसका पाप। यह मिश्रित कर्म कहलाता है।

● वेदों में केवल राजा को आपत्ति काल में झूठ बोलने की छूट है। और वह भी प्रजा की रक्षा करने के लिये, अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये नहीं। जैसे कि- राजा गुप्तचर विभाग (C.I.D, C.B.I) रखे। चोर, डाकू, आतंकवादियों को पकड़ने और दंडित करने और देश की रक्षा करने के लिये छल-कपट का प्रयोग करें। केवल क्षत्रियों को छूट है, आम जनता को नहीं। दुष्टों को मारने के लिए क्षत्रियों को थोड़ी सी छूट दी गई है। उसको भी दोषयुक्त माना है, पूर्ण शुद्ध तो उसको भी नहीं माना।

● उसको भी इसीलिये दोषयुक्त माना, कि जो उन्होंने झूठ, छल-कपट का प्रयोग किया। इससे उनका मोक्ष रूक जायेगा। उनको मोक्ष नहीं मिलेगा।

● इसलिये राजाओं को राजगद्दी छोड़नी पड़ी। आप इतिहास को उठाकर देखें। राजा जनक ने राजगद्दी छोड़ दी। राजा भरत ने राजगद्दी छोड़ दी। राजा अशोक ने राजगद्दी छोड़ दी और ऐसे बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं। कई राजा लोग अपनी गद्दी छोड़ के गये। क्योंकि उनको समझ में आ गया, कि राजा बने रहते हुये हमारा मोक्ष होने वाला नहीं है।

● गाय की रक्षा के लिए जाओ, हड़ताल करो। रेलवे वाले कर्मचारी रेल की स्ट्राइक, बस वाले कर्मचारी बस की स्ट्राइक, यूनिवर्सटी वाले विद्यार्थी यूनिवर्सटी की स्ट्राइक करते हैं, तो गौ की रक्षा के लिए आप हड़ताल क्यों नहीं करते? उसके लिए अनशन करो, हड़ताल करो। आंदोलन करोगे, सरकार झुकेगी। यदि उसको वोट चाहिए, तो सब कुछ मानेगी। परन्तु आम जनता झूठ बोले, यह बात वेद विरूद्ध है। यह बात उन स्वार्थी लोगों ने समाज में फैलाई है, जो स्वयं झूठे हैं, झूठ से प्रेम करते हैं। झूठ को प्रोत्साहन देने वाले ऐसे लोगों को ईश्वर दण्ड देगा।

124. शंका- कहते हैं ""सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम" ? अर्थात् सत्य बोलें, मीठा बोलें, कड़वा सत्य न बोलें। तो शंका यह है, कि क्या अपवाद रूप में 'झूठ बोलना' भी धर्म हो सकता है?

☯ **समाधान-** <u>वेदों में कहा है "सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्" और मनु महाराज कहते हैं ""सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम" ? अर्थात् सत्य बोलें, मीठा बोलें, कड़वा सत्य न बोलें। तो शंका यह है, कि मनुजी के अनुसार- सत्य न बोलें। अर्थात् क्या अपवाद रूप में 'झूठ बोलना' भी धर्म हो सकता है?</u>

● आपने मनु जी की बात पर पूरा ध्यान नहीं दिया। मनुजी ने यह नहीं कहा- 'सत्य न बोलें।' बल्कि यह कहा- 'कड़वा सत्य न बोलें'। अर्थात् <u>सत्य ही बोलें, परन्तु मीठा बना कर बोलें।</u> उन्होंने इसी श्लोक के दूसरे भाग में कहा है- 'प्रियं च एष धर्मः सनातनः।' अर्थात् <u>मीठा तो बोलें, परन्तु झूठ न बोल</u>। यही वेदों का प्राचीन धर्म है। देखिये, झूठ बोलने को मना किया है। इसलिए वेद में और मनु जी में कोई विरोध नहीं है।

● इन दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। और ना ही 'झूठ बोलना' अपवाद रूप में धर्म हो सकता है। झूठ बोलने को अपवाद रूप में भी धर्म नहीं माना है। क्योंकि जिसका अपवाद है, वो धर्म नहीं हो सकता। इसमें तो आपकी यह मान्यता सामने आ रही है कि सत्य का भी अपवाद होता है। तो कौन सा अपवाद है सत्य का? कोई नहीं। <u>सत्य और झूठ, ये दोनों परस्पर विरोधी हैं। इसलिए दोनों धर्म नहीं हो सकते।</u> अतः सत्य बोलना रूपी धर्म का कोई अपवाद नहीं है। इसलिये सत्य बोलना ही धर्म है।

● व्यवहार भानु में लिखा है- 'न हि सत्यात् परोधर्मो नासत्यात् पातकं परम्' अर्थात् <u>सत्य से बढ़कर कोई ऊँचा धर्म नहीं है और झूठ से बढ़कर कोई गिरा हुआ पाप नहीं है।</u> सबसे घटिया पाप है- 'झूठ बोलना'। सबसे बढ़िया पुण्य, सबसे ऊँचा धर्म- 'सत्य बोलना'। सत्य बोलने वाला तो मोक्ष में चला जाता है। और झूठ बोलने वाला नरक में चला जाता है। इसलिये सत्य बोलना पूरा धर्म है, उसका कोई अपवाद नहीं है।

125. शंका- दूसरे को प्रसन्न करने के लिये असत्य न बोलें। किन्तु असत्य बोलने से यदि दर्द ठीक हो जाता है, तो डॉक्टर को असत्य बोलने में क्या आपत्ति है?

☯ **समाधान-** 'डॉक्टर के झूठ बोलने से रोगी ठीक हो जाता है, तो फिर इसमें क्या दिक्कत है।' यह बड़ा भयंकर प्रश्न है। बहुत लोग इस पर बहस करते हैं, और वो झूठ बोलने की पुष्टि करते हैं। अब इसका उत्तर सुनिये-

● एक डॉक्टर ने रोगी का परीक्षण कर लिया और देख लिया कि यह बूढ़ा व्यक्ति है, और इसके लक्षण बता रहे हैं, तीन दिन से आगे नहीं जियेगा। तो रोगी पूछता है, कि 'डॉक्टर साहब मैं ठीक तो हो जाऊँगा?'

● ऐसी स्थिति में झूठ की पुष्टि करने वाले लोग कहते हैं, कि डॉक्टर को रोगी के सामने तो ऐसा ही कहना चाहिये 'हाँ, हाँ, तुम ठीक हो जाओगे, तुम्हें कुछ नहीं होगा।' ये झूठ बोलना चाहिये। और रोगी के कमरे से बाहर जाके, जो उसके घर के बाकी पांच-छहः सदस्य हैं, उनको सच बताना चाहिये, कि 'देखिये भई! ये तीन दिन का मेहमान है, इससे जो वसीयत करवानी है, वो करवा लो, फिर मत कहना कि हमें बताया नहीं था। जिस रिश्तेदार को बुलाना हो बुला लो।' रोगी के सामने झूठ बोलो, कि हाँ, तुम ठीक हो जाओगे और दूसरे कमरे में जाके सच बताओ, ऐसा झूठे लोग कहते हैं।

● हम कहते हैं, यह गलत है। रोगी के सामने झूठ क्यों बोलना? इससे नुकसान होता है। क्या नुकसान होता है? इससे बाकी लोग क्या सोचेंगे, कि यह डॉक्टर कैसा है? रोगी के सामने झूठ बोलता है, बाकी लोगों के सामने सच बोलता है। जो घर के बाकी छह सदस्य हैं, वो तो यही सोचेंगे न कि **यह डॉक्टर रोगी के सामने तो झूठ बोलता है। रोगी को सच नहीं बताता**। और बाकी लोगों को सच बताता है। उन छह व्यक्तियों के मन पर इसका प्रभाव ऐसा पड़ेगा। पड़ेगा कि नहीं पड़ेगा? पड़ेगा न। उसका विश्वास खत्म होगा न।

● अब चलो, वो तो बूढ़ा व्यक्ति था। वो तो तीन दिन के बाद मरने ही वाला था, सो मर गया। जो घर के छह सदस्य बाकी बचे थे, उनमें से एक बत्तीस साल का जवान था। वो दो महीने के बाद, बीमार हो गया। अब उसी फैमिली डॉक्टर को फिर बुलाया गया। वो आया, उसने उस रोगी को देखा, और कहा 'तुम ठीक हो जाओगे, तुम्हें कुछ नहीं होगा।' अब वो रोगी क्या सोचेगा?

● वो सोचेगा, ये डॉक्टर झूठ बोलता है। मेरे दादा को भी यही कहता रहा, कि तुम बच जाओगे, तुम्हें कुछ नहीं होगा। मुझे भी कह रहा है कि तुम बच जाओगे, तुम्हें कुछ नहीं होगा। अब मैं भी मरूंगा।' वो न मरता हो, तो भी मरेगा। उसका विश्वास खत्म। उसके दिमाग पर यह असर हो चुका है, कि यह डॉक्टर रोगी के सामने झूठ बोलता है, बाकी लोगों के सामने ठीक बोलता है। मैं इस समय रोगी हूँ। मुझे यह झूठ बोल रहा है। बताईये लाभ हुआ, कि हानि हुई।

● वो बूढ़ा व्यक्ति तो बेचारा तीन दिन बाद मरने ही वाला था। अगर **डॉक्टर वहाँ सच बोलता तो छह व्यक्तियों का (घर के छह सदस्यों का) डॉक्टर पर विश्वास बना रहता।** डॉक्टर के ऊपर वो लोग सच्चा विश्वास करते कि डॉक्टर जो कहता है, सच कहता है। झूठ बोल के वह डॉक्टर न तो रोगी को बचा पाया और उधर छह व्यक्तियों का विश्वास भी खोया। ऐसी स्थिति में लाभ तो कुछ हुआ नहीं, हानि ही हुई। **रोगी तो झूठ बोलने पर भी बचा नहीं। इसलिये डॉक्टर को झूठ नहीं बोलना चाहिये,** सच बोलना चाहिये।

● एक दिन मैं ऐसे ही कह रहा था। एक व्यक्ति थोड़ा अड़ियल टाइप का था। वो खड़ा होकर बोला, 'तो आप यह कहना चाहते हैं, कि डॉक्टर को यँ साफ-साफ कह देना चाहिये, अब तुम मरने वाले हो। ऐसा बोल देना चाहिये।' मैंने कहा- नहीं। ऐसा क्यों बोलें? मनु जी कहते हैं- 'सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात' अर्थात् सच बोलना चाहिये, मीठा बोलना चाहिये। कड़वा नहीं बोलना चाहिये।

● उसने पूछा- कैसे बोलना चाहिये? मैंने कहा ऐसे बोलना चाहिये कि - 'देखो भाई, तुम्हारी कितनी उम्र हो गई? छियत्तर साल। अच्छा देखो, छियत्तर साल उम्र हो गई, खा लिया, पी लिया, सारी दुनिया देख ली। देख ली न? हाँ, देख ली। कोई आदमी हमेशा जीता है क्या? यहां किससे बात चल रही है? रोगी से। किसकी बात चल रही है? डॉक्टर की। तो डॉक्टर उस रोगी को पूछता है? कोई आदमी हमेशा जीता है क्या? तो वो रोगी कहेगा, नहीं। **रामचन्द्र जी चले गये न, हाँ चले गये। कृष्ण जी महाराज, और सिकन्दर, वो भी चले गये। हम और तुम भी सब चले जायेंगे, सबको मरना है, बारी-बारी से सबका नंबर लगेगा। अब खा लिया, पी लिया, देख ली दुनिया। छियत्तर साल हो गये, बस दो-चार दिन की बात है। अब तैयारी कर लो, उसके बाद शांतिपाठ होने वाला है।' उसको अच्छी तरह से, सच बात बताओ, प्रेम से बताओ, सीधी-सीधी बात बताओ, झूठ क्यों बोलो।**

● उस व्यक्ति ने पूछा– यदि डॉक्टर द्वारा सच बोलने से रोगी को हार्ट अटैक आ जाये, और रोगी उसी समय मर जाये, तो? तब मैंने उत्तर दियाः– उसको अटैक आ जाये, तो उसका जिम्मेदार डॉक्टर नहीं है। वेदो में डॉक्टर के लिए 'झूठ बोलना' नहीं लिखा है, 'सत्य बोलना' ही लिखा है। उनके कारण डॉक्टर क्यों झूठ बोले। डॉक्टर क्यों पाप का भागी बने? झूठ बोलेंगे तो दण्ड मिलेगा। हमने ठेका लिया है क्या झूठ बोलने का। हमको भगवान ने कहा है, सच बोलो। हम तो सच बोलेंगे। तुम्हारी गलती का दण्ड हम क्यों भोगें।

● पता है क्यों रिश्तेदार बोलते हैं डॉक्टर को, कि 'आप रोगी को सच नहीं बताना, उसको झूठ बोलना' ?उसका उत्तर सुनिये– आज छियत्तर साल की उम्र हो गई। बचपन से लेकर के बुढ़ापे तक किसी आदमी ने उस रोगी को मरना नहीं सिखाया। एक दिन भी यह पाठ नहीं पढ़ाया, कि हमको मरना है। एक न एक दिन शरीर और संसार छोड़कर जाना है। यह पाठ कोई नहीं पढ़ाता। अब देखो, उसने आज तक मरने की तैयारी ही नहीं की। और आज अचानक उसको डॉक्टर कहे कि 'भई! देखो, अब दो-चार दिन में शांतिपाठ होने वाला है।' तो उसको हार्टअटैक आने ही वाला है, झटका तो लगेगा ही। तो यह गलती उन लोगों की है। क्यों नहीं उसको बचपन से मरना सिखाया। उसको 'मरना है', ऐसा पढ़ाओ। एक न एक दिन सबको मरना है। अगर उसको बचपन से यह पाठ सिखाया गया होता, तो आज डॉक्टर प्रेम से सच बोलता और उसको जरा भी अटैक नहीं आता। खूब आराम से रोगी सत्य सुनता और कहता, 'ठीक है, बचपन से सुनते चले आ रहे हैं। अब जाने की तैयारी है, तो जाएँगे।'

मैं आपको अपनी बात सुनाता हूँ मैं अठारह-उन्नीस साल पहले यहाँ आर्यवन में आया। अचानक एक रात को मुझे पेट में दर्द हो गया। अपेंडिक्साइटिस हो गया। रात को दो बजे फोन करके डॉक्टर को बुलाया। दिसम्बर का महीना था। रात को दो बजे डॉक्टर साहब आये और उन्होंने कुछ इंजेक्शन दिया, कोई दवाई दी, डॉक्टर साहब कहने लगे कि सुबह इनको हॉस्पिटल में ले जाओ, इनका अपेंडिसाइटिस का प्राब्लम है। मुश्किल से थोड़ी नींद आयी। सुबह चार-पांच बजे तक सोया। सुबह हॉस्पिटल में डॉक्टर साहब ने मेरा चैकअप किया। फिर उन्होंने कहा 'जी, दवाई से कोशिश करते हैं। एक दिन में ठीक हो जाये तो ठीक है, नहीं तो ऑपरेशन करना पड़ेगा। यहाँ आर्यवन से एक आदमी (अटेंन्डेन्ट) मेरे साथ वहाँ सेवा के लिये हॉस्पिटल में गया था। मैंने उस अटेण्डेण्ट से पूछा, 'डॉक्टर साहब ने क्या बताया?' तो उन्होंने कहा, 'जी एक दिन तो दवाई देकर देखेंगे और

नहीं ठीक हुआ, तो फिर ऑपरेशन करेंगे।' मैंने कहा– ठीक है। अब जब अगले दिन ऑपरेशन का नंबर आया तो जो मेरा अटेन्डेन्ट था, वो बेचारा रोने लगा। मैं तो ठीक-ठाक बैठा हूँ। रोगी मैं हूँ और वो अटेन्डेन्ट रो रहा है कि, स्वामी जी आपका ऑपरेशन होगा। मैंने कहा – तुम क्यों रो रहे हो। ऑपरेशन तो मेरा होगा, तुम्हारा तो कुछ नहीं होगा। मेरा अधिक से अधिक क्या होगा, मर ही तो जाऊँगा, और क्या होगा। मर जाऊँगा, तो दूसरा जन्म लँगा, कोई आत्मा मरती है क्या? इतने साल हो गये गुरूजी से सुनते-सुनते, अब तक क्या सीखा? अब तक इतना भी नहीं समझ में आया, कि 'मैं आत्मा हूँ, मैं अजर-अमर हूँ, शरीर ही तो मरता रहता है। एक शरीर छोड़ देंगे, दूसरा मिल जायगा,और क्या होगा? फिर तुम चिंता मत करो, खुश रहो। मरूंगा तो मैं मरूंगा, तुम क्यों दुखी हो रहे हो?' अटेंडेंट को रोगी को समझाना चाहिये, लेकिन यहाँ उल्टा रोगी अटेंडेंट को समझा रहा है।

ऐसे अगर किसी व्यक्ति को बचपन से सिखाया जाये कि हमको हमेशा नहीं जीना है, एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा तो वो क्यों दुःखी होगा और क्यों उसको अटैक आयेगा? रोगी के सामने बिल्कुल सच बोलो, कुछ नहीं होगा। झूठ बोलेंगे, तो डॉक्टर को पाप लगेगा। इसलिये डॉक्टर को सच बोलना चाहिये।

● आज डॉक्टर जो झूठ बोलते हैं, वो रोगी के परिवार वालों की वजह से, समाज वालों की वजह से उनको झूठ बोलना पड़ता है। वो नहीं चाहते हैं झूठ बोलना, सच बताना चाहते हैं। पर परिवार वालों की वजह से डॉक्टरों को झूठ बोलना पड़ता है।

● तो हम सब लोगों से यह कहना चाहते हैं, *जीना भी सीखो, मरना भी सीखो और सबको सिखाओ।* केवल जीना ही मत सिखाओ, यह मत सोचो कि हम सदा जीयेंगे। यह भी सोचो, हमको मरना भी है। मरना क्या है? कपड़ा बदलना, और क्या है? लोग गीता की बात करते हैं। दुनियाभर में गीता का प्रचार कर दिया। इतने बार श्लोक पढ़ लिया, अब तक समझ में नहीं आया कि, जैसे कपड़े बदलते हैं, वैसे शरीर बदलना है। और क्या है? दूसरा शरीर मिल जायेगा।

● और हम तो कहते हैं, जितना जल्दी शरीरों का चक्कर छूट जाये, उतना ही अच्छा है। यहाँ तो दुःख का कारण ही शरीर बताया है। भविष्य में जितने भी शरीर धारण करेंगे, तब तक दुःख ही भोगना पड़ेगा। अगर दुःखों से छूटना है, तो मोक्ष प्राप्त करो। उसके लिये शरीर की वैसे ही जरूरत नहीं। अच्छा है, छूट जायेगा, तो किस्सा ही खत्म हो जायेगा।

यह झूठ बोलने-बुलवाने का दोष उन लोगों पर है, जिन्होंने रोगी को मरना नहीं सिखाया। अगर बचपन से सिखाया होता, तो रोगी तिल-तिल करके नहीं मरता, खुशी से मरता।

● अब दुनिया झूठ बोल-बोल के व्यक्ति को झूठ सुनने का आदी बना दे और हम भी उसके कारण झूठ बोलने लगें, यँ लोगों को अगर खुश करने लगें, तो हमको सब जगह पूरे दिन सुबह से रात तक झूठ ही बोलना पड़ेगा। फिर हम सच बोल ही नहीं पायेंगे। तो गल्तियाँ वो करें और उसका दण्ड हम भोगें। हम ऐसा क्यों करें ?

● इसलिये हमको सच बोलना है, थोड़ा अच्छे ढंग से बोलना है, मीठे ढंग से बोलना है। और लोगों को यह भी सिखाना है साथ-साथ, क्या? कि सब लोगों को मरना भी सिखाओ, केवल जीना मत सिखाओ। सबको यह पाठ पढ़ाओ, एक दिन हमको यह शरीर छोड़ के जाना है। यह भी साथ-साथ सिखाते रहेंगे तो धीरे-धीरे यह समस्या हल हो जायेगी। और अगर यही मानते रहे, कि लोगों ने ऐसा कर रखा है, हमको ऐसा करना ही पड़ेगा, फिर तो कभी भी सत्यवादी नहीं बन सकते, कभी मोक्ष में नहीं जा सकते, हमेशा पाप लगता ही रहेगा।

126. शंका- बेटा अपने पिता पर न्यायपूर्वक क्रोध करता है, वह हिंसा है या अहिंसा है?

☯ **समाधान-** अगर न्यायपूर्वक कोई बात कहनी है, तो क्रोध में नहीं कहें। क्रोध में कोई बात कहना तो हिंसा है। वही बात प्रेम से भी की जा सकती है। पिताजी को प्रेम से कहें, कि आपकी यह बात ठीक नहीं है। हम यह नहीं करेंगे। हम इसे नहीं स्वीकारेंगे।

इसी तरह नौकर को अपने मालिक पर क्रोध करने का अधिकार नहीं है। नौकर को अगर मालिक की बात गलत लगती है, तो वह प्रेम से बोल दे, कि यह काम ठीक नहीं है। मैं नहीं करूँगा। मालिक नौकर को नौकरी से निकाल सकता है। अगर इतनी हिम्मत है, तो कह सकते हैं, कि मैं नौकरी नहीं करूँगा।

127. शंका- योगदर्शन में 'अहिंसा' का क्या अर्थ है?

☯ **समाधान-** किसी से भी वैर-भाव नहीं रखना, द्वेष नहीं करना, बिना किसी अपराध के, कठोर भाषा नहीं बोलना, किसी पर अत्याचार नहीं करना, अन्याय नहीं करना, अहिंसा का यह मतलब है।

128. शंका- पाकिस्तानी हमारे जवानों को बार-बार धोखे से मारते हैं, क्या हमें उनको नहीं मारना चाहिए? मारना हिंसा है, तो क्या करे?

☯ **समाधान-** पाकिस्तानी लोग हमारे जवानों को मारते हैं तो हमारे जवान भी उनको मारेंगे, वे चुपचाप क्यों बैठेंगे? ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। सेना विभाग क्षत्रियों का है। कोई विदेशी शत्रु हमारे घर में घुसेगा, तो क्षत्रिय उसको नहीं घुसने देंगे, उसको दण्ड देंगे।

पाकिस्तानी हमारे देश में घुसता है, तो क्या यह न्याय है या अन्याय? अन्याय है न। अन्याय का विरोध करना, यह न्याय है। वो हमारे देश में क्यों घुसता है? आप अपने घर में रहो, हम अपने घर में रहेंगे। आप जबरदस्ती हमारे घर में घुसेंगे, तो हम उसका प्रतिकार करेंगे। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह हमारी मातृ-भूमि है। इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, हमारा धर्म है। कोई भी विदेशी शत्रु हमारे घर में घुसेगा, हम उसका दिमाग ठीक कर देंगे। हम उसको मार-पीट कर बाहर निकाल देंगे। और ज्यादा गड़बड़ करेगा, तो पूरा ही मार डालेंगे। इसका नाम हिंसा नहीं है। इसका नाम अहिंसा है। हिंसा के विरुद्ध व्यवहार अहिंसा है।

वह अन्यायपूर्वक हमारे देश में घुसता है। इसलिए हिंसा तो उसने की, हमने थोड़े की। हमने तो उस हिंसा का विरोध किया, तो वह अहिंसा हुई।

यह काम क्षत्रिय विभाग को दे देंगे, वो अपना काम करता रहेगा। हम अपने योगाभ्यास में, अपने क्षेत्र में काम करेंगे। इस तरह से इसका उत्तर समझना चाहिये।

129. शंका-कृषि करने के दौरान केंचुआ आदि छोटे जीवों की मृत्यु हो जाती है। फिर हम हिंसावादी हुए कि नहीं?

☯ **समाधान-**

● कृषि करने से लाभ भी होता है, बहुत सा पुण्य भी मिलता है। खाने को बहुत सा अन्न मिलता है, बहुत से प्राणियों की रक्षा होती है। कृषि करने से कुछ प्राणी मर भी जाते हैं, इससे हिंसा भी होती है।

● इस प्रकार कृषि से कुछ पुण्य होता है और कुछ पाप होता है। इसलिए कृषि को मिश्रित-कर्म कहा जाता है।

● अगर आप मिश्रित कर्म के फल से बचना चाहते हैं, तो खेती छोड़ दें। दूसरा खेती करेगा, जिसको करनी हो। हर व्यक्ति एक ही काम करे, यह आवश्यक नहीं है। अपनी रुचि के अनुसार वह अपना व्यवसाय चुन ले। जिसकी जैसी रुचि होगी, वह वैसा काम करेगा। योग्यता भी हो, और रुचि भी हो, तभी काम को करना चाहिए।

130. शंका- रोग दूर करने के लिए और स्वच्छता के लिए आज कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल अनिवार्य हो गया है, क्या ऐसा करना भी हिंसा करना होगा?

☯ **समाधान-** आप अपनी जीवन रक्षा के लिये कीड़े-मकोड़े आदि प्राणियों को मारते हैं। दरअसल, वह हिंसा तो है ही। उसका थोड़ा बहुत दोष भी लगेगा। यह अलग बात है कि आप खेती करते हैं, बहुत सा अनाज उत्पन्न करते हैं, उससे बहुत से प्राणियों की रक्षा करते हैं, उससे पुण्य भी मिलेगा। पर जितना-जितना प्राणियों को दुःख देते हैं, उतना-उतना हिंसा भी मानी जायेगी।

131. शंका- हमें किस सीमा तक सहनशील होना चाहिऐ और कब प्रतिकार करना चाहिए? यदि कोई माता-पिता का अपमान करे तो क्या सहन करना उचित होगा?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर यह है कि कोई हमारे ऊपर छोटा-मोटा आरोप लगाए तो हमें उसको सहन कर लेना चाहिए। कोई माता-पिता का अपमान करे तो उसको रोकना चाहिए। उसको सहन नहीं करना चाहिए। उसको सावधान करना चाहिए कि:- "तुम ऐसा गलत काम मत करो, अपनी सीमा में रहो।" हमें इतने कायर, कमजोर भी नहीं बनना चाहिए कि कोई अगर एक थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल आगे कर दो कि, हाँ भई, ले मार। ऐसा नहीं चलता है। स्वाभिमान से जीना चाहिए।

● हमारा उद्देश्य किसी से झगड़ना नहीं है। हम किसी को परेशान नहीं करना चाहते, पर कम से कम कोई हमें भी तो परेशान न करे। आप सम्मान से जियो, हमको भी जीने दो।

● हम आपको तंग नहीं करते तो आप हमको क्यों तंग करते हो? आप अपने ढंग से जीयो, हम अपने ढंग से जीएंगे। आप हमारे माता-पिता का अपमान करेंगे, यह नहीं चलेगा। आपको हम टोकेंगे, सावधान कर देंगे।

132. शंका- आयुर्वेद में लिखा है, कि 'मांस खिलाओ और वह वैद्य माँस खिलाये, तो क्या उसको पाप नहीं लगेगा।'

● आयुर्वेद में भी मिलावट है। आयुर्वेद कौन से ग्रन्थ का उपवेद है? वेद का है न। तो आयुर्वेद का बेस तो वेद है। अब बेसिक ग्रन्थ वेद को देखो। क्या उसमें मांस खाने को लिखा है। हाँ या न? नहीं। जब नहीं लिखा वेद में मांस खिलाना, तो क्यों खिलायें। तो इससे पता चला कि **आयुर्वेद में मिलावट है। वो आयुर्वेद का अपना सिद्धांत है ही नहीं।**

● आयुर्वेद के अंदर, चरक के अंदर, राजयक्ष्मा रोग की उत्पत्ति क्या लिखी है। चन्द्रमा की सत्ताइस कन्यायें थीं। और उसके कारण वो रोग हुआ। क्या गप्पें मार रहे हैं। क्या चन्द्रमा की सत्ताइस कन्यायें हो सकती हैं। ऐसी-ऐसी कत्थकड़ आयुर्वेद के अंदर, बिना सिर पैर की बातें मिला दी हैं। तो माँस खाने का विधान चाहे वो चरक में हो, चाहे अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ में हो, वो सब बाद की मिलावट है। वो वेद के अनुकूल नहीं है।

● **वेद के अंदर व्यक्ति को शाकाहारी भोजन खाने का विधान किया है।** यजुर्वेद का मंत्र हैः- 'गोधूमाश्च यवाश्च तिलाश्च माशाश्च' अथर्ववेद का मंत्र हैः- रसमोषधीनाम् अर्थात् औषधियों का रस पियो। 'सं सिंचामि गवां क्षीरम्' अर्थात् ईश्वर कहता है, कि मैं मनुष्यों के लिये गाय का दूध दे रहा हूँ, गाय का दूध पियो, यह अथर्ववेद में लिखा हैः- 'पृषदाज्यम्'- 'प्रसादायम्' घी खाओ, दही खाओ, मक्खन खाओ, मलाई खाओ, शाकाहारी भोजन खाओ। वेद का यह सिद्धान्त है। तो जो आयुर्वेद में मांस खाने का लिखा है, वह मिलावट है।

● जब वेद कहता है, 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षत्ताम् क्षन्ताम्' सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो। भेड़-बकरी मार के खायेंगे, तो मित्र को कोई मारता है क्या? इसलिये वे सब गड़बड़ बातें हैं, उनको छोड़ देना चाहिये।

● शरीर में मांस की कमी हो गई तो मांसवर्धक शाकाहारी भोजन बहुत मिलता है, जो मांस की वृद्धि करता है। आप घी खाईये, मक्खन, मलाई, मिठाई, केला, आलू, अरबी आदि लीजिये, देखिये मांस बढ़ जायेगा। अच्छा खुश रहिये और थोड़ा अच्छे से सो जाईये। खूब खाए और खूब सोए, देखो आदमी मोटा हो जायेगा। खामख्वाह कुढ़ता रहे, दुःखी होता रहे, तो सारी चरबी उतर जायेगी, कमजोर पड़ जायेगा, घिस जायेगा। आयुर्वेद में अपने शाकाहारी तरीके से भी शरीर की वृद्धि, विकास बहुत लिखा है। उस हिसाब से हमको करना चाहिये।

133. शंका- विपरीत व्यक्ति के साथ कब तक संयमित व्यवहार करें? वह भी घर का ही सदस्य हो तो?

☯ **समाधान-** जब तक आपकी सहनशक्ति हो, तब तक निभाओ और अपनी सहन शक्ति को बढ़ाओ। आजकल लोगों में सहनशक्ति बहुत घट गई है। तीस-चालीस साल पहले लोगों में जितनी सहन शक्ति थी, क्या आज उतनी है? नहीं है। आज सहनशक्ति घट गई है। गड़बड़ हमारी तरफ से है। अपनी सहनशक्ति को बढ़ाइए।

● **आप भौतिक साधनों का जितना अधिक प्रयोग करेंगे, आपकी सहनशक्ति उतनी अधिक घटती जाएगी।** जितना हमारा जीवन विलासितापूर्ण होता जाएगा, उतनी सहनशक्ति कम होती जाएगी।

पिछले तीस-चालीस साल में भौतिक साधन बहुत बढ़ गए हैं। सड़कें बहुत बढ़ गई, मोटर-गाड़ियाँ बढ़ गई, टेलीफोन बढ़ गए, बिजली बढ़ गई और मशीनें बढ़ गई यानि सारे भोग के साधन बढ़ गए और लोग इन भोग-साधनों के आदी हो गये। इसलिए सहनशक्ति घट गई।

● जीवन चलाने के लिए, देश की सेवा करने के लिए इन भौतिक चीजों का उपयोग करें तो कोई आपत्ति नहीं। **सुख लेने के लिए आप इन वस्तुओं का उपयोग नहीं करना। अगर सुख के लिए इन चीजों का प्रयोग करेंगे तो आपकी सहनशक्ति घट जाएगी। लगातार इन चीजों का प्रयोग न करें। कभी प्रयोग करें, कभी नहीं करें।** जानबूझकर बीच-बीच में प्रयोग छोड़ दें। पाँच दिन प्रयोग करें, एक दिन न करें तो आपकी क्षमता बनी रहेगी।

● दूसरी बात यह है कि, **यह ना मानें कि भौतिक साधनों में ही अंतिम सुख है।** आज लोगों ने यह मान लिया है कि- "धन-संपत्ति आदि भौतिक साधनों में अंतिम सुख है, जैसे-तैसे करके इन साधनों को प्राप्त करो, जिसके पास धन-संपत्ति अधिक से अधिक होगी, वो अधिक से अधिक सुखी होगा।" यह मान्यता गलत है। इस गलत मान्यता से लोगों के जीवन की दिशा बदल चुकी है। सब लोग भोग साधनों के पीछे भाग रहे हैं और सहनशक्ति को छोड़ते जा रहे हैं।

● जिन कार्यों से व्यक्ति के जीवन में शांति थी, सुख था, चैन था, आनंद था, वो कार्य उसने छोड़ दिए। ईश्वर की भक्ति करना, यज्ञ करना, दान देना, सेवा करना, बड़ों का आदर करना, इन कार्यों से हमारे जीवन में शांति थी। आज वे काम तो लगभग छूटते जा रहे हैं। आज पूछो

कि- आप हवन करते हैं, आप भगवान का ध्यान करते हैं, आप बच्चों को बिठा करके अच्छी बाते सिखाते हैं, आप बड़ों की कुछ सेवा करते हैं? तो वे कहते हैं- साहब, समय नहीं मिलता।

● उनके पास धंधा करने के लिए बहुत समय है, व्यापार करने के लिए बहुत समय है, शॉपिंग करने के लिये बहुत समय है, गप्पें मारने के लिए बहुत समय है। वे घंटों तक मोबाईल फोन पर चिपके रहेंगे, लेकिन अच्छे काम के लिए समय नहीं है और इधर-उधर के कामों में फालतू समय गंवाते रहते हैं। शांति देने वाले काम तो छोड़ दिए, तो फिर शांति कहां से मिलेगी? इसलिए जो शांति देने वाले काम हैं, मन को प्रसन्न करने वाले काम हैं, उन कामों को करें, सहनशक्ति बढ़ाएं।

● जब तक सहनशक्ति है, तब तक अपने परिवार वाले के साथ निभाएं। तब तक उसके साथ मिलके रहें, उसको बार-बार समझाएं, सहन करें। जब बिलकुल ऐसी परिस्थिति आ जाए कि वो पत्थर उठाकर सर फोड़ने को तैयार हो जाए, तब चुपचाप नमस्ते कर दें। फिर उससे अलग हो जाएं। यह बिल्कुल आखिरी सीमा है।

छोटी-मोटी बात हो तो ऐसा मन में बोलें- "कोई बात नहीं"। और बड़ी बात हो तो बोलें-"ईश्वर न्याय करेगा"। इससे आपकी

134. शंका- दुष्ट-प्रकृति के लोग हमारे साथ हिंसा कर दें, तो किस-किस अवस्था में हम कैसा-कैसा व्यवहार करें?

☯ **समाधान-** पहले से सावधानी रखें।

● अच्छे-बुरे लोगों की पहचान करें, कि कौन व्यक्ति अच्छे स्वभाव का है, कौन व्यक्ति खराब स्वभाव का है। अगर इस दुनिया में ठीक तरह से जीना है, तो हमको अच्छे-बुरे की पहचान करना सीखना पड़ेगा।

जो अच्छे स्वभाव का है, उसके साथ मित्रता रखें, उससे दोस्ती रखें, उसके साथ उठना-बैठना रखें, लेन-देन का व्यवहार रखें। जो खराब स्वभाव के लोग हैं, उनसे दूर रहें, बच के रहें, उनसे झगड़ा भी नहीं करना और उनसे रिश्ता भी नहीं रखना। उनसे अलग ही रहें। अच्छे लोगों से मित्रता बनायें, खराब लोगों से दूर रहें।

● और फिर भी मान लो, कोई ऊँचा-नीचा व्यवहार कर दे, और थोड़ा-बहुत नुकसान कर भी दे, तब भी उस पर गुस्सा नहीं करना, क्रोध नहीं करना, चुपचाप कन्नी-काटकर अपना बचाव कर लेना। दुष्टों से झगड़ा नहीं करना, जहाँ तक हो सके झगड़े से बचने की कोशिश करना।

● जिनको आध्यात्म में विशेष उन्नति करनी है, उनको इस तरह से व्यवहार करना पड़ेगा। वे इस तरह से नहीं करेंगे, लड़ाई-झगड़ा करेंगे, कोर्ट-केस करेंगे तो क्या कोर्ट में हमेशा ही न्याय मिलता है? नहीं मिलता। कोर्ट में जाने से कोई विशेष लाभ नहीं। वहाँ दस साल तक केस चलेगा, आपका सारा समय बेकार चला जायेगा, पैसा चला जायेगा। और तब तक के लिए टेंशन हो जायेगी, वो अलग। लाभ कुछ होगा नहीं। तो फिर व्यर्थ में इतना समय, पैसा और बुद्धि क्यों खर्च करें? ईश्वर की कोर्ट में केस डाल दें, वही ठीक है। "ईश्वर न्याय करेगा।" बस ये तीन शब्द बोलो और अपना मस्त रहो। शांति से अपना योगाभ्यास करो।

● छोटी-मोटी बात हो, तो उसके लिये एक और सूत्र है, वो भी तीन शब्द का है- "कोई बात नहीं"। यानि छोटी-मोटी बात हो तो, बोलो- कोई बात नहीं। और अगर बड़ी बात हो, और हम उससे लड़ नहीं सकते, न्याय नहीं ले सकते, न्याय कोर्ट में नहीं मिलता। तो बस फिर ईश्वर के न्यायालय में केस डाल दो, 'ईश्वर न्याय करेगा'।

● रोज संध्या में आप एक मंत्र बोलते हैं -"जो हम पर अन्याय करता है, द्वेष करता है, हम उसको ईश्वर के न्यायालय में छोड़ते हैं।" लेकिन दिक्कत यह है, कि हम सिर्फ बोलते ही बोलते हैं, छोड़ते कहाँ हैं? छोड़ते तो हैं ही नहीं। अगर ईश्वर के न्याय पर छोड़ देंगे तो मस्त रहेंगे, कोई टेंशन नहीं है, खूब आनंद से जियो।

● सावधान रहो, दुर्घटना से बचो, खराब लोगों से बच के जियो, यही तरीका है और कोई रास्ता नहीं है। बचो न, इसलिये तो कह रहा हूँ। अत्याचारी को ठीक करने के लिये दूसरे बहुत से क्षत्रिय लोग बैठे हैं। वो यह काम कर लेंगे। लेकिन आप इस काम में लगे रहेंगे, तो आपका योगाभ्यास रह जायेगा।

● और आप पिछले जन्मों में यही तो करते चले आ रहे हैं। पिछले जन्मों में यही तो करते थे, और क्या किया? भई, कब तक करेंगे, ऐसे तो हर जन्म में लाखों झगड़ालू लोग आपको मिलेंगे। आप किस-किस से निपटेंगे। हर आदमी झगड़ने को तैयार बैठा है। किस-किस से झगड़ा करेंगे और कब तक करेंगे? यहाँ तो झगड़े का कोई अंत नहीं है। इसीलिये तो अब तक यहाँ बैठे हैं, वरना अब तक 'मोक्ष' में चले जाते। पिछले जन्मों में योगाभ्यास किया होता, तो मोक्ष में चले जाते। पिछले जन्मों में लोगों से लड़ते रहे, इससे लड़ाई की, उससे लड़ाई की, इसीलिए तो यहाँ बैठे हैं। कम से कम अब तो मोक्ष की तैयारी करो।

● परिस्थितियों को सहन करो, अपना बचाव करो, झगड़ा मत करो, द्वेष मत करो, चुपचाप कन्नी-काटकर मोक्ष में सरक जाओ। यहाँ जितनी देर लगायेंगे, उतने ज्यादा दुःख भोगने पड़ेंगे। मैंने तो बता दिया, आगे जैसा आपको ठीक लगे, वैसा करो। मेरी समझ में तो आ गया, कि 'यहाँ दुनिया में बार-बार जन्म लेना कोई समझदारी का काम नहीं है, इसलिये मैं तो जा रहा हूँ मोक्ष में। आपको चलना हो तो स्वागत है। मुझे यहाँ नहीं रहना। मुझे यहाँ बार-बार जन्म लेना ठीक नहीं लगता। आप भी मेरे साथ चलो। आओ, मोक्ष की यात्रा में बड़ा आनंद मिलेगा।'

● यदि आप सेना में हैं, पुलिस में हैं, तो सहन करना आपके लिये अपराध है। अगर आप सेना में, पुलिस में नहीं हैं, तो फिर कोई अपराध नहीं है। राजा और क्षत्रियों के लिए अपराध है कि वे अन्याय को सहन करें। अत्याचारी को सबक सिखाना उनका कर्तव्य है। आप अधिक से अधिक किसी पुलिस वाले को जाकर सूचना दे सकते हैं, आपका कर्तव्य पूरा। आप पूरे केस में लड़ेंगे, तो आप यहीं रह जायेंगे। फिर मोक्ष नहीं हो पायेंगे।

● अगर आपको मोक्ष में जाना है, तो शास्त्र कहता है- ब्राह्मण बनो। **सहन करना ब्राह्मण के लिये धर्म है।** मनु जी के अनुसार धर्म का दसवां लक्षण है- 'अक्रोधो'। दशकं धर्मलक्षणम् । क्रोध नहीं करना, क्षमा करना, सहन करना, यह ब्राह्मण का तो गुण है, और क्षत्रिय के लिये दोष है। क्षत्रिय व्यक्ति अगर अपराध को सहन करता है, अन्याय को सहन करता है तो उसके लिये यह कार्य दोष है। ब्राह्मण के लिये यह गुण है, वो सहन करेगा, तो उसे मोक्ष मिलेगा। यदि **क्षत्रिय अपराध को सहन करता है, और अन्याय का विरोध नहीं करता है, तो उसको नरक मिलेगा, उसको दण्ड मिलेगा।**

● एक व्यक्ति ने पूछा- सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिये। इसका क्या अर्थ है? तो मैंने उसको उत्तर दिया कि- यथायोग्य व्यवहार का मतलब यह नहीं कि मारामारी करो। लोग इसका गलत अर्थ करते हैं। नियम है कि- 'सबके साथ प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बरतना चाहिये।' अब 'यथायोग्य' शब्द इस नियम में, इस अर्थ (सेंस) में नहीं है, कि कोई मारामारी करे, तो उससे डबल मारामारी करो। यथायोग्य का अर्थ है, कि जो हमारे सामने पात्र है, जो व्यक्ति हमसे छोटा है, बड़ा है, बराबर का है, किस स्तर (लेवल) का है, उसके साथ उस स्तर (लेवल) का व्यवहार करो। जब प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना है, धर्मानुसार व्यवहार करना है तो फिर मारामारी कहाँ से आ गई? हम राजा नहीं हैं, हम क्षत्रिय नहीं

हैं। यह नियम क्षत्रियों के लिये नहीं बनाया गया। यह नियम तो सबके लिये है। जहाँ क्षत्रियों का प्रसंग हो, वहाँ पर यथायोग्य का अर्थ यह होगा कि कोई ब्राह्मण है, कोई परोपकारी व्यक्ति है, उसका सम्मान करो और कोई दुष्ट, डाकू, चोर है, उसकी पिटाई करो, और उसको जेल में डालो। यह क्षत्रियों के लिये उपदेश है। लेकिन यह नियम केवल क्षत्रियों के लिये नहीं है। यह नियम तो सबके लिये है। इसका अर्थ यह है कि सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करो, यदि हमसे बड़ा है तो उसका आदर सम्मान करो, बराबर का है तो बराबर वाला व्यवहार करो, और छोटा है, तो उसको आशीर्वाद दो, स्नेह, प्रेम से उसको खाने-पीने को दो, खुश रखो। यह है- यथायोग्य व्यवहार।

135. शंका- एक की जमीन पर दूसरा ताकतवर होने के नाते कब्जा कर ले। तो क्या साधक वही तीन शब्द कहकर छोड़ दें कि 'कोई बात नहीं', अथवा फिर क्या करें?

☯ **समाधान-** यदि किसी ने हमारी जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है, तो उसे प्राप्त करने के लिये हर संभव कोशिश तो करनी ही चाहिये। प्रेम से, सभ्यता से, ठीक-ठाक शांतिपूर्वक बातचीत से अपनी जमीन को वापस ले सकते हो, तो ले लो। पूरा प्रयास करने पर भी अगर वो हाथ में नहीं आती है और उसके बिना भी हमारा काम चलता है और अगर हमें मोक्ष में जाना है, तो फिर झगड़ा नहीं करना चाहिये। फिर कोई जमीन खाये तो खाये, कोई चिंता नहीं। आपको अगले जन्म में दे देगा न्यायकारी ईश्वर। और मोक्ष में नहीं जाना है, तो फिर तो बहुत से रास्ते खुले हैं। लाठी उठाओ, गोली चलाओ, पिस्तौल उठाओ, कोर्ट में जाओ, जेल में जाओ, कुछ भी करो। लेकिन मोक्ष में जाना है तो झगड़े से बचना पड़ेगा।

136. शंका- कीट, पतंग, मच्छर को लार्वा-ट्रीटमेन्ट से विनिष्ट करते हैं। यह कर्म करना चाहिये या नहीं, और इस कर्म का फल क्या होगा?

☯ **समाधान-** यदि मक्खी, मच्छर हमें परेशान करते हैं, तो हमें इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिये। जैसे कोई पाकिस्तानी आतंकवादी हमारे देश में घुस आये, तो क्या हम उससे अपनी रक्षा नहीं करेंगे? करेंगे न। अपनी रक्षा करने का हमको अधिकार है, तो खिड़कियाँ, दरवाजे अच्छी तरह से बन्द रखें। वहाँ जाली लगायें, ताकि मच्छर अंदर न घुसें। कीट, पतंग, मच्छर तरह-तरह की बीमारियाँ अथवा रोग न फैला सकें।

● जहाँ तक हो सके, बिना मारे काम चलता हो, तो इनको न मारें। मान लीजिये, एक मच्छर हमारे हाथ में आकर बैठ गया। तो पहली बार उसको सूचना दें, वार्निंग दें, कि जाओ-जाओ, यहाँ मत काटो। ये हमारा हाथ तुम्हारे काटने के लिये नहीं है। कंधे पर आये,कान पर आये, कहीं भी आये, बैठे और काटने लगे तो एक बार, दो बार उसको वार्निंग देनी चाहिये, कि जाओ भाई! जाओ तुम्हारे खाने के लिये बाहर कूड़ा कचरा बहुत है, जाओ वो खाओ। हमारा शरीर तुम्हारे खाने के लिये नहीं है। यदि फिर भी वह नहीं मानता, आकर बार-बार बैठता है, तो दण्ड व्यवस्था लागू होती है। अब उसको दण्ड दे सकते है। अब आके बैठता है तीसरी बार, चौथी बार तो अब उसको हल्के से मारना। एकदम जोर से नहीं। दण्ड देते समय द्वेष नहीं आना चाहिये। अगर आपने जोर से मारा, तो इसका मतलब मन में द्वेष आया। ध्यान रहे- द्वेष नहीं करना, गुस्सा नहीं करना। उसको प्रेम से दण्ड देना, जाओ भई! तुमको तीन बार समझाया, तुम नहीं जाते। इसलिए अब दण्ड मिलेगा। अब उसको ऐसे प्रेम से मारो। जाओ छुट्टी।

● और अगर कैमिकल छिड़कने पड़ते हैं, तो वह भी मजबूरी की बात है। तो उसमें थोड़ा बहुत पाप भी लगेगा। दो, चार, पांच, दस पर्सेन्ट, तो कोई बात नहीं, भोग लेंगे।

● अगर जीना है, तो प्राणियों को कुछ तो कष्ट देना ही पड़ता है। हमारे शास्त्रों में लिखा है, कि मनुष्य दूसरे प्राणियों को दुःख दिए बिना जी नहीं सकता। कुछ न कुछ तो हमारे कारण दूसरों को दुःख होता ही है। अपनी जान बचाने के लिए, अपनी रक्षा के लिए कुछ न कुछ तो दूसरों को कष्ट देना ही पड़ता है। जो मजबूरी है, सो ठीक है। मजबूरी मानकर करेंगे, जानबूझकर नहीं, द्वेष भाव से नहीं, अपनी रक्षा की भावना से करना चाहिए।

● कीड़ों से बचाने के लिए किसान कुछ दवाइयाँ छिड़कते है। उससे

बहुत से कीड़े मरते हैं, तो उसमें दोष तो लगता है। यह ठीक बात है। लेकिन उस फसल की रक्षा करने से मनुष्य आदि प्राणियों को खाने को भोजन मिलता है। इससे उनके जीवन की रक्षा भी होती है। कुछ हानि होती है, और बहुत सारा पुण्य मिलता है। इस प्रकार से इसको मिश्रित कर्म कहते है।

● इसका प्रायश्चित्त यह है कि कुछ प्राणियों को खाने को भी दो। जैसे कौवे आते हैं, कबूतर आते हैं, वे खेत में फसल खाते हैं, तो उनको खाने भी दो। उनके कोई अलग से फैक्ट्री, कारखाने, व्यापार तो है नहीं। वो बेचारे प्राणी कहाँ खाएंगे? यहीं तो खाएंगे। भगवान ने जो फसल पैदा की है, वह मनुष्य के लिए भी है और कौवों-कबूतरों के लिए भी है। उनको भी खाने दो। वे इतना नहीं खा लेंगे कि मनुष्य के लिए कुछ भी न बचे। थोड़ा वो भी खाएं, थोड़ा हम भी खाएं। पंच महायज्ञ है। उसमें जो बलि वैश्वदेव यज्ञ है, वह एक प्रकार से प्रायश्चित्त के रूप में हैं। आप उनका अनुष्ठान करें।

फिर दो-पांच पर्सेन्ट जो दण्ड मिलेगा, भोग लेंगे। क्या दण्ड होगा, पूरा-पूरा तो हम नहीं कह सकते। थोड़ा बहुत, जो भी दण्ड होगा,भोग लेंगे।

137. शंका- एक व्यक्ति किसी डेढ़ साल की बच्ची के साथ बलात्कार कर जान से मार देता है। वो पकड़ा जाता है। जज उसकी सजा फांसी के रूप में देता है। यह हिंसा है या अहिंसा?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर यह है, कि यह अहिंसा है। हमेशा याद रखें- जो न्याय है, वह अहिंसा है। और जो अन्याय है, वह हिंसा है। अगर जज उसको मृत्युदण्ड देता है, तो बहुत अच्छा करता है। यह न्याय है, अहिंसा है। हमारा शास्त्र यह कहता है, कि उसको यह दण्ड सड़क पर, चौराहे पर देना चाहिए। आजकल की भाषा में बोलें, तो दिल्ली के जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम में बहुत से लोगों को बुलाना चाहिए। पचहत्तर हजार लोग उसमें बैठ सकते हैं। सबके सामने उसको फांसी दो। और उसका लाइव टेलीकास्ट करो। जैसे पूरे देश में क्रिकेट मैच का लाइव टेलीकास्ट करते हैं, वैसा उसका प्रसारण होना चाहिए। पूरे भारत के लोगों को दिखाओ, कि ऐसे अपराध करने वालों को क्या दण्ड दिया जाता है। ऐसे पाँच-दस लोगों को फांसी मिल जावे, तो पन्द्रह दिन के अन्दर ऐसे अपराध बंद हो जाएँगे। फांसी मिलेगी पन्द्रह लोगों को, और लाखों लोग इससे सुधर जाएँगे। महर्षि मनु जी का, वेद का यह संविधान है कि अपराधी को कठोर दण्ड देना चाहिए। एक-दो, पाँच-पन्द्रह को मिलेगा, लेकिन करोड़ों लोग सुधर जाएँगे। इसलिए वह न्याय है, अहिंसा है।

138. शंका- राजनीतिज्ञों की अहिंसा किस कोटि में रखनी चाहिए?

☯ **समाधान-** आपके घर का व्यक्तिगत सवाल हो तो ठीक है। जैसे कि एक व्यक्ति ने आपको झापड़ मार दिया, आपके साथ धोखा कर दिया, उसे आप सहन कर सकते हैं। पर समाज के लिये, देश के लिये आप इस तरह से काम नहीं कर सकते हैं। देश किसी एक व्यक्ति की जागीर नहीं है। पहले इस बात को अच्छी तरह समझना।

राजनीति के नियम अलग हैं, और आध्यात्मिक-क्षेत्र के नियम अलग हैं। अन्याय को सहन करना, ब्राह्मण के लिए गुण है। लेकिन अन्याय को सहना करना, क्षत्रिय के लिए दोष है। इसलिए दोनों के नियम अलग-अलग हैं। अन्याय को अगर क्षत्रिय (सेना) सहना शुरु कर दें तो अहिंसा की रक्षा नहीं हो सकेगी।

अगर विदेशी शत्रु हमारे देश में घुस जायें और वो कहें कि हम तो तुम्हारे देश में शासन करेंगे। और हम कहें- 'हाँ-हाँ ठीक है, तुम कर लो मगर हम तुमसे लडेंगे नहीं, हम तुमको कुछ नहीं कहेंगे, तुम हमारे देश में शासन कर लो, हम तुम्हारे गुलाम बनके रहेंगे, तुम हमारी शिक्षा, धर्म, माँ और बहनों को भ्रष्ट करोगे तो भी हम तुमसे लड़ेंगे नहीं क्योंकि हम तो अहिंसावादी हैं, हमे तो अहिंसा का पालन करना है।'

'राजनीति' एक अलग चीज है, 'आध्यात्म' एक अलग चीज है। अंहिसा, सत्य, आदि के जो उपदेश चल रहे हैं, यह आध्यात्मिक क्षेत्र की बातें हैं। गांधी जी की जो अहिंसा है, इस तरह की अहिंसा राजनीतिक क्षेत्र में नहीं चलती है। यह जो अहिंसा की बात है, आध्यात्मिक-क्षेत्र की बात है, राजनैतिक क्षेत्र इससे अलग है। उसमें तो राजनीति के नियमों से ही चलना पड़ता है। राजनीति में तो न्याय चलता है। वहाँ पर दण्ड चलता है। राजनीति में ऐसा थोड़े चलता है। यह तो हमारा देश है, हम इसके मालिक हैं। तुम यहाँ से बाहर निकलो। कोई किसी को हाथ जोड़कर यह कहे कि- अच्छा जी, तुम चले जाओ। क्या ऐसे कोई चला जाता है? केवल हाथ जोड़ने से अंग्रेज नहीं चले गए। यह ध्यान रखने वाली बात है कि जब क्रांतिकारियों ने अपने दल बनाये और धड़ाधड़ काकोरी-कांड किये और जबरदस्त सेनायें बनाईं, आजाद हिन्द सेना बनायी और अंग्रेजों को यहां रहना फायदेमंद नहीं लगा, तब जाकर अंग्रेजों का दिमाग ठिकाने आया। देश आजाद ऐसे ही नहीं हुआ। बहुत से देशभक्तों ने अपना जीवन बलिदान किया। तब जाकर के हमारा देश स्वतंत्र हुआ। सत्य,

अहिंसा की जो आध्यात्मिक चर्चा है, यह आध्यात्मिक क्षेत्र में ठीक है। राजनीति के क्षेत्र में ऐसा इस रूप में नहीं चलता। वहाँ तो न्याय चलता।

जब भारत-पाकिस्तान का विभाजन हो गया, और यह निर्णय हो गया, कि हिन्दु लोग इधर आ जायेंगे और मुस्लिम-लोग उधर चले जायेंगे। तो भी गांधी जी ने कह दिया, कि चलो 'कोई बात नहीं', इनको इधर ही रहने दो। यह 'कोई बात नहीं' राजनीति में नहीं चलता। वहां तो, न्याय चलता है। चलो, 'कोई बात नहीं', यह नियम आध्यात्मिक क्षेत्र में चलता है। राजनीति में इस नियम को लागू करने का परिणाम अच्छा नहीं होता। गाँधीजी की जो अच्छी बात है, वो अच्छी बात सीख लो तो कोई बात नहीं। पर जो दोष हैं, उनको छोड़ देना चाहिये। उसको नहीं अपनाना चाहिये।

139. शंका- हम लोग बेल्ट, जूता, चप्पल आदि चमड़े से बनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, तो क्या ये अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा है?

☯ **समाधान-** यदि जूता, चप्पल, बेल्ट इत्यादि चीजें प्राणियों को मार-मारकर बनाई जाती है, तो वो परोक्ष रूप से हिंसा है। यदि गांव में हम देखते है, कि कोई व्यक्ति चमड़े का काम करता है या स्वाभाविक मृत्यु से कोई पशु मर गया, वह उसका चमड़ा उतार अगर लाए, उससे जूते बना दिये, और उसका उपयोग करते हैं, तो कोई हिंसा नहीं। वेद में लिखा है - प्राणियों की हिंसा न करो, स्वाभाविक रूप से जो गाय-भैस मर जाते हैं, उसका चमड़ा उतारकर जूते बना लो, बेल्ट बना लो, और चीजें बना लो, तो उसमें हिंसा नहीं है। हाँ, चमड़े के लिए ही प्राणियों को मारा जाता है, तो वो हिंसा है। हमें इन सबसे बचना चाहिए। गाय दूध देना बंद कर दे, तो उसको मारकर खाना या उसको मारकर चमड़ा बनाना, यह हिंसा होगी।

मान लीजिए, हमारे दादा जी बूढ़े हो गए, अब वे काम नहीं कर सकते, कुछ पैसे नहीं कमाते। तो क्या दादाजी को मार देना चाहिए? यह

कोई बात है भला? दादाजी हैं, या जो भी बड़े हैं, उनकी सेवा करो। गाय-भैंस ने पन्द्रह बीस साल दूध दिया, अब बूढ़ी हो गई, दूध नहीं दे सकती, तो कोई बात नहीं। उसने पंद्रह साल हमारी सेवा की, तो अब बुढ़ापे में हमको उसकी सेवा करनी चाहिए। चारा खिलाओ, उसकी रक्षा करो। उसको मारना नहीं है।

140. शंका- 'तेजो असि तेजो महि घेही'। इस मंत्र में हमने ईश्वर से क्रोध की और सहन-शक्ति की भी प्रार्थना की है। जो दोनों मुझे विरुद्धार्थी लगते हैं?

☯ **समाधान-** अन्याय के प्रति पराक्रम दिखाकर, क्रोध करना चाहिये अर्थात् विरोध करना चाहिये या फिर अन्याय को सह लेना चाहिये? यह बहुत अच्छा प्रश्न है। दोनों अवसरों पर दोनों काम करने चाहिये। छोटा-मोटा अन्याय हो तो सह लेना चाहिये। बड़ी गड़बड़ हो और बिल्कुल हमारी जान पर आ गयी हो तो फिर अपनी रक्षा भी करनी चाहिये।

लड़ाई-झगड़ा करना हमारा उद्देश्य नहीं है। व्यर्थ में किसी को मारना-पीटना, किसी को परेशान करना, किसी को दुःख देना हमारा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं। पर अपने जीवन की रक्षा करना तो हमारा अधिकार है। अपने जीवन की रक्षा तो हम करेंगे। महर्षि दयानंद जी का ही उदाहरण ले लीजिये। लोगों ने उन पर पत्थर फेंके, साँप फेंके, झूठे आरोप लगाए, बहुत उलटे- सीधे काम किये। कई बार जहर भी पिलाया तब भी उन्होंने कहा- "चलो जाने दो, कोई बात नहीं"। अपनी रक्षा उन्होंने कर ली, अपना बचाव कर लिया, मारने की बात नहीं की थी। एक बार कुछ लोग जंगल में देवी के मंदिर में ले गए और वहाँ उनकी बलि चढ़ाने की तैयारी थी। वो जा तो

नहीं रहे थे लेकिन ऐसे ही उनको बहका करके ले गए और वो चले गए तो वहाँ जाकर देखा, अरे यहाँ तो मामला गड़बड़ है। यह तो तलवार लेकर खड़ा है, मुझे मारेगा। तो वो फटाफट दीवार कूदकर भाग गए। देखो, उन्होंने अपनी रक्षा कर ली या नहीं। इसलिये अपनी रक्षा कर लेनी चाहिये, उसमें कोई आपत्ति नहीं है। वो तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। भगवान ने भी छूट दे रखी है और सरकार ने भी छूट दे रखी है। अपनी रक्षा पूरी करो लेकिन खामखाँ दूसरे से झगड़ा मत करो। इस तरह से सहन भी करना चाहिये।

अगर हम सहन नहीं करेंगे तो फिर मनुष्य, मनुष्य नहीं रहेगा। फिर तो वो मशीन की तरह हो जाएगा। जैसे बिजली की मशीन थोड़ा सा भी उसको छू दो तो फट से करेंट मारती है। हम भी अगर कोई थोड़ा सा बस में, भीड़-भाड़ में पाँव पर पाँव रख दें और हम उसको दो थप्पड़ मारते हैं तो हम भी मशीन की तरह हो जायेंगे। फिर हम इंसान थोड़े रहेंगे। बस में भीड़ होती है, रेल में भीड़ होती है, बाजार में भीड़ होती है। कोई चलते-चलते थोड़ा सा टकरा गया, किसी का हाथ टकरा गया तो वहाँ तो ऐसा ही बोलना पड़ेगा कि- कोई बात नहीं, जाने दो, भीड़-भाड़ है, हो जाता है ऐसा। वहां तो सहन ही करना पड़ेगा। अगर कोई जबरन हमें परेशान करे तो फिर अपनी रक्षा भी करनी चाहिये। इतने कमजोर भी नहीं बनना चाहिये। फिर भी क्रोध करना तो ठीक नहीं है। क्योंकि क्रोध की अवस्था में बुद्धि ठीक काम नहीं करती और व्यक्ति गलत काम कर बैठता है, जिससे उसकी हानि होती है।

मन्युरसि मन्युं मयि धेहि'। प्रार्थना इसलिये करें, क्योंकि यहाँ पर 'क्रोध' का अर्थ 'क्रोध' नहीं है। जो प्रचलित अर्थ में क्रोध है, वह अर्थ नहीं है। यहाँ पर क्रोध का अर्थ है, 'जो बुरे काम हैं, उनसे बचकर रहें।' यदि हम उनसे बचकर नहीं रहेंगें तो बुरे काम हम सीख लेंगें और करने लगेंगें। तो यहाँ गौण अर्थ में क्रोध शब्द का प्रयोग है कि- बुरे कामों पर क्रोध करें, अर्थात बुरे काम न करें, उनसे घृणा (परहेज) करें, उनसे दूर रहें, उनसे बचकर रहें। क्रोध शब्द का अर्थ यह है।

साधारण व्यक्ति जब यह प्रार्थना करे तो इसका अर्थ यह है - मैं बुरे कामों का विरोध करूं अर्थात् मैं बुरे काम न करूं। बुरे लोगों से बचकर रहूँ, ताकि मेरा जीवन ठीक-ठाक चले।

इसका दूसरा अर्थ यह है कि जो राजा है, क्षत्रिय है, वह यह प्रार्थना करे- 'हे ईश्वर! आप दुष्टों को दण्ड देने वाले हैं। मुझे भी शक्ति दो, ताकि मैं इस धरती के सारे दुष्टों को ठीक कर दूँ इन दुष्टों को दण्ड दूँ ताकि ये जनता को परेशान न कर सकें। राजा की ओर से यह प्रार्थना है। राजा अपनी प्रार्थना करे।

141. शंका- कृपया द्वेष के पर्यायवाची बतलायें। द्वेष का अर्थ, बुरा लगना, अच्छा न लगना, घृणा करना, विरोधी समझना, गलत भावना बना लेना, क्या ठीक है?

☯ **समाधान-** देखिये, द्वेष के पर्यायवाची कई हो सकते हैं और इनके स्वरूप भी छोटे-बड़े हो सकते हैं। द्वेष का मोटा सा अर्थ है, अच्छा न लगना। जब हमारे मन में दूसरे व्यक्ति के प्रति क्रोध आता है, जलन होती है, उसका नाम भी द्वेष है। किसी ने हमारी थोड़ी सी बेइज्जती कर दी और हमारे मन में इच्छा हो गई कि- "अब इससे बदला लेंगे, इसका भी दिमाग दुरूस्त कर देंगे, यह अपने आपको क्या समझता है, मेरा भी अवसर आने दो, इसको दिन के तारे दिखा दूँगा।" व्यक्ति मन में ऐसा सोचता है और जलता-भुनता रहता है। इसका नाम नैमित्तिक द्वेष है। मन में अगर जलन होती है, गुस्सा आता है, बदला लेने की भावना आती है, मार डालने की इच्छा होती है तो यह नैमित्तिक द्वेष है। यह तो अभ्यास से हट जायेगा।

एक द्वेष का बहुत सूक्ष्म स्वरूप भी है 'कोई चीज पसंद न आना' वो स्वाभाविक है, वो हटेगा नहीं। यह तो जीवात्मा में सदा ही रहेगा। यह जीवात्मा का नित्य गुण है। हम अल्पज्ञ हैं, अल्प शक्तिमान हैं और हमारी रुचि हर वस्तु में हो भी नहीं सकती। कोई जरूरी थोड़े ही है कि हर चीज हमको अच्छी लगे। आपको खाने में हर आइटम पसंद नहीं आती हर सब्जी आप रुचिपूर्वक नहीं खाते। कोई खाते हैं, कोई नहीं खाते। यह तो स्वाभाविक बात है।

142. शंका- मुझे गुस्सा बहुत आता है। कृपया उपाय बतलायें?

☯ **समाधान-** गुस्सा बहुत आता है तो उसका उपाय तो दर्शन योग महाविद्यालय से प्रकाशित पर्चे में लिखा है। क्रोध को कैसे दूर करें, इस संबंध में उसमें बहुत सारे उपाय लिखे हैं।

क्रोध कम करने का मोटा सा उपाय दोहरा देता हूँ। क्रोध को दूर करने का सबसे बढ़िया उपाय है- अपनी इच्छाओं को कम करें। आप दूसरों से उम्मीद रखते हैं कि यह व्यक्ति मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगा, इसको मेरे साथ ऐसा करना चाहिये। यह जो उम्मीद रखते हैं, इसको कम करें। जितनी इच्छायें बढ़ायेंगे, जितनी उम्मीदें बढ़ायेंगे, दूसरों से उतना दुःख बढ़ेगा। कैसे बढ़ेगा? दो वाक्यों में समझ लीजिये। क्या हमारी सारी इच्छायें पूरी हो सकती हैं? नहीं न। जितनी इच्छायें पूरी होती जायेंगी, वो समाप्त होती जायेंगी या बढ़ती जायेंगी? वे तो और बढ़ती जायेंगी और सारी तो पूरी होंगी नहीं। बताइये, वो अधूरी इच्छा आपको सुख देंगी कि दुःख देंगी? बस, वो दुःख देंगी, उससे फिर आपका क्रोध बढ़ेगा। इसलिए उपाय क्या हुआ? अपनी इच्छाओं को कम करें।

हमेशा एक सा नहीं सोचें। पॉजिटिव भी सोचें, कुछ-कुछ नेगेटिव भी सोचें। यह काम जरूर हो जायेगा, यह व्यक्ति हमारा काम जरूर करेगा और इस दिन तो कर ही देगा, ऐसा कभी नहीं सोचना। ऐसा भी हो सकता है कि काम न हो। इसलिए दोनों संभावनायें हैं तो दोनों क्यों नहीं सोचें? किसी ने हमारा काम कर दिया, तो ठीक। और नहीं किया तो यह शब्द दोहरायें- "कोई बात नहीं"। इससे आपको गुस्सा नहीं आएगा या कम आएगा।

एक ही व्यक्ति पर पूरी तरह से आधारित मत रहिये। एक ही व्यक्ति पर पूरा भरोसा मत रखिये। अगर वो धोखा दे गया तो आपको बहुत मुश्किल हो जायेगी। उसका दूसरा विकल्प (ऑप्शन) अपने दिमाग में रखिये। इधर से काम नहीं हुआ तो दूसरे से, दूसरे से नहीं हुआ तो तीसरे से काम करायेंगे। इसी प्रकार चौथा, पाँचवा, छठा ऑप्शन रखिये। कहीं न कहीं तो काम हो ही जायेगा। अगर आपने अपने मन में चार, पाँच, छह ऑप्शन रख लिये कि यहाँ से नहीं तो वहाँ से, कहीं से तो काम होगा।

मान लीजिये कि- छह में से कहीं भी काम नहीं हुआ, तो एक सातवाँ ऑप्शन और भी रखिये अपने दिमाग में। वह ऑप्शन है- नहीं हुआ तो न सही, हम इसके बिना ही जी लेंगे। अगर यह सातवाँ ऑप्शन आपके दिमाग में है तो आपको कोई दुःखी कर ही नहीं सकता। आप कभी दुःखी नहीं होंगे और कभी क्रोध नहीं करेंगे। इस तरह से आप क्रोध को जीत सकते हैं।

143. शंका- वृक्ष में जीवन है या नहीं है? क्या वनस्पति में आत्मा होती है?

☯ **समाधान-** वृक्ष साँस लेता है, वृक्ष जीवित रहता है, और मिट्टी, पानी खुराक भी लेता है, धूप भी लेता है। और फिर उसके बाद जैसे मनुष्यों से आगे मनुष्य पैदा होते हैं, गाय-घोड़े से गाय-घोड़े पैदा होते हैं, वैसे ही वृक्षों से आगे वृक्ष भी पैदा होते हैं। वैसे ही वनस्पतियों की भी नस्ल से आगे वैसी ही नस्ल चलती हैं। उनकी पीढ़ी (जनरेशन) भी आगे चलती है। संतति-उत्पत्ति भी होती है। जैसे आलू से आलू होता है, टमाटर से टमाटर होता है, गेहँ से गेहँ होता है। ये सारे लक्षण जीवन को सिद्ध करते हैं।

और यदि जीवन है, तो वहाँ आत्मा है। जैसे मनुष्य जीवित रहता है, सांस लेता है, वैसे ही वनस्पतियाँ भी सांस लेती है, अतः उनमें भी जीवन होता है। इनमें आत्मा होती है, ऐसा ही मानना चाहिये।

144. शंका- क्या वृक्षों में ज्ञान भी होता है?

☯ **समाधान-** जी हाँ, वृक्षों में ज्ञान होता है। अब देखिये, एक चीकू का वृक्ष है और एक नीबू का वृक्ष है। मान लीजिये दोनों पास-पास हैं। तो चीकू का वृक्ष जमीन में से अपने अनुकूल भोजन खींचेगा और नीबू का वृक्ष जमीन में से अपने अनुकूल भोजन खींचेगा। उनमें अपने अनुकूल भोजन ग्रहण करने का ज्ञान है। यदि वृक्ष में ज्ञान ही नहीं है, कि मेरे अनुकूल कौन सा भोजन है, तो कैसे खींचेगा? इससे पता चलता है, कि उसमें ज्ञान है, कि 'पृथ्वी में से मुझे कौन से परमाणु खींचने हैं, कौन से मेरे अनुकूल हैं।' चीकू का पौधा, नींबू का पौधा, मिर्ची का पौधा, सबको पता है, कि मुझे कौन से परमाणु खींचने हैं। जैसे गाय और घोड़े को पता है, कि मुझे क्या खाना है और क्या नहीं खाना। गाय के आगे घास रख दीजिये, खा लेगी। और माँस रख दीजिये, नहीं खायेगी। कुत्ते के सामने आप माँस रख दीजिये, खा लेगा और रोटी रख दीजिये, खा लेगा और घास का गठ्ठर रख दीजिये, नहीं खायेगा। कुत्ता कभी-कभी घास खाता है। उसका पेट खराब हो, तो वो कभी-कभी उल्टी करने के लिये खाता है, भोजन के तौर पर नहीं खाता। वृक्ष को भी पता है, मुझे क्या खाना है और क्या नहीं खाना है अर्थात् उसमें ज्ञान है।

145. शंका- किसी ने वृक्ष को योनि माना है और किसी ने नहीं माना है, इसमें से कौन सा पक्ष सत्य है?

☯ **समाधान-** जिसने वृक्ष को योनि माना है, उसका पक्ष ठीक है। वृक्ष एक योनि है, कर्मों का फल है। यह 'सत्यार्थ-प्रकाश' के नौवें समुल्लास में लिखा है, कि जो व्यक्ति शरीर से पाप करता है, चोरी आदि बुरे कर्म करता है, उसको वृक्ष का जन्म मिलता है। यह शारीरिक अपराधों का दंड है।

वृक्ष में भी आत्मा है। जैसे मनुष्यों में आत्मा होती है, वैसे ही वृक्षों में भी आत्मा होती है। जैसे मनुष्यों से उसी जाति की, उसी नस्ल की आगे वृद्धि होती है, ऐसे ही वृक्षों में भी होती है। इससे सिद्ध होता है कि उनमें भी जीवन है, उनमें भी आत्मा है।

वस्तुतः वो भी पूर्वकृत कर्मों का फल भोग रहे हैं। कर्मफल तो सुख-दुःख का अनुभव करना है। अगर यह माना जाये, कि वृक्ष सुख-दुःख अनुभव नहीं करते, तो फिर वो कर्मफल (योनि) नहीं मानी जायेगी। कर्मफल तो वृक्ष अनुभव करते हैं। वृक्ष, पेड़-पौधे, वनस्पति आदि भोग योनि हैं। इनके अन्दर इच्छा, द्वेष, प्रयत्न आदि सारे गुण होते हैं। लेकिन वे थोड़ी बेहोशी की अवस्था में है, नशे में हैं, पर आत्मा तो है न उनमें। अगर उनमें कुछ भी कष्ट न माना जाये, जीरो कष्ट मान लें, फिर वो व्यवस्था फेल हो जायेगी, कि कर्मफल नहीं हुआ। वृक्षों के बारे में महर्षि मनु जी ने लिखा है कि- अन्तः संज्ञा भवन्त्येते। सुख दुःखसमन्विताः।

अर्थात् वे वृक्षादि सुख-दुःख से युक्त हैं। **वे आंतरिक सुख-दुख भोगते हैं, लेकिन बाहर के स्थूल सुख-दुःख नहीं भोगते।** जैसे कुत्ते को डंडा मारो, तो वह चिल्लाता है और भागकर अपनी जान बचाने की कोशिश करता है। वृक्ष को डंडा मारो, तो वह चिल्लायेगा नहीं, भागेगा नहीं, जान बचाने की कोशिश नहीं करेगा। इस प्रकार पशुओं और वृक्षों की बाहरी क्रियाओं में तो अंतर हैं, लेकिन अंदर से बेचारों (वृक्षों) को वहाँ खड़ा करके रखा गया है। वृक्ष मनुष्यादि प्राणियों के समान भाग नहीं सकता, चल नहीं सकता, कुछ कर्म नहीं कर सकता, आँख नहीं खोल सकता, सुन नहीं सकता, देख नहीं सकता। यह सारा दुःख तो उसको आंतरिक रूप से भोगना ही पड़ेगा। नहीं तो कर्मफल क्या हुआ? वो ईश्वर की दण्ड व्यवस्था है। इसलिए वो ही जाने।

146. शंका- वृक्ष में भी आत्मा है तो वनस्पति खाना, प्रयोग में लाना ठीक नहीं है, उसे हम किस अधिकार से दण्डित करें?

☯ **समाधान-** देखिये! वनस्पति, पेड़-पौधों में हम यह मानकर चलते हैं, कि इनमें जीव है, आत्मा है। कारण कि, उसके सारे जीवन व्यवहार से ऐसा पता चलता है। वनस्पति भी सांस लेते हैं, इनमें भी रीजेनरेशन होता है। जैसे मनुष्य में होता है, गाय, घोड़ों, पशु-पक्षियों में होता है, वैसे ही पेड़-पौधों में भी होता है। इसलिए हम मान लेते हैं, कि इनमें जीवात्मा है।

अब रही बात यह, कि पेड़-पौधों को, वनस्पतियों को, फल-फूल, अनाज को खाये, काटें, तो इसमें पाप लगता है या नहीं लगता है? तो इसका उत्तर यह है, कि इसमें पाप नहीं लगता।

बहुत से लोग शंका करते हैं, कि क्यों जी! गाय-घोड़े में आत्मा है, उसको मार के खाते हैं, तो उसमें तो पाप लगता है। इन पौधों में भी आत्मा है। जब इनको काट कूट कर खायेंगे, तो इनमें पाप क्यों नहीं लगता। मैंने कहा कि साइंस के सिद्धान्तों पर तो यह प्रश्न ही नहीं उठा सकते, कि पेड़-पौधों में आत्मा होती है, इनको काट के खायें, तो हमको पाप लगेगा कि नहीं लगेगा। विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार तो आत्मा की सत्ता का कोई उल्लेख उनकी किताबों में नहीं है।

आध्यात्मिक शास्त्रों (वेद आदि) के आधार पर आपका प्रश्न हो सकता है, कि इनमें आत्मा मानते हैं, तो इनको खायेंगे, तो पाप लगेगा कि नहीं लगेगा? जिस किताब के आधार पर आपका प्रश्न है, उसी किताब से उसका उत्तर भी मिलेगा। तो क्या उत्तर मिलेगा? यर्जुवेद में लिखा है- "'- गेहँ खाओ, तिल खाओ, उड़द खाओ, जौ खाओ, घी-दूध खाओ, दही खाओ, मक्खन खाओ, मलाई खाओ, मिठाई खाओ, गाय का घी खाओ, दूध पियो। "" भगवान कहते हैं- गाय का दूध पियो, घी खाओ, मक्खन खाओ, गेहँ का प्रयोग करो, सब अनाज का प्रयोग करो। "रसम् ओषधीनाम्" औषधियों का रस निकाल-निकाल करके पियो। हमने कहा कि हमारा जो धर्मशास्त्र है, वह तो हमको छूट देता है, कि औषधियों का प्रयोग कर सकते हैं, वनस्पतियों का प्रयोग कर सकते हैं। **जब कानून हमें इजाजत देता है, वो हमें छूट देता है, कि इसका प्रयोग कर सकते हैं। इसलिये सब्जी-भाजी, गेहूँ-चावल खाना अपराध नहीं है, कोई पाप नहीं**

है, कोई हिंसा नहीं है। और जो भेड़-बकरियों में आत्मा है, उसको मार के खायेंगे, तब उसमें पाप है। क्योंकि किताब- (वेदादि) में लिखा है- "" भेड़ को मत मारो, गाय को मत मारो। "" दो पांव वाले मनुष्यों का कल्याण हो, चार पांव वाले गाय आदि प्राणियों का कल्याण हो। उनको मारके नहीं खा सकते।"" तो **हमारे शास्त्र में लिखा है- गाय-घोड़ों को नहीं मारो, उनको मारेंगे, तो पाप लगेगा।** और वनस्पतियों को खाओ, उनको खायेंगे, तो कोई पाप नहीं लगेगा। ईश्वर के कानून का पालन करना पाप नहीं है। ईश्वर के कानून का उल्लंघन करना पाप है।

147. शंका- 'वृक्षों' के अंदर 'जीवात्मा' कहाँ रहता है?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर है- वृक्षों की जड़ में। जब तक वृक्ष की जड़ सलामत है, तब तक वृक्ष जीवित है। यदि जड़ को उखाड़ दिया जाये, तो फिर वह मर गया। ऊपर से काटते-छाँटते रहो, लेकिन जड़ पर प्रहार मत करो। कई बार ऊपर से वृक्षों को काट देते हैं, लेकिन वो मरते नहीं, फिर दोबारा खड़े हो जाते हैं। इसका मतलब जीवात्मा वृक्ष की जड़ में होना चाहिए।

148. शंका- मृत्यु से भय क्यों लगता है?

☯ **समाधान-** मृत्यु से भय का कारण है- 'अविद्या'। सवाल उठता है, कि इस अविद्या को कैसे दूर करें? बताइये, आप शरीर हैं या आत्मा? आत्मा। क्या आत्मा का जन्म होता है? नहीं। आत्मा का जन्म नहीं होता। क्या आत्मा मरती है? नहीं मरती। आत्मा का जन्म भी नहीं होता और आत्मा मरती भी नहीं, तो फिर मरने से डरना क्यों? मृत्यु से डर तो इसलिये लगता है, कि हम शरीर को आत्मा समझने की भूल करते हैं, यह गड़बड़ है। यह सबकी समस्या है।

सब लोग शरीर को आत्मा मानते हैं, यही अविद्या है। इस अविद्या को दूर करें। 'शरीर' अलग है, 'आत्मा' अलग है। शरीर का जन्म होता है, शरीर की मृत्यु होती है। आत्मा का जन्म नहीं होता, आत्मा की मृत्यु नहीं होती है। और हम शरीर नहीं हैं, हम तो हैं आत्मा। तो फिर मरने से क्या डरना? मौत आएगी, तो आएगी।

हम आत्मा हैं, शरीर हमारी गाड़ी है, आत्मा इस शरीर में बैठा है। आत्मा शरीर में बैठने से, वो दो चीज नहीं हो जाता। जैसे आप कार में बैठ गए तो क्या आप दो चीज बन गए? आप कार में बैठ गए तो केवल इतना ही तो है, कि आप कार में बैठे हैं। बैठ गए, फिर उतर जायेंगे, अलग हो जायेंगे। ऐसे ही 'आत्मा' शरीर में बैठा है, फिर छोड़कर अलग हो जाएगा। इतनी सी बात है। कार में बैठने से व्यक्ति कार नहीं बनता, यथावत् दोनों का संयुक्त स्वरूप नहीं हो जाता। ऐसे ही आत्मा के शरीर में बैठने से शरीर और आत्मा दोनों का मिश्रित (मिक्स) स्वरूप नहीं हो जाता है। हम शरीर को आत्मा मानते हैं अथवा दोनों को मिलाकर एक चीज मानते हैं, यही तो अविद्या है। इसी अविद्या के कारण मृत्यु से डर लगता है।

149. शंका- मैं नेत्रहीन हूँ, पर स्वप्न क्यों आते हैं?

☯ **समाधान-** अनेक जन्मों के संस्कार इस जन्म में साथ में आते हैं। अब संस्कार से ही स्वप्न पैदा होता है। स्वप्न की उत्पत्ति संस्कारों से होती है। अब यह तो मेरा अनुभव नहीं है। मैं सीधा-सीधा प्रत्यक्ष नहीं कह सकता, कि पूर्वजन्म के संस्कारों से भी स्वप्न आते हैं, या नहीं आते। आपको रूप का स्वप्न नहीं आता, इससे यह संभावना लगती है, कि पूर्वजन्म के संस्कार से स्वप्न नहीं आ रहा क्योंकि पूर्वजन्म में तो आपकी आँख ठीक-ठाक रही होगी। यह तो इसी जन्म में बिगड़ी है। या ऐसा मान लिया जाए, पिछले बीस जन्म से बिगड़ी है। ऐसा तो नहीं मान सकते न। आँख से उस समय तो आपने दृश्य देखे होंगे। वो संस्कार इस जन्म में साथ में चले आए। पर इस जन्म में आपको रूप का दर्शन नहीं हुआ और आपको रूप का स्वप्न भी नहीं आया। आपकी इस बात से यह लगता है, कि पूर्वजन्मों के संस्कारों से इस जन्म में स्वप्न नहीं आ रहे। सुनकर तथा अन्य इन्द्रियों के विषयों को भोगने भी संस्कार बनते हैं, और उन संस्कारों से स्वप्न आते हैं। यह बात है। जो आपके प्रश्न का उत्तर है।

150. शंका- जीवात्मा का स्वरूप क्या है? क्या जीवात्मा निराकार है?

☯ **समाधान-** आत्मा 'अणु-स्वरूप' मतलब बहुत सूक्ष्म होती है। आत्मा एक जगह रहती है। वह स्थान नहीं घेरती। जीवात्मा निराकार है। नियम सुन लीजिये। जो वस्तु चेतन होती है, वो निराकार होती है। ईश्वर चेतन है या जड़? चेतन। ईश्वर साकार है या निराकार? निराकार। ईश्वर चेतन है, ईश्वर निराकार है। जीवात्मा चेतन है या जड़? उत्तर है- चेतन है। तो वो भी निराकार है, जैसे ईश्वर। और यह प्रकृति जड़ है या चेतन? जड़। प्रकृति जड़ है, तो वो साकार है। दोनों नियम साफ हैं। जो वस्तु चेतन होती है, वो निराकार होती है। जो वस्तु जड़ होती है, वो साकार होती है। प्रकृति जड़ है, वो साकार है। ईश्वर और जीव चेतन हैं, वो दोनों निराकार हैं। मन, आदि जड़ होने के कारण सब साकार हैं। इनका आकार बहुत छोटा है। हम देख नहीं पाते, वो अलग चीज है। लेकिन हैं ये सब साकार। प्रकृति- (सत्त्व, रज, तम) वो भी जड़ हैं, वो भी साकार हैं।

महर्षि दयानंद जी ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है कि- साकार वस्तु

से ही साकार वस्तु उत्पन्न हो सकती है। निराकार से साकार नहीं हो सकती। एक संदर्भ में लिखा है- जहाँ पर ये लोग मानते हैं, कि यह जगत ईश्वर का ही रूपांतर है, मतलब ईश्वर से ही यह जगत बना है, इस जगत का रॉ-मटेरियल ईश्वर है। इसके संदर्भ में महर्षि दयानंद जी ने लिखा, कि- ईश्वर साकार है या निराकार? यदि ईश्वर निराकार है, और जगत का उपादान कारण ईश्वर होवे, तो जगत भी निराकार होना चाहिये, परंतु जगत तो साकार है। इससे सिद्ध हुआ, कि इसका रॉ-मटेरियल भी साकार है। जगत साकार है, यह प्रत्यक्ष है। इससे अनुमान हुआ, कि जो इसका उपादान कारण प्रकृति है, वो भी साकार है। उसी प्रकृति से- (साकार सत्, रज, तम से) ही मन, इन्द्रियाँ, बुद्धि, शरीर आदि सब पदार्थ बने हैं। इसलिये मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ जड़ भी हैं, साकार भी हैं।

151. शंका- आत्मा का क्या परिमाण है?

☯ **समाधान-** आत्मा बहुत छोटा है यह इतना छोटा है कि ऐसे-ऐसे जीव-जन्तुओं में भी आत्मा होता है जिन्हें हम आंख से देख नहीं सकते, कभी-कभी माइक्रोस्कोप से भी नहीं देख पाते।

२२०

152. शंका- 'आत्मा' अणु के बराबर होती है जबकि चेतना हमारे सारे शरीर में व्याप्त है?

☯ **समाधान-** आत्मा 'अणु-स्वरूप' मतलब बहुत सूक्ष्म होती है। जीवात्मा बहुत छोटा है।

चेतना तो सारे शरीर में व्याप्त है। सिर से पाँव तक हमें सब जगह अनुभूति होती है। अनुभूति सारे शरीर में होती है, ईश्वर ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है। आत्मा एक ही स्थान पर रहता है, और नस-नाड़ियों के माध्यम से और तंत्रिका-तंत्र के माध्यम से शरीर में अनुभूतियों की व्यवस्था कर रखी है। जैसे- एक फैक्ट्री का मालिक अपने कार्यालय में- (एक जगह) बैठा रहता है। और उसने फैक्ट्री के अलग-अलग दो कमरों में वीडियो कैमरे लगा रखे हैं। उन कैमरों की सहायता से वह एक जगह बैठकर फैक्ट्री के अनेक कमरों की जानकारी करता रहता है। इसी प्रकार से मन है, बुद्धि है, इंद्रियाँ हैं, इन सारे उपकरणों के माध्यम से जीवात्मा को एक ही स्थान पर रहते हुए भी पूरे शरीर की बहुत सारी मोटी-मोटी अनुभूतियाँ हो जाती है, लेकिन सारी नहीं। आपको पेट में क्या रोग हो रहा है? आपको पता नहीं है। जब वो काफी बढ़ जाता है, दर्द होने लगता है, तो जाते हैं, डॉक्टर साहब के पास। फिर वो चेकअप करते हैं, और बताते हैं कि साहब, ये बीमारी तो तीन साल से चल रही है। आपने चेकअप ही नहीं कराया, इसलिए तीन साल बाद पता चला। इस तरह आत्मा को सब बातों का पता नहीं चलता, मोटी-मोटी अनुभूतियाँ अवश्य हो जाती हैं। कहीं पेट दुख रहा है, पाँव दुख रहा है, सर दुख रहा है, जो भी हो रहा है, वह मोटा-मोटा पता चलता है। वो ईश्वर की व्यवस्था है।

२२१

153. शंका- क्या सृष्टि के आदि में जितनी आत्मायें थी, उतनी ही आज हैं अथवा कम या ज्यादा होती रहती हैं?

☯ **समाधान-** आत्मायें उतनी ही हैं, न कम होती हैं, न बढ़ती हैं। कम तो तब होंगी, जब मर जावें। जब मर जायेंगी, तो कम हो जायेंगी। और आत्मा बढ़ेंगी तब, जब नई पैदा होंगी। नई पैदा हो आत्मायें, तो बढ़ जायेंगी। क्या आत्मा पैदा होती हैं, और क्या आत्मायें मरती हैं? आत्मा न मरती हैं, न जन्म लेती हैं। वे उतनी की उतनी ही रहेंगी। इसलिये आत्मायें उतनी ही हैं। अनादिकाल से जितनी थीं, उतनी ही आज हैं। अनन्त काल तक आगे भी उतनी ही रहेंगी, न घटेंगी, न बढ़ेंगी।

154. शंका- यदि मन जड़ है, तो 'मन' बंधन और 'मोक्ष' का कारण कैसे है?

☯ **समाधान-** क्यों जी, कारण बनने में क्या दिक्कत है मन को। अच्छा ये बताईयेः- खीर, पुड़ी, हलवा जड़ है या चेतन? जड़ है न। तो ये चीजें आप खाते-पीते हैं, उसमें सुख लेते हैं, तो वो आपके बंधन का कारण बनती है। जब ये खीर-पुड़ी, हलवा, मिठाई आदि जड़-वस्तुएँ आपके बंधन का कारण हो सकती हैं, तो मन भी जड़ है, वो बंधन का कारण क्यों नहीं हो सकता? एक शास्त्र में तो लिखा ही है 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः' अर्थात् मन ही मनुष्यों के बंधन और मोक्ष का कारण है। इस बात का अभिप्राय यह मत समझना कि जड़-वस्तु हमको अपनी स्वतंत्रता से बांध लेती है। शायद प्रश्न पूछने वाले इस भावना से पूछ रहे हैं, कि जड़-वस्तुएँ हमको कैसे बाँध लेगी? जड़-वस्तु होकर के भी हमें बाँध लेती है, पर वो हमें बाँधने में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। यदि हम बंधना चाहें, तो वो हमको बाँध सकती है। यदि हम नहीं बंधना चाहें तो नहीं बाँध सकती।

उदाहरण- एक व्यक्ति ठंडी के मौसम में सो रहा था। उठने का समय हो गया, और वो उठ नहीं रहा था। तो उसके घर के दूसरे व्यक्ति ने कहा- भई उठो, क्या बात है ऑफिस नहीं जाना है क्या? वो कहता है- जी

२२२

मैं क्या करूँ, मैं तो उठना चाहता हूँ, पर यह रजाई मुझे नहीं छोड़ती। अब बताईये, रजाई नहीं छोड़ती या वो रजाई को नहीं छोड़ रहा। और बोलता क्या है, यह रजाई मुझे नहीं छोड़ती। ठीक इसी तरह से मन सीधा-सीधा बंधन का कारण नहीं है। न मन सीधा-सीधा मोक्ष का कारण है। बंधन और मोक्ष का कारण सीधा-सीधा तो जीवात्मा है। जीवात्मा अगर मोक्ष में जाना चाहे, तो मन उसको मोक्ष में जाने के लिए पूरा सहयोग देगा। और जीवात्मा बंधन में ही रहना चाहता है, वो मोक्ष में जाना ही नहीं चाहता, तो फिर मन उसको बंधन में डाल देगा। मन का कोई दोष नहीं है। मन एक जड़ वस्तु है, फिर भी वो इस नाम से कह दिया जाता है। जैसे यह कह दिया जाता है, कि मेरी तो इच्छा है, पर यह रजाई मुझे नहीं छोड़ रही। जैसे वो मोटी सी बात कह दी, ऐसे ही ये मोटी सी बात है। मन का संचालन आत्मा के अधीन है। आत्मा चाहेगा, तो मन से बंधन अथवा मोक्ष दोनों कर सकता है।

155. शंका- श्रीराम ने बाली का वध छुपकर के किया, और छुपकर के दुश्मन को मारना या किसी को मारना, यह तो गद्दारी है। ऐसा कुछ लोग कहते हैं?

☯ **समाधान-** जब युद्ध के नियमों का उल्लंघन किया जाये अथवा जो विधि-विधान है, कानून है, जो हमारा कर्तव्य है, हम उसको भंग करते हैं, तो उसका नाम गद्दारी है, उसका नाम देशद्रोह है। युद्ध में तो रणनीति में कई तरह के नियम होते हैं। उसमें सामने से भी हमला होता है, छुपकर के भी होता है। दुष्ट के साथ तो छुपकर के ही व्यवहार किया जाता है, यह तो युद्ध का नियम है। श्रीराम जी ने युद्ध के नियम का पालन किया, उल्लंघन नहीं किया। इसलिये उनको गद्दार नहीं कह सकते। जब श्रीराम जी ने तीर मार दिया, और फिर श्रीराम जी सामने आ गये, तो बाली ने पूछा कि- भई! श्रीराम जी आपने मुझको छुपकर के मारा, यह तो आपने ठीक नहीं किया। यह तो नियम का उल्लंघन किया। आपने मुझे किस अधिकार से मारा? आपको लड़ना था तो मेरे सामने आकर लड़ते, तो पता चलता कि कितने क्षत्रिय हो। छुपकर के मारा, यह तो

२२३

आपने नियम तोड़ दिया। उस समय श्रीरामचंद्र जी ने क्या उत्तर दिया। श्रीराम ने कहा, कि हम जिस परिवार से आये हैं, जिस वंश के हैं, उस वंश का इस धरती पर चक्रवर्ती शासन है। इस समय महाराजा भरत चक्रवर्ती राजा हैं। तुम महाराजा भरत के अंतर्गत उनके अधीन हो। महाराजा भरत के अंतर्गत रहते हुए तुमने अपने भाई पर अन्याय किया है, अत्याचार किया है। पहले गलती तुमने की है। और हम महाराजा भरत की ओर से तुमको दंड देने आये हैं। हमने दंड देकर के न्याय किया है। हमने कोई छल-कपट नहीं किया, कोई धोखा नहीं दिया। यह श्रीराम ने ऐसा न्यायपूर्ण उत्तर दिया। इसलिये उन्हें गद्दार कहना गलत है।

156. शंका- हमारा ज्ञान सत्य है, या नहीं। यह जानने के लिये अपने ज्ञान की तुलना किसके ज्ञान के साथ करनी चाहिये?

☯ **समाधान-** हम कोई बात समझ रहे हैं। वो ठीक समझ रहे हैं, या गलत समझ रहे हैं, इसका निर्णय करने के लिये अपने ज्ञान की तुलना वेद के साथ करनी चाहिये। अथवा अन्य प्रमाणों के साथ करनी चाहिये। प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण आदि-आदि प्रमाणों से तुलना करनी चाहिये, कि मैं तो यह समझ रहा हूँ, और इस बारे में शब्द प्रमाण क्या कह रहा है, वेद क्या कह रहा है, ऋषि लोग क्या कह रहे है। यदि वे भी वही कुछ कह रहे हैं, जो मैं समझ रहा हूँ, तो मेरा ज्ञान ठीक है। और वेद कुछ और कह रहा है, और मैं कुछ और समझ रहा हूँ, तो इसका मतलब गड़बड़ है। गड़बड़ कहाँ है, मुझमें या वेद में ? मुझमें गड़बड़ है, वेद झूठा नहीं है। हमारे समझने में भूल हो सकती है, ईश्वर के कहने में भूल नहीं है। इस प्रकार अपने ज्ञान का निर्णय करने के लिये वेद से तुलना करो, ऋषियों के ग्रन्थों से तुलना करो तो पता चल जायेगा कि हम ठीक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं अथवा हम गड़बड़ (भ्रान्ति) में है।

157. शंका- जहाँ अपना अनुभव काम नहीं कर पा रहा हो, स्थिति डावाँडोल हो रही हो, तब योगाभ्यासी किसके आधार पर दृढ होता है?

☯ **समाधान-** तो इसका उत्तर यही है, कि अपने से जो अधिक अनुभवी लोग हैं, अपने से जो अधिक योग्य हैं, प्राचीन काल के ऋषि मुनि हैं और वेद हैं, उन ग्रन्थों को देखना चाहिये। महान् पुरुषों को देखना चाहिये, कि वे लोग ऐसी परिस्थिति में क्या करते थे। शास्त्र क्या बोलते हैं, कि जब हमारी स्थिति खराब हो रही हो, तब ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिये। उन प्राचीन ऋषि मुनियों के जीवन वृत्तान्त से, उनके इतिहास से, उनकी दिनचर्या से, उनकी शैली से हमें पता चल जायेगा, कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये।

158. शंका- योगाभ्यास को कष्ट न समझकर करें, तो क्या उसमें सफलता मिल सकती है?

☯ **समाधान-** बिल्कुल मिल सकती है। योगाभ्यास को कष्ट मानकर के मत कीजिये, तपस्या मानकर के कीजिये, तो आपको सफलता मिलेगी। कष्ट मानकर करेंगे, तो सफलता नहीं मिलेगी। आप योगाभ्यास को कष्ट मानकर करेंगे, तो मन में खिन्नता हो जायेगी, मन चंचल हो जायेगा, अस्थिर हो जायेगा, तो सफलता नहीं मिलेगी। तपस्या मानकर करेंगे तो मन में प्रसन्नता होगी, शांति और स्थिरता होगी और आप योगाभ्यास में सफल हो जायेंगे।

159. शंका-क्या हजारों वैज्ञानिकों की तुलना में एक ब्रह्मवेत्ता द्वारा संसार का उपकार अधिक होता है?

☯ **समाधान-** हाँ! बिल्कुल अधिक होता है। ये सैकड़ों वैज्ञानिक मिलकर के विज्ञान के अविष्कार तो कर देंगे और अच्छी चीजें भी बनायेंगे, बना भी रहे हैं। इन्होंने बड़ा अच्छा परिश्रम किया, हम इनकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन **जो मनुष्य की मूल आवश्यकता है, उसकी पूर्ति वैज्ञानिक लोग नहीं कर सकते।** ये रेडिया बना देंगे, टेलीवीजन बना देंगे, सैटेलाईट बना देंगे, कम्प्यूटर बना देंगे, मोबाईल फोन बना देंगे, सारी सुविधा दिला देंगे, पर व्यक्ति को इससे आगे शांति भी चाहिये। वो शांति ये नहीं दिला सकते। वो इनके बस की बात नहीं है। **हजारों वैज्ञानिक भी मिलकर के मनुष्य की अंतिम इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकते लेकिन एक ब्रह्मवेत्ता कर सकता है। वो लोगों को शांति दिला सकता है। उसके पास समाधान है।** जैसे एक विद्यार्थी गया था काकरिया तालाब में डूबने के लिये, तो एक वृद्ध व्यक्ति ने उसको समझा दिया न, और उसको समझ में आ गई बात। फिर उसने मरना कैन्सिल कर दिया। तो ऐसे ही एक ब्रह्मवेत्ता लोगों की आखिरी इच्छा पूर्ण कर सकता है।

जब तक व्यक्ति के पास शांति नहीं है, तब-तक उसके पास सारे साधन होते हुये भी उसका जीवन व्यर्थ है। वेद आदि शास्त्र, ऋषि मुनि लोग इस बात को मानते हैं, कि यदि आपके पास शांति है, तो सब कुछ है। और शांति नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। भौतिक साधन कितने भी हों, उससे आपका जीवन संतुष्ट नहीं होगा, तृप्त नहीं होगा। और फिर अन्त में लोगों को वहीं समाधान दिखता है- जापान वाला। आत्महत्या कैसे करें?

160. शंका- क्या व्यक्ति को बुरे कर्म करने के पश्चात अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा अथवा कुछ योनियों के पश्चात् वापस मानव जन्म मिलेगा?

☯ **समाधान-** एक व्यक्ति ने 20 हजार रुपये की चोरी की, दूसरे व्यक्ति ने दो अरब रुपये की चोरी की। **चोरी दोनों ने की, इसलिए दोनों अपराधी हैं।** निःसंदेह दोनों को दण्ड मिलेगा।

क्या दण्ड की मात्रा दोनों की समान रहेगी, या कम अधिक? दण्ड की मात्रा कम-अधिक होगी। क्योंकि दोनों को बराबर दण्ड दिया जाये, तो यह न्याय थोड़े ही होगा, यह तो अन्याय होगा। **एक ने अपराध थोड़ा किया, तो उसको थोड़ा दण्ड। और एक ने अधिक अपराध किया, तो उसको अधिक दण्ड, यह न्याय है।** किसी ने 20 हजार पाप किये, किसी ने 50 हजार पाप किये। और दोनों को ही 84 लाख योनियों में डाल दें, तो फिर यह न्याय कहां होगा? जिसने जितना अपराध किया, उतनी ही योनियों में जायेगा, दण्ड भोगेगा, धक्का खायेगा और लौटकर वापस मनुष्य बनेगा। जिसने थोड़ा अपराध किया, वह थोड़ी योनियों में धक्का खायेगा। जिसने ज्यादा अपराध किये, वो ज्यादा योनियों में जायेगा। इसलिये सब को 84 लाख योनियों में नहीं जाना। यही न्याय है।

161. शंका- वेद के होते हुए भी 'गीता' का उपदेश देने का क्या प्रयोजन है?

समाधान- गीता बहुत अच्छी पुस्तक है, उसमें बहुत सारी बातें ठीक हैं। वे वेद व्यास जी की लिखी है। उसमें श्रीकृष्ण जी का उपदेश है। जो व्यक्ति कर्तव्य से विमुख हो गया, उसको कर्तव्य परायण बनाने के लिये ग्रन्थ है। व्यक्ति उसको पढ़ के जोश में आयेगा और अपना काम शुरू कर देगा। बस गीता का इतना ही प्रयोजन है।

- गीता का उपदेश किसने दिया था? श्रीकृष्ण जी ने। किसको दिया था? अर्जुन को। कहाँ पर दिया था? युद्ध के मैदान में। क्यों दिया था? अर्जुन बेचारा ढ़ीला पड़ गया था। ये सारे चाचा-मामा, ताऊ सामने खड़े हैं। इनको मारूंगा, तो मुझे पाप लगेगा, मुझे तो नरक में जाना पड़ेगा। मैं नहीं लड़ँगा। वो बेचारा घबरा गया, उसको भ्रान्ति हो गई, उसने हथियार छोड़ दिये।

- इस स्थिति में श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को उपदेश दिया। क्या उपदेश दिया? अर्जुन देख, इस समय तेरी बुद्धि काम नहीं कर रही। तुझे भ्रान्ति हो गई है। तू यह समझता है कि ये चाचा-मामा, ताऊ सारे मार डालँगा, तो पाप लगेगा। तुझे पाप नहीं लगेगा। मैं ठीक होश में हूँ और जो कहता हूँ, मेरी बात सुन। तेरी बुद्धि इस समय ठीक काम नहीं कर रही है। तू इनको मार, तुझे कोई पाप नहीं लगेगा।

- क्यों मार? क्षत्रिय का धर्म क्या है? जो अन्याय के विरूद्ध लड़ता है, वो क्षत्रिय कहलाता है। जो अन्यायी का विनाश करे, वो क्षत्रिय है। अब ये सारे जितने लोग खड़े हैं, सब अन्याय के पक्ष में हैं, तो इनको मारना तेरा धर्म है। अब तू अपने धर्म का पालन नहीं करेगा, तो लोग क्या कहेंगे, कि अर्जुन तो कायर था, मैदान में पीठ दिखाकर भाग गया, हथियार छोड़कर भाग गया। क्षत्रिय तो अपने धर्म का पालन करता है। अन्यायकारियों को मारना, यह क्षत्रिय का धर्म है। तू क्षत्रिय है, उठा अपने तीर-तलवार और मार इन लोगों को। फिर तुझे क्यँ लगता है, कि मैं इन चाचा-मामा, ताऊ को मारूंगा, तो मुझे पाप लगेगा।

- अब यह तो प्रासंगिक बात आ गई कि चाचा-मामा, ताऊ, गुरू, रिश्तेदार जो भी हैं, ये तो आत्मायें हैं। रिश्ता किन से है, आत्माओं से है, या शरीर से है? रिश्ता तो आत्माओं से है, और आत्मा तो मरती नहीं। फिर तू क्यों डरता है, किसको मार डालेगा, कोई नहीं मरने वाला।

यह तो प्रासंगिक बात थी, जो उसकी भ्रान्ति दूर करने के लिये कहना पड़ी। और लोगों ने इसी को ऊंचा चढ़ा दिया। आत्मा अजर-अमर है, इसको जान लो, इसका साक्षात्कार करो, इसी से मुक्ति हो जाती है। यह कोई ' मुक्ति प्राप्ति के लिये उपदेश नहीं था। यह तो एक ढ़ीले-ढ़ाले क्षत्रिय को जोश दिलाने वाला ग्रन्थ था। और कृष्ण जी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से उपदेश दिया और वे अपने कार्य में सफल हो गये। अर्जुन की भ्रान्ति दूर हो गई और उसने कहा, "ठीक है गुरूजी, बात मेरी समझ में आ गई। मैं लड़ँगा। योगेश्वर, मेरी बुद्धि ठीक हो गई, अब सारी भ्रान्ति दूर हो गई। अब आप जो कहते हो, मैं वही करूंगा। लाओ, मेरा हथियार कहाँ है।" तो यह थी गीता। यह इतिहास का ग्रन्थ है, क्षत्रियों का ग्रन्थ है। उस भावना से गीता को पढ़िये।

- आपको पता है कि गीता कहाँ से निकली? 'उपनिषद' में से। उसके महत्व में यही तो लिखा है न। गीता जो है, उपनिषद का सार है। और उपनिषद कहाँ से आये? वो वेद का सार हैं। इस तरह गीता तो सार का भी सार है। सार का सार पढ़ेंगे, तो थोड़ी जानकारी होगी। ओरिजनल टैक्स्टबुक पढ़ेंगे, तो आपकी नॉलेज अच्छी होगी। वेद ओरिजनल टैक्स्टबुक है, वो ईश्वर ने दिया। और उसका सार उपनिषद् है। और उसका भी सार गीता है।

- यदि मोक्ष में जाना हो, तो उसके लिये दर्शन है, उपनिषद है, वेद हैं, इन ग्रन्थों को पढ़िये। तब आपका मोक्ष होने वाला है।

- 'टैक्स्टबुक' पढ़ने से अधिक अच्छी जानकारी होती है या ट्वेन्टी इम्पोर्टेन्ट क्वेश्चन पढ़ने से ज्यादा अधिक जानकारी होती है? 'टैक्स्टबुक' पढ़ने से अच्छी नॉलेज होती है। गीता कोई टैक्सबुक है क्या? गीता तो 'ट्वेन्टी इम्पॉर्टेन्ट क्वेश्चन' सीरीज है। ओरिजनल टैक्स्टबुक को पढ़िये, वो 'वेद' है। वेद पढ़िये, फिर आपका नॉलेज अच्छा होगा और फिर आप मोक्ष में जा सकते हैं।

- कुछ गड़बड़ बातें बाद में लोगों ने इसमें मिक्स कर दीं। उनको अलग कर दीजिये और जो अच्छी बातें हैं, उन्हें स्वीकार कीजिये।

162. शंका-जब ध्यान में बैठा जाये, तो क्या देखने का प्रयत्न किया जाये। अंधकार, प्रकाश, ओम, प्रतीक या कुछ और?

☯ **समाधान-** तो देखिये! यह लम्बा-चौड़ा विषय है। और हर व्यक्ति का स्तर एक जैसा नहीं होता है। अलग-अलग स्तर के व्यक्ति के लिये अलग-अलग प्रकार के अभ्यास हैं। पहले-पहले ऑख खोलकर के भी आप किसी वस्तु को देख सकते हैं। ऐसा पांच दिन, दस दिन, पन्द्रह दिन करें, बहुत दिन नहीं करें। दीवार पर एक ओम अक्षर लिख लीजिये और उस ओम को देखिये। स्थिर दृष्टि से दस-पांच दिन उसको देखिये। पाँच मिनट, दस मिनट रोज देखिये। तो देखते-देखते आपको दृष्टि स्थिर करने का अभ्यास हो जायेगा। उसके बाद फिर इस अभ्यास को बन्द कर देंगे। अगला अभ्यास करेंगे।

फिर आंख बंद करके मन के अंदर कोई प्रकाश, कोई सूर्य, कोई चन्द्रमा, कोई दीपक इस तरह की कोई प्रकाश वाली वस्तु को देखेंगे। आँख बंद करके पांच दिन, दस दिन, पन्द्रह दिन तक देखेंगे, इससे अधिक नहीं। नहीं तो फिर उसी अभ्यास में चिपक जायेंगे, उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा। यह प्रारंभिक अभ्यास है। पहले आंख खोलकर करें, फिर आंख बंद करके करें। आँख बन्द करके कोई प्रकाश देंखे, कोई दीपक देखें, कोई चन्द्रमा देखें, फिर धीरे-धीरे और अगला अभ्यास शुरू करें।

धीरे- धीरे सब प्रकाश को समाप्त कर दें। जैसे मान लीजिये-अमावस्या की रात है, तो उस दिन चन्द्रमा भी नहीं होता और रात को सूरज भी नहीं दिखता। और मान लीजिये कि- खूब गहरे बादल छाये हुये हैं, तो तारे भी नहीं दिखेंगे, उनका भी प्रकाश नहीं है। और यह जो सरकारी बिजली आती है, वो भी बंद। अब तो सब तरफ घुप्प अंधेरा हो जायेगा। फिर ऐसा देंखें, सब तरफ से अंधकार ही अंधकार, कोई प्रकाश नहीं। मन में ऐसा देखेंगे, तो क्या होगा ? आपको केवल यह आकाश दिखाई देगा, शून्य आकाश। इस शून्य आकाश में अब ईश्वर का विचार करेंगे। ईश्वर एक देशीय है, या सर्वव्यापक ? सर्वव्यापक है। यह सिद्धांत की बात है। तो जब ध्यान में बैठेंगे, तब सिद्धांत का क्रियात्मक रूप देखेंगे। उसको प्रैक्टिकल करेंगे, कि ईश्वर सर्वव्यापक है। जैसे आकाश दूर तक फैला हुआ है और आकाश की कोई आकृति नहीं है अर्थात् आकाश निराकार है। जैसे आकाश दूर तक फैला हुआ है, निराकार है, ऐसे ही ईश्वर भी आकाश के समान दूर तक फैला हुआ है। और वो भी निराकार है। उसकी भी कोई आकृति नहीं है। तब ऐसे ईश्वर का ध्यान करेंगे, तो आपको सफलता मिलेगी।

२३०

163. शंका- मोक्ष में जीवात्मा आनंद का अनुभव कैसे करता है। क्या वह समझता है, कि आनंद प्राप्त कर रहा है?

☯ **समाधान-** हाँ बिल्कुल, मोक्ष में उसको पूरा अच्छी तरह अनुभव होता है, कि मैं आनंद प्राप्त कर रहा हूँ। जैसे- आपके सामने प्लेट में रसगुल्ले रखे हैं, और आप जाग रहे हैं, अच्छी तरह होश में हैं। आप जब रसगुल्ले खा रहे हैं, तो आपको पता चलता है, कि रसगुल्ले का स्वाद ले रहे हैं। जैसे आप जागृत अवस्था में रसगुल्ले, मिठाई खाते हैं, उसका स्वाद मिलता है, सुख मिलता है। और आप समझ रहे हैं कि हम रसगुल्ले का स्वाद ले रहे हैं, उसका सुख भोग रहे हैं। ऐसे ही मोक्ष में जीवात्मा को पूरा-पूरा होश रहता है। उसे पूरा-पूरा पता चलता है, कि हम ईश्वर का आनंद ले रहे हैं। ईश्वर का आनंद उसको मिलता रहता है। और वो ठीक ऐसे ही समझता है, जैसे हम जागृत अवस्था में यहाँ संसार में समझते हैं, कि हम सुख भोग रहे हैं। यह मोक्ष में जीवात्मा द्वारा आनंद भोगने की स्थिति है।

164. शंका- किसी ने चोरी की और भगवान ने नहीं देखा। क्या यह हो सकता है?

☯ **समाधान-** ऐसा नहीं हो सकता, कि किसी ने चोरी की और भगवान ने उसे देखा नहीं। भगवान सब जगह रहता है और सबको देखता है। जो भी चोरी करता है, भगवान उसे देखता है। फिर उसके कर्मों के खाते में जमा कर देता है। और समय आने पर उसको दण्ड भी देता है।

२३१

165. शंका- 'सर्वान्तर्यामी' का अर्थ क्या है?

☯ **समाधान-** 'सर्व' यानि सभी में, 'अन्तर्यामी' अर्थात् अन्दर रहकर नियंत्रण करने वाला। जो सबके अन्दर रहता है, मन की सारी बातें जानता है और नियंत्रण करता है, यह सभी बातें सर्वान्तर्यामी से जुड़ी हुई हैं। 'ईश्वर' सर्वान्तर्यामी है। जब व्यक्ति बुरी योजना बनाता है, तो ईश्वर अन्दर से भय, लज्जा व शंका उत्पन्न करता है और वह बुरा काम करने से रोकता है। यही ईश्वर का नियंत्रण है। इसके विपरीत, जब व्यक्ति अच्छी योजना बनाता है, तो ईश्वर आनंद व उत्साह देता है, प्रोत्साहित करता है। सर्वान्तर्यामी ईश्वर हाथ पकड़कर किसी काम से नहीं रोकता, बल्कि मानसिक रूप से ही बुरा काम करने की मनाही करता है और सही काम के लिए प्रेरित करता है। यही उसका 'सर्वान्तर्यामी' रूप है।

166. शंका- जो संन्यासी होते हैं, उनका मुख्य लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना अथवा समाधि प्राप्त करना होता है। एक योगाभ्यासी बनने के लिये हमें लोभ, मोह, लालच नहीं करना चाहिये। सवाल उठता है, कि क्या ईश्वर को प्राप्त करना लोभ, मोह, लालच नहीं है?

☯ **समाधान-** ईश्वर को प्राप्त करना या मोक्ष प्राप्त करना, कोई लोभ नहीं है। लोभ की परिभाषा अलग है। जब परिभाषा पकड़ लेंगे, तो प्रश्न स्वतः सुलझ जायेगा। दो साबुन खरीदो और तीसरा मुफ्त में, यह लोभ है। आप बिना कर्म किये वस्तु प्राप्त करना चाहते हैं। कर्म तो किया आपने दो साबुन का और प्राप्त करना चाहते हैं तीन। तो बिना पुरूषार्थ किए, बिना कर्म किये, बिना पेमेंट किये, बिना पैसा दिये, आप जो मुफ्त में लेना चाहते हैं, उसका नाम है-लोभ।

जो संन्यासी बनता है, ईश्वर प्राप्त करना चाहता है, मोक्ष प्राप्त करना चाहता है, तो क्या वो मुफ्त में प्राप्त करना चाहता है या पुरूषार्थ

करके प्राप्त करना चाहता है? पुरूषार्थ करके। तो लोभी नहीं हुआ। बिना पुरूषार्थ किए वह मोक्ष प्राप्त करना चाहे, तब तो वो लोभ है। लेकिन वो तो पुरूषार्थ करता है, पूरी मेहनत करता है।

और यह नियम है, कि जो पुरूषार्थ करेगा, उसको फल अवश्य मिलेगा। जैसा कर्म, वैसा फल। ईश्वर न्यायकारी है, फल तो देगा। तो यदि पुरूषार्थ करके कोई व्यक्ति धन प्राप्त करना चाहता है, तो यह न्याय की बात है, उचित बात है, धर्म की बात है। तो करो पुरूषार्थ, क्योंकि इसमें तो कोई आपत्ति नहीं है। वैसे ही कोई पुरूषार्थ करके ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है, तो यह न्याय की बात है, वो लोभ नहीं है। इसलिये ईश्वर प्राप्ति करना या मोक्ष प्राप्ति करना कोई लोभ नहीं है, कोई अधर्म नहीं है, कोई अन्याय नहीं है। यह बिल्कुल उचित है। ऐसा आप भी कर सकते हैं। इसलिए जोर लगाओ, संन्यासी बनो।

संन्यासी बनने से तो लोगों को डर लगता है, कि हमको संन्यासी बनवा देंगे, घर छुड़वा देंगे। मोक्ष में जाने के लिये संन्यास लेना अनिवार्य (कम्पलसरी) है। आज लो, बीस जन्म बाद लो, पचास जन्म के बाद लो, लेना तो पड़ेगा और कोई रास्ता नहीं है।

मोक्ष का रास्ता क्या है? पहले मनुष्य का जन्म धारण करो। और फिर मनुष्यों में ऊँचे-ऊँचे स्तर के मनुष्य बनते जाओ, ऊँची-ऊँची योग्यता प्राप्त करते जाओ। पहले शूद्र के यहाँ जन्म हो गया। फिर पुरूषार्थ करके हमने अच्छे कर्म किये, मेहनत की, तो वैश्य के गुणकर्म को धारण कर लिया, फिर वैश्य बन गये। जन्म की बात नहीं कर रहा हूँ, वर्ण-व्यवस्था गुण कर्मों से है, जन्म से नहीं। वैश्य वाली योग्यता प्राप्त कर ली, उसके बाद फिर और ऊँचे उठे, क्षत्रिय बन गये। फिर और ऊँचे उठे, ब्राह्मण बन गये। फिर ब्राह्मणों में भी और ऊँचे ब्राह्मण बन गये। फिर उनमें भी और ऊँचे उठे, संन्यासी बन गये। और संन्यास के बाद फिर मोक्ष होता है। यह है क्रम। मोक्ष में जाने की पद्धति इस प्रकार से है। तो जो-जो मोक्ष में जाना चाहते हैं, उनको यह सब क्रम अपनाना पड़ेगा। योग्यता बनानी पड़ेगी, ब्राह्मण बनना पड़ेगा, संन्यासी बनना पड़ेगा, घर छोड़ना पड़ेगा, संसार छोड़ना पड़ेगा, तब मोक्ष होगा। <u>मेरा प्रवचन सुनकर के, आप जोश में आकर, कल ही घर मत छोड़ देना। करना यही पड़ेगा, लेकिन कब करें?</u> उसके लिए तैयारी करनी पड़ेगी, योग्यता बनानी पड़ेगी। आपको घर छोड़ने की तैयारी करने में पाँच-दस वर्ष निकल जायेंगे। आज से आप सोचना शुरू करें, कि हमें घर छोड़ना है, हमें वानप्रस्थ लेना है, हमें संन्यास लेना है, योग्यता बनानी है। तो उसमें भी पाँच-दस वर्ष निकल जायेंगे।

इसलिये जोश में आकर कोई काम नहीं करना चाहिये। होश में रहकर बुद्धिमत्ता से अपने सामर्थ्य को ध्यान में रखकर के करना चाहिये। तैयारी जरूर कर सकते हैं। तैयारी तो आप आज से भी शुरू कर सकते हैं, कि हम समय आने पर योग्यता बनाकर वानप्रस्थ लेंगे, संन्यास लेंगे।

167. शंका- मोक्ष की इच्छा एक कामना है, मोक्ष की कामना से किया हुआ निष्काम कर्म सकाम हो सकता है?

☯ **समाधान-** पूछना शायद ऐसा चाहते हैं कि मोक्ष की कामना भी तो एक कामना है? यदि मोक्ष की कामना से कर्म किया गया, तो फिर वो निष्काम कर्म कैसे हुआ? कामना तो उसमें भी है। महर्षि दयानंद जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में परिभाषा लिखी है कि- "परमेश्वर प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर जो कर्म किये जाते हैं, उसका नाम ही निष्काम कर्म है।" बिना कामना के तो कर्म हो ही नहीं सकता, वह असंभव है। व्यक्ति जो भी क्रिया करता है, वो कामनापूर्ण ही होती है। यह बात 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखी है। हमें पता भी नहीं चलता कि हमने कितनी बार आंख बंद की और कितनी बार खोली। वो भी जब बिना इच्छा के नहीं होती। तब यज्ञ करना, दान देना, सेवा करना, प्रचार करना आदि इतने बड़े-बड़े काम बिना इच्छा के कैसे हो सकते हैं? नहीं हो सकते। कामना तो जरूर है, पर कामनाओं में अंतर है। लौकिक सुख की कामना किया तो वह सकाम कर्म है। और मोक्ष सुख की कामना से कर्म किया तो निष्काम कर्म है। ऐसा जानना चाहिये।

168. शंका-प्रकृति तीन तत्त्वों का समुदाय है ? इनमें सत्त्व प्रकाशशील, सुखस्वरूप, रजोगुण क्रिया शील, तमोगुण स्थितिशील है। प्रकृति से बने संसार अर्थात् विकृति में ये तीनों गुणों को देखकर ऐसा संदेह होता है कि ये गुण ही स्वयं विकृति करते हैं। फिर सृष्टि निर्माण में ईश्वर की क्या और क्यों आवश्यकता है?

☯ **समाधान-** प्रश्न का भाव है कि प्रकृति तीन तत्त्वों का समुदाय है। इनमें सत्त्व प्रकाशशील, सुखस्वरूप, रजोगुण क्रियाशील, तमोगुण स्थितिशील है। प्रकृति से बने संसार अर्थात् विकृति में ये तीनों गुण स्पष्ट दिखाई देते हैं अर्थात् सृष्टि प्रकाशशील, क्रियाशील और स्थितिशील है। इसे देखकर ऐसा संदेह होता है कि ये गुण ही स्वयं विकृति करते हैं। ईश्वर का निमित्त होना संदेहात्मक हो जाता है। परमात्मा प्रकाश, क्रिया, स्थिति को उत्पन्न नहीं कर सकता, क्योंकि ये गुणों के अपने स्वभाव हैं। फिर सृष्टि निर्माण में ईश्वर की क्या और क्यों आवश्यकता है?

इस प्रश्न का उत्तर है कि चीनी में मिठास है, और दूध और चावल में अपने-अपने गुण हैं। तीनों को कोई पाचक, पकाने वाला व्यक्ति मिक्स कर दे तो बढ़िया सी मीठी खीर बनती है। क्या मीठी खीर को देखकर यह कहा जा सकता है, कि ये तीनों चीज अपने आप मिलकर खीर बन गई हैं। क्या ऐसा कह सकते हैं कि - पाचक की कोई जरूरत नहीं है ? नहीं कह सकते। पाचक के बिना, पकानेवाले के बिना, रसोईये के बिना क्या खीर-पुड़ी हलवा मिठाई बन सकती है। हाँ या न? नहीं बन सकती न। तो पाचक की आवश्यकता है। भले ही पाचक जब खीर-पुड़ी बनायेगा, तो अपने अंदर से उसमें मिठास नहीं डालेगा। पाचक ने अपने अंदर से मिठास नहीं डाली, वो मिठास चीनी का गुण है। मिठास डाली चीनी से। लेकिन उसकी जो एसेम्बलिंग है, जो व्यवस्थित रेशो (अनुपात) में मिक्स करना है, उसको पकाना है, यह क्रिया तो कम से कम पाचक की है। मिठास चीनी की मान लेंगे, दूध का गुण दूध का मान लेंगे, चावल का गुण चावल का मान लेंगे। वो तो मटेरियल का अपना गुण है। ठीक है। पर रसोई में चावल भी रखा है, दूध भी रखा है, चीनी अलग डिब्बे में रखी है तो क्या खीर बन

जायेगी अपने आप ? इसी प्रकार से प्रलय की स्थिति में सत्त्वगुण था, पर उसका प्रकाश उद्‌बुद्ध नहीं था। जैसे इस समय सूर्य का प्रकाश उद्‌बुद्ध है। इसकी असेम्बलिंग ईश्वर ही करता है। वो न करे, तो अंधेरा ही रहे। वेद का प्रमाण सुन लीजिये – 'तम आसीत् तमसा गूढमग्रे' । ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में लिखा है– सृष्टि उत्पन्न होने से पूर्वतमः आसीत् अंधकार था, कुछ भी प्रकाश नहीं था। सत्त्वगुण तो तब भी था। फिर भी प्रकाश नहीं था। ईश्वर ने उस सत्त्वगुण में से प्रकाश को विकसित (डेवलप) किया। क्रियाशील रजोगुण में ऐसी क्रिया नहीं थी, जैसी आज सूर्य और पृथ्वी में है। ईश्वर ने उसको डेवलप किया, व्यवस्थित किया। इनमे अपने आप होने की क्षमता नहीं है, ईश्वर इनको व्यवस्थित करता है, इसलिये ईश्वर का रोल है। उसकी जरूरत है।

169. शंका– हम अध्यापक हैं, और हमारे विद्यार्थी बार-बार कहने पर भी मानते नहीं, तो हमें गुस्सा आता है। क्या यह सही है?

☯ **समाधान–** विद्यार्थी नहीं मानते, तो न मानें। विद्यार्थी नहीं सुधरते तो न सुधरें। लेकिन क्रोध कर हम नहीं बिगड़ेंगे। हम बिगड़ने के लिये नहीं आये। हम सुधरने के लिये आये हैं। विद्यार्थी भी सुधरने के लिये आयें। वो सुधरते हैं, तो बहुत अच्छी बात है। और नहीं सुधरते, तो उनसे कह दो अपने घर जाओ, दूसरी संस्था में जाओ, कहीं भी जाओ। हमें मत बिगाड़ो, हम नहीं बिगड़ेंगे। इसलिये हमें क्रोध नहीं करना है।

170. शंका– स्वार्थ की व्याख्या करें? कृपया तीन-चार व्यावहारिक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए?

☯ **समाधान–** स्वार्थ का मतलब होता है– केवल अपने लाभ की बात सोचना, दूसरों के लाभ और भले की बात नहीं सोचना। इसको बोलते हैं 'स्वार्थ'। यह मोटी सी परिभाषा है। पहला उदाहरण– खाने का नंबर आया, तो मुझे खाना मिलना चाहिये, दूसरों को मिले या न मिले, उसकी परवाह नहीं है। यह स्वार्थ की बात है। सोने की बारी आयी, मेरा बिस्तर बढ़िया होना चाहिये, मेरी जगह साफ-सुथरी, पंखे के नीचे होनी चाहिये, दूसरे को पंखे की हवा मिले या न मिले, मुझे कोई मतलब नहीं। यह स्वार्थ की बात है। धंधे व्यापार के क्षेत्र में– मेरी दुकान चलनी चाहिये, दूसरे की चले न चले। यह स्वार्थ की बात है। तो ऐसे आप कितने ही उदाहरण बनाते जायें। खाने में, पीने में, घूमने में, सोने में, जागने में, सुविधा में, बिस्तर में, कपड़ों में। जब केवल व्यक्ति अपने ही मतलब की बात सोचता है, अपने ही लाभ की बात सोचता है, दूसरों के लाभ और भले लिये कुछ नहीं सोचता, तो इसको स्वार्थ कहते हैं। जब व्यक्ति अपने लिये और दूसरों के लिये, यानी दोनों के लिये सोचता है, औरों को भी मिले, मुझे भी मिले, तो वो ठीक बात है, वो स्वार्थ की बात नहीं है, वो परोपकार की बात है। मेरा भी काम चले, दूसरों का भी चले। मैं पढ़ूँ, दूसरे भी पढ़ें। मैं भी सुखी रहूँ, दूसरे भी सुखी रहें। मुझे भी खाने को मिले, दूसरों को भी मिले। मुझे भी सोने की जगह मिले, दूसरों को भी मिले। मैं भी दुःख से छूटूँ, दूसरा भी छूटे। ऐसे सोचना चाहिये।

171. शंका- मोक्ष में आत्मा के साथ में मन, बुद्धि, चित्त, कारण शरीर आदि रहते हैं या नहीं?

☯ **समाधान-** मोक्ष में ये प्राकृतिक शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, इन्द्रियाँ, यह स्थूल शरीर, कोई भी साथ में नहीं रहता। प्रकृति से बना कोई भी शरीर मोक्ष में नहीं रहता। कारण शरीर भी प्राकृतिक है। सत्त्व, रजस, और तमस जो मूल प्रकृति है, उसका नाम ही कारण शरीर है। वो भी साथ नहीं रहता। कोई प्राकृतिक शरीर साथ नहीं रहता मोक्ष में। जीवात्मा के 24 शुद्ध गुण सत्यार्थ-प्रकाश के नौंवे समुल्लास में लिखे हैं। वो साथ रहते हैं। और ईश्वर का आनंद मिलता है। ईश्वर के मुक्तात्मा के साथ होता है। बस मोक्ष में इतना ही होता है। प्रकृति या प्राकृतिक संबंध नहीं होता। **जीवात्मा मुक्ति में परमात्मा की शक्ति से सुनेगा, देखेगा, सारे काम करेगा।** जीवात्मा और परमात्मा दोनों अलग-अलग हैं। दोनों की शक्ति अलग है। ईश्वर की शक्ति के सहयोग से **'मुक्त-आत्मा'** सारे काम करता है। मोक्ष में प्रकृति वाला मन नहीं रहता है। सत्यार्थ प्रकाश का नौंवा समुल्लास पढ़िये। उसमें जीवात्मा की चौबीस शक्तियाँ लिखी हैं। उसमें जीवात्मा की एक मनन शक्ति भी है। वो मनन शक्ति से मनन करेगा, घ्राण शक्ति से सँघेगा, दर्शन शक्ति से देखेगा, श्रवण शक्ति से सुनेगा। पर उसकी अपनी शक्ति बहुत कम है। **जीवात्मा केवल अपनी शक्ति से मुक्ति में सारे काम नहीं कर सकता। उसमें ईश्वर की शक्ति और साथ उसके जुड़ेगी**

172. शंका- समाधि की प्राप्ति में गुरू का कितना सहयोग चाहिये?

☯ **समाधान-** समाधि की प्राप्ति में 'गुरू' का उतना ही सहयोग चाहिए, जितना कि वैज्ञानिक (साइंटिस्ट) बनने के लिए साइंस टीचर का चाहिए। जैसे साइंस टीचर के बिना कोई व्यक्ति साइंटिस्ट नहीं बन सकता, वैसे ही बिना गुरू के 'समाधि' की उपलब्धि संभव नहीं है। वस्तुतः सामान्य नियम तो यही है। हालांकि इसके अपवाद भी हो सकते हैं। कोई ऐसा भी हो सकता है, जो पूर्व जन्म के संस्कार और विद्या लेकर आया हो, वह किसी मनुष्य को गुरू बनाये बिना ही पूर्व संचित विद्या से पुरूषार्थ करके और ईश्वर रूपी गुरू की सहायता से समाधि को प्राप्त कर ले। दरअसल,अपवाद (एक्सेप्शन) हर जगह होते हैं। इसलिए यदि किसी को मनुष्य शरीरधारी गुरू के बिना समाधि प्राप्त हो जाए, तो वह अपवाद की श्रेणी में रखा जाएगा। लेकिन यह सामान्य यही नियम नहीं है। सामान्य नियम तो यही है, कि जैसे गणित पढ़ाने के लिए,साइंस पढ़ाने के लिए,कॉमर्स पढ़ाने के लिए अध्यापक, शिक्षक चाहिए। वैसे ही योग समाधि के लिए भी देहधारी शिक्षक चाहिए, गुरूजी चाहिए।

173. शंका- ईश्वर ने सृष्टि बनाई, यह कैसे सिद्ध करें?

☯ **समाधान-** देखिये, तीन पदार्थ हैं- एक ईश्वर, एक जीवात्मा,एक प्रकृति। इन तीनों के बारे में विचार करेंगे, बारी-बारी से चिंतन करेंगे। फिर कोई न कोई निर्णय हो जाएगा।

पहला प्रश्न- क्या जीवात्मा सृष्टि बना सकता है। उत्तर है- जीवात्मा सृष्टि को नहीं बना सकता। तारों को नहीं बना सकता, पृथ्वी को नहीं बना सकता। यह उसके वश की बात नहीं है। उसमें इतनी शक्ति, बुद्धि व योग्यता ही नहीं है। तो तीन में से एक का निर्णय तो हो गया, कि जीवात्मा सृष्टि नहीं बना सकता।

दूसरा प्रश्न- क्या प्रकृति स्वयं पृथ्वी बना सकती है ? उत्तर है- कभी नहीं बना सकती। क्योंकि उसमें अक्ल ही नहीं है। सृष्टि की रचना को देखने से पता चलता है, कि कितनी बुद्धिमत्ता का इसमें प्रयोग किया गया है। बहुत बुद्धिमता से व्यवस्थित पृथ्वी बनी हुई है। किसी भी पेड़-पत्ते को देख लीजिए। वनस्पति शास्त्र पढ़िये। ऊँचे नीचे वृक्षों की रचना को देखिए, तो आपको पता चलेगा, कि कितनी व्यवस्थित है। शरीर विज्ञान पढ़िये। शरीर रचना को देखिए, कि वो कितनी

व्यवस्थित है। नस, नाड़ियाँ, पाचन तंत्र, तंत्रिका तन्त्र आदि, सारे सिस्टम कितने व्यवस्थित हैं। इनमें जो इतनी व्यवस्था है- इसको प्रकृति अपने आप नहीं बना सकती। उसमें इतनी अक्ल नहीं है। तीन में से दो का निर्णय हो गया। न तो जीवात्मा बना सकता है। उसमें इतनी विद्या और शक्ति नहीं है। न तो प्रकृति स्वयं बना सकती है, क्योंकि उसमें तो बिल्कुल अक्ल ही नहीं है। अब तीन में से दो का निर्णय हो गया। बाकी कौन बचा? जो बचा है, वही सृष्टिकर्ता है। इसमें वही है- परिशेष न्याय। यानी बचे हुए पदार्थ का नियम। तो तीन में से दो बातें कैंसिल हो गयीं। जीव और प्रकृति ने सृष्टि नहीं बनाई। बाकी 'ईश्वर' बचा, उसी ने जगत बनाया। यह अनुमान प्रमाण से सिद्ध हो गया, कि ईश्वर ने ही 'सृष्टि' बनाई है। उसमें इतनी बुद्धि और इतनी शक्ति है, कि वह अकेला ही सारी सृष्टि बना देता है।

ईश्वर की सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाण से कैसे करेंगे? उत्तर है, कि- एक होता है, 'बाह्य प्रत्यक्ष', और एक होता है, 'आंतरिक प्रत्यक्ष'। जब कोई व्यक्ति अच्छा काम करने लगता है, तो उसको अपने अंदर से आनंद, उत्साह, निर्भयता जैसे अनुकूल भाव महसूस होते हैं। और जब बुरा काम करने की योजना बनाता है, तब अंदर से भय, शंका, लज्जा का अनुभव होता है। 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है- यह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमेश्वर की ओर से है। अब अगर हमको भय, शंका लज्जा का अनुभव होता है, तो यह प्रत्यक्ष अनुभव है। यह किसकी ओर से है? ईश्वर की ओर से है। यह ईश्वर का आंतरिक प्रत्यक्ष है। परन्तु स्थूल (मोटे) स्तर का प्रत्यक्ष है। इसके बाद का सूक्ष्म प्रत्यक्ष भी होता है, जो सारे जीवों को नहीं होता है। स्थूल प्रत्यक्ष का अनुभव तो सभी लोग कर सकते हैं। जो बुरा काम करेगा, उसके अन्दर भय, शंका, लज्जा होगी। ईश्वर अपना सिग्नल भेज रहा है, कि गलत काम कर रहे हो। यह है- रेड सिग्नल, यानि खतरा है। मत करो। तो इस तरह ईश्वर का आंतरिक स्थूल अनुभव हो सकता है। विशेष सूक्ष्म प्रत्यक्ष करना हो, तो 'समाधि' लगाइये। समाधि में ईश्वर का विशेष- (सूक्ष्म) अनुभव या प्रत्यक्ष होता है। उसमें ईश्वर से आनन्द, ज्ञान, बल आदि मिलता है। अब समाधि का अनुभव हम आपको शब्दों से नहीं बता सकते। क्योंकि यह अन्दर से स्वयं ही अनुभव करने की वस्तु है। उदाहरण के लिए, जब आपने रसगुल्ला खाया, तब उसमें कैसा टेस्ट लगा? बढ़िया लगा। आप कैसे समझाओगे? नहीं समझा सकते। आप सभी यही कहेंगे, कि 'बड़ा अच्छा है, बड़ा स्वादिष्ट है, बहुत मीठा है।' इतना कहने से

क्या मुझे समझ में आ गया, कि यह कैसा स्वाद है। जब आप रसगुल्लों जैसी स्थूल वस्तु का स्वाद नहीं समझा सकते, तो हम आपको भगवान जैसी सूक्ष्म वस्तु का आनंद कैसे समझाऐंगे? वो तो और बहुत कठिन है। तो शास्त्रकार लिखते हैं- "न शक्यते वर्णयितुं गिरा"अर्थात् वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। "स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।"

अंतःकरण से, अन्दर से ही ईश्वरानुभूति का आनन्द महसूस होता है। उसको हम अन्दर से ही अनुभव कर सकते हैं, वाणी से नहीं समझा सकते। वाणी से सिर्फ इतना ही बोल सकते हैं- बहुत बढ़िया होता है, बहुत अच्छा है, बहुत आनंद आता है। वाणी से इससे अधिक नहीं कह सकते। तो ईश्वर का आन्तरिक सूक्ष्म प्रत्यक्ष कैसा होता है, समाधि लगाओ तब ही पता चलेगा।

174. शंका- कृपया गुणकर्म स्वभाव की परिभाषाएँ बतलाइए। तीनों में क्या भेद है? ईश्वर के गुण-कर्म स्वभाव अलग-अलग बताइए। क्योंकि इनके ओवरलेपिंग होने के कारण कन्फ्यूजन रहता है?

☯ **समाधान-** सही बात है। देखिए, कर्म तो स्पष्ट है। कर्म कहते हैं- क्रिया (एक्शन) को। एक मजदूर ने ईटें उठाकर यहाँ डाल दी। मिस्त्री ने ईटों पर ईट रखके,मसाला डालकर दीवार खड़ी कर दी। यह तो कर्म है। यहाँ स्पष्ट है, कि क्रिया हो रही है, उसका नाम है-कर्म। अब विचारने के लिए दो बातें बची-गुण और स्वभाव।

स्वभाव का अर्थ होता है- 'स्व' का भाव, अर्थात् किसी द्रव्य के अपने गुण। जैसे-अग्नि में गर्मी। यह गर्मी, अग्नि का अपना गुण है, इसे 'स्वभाव' कहेंगे। 'गुण' किसी दूसरे द्रव्य से उधार लिया हुआ भी हो सकता है। जैसे- यदि पानी को अग्नि के सम्पर्क से गर्म कर दिया जाये, तो गर्म पानी में 'गर्मी' पानी का 'गुण' तो कहलाएगा, परन्तु उसका 'स्वभाव' नहीं। क्योंकि वह गर्मी, पानी ने अग्नि से उधार ले रखी है। इस प्रकार से- जो किसी द्रव्य

की विशेषता केवल अपनी है, उसे 'स्वभाव' कह देंगे। और जो बाहर से ले रखी है, उसको 'गुण' कह देंगें। गुण और स्वभाव में ज्यादा अंतर नहीं है। स्वभाव में भी गुण ही होते हैं। अंतर केवल इतना है, कि किसी द्रव्य के अपने गुण हैं, पर्सनल प्रापर्टी है 'स्वभाव'। और यदि किसी दूसरे द्रव्य से उधार ले रखे हों, उन्हें हम 'गुण' कह देंगे। गुण-कर्म स्वभाव की यह एक मोटी-मोटी परिभाषा हो गई।

अब ईश्वर की बात करते हैं। क्या ईश्वर कोई गुण दूसरे पदार्थ से भी धारण करता है, उधार लेता है? नहीं लेता। ईश्वर के जितने भी गुण हैं, वे सारे उसके अपने हैं। इसलिए ईश्वर के संबंध में 'गुण और स्वभाव' में कोई अंतर नहीं।

और कर्म तो स्पष्ट ही है। ईश्वर सृष्टि बनाता है, न्याय करता है। लोगों को मनुष्य, पशु-पक्षी बनाता है- ये कर्म हैं। ईश्वर वेद का उपदेश देता है। उपदेश देना एक कर्म है। ईश्वर कर्म से अलग नहीं है। तो सार यह हुआ, कि ईश्वर के गुण और स्वभाव में अंतर नहीं है। परन्तु मनुष्यों में गुण और स्वभाव का अंतर दिखता है। जैसे जीवात्मा में इच्छा गुण है। कुछ इच्छाऐं ऐसी हैं, जो हमारी अपनी हैं, स्वाभाविक इच्छाऐं हैं- वह हमारा स्वभाव है। कुछ इच्छाऐं ऐसी हैं, जो किन्हीं कारणों से उत्पन्न हो गईं, और वो हट भी जायेंगी। उदाहरण के लिए, सुख प्राप्ति की इच्छा है। सुख मिलना चाहिए। यह तो स्वाभाविक इच्छा है। लेकिन खीर, पूड़ी, हलवा,लड्डू की इच्छा स्वाभाविक नहीं है। जब तक खीर, पूड़ी, हलवा में आपको सुख दिखता है, तब तक वह इच्छा रहेगी। जब उसमें दुःख दिखने लगेगा, वह इच्छा समाप्त हो जाएगी। जो नैमित्तिक इच्छाऐं हैं, उन्हें 'गुण' कहेंगे। नैमित्तिक यानी किन्हीं कारणों से जो इच्छाऐं पैदा हो गईं, तो वह 'इच्छा' गुण कहलाएगा। और जो सदा से अपना गुण हैं, उसका नाम 'स्वभाव' है। जो अनादिकाल से जीव का अपना है। इच्छा है, प्रयत्न है, जो हमेशा से उसके अपने हैं, वह स्वभाव है। और जो किन्ही कारणों से उसमें आ जाते हैं, पैदा हो जाते हैं, तो वो है- 'गुण'। जीवात्मा में ऐसी बात मिल जाएगी, प्रकृति में भी ऐसी बात मिल जाएगी। जैसे अभी बताया था- प्रश्न है- अग्नि के अंदर गर्मी अपनी है या बाहर से ले रखी है। उत्तर है- वह उसकी अपनी गर्मी है। जब चूल्हे के ऊपर पतीला रखकर पानी गर्म करते हैं, तो अब पानी में जो गर्मी आई वो पानी की अपनी है या अग्नि से ली हुई है? उत्तर है- अग्नि से ली हुई है। तो अब देखिए प्रकृति के अन्दर दोनों बातें देख रहे हैं। गर्मी, तापमान अग्नि का अपना है, इसलिए स्वभाव है। और पानी में वो अग्नि से आया हुआ है, इसलिये नैमित्तिक गुण है।

इस तरह हम गुण, स्वभाव, कर्म में अंतर समझ सकते हैं। ईश्वर के मामले में तो गुण और स्वभाव दोनों एक ही जैसे दिखते हैं। उनमें कोई अंतर समझ में नहीं आया। किसी द्रव्य में जो स्वाभाविक गुण होता है, वो उसे कभी नहीं छोड़ता। जो है, वह स्वाभाविक है। अग्नि का गुण गर्मी है, तो क्या वो अग्नि को कभी छोड़ देगी? नहीं छोड़ेगी। स्वाभाविक गुण कभी किसी द्रव्य को नहीं छोड़ता।

अब राग-द्वेष भी जीवात्मा का स्वाभाविक गुण =(दोष) मान लें, तो उसको छोड़ेंगे ही नहीं। नहीं छूटेगा, तो मुक्ति नहीं हो सकती। तो मुक्ति होगी, कि नहीं होगी, क्या समझते हैं? होगी न। तभी मुक्ति होगी, जब राग-द्वेष छूट जाऐंगे। राग-द्वेष छूट जाऐगे तो यह स्वाभाविक गुण नहीं हुआ बल्कि नैमित्तिक हुआ।

175. शंका- समाधि लगने पर अन्तर्ज्ञान प्राप्त होता है। ऋषि-काल में ऋषि लोग अन्तर्ज्ञान से कैसा जानते थे?

☯ **समाधान-** ऋषि लोगों को आंतरिक ज्ञान होता था। उदाहरण कोई भी सौ प्रतिशत साध्य के समान नहीं होता, यह नियम है। उदाहरण मोटे स्तर का होता है, और किसी अंश को समझाने के लिए होता है। आंतरिक ज्ञान कैसा होता है, इसे एक उदाहरण से ऐसे समझें? मान लीजिए, आप बिस्तर पर लेट गए। आंख बंद हो गई और गहरी नींद तो आई ही नहीं। नींद में शुरू हो गया स्वप्न। तो जब आप स्वप्न देखते हैं, तब आंखें तो बंद रहती हैं, फिर भी आपको अंदर से ज्ञान होता है। स्वप्न में चित्र दिखते हैं- एक महल है। उसमें बहुत से नौकर-चाकर हैं, बहुत सुंदर सजा हुआ है। बाहर चौकीदार खड़े हैं, अंदर राजा है। वो आराम से राजमहल में बैठा है। सभा लगी हुई है, बहुत सारे लोग उसकी सेवा कर रहे है। अब देखिए, स्वप्न में अन्दर से ज्ञान हो रहा है या नहीं? जैसे स्वप्न में अंदर से ज्ञान होता है, ऐसे ही ऋषियों को समाधि में अंदर से ज्ञान होता है। समाधि में जो ज्ञान प्राप्त होता है, वो ईश्वर की ओर से होता है। और स्वप्न में तो हमारे अपने संस्कार होते हैं, जिनको हम स्मृति के रूप में,चित्र के रूप में देखते हैं। इस तरह से ऋषियों को आंतरिक ज्ञान होता है।

176. शंका- ईश्वर निराकार है, तो योग द्वारा ईश्वर का किस रूप में साक्षात्कार होता है?

☯ **समाधान-** ईश्वर निराकार है, तो निराकार स्वरूप में ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है। अगर लाल टोपी होगी, तो किस रंग की दिखाई देगी? लाल दिखेगी। इसी तरह से जो वस्तु जैसी होगी, ठीक वैसी वो साक्षात्कार के समय दिखती है। ईश्वर निराकार है, तो निराकार दिखाई देगा। आनंद स्वरूप है, तो आनंद स्वरूप दिखाई देगा, अर्थात् उसकी वैसी अनुभूति होगी। उसकी आकृति- (शेप) दिखाई नहीं देगी। ईश्वर की आकृति तो है ही नहीं। बिना आकृति के ही, उसकी अनुभूति ही, उसका साक्षात्कार है। साक्षात्कार का नियम यह है, कि- जिस-जिस द्रव्य में, जो-जो गुण होते हैं, उन्हीं-उन्हीं गुणों के माध्यम से, उस-उस द्रव्य का साक्षात्कार होता है। नीला वस्त्र नीले रंग का और पीला वस्त्र पीले रंग का दिखाई देगा। यही उसका साक्षात्कार है। अब प्रारंभिक स्तर पर योगी भी आंख खोलकर ईश्वर साक्षात्कार नहीं कर सकता। पहले-पहले योगी को भी आंख बंद करके ही अभ्यास करना पड़ता है। और फिर लंबे-काल तक अभ्यास कर करके वो इतना कुशल हो जाता है, कि आंख खोलकर भी वह सर्वव्यापक ईश्वर का अनुभव कर सकता है। आंख खुली रहेगी, आंख से उसको बाहर का दृश्य दिखाई नहीं देगा। वो ईश्वर को देखेगा। कभी-कभी सामान्य व्यक्ति भी ऐसा अनुभव करता है। जैसे कि- एक व्यक्ति आँख खोलकर बैठा था। उसके सामने से एक दूसरा व्यक्ति निकल गया। लोग पूछते हैं- 'यह कौन कौन गया' ? वह बोला- पता नहीं साहब। अरे! आप तो आंख खोलकर बैठे थे, आपको पता नहीं चला? उसने कहा, बिल्कुल पता नहीं चला। ऑखे भले खुली थी। मैं आंख के साथ नहीं था, मैं कहीं और था। सोच कुछ और रहा था। इसलिए कौन सामने से निकल गया, मुझे पता ही नहीं चला। तो ऐसे ही कुशल योगी व्यक्ति, ऑख भले खोलकर रखे, पर वो आंख से देखता नहीं। अर्थात् ईश्वर का अनुभव करता है।

177. शंका- वेद की उत्पत्ति कैसे हुई?

☯ **समाधान-** आदि सृष्टि में भगवान ने चार ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान दिया। **पहले धरती से वनस्पतियाँ, कीड़े-मकोड़े तैयार हुए, बाद में मनुष्य उत्पन्न हुए। उनमें भी जो सबसे अधिक बुद्धिमान थे, उनका नाम था ऋषि। इन चार ऋषियों के नाम थे- 1. अग्नि, 2. वायु, 3. आदित्य, 4. अंगिरा। इन चार में से एक-एक ऋषि ऋषियों को ईश्वर ने एक-एक वेद का ज्ञान दिया।**

ईश्वर सर्वव्यापक (Omnipresent) है। वह ऋषियों के हृदय में भी था। आपको अपने ही अन्दर कुछ बातचीत करनी है, कुछ योजना बनानी है, तो आप बिना जबान हिलाये, मन में शब्दोच्चारण कर सकते हैं। उन चार ऋषियों के अन्दर बैठे हुए ईश्वर ने चार ऋषियों को वेद का ज्ञान दे दिया। जैसे आपको अपने आपसे बात करने के लिए चमड़े की जबान की जरूरत नहीं पड़ती, वैसे ही अपने अन्दर बात करने के लिए ईश्वर को बाहर से कान में बोलने की जरूरत नहीं पड़ती।

चार ऋषियों ने ईश्वर से मंत्र सीख लिये। उनके अर्थों का चित्र भी देख लिया। जिस तरह सिनेमा में पर्दे पर चित्र देखते हैं, उसी तरह मन रूपी पर्दे (स्क्रीन) पर आँख बंद करके सारे अर्थ समझ लिये।

जैसे वेद में कहा है कि- खेती करो। खेती कैसे करें, उसकी पिक्चर भगवान ने मन रूपी स्क्रीन पर बनाई। जैसे आप टेलीविजन में देखते हैं- हल बनाना, हल को बैल से जोड़ना, हल चलाना, फिर पानी डालना, घास काटना, फसल काटना। **अगर भगवान यह पिक्चर नहीं दिखाते, सिर्फ वेद मंत्र पढ़वाते, मंत्र रटाते, उसका शाब्दिक अनुवाद करवाते तो भी इतने मात्र सिखाने से बात समझ में नहीं आती, जब तक कि उसका चित्र अर्थ सहित नहीं समझाया जाये।** जैसे कि कक्षा में बच्चे को जब क, ख, ग सिखाते हैं। "क" से कबूतर अपने बच्चे को रटाते हैं। फिर कबूतर लिखकर बना देते हैं। अगर कबूतर का फोटो नहीं दिखाया तो बच्चा कभी नहीं समझ पायेगा, कि कबूतर किसको कहते हैं। ऐसे ही भगवान ने सूर्य का चित्र दिखा दिया, अग्नि जलती हुई दिखा दी और बता दिया कि यह सूर्य है, यह अग्नि है। और चार ऋषियों की ड्यूटी लगा दी, कि भाई, मैंने तुम्हें सिखा दिया, अब आगे इन हज़ारों लोगों को तुम सिखाओ। तब से यह पढ़ने-पढ़ाने की परम्परा चल रही है।

178. शंका- ईश्वर ने मनुष्य को कैसा रूप धारण करके ज्ञान दिया, मनुष्य रूप से या आकाशवाणी से। कृपया समाधान किया जाए?

☯ **समाधान-** ईश्वर ने मनुष्य रूप धारण करके वेदों का ज्ञान नहीं दिया। ईश्वर सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक ईश्वर हमारे अन्दर है। वह चार ऋषियों के अंदर भी था। अन्दर ही अंदर ईश्वर ने उनको सारा पाठ पढ़ा दिया। जैसे आप अभी भी आंख बंद करके बैठ सकते हैं। मन में अन्दर ही अन्दर सोचते रहिए,आपको बोलने की जरूरत नहीं, जुबान हिलाने की आवश्यकता नहीं। आप अंदर ही अंदर सारी बातें करते रहें। घंटो तक बैठें रहिए, चिंतन-मनन करते रहिए। ऐसे ही ईश्वर ने चार ऋषियों के अंदर ही अंदर सारी पिक्चर दिखा दी। और चारों वेद पढ़ा दिये।

जैसे- ऋग्वेद का यह सबसे पहला मन्त्र है-

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहिंत यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधारतमम्।।

ईश्वर ने यह मन्त्र भी पढ़ा (सिखा) दिया। इसका अर्थ- (शब्दानुसार) भी सिखा दिया। इसका पिक्चर- (चित्र) भी दिखा दिया। क्योंकि बिना पिक्चर दिखाए व्यक्ति को अर्थ समझ में नहीं आता। आप छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाइए स्कूल में। ए फॉर एपल, बी फॉर बॉल। सी फॉर कैट, डी फॉर डॉल। न तो कैट दिखाइयेगा, न तो डॉल दिखाइयेगा। क्या उनकी समझ में आ जाएगा, कि एप्पल क्या होता है? आपको चार्ट दिखाना पड़ेगा, या प्रेक्टिकली एपल लाना होगा। 'ए' फॉर एपल होता है, वो तब समझ में आएगा। उसका फोटो भी बताना पड़ता है। उसे शब्द भी सिखाना पडता है। ईश्वर ने 'अग्निमीडे पुरोहितम्' शब्द भी सिखा दिए, और आँख बंद करने पर पूरी फिल्म दिखा दी। अग्नि इसको बोलते है, स्तुति ऐसे की जाती है। इसी प्रकार से वेद के अन्य मन्त्रों के अर्थ भी चित्र सहित समझाये जैसे- देखो, खेती ऐसी की जाती है, ऐसे हल चलाया जाता है। इस तरह की पूरी फिल्म दिखा दी। उसको बोलते हैं- वेद का ज्ञान। ईश्वर अंदर ही वेद का ज्ञान दे देता है, मनुष्य रूप धारण नहीं करता।

179. शंका- चारों युग की गणना कीजिए?

☯ **समाधान-** सबसे छोटा कलियुग है, जिसमें चार लाख बत्तीस हजार वर्ष, द्वापर युग में इससे दोगुने- आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष, त्रेता युग में इससे तीन गुना- बारह लाख छियान्नवे हजार वर्ष, और सतयुग में इससे चार गुना- सत्रह लाख अट्ठाइस हजार वर्ष होते हैं। इन चारों को जोड़ देंगे, तो तैंतालीस लाख बीस हजार वर्ष हुए। यह एक चतुर्युगी हो गई। एक सृष्टिकाल में एक हजार चतुर्युगी होती हैं। तो इसको एक हजार से गुणा करेंगे, तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों की संख्या होती है। एक हजार बार इस सृष्टिकाल में चतुर्युगियों की पुनरावृत्ति (रिपीट) होती है। यह चारों युगों के वर्षों की उपयुक्त संख्या है।

180. शंका- जीवात्मा एक शरीर को छोड़ दे, तो दूसरे शरीर में जाने के लिए उसको कितना समय लगता है?

☯ **समाधान-** उपनिषद् में लिखा है, कि एक कीड़ा अपने दो अगले पाँव उठाकर के ऐसे रख देता है और पीछे के पाँव उठा करके यूँ आगे चलता रहता है। जैसे वो अगले पाँव उठाकर यूँ चलता है, बस इतनी देर में जीवात्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है।

मोटे-तौर पर यह मानना चाहिए कि उसको बहुत ज्यादा देर नहीं लगती, क्योंकि हर आत्मा का कर्मों का बही-खाता (एकाउंट) तैयार ही रहता है।

181. शंका- 'जीवात्मा' का स्थान मनुष्य 'शरीर' के अंदर कहाँ है?

☯ **समाधान-** कठोपनिषद् में लिखा है, कि- 'हृदि ह्येष आत्मा' अर्थात् आत्मा हृदय में रहता है। लेकिन वो हमेशा एक जगह नहीं रहता। उपनिषदों में अनेक स्थानों पर ऐसी चर्चा आती है। जीवात्मा चौबीस घंटे एक जगह नहीं रहता, वो स्थान भी बदलता रहता है। जैसे आप अपने घर में क्या एक ही कमरे में बैठे रहते हैं, बदलते रहते हैं न। कभी बेडरूम में चले गए, कभी किचन में चले गए, कभी बाथरूम में चले गए, कभी ड्राइंगरूम में चले गए। ऐसे ही यह शरीर जीवात्मा का घर है। वो जब इच्छा होती है, तो अपनी जगह बदल लेता है।

जीवात्मा के सोने के लिए लिखा है, कि हृदय में से बहुत सारी नाड़ियाँ निकलती हैं, उनमें से एक नाड़ी का नाम है- 'पुरीतत'। जब जीवात्मा सोता है, तो पुरीतत नाम की नाड़ी में जाकर सोता है, यह उसका बेडरूम है। एक उपनिषद् है- "ऐतरेय' उपनिषद्, उसमें जीवात्मा के स्थान की चर्चा आई है। उसमें एक वाक्य लिखा है- 'त्रयः आवसथाः' अर्थात् जीवात्मा के शरीर में निवास के तीन स्थान हैं- 'त्रयः' तीन। फिर आगे लिखा है-'अयं आवसथ, अयं आवसथ, अयं आवसथा।' इसका मतलब होता है- यह स्थान है, यह स्थान है और यह स्थान है। अब कौन सा स्थान है, उसका नाम तो लिखा नहीं। दरअसल, विद्यार्थियों को कोई गुरूजी पढ़ा रहे होंगे, जैसे अब आप मेरे सामने बैठे हैं। और मैं कहूँ देखो, जीवात्मा शरीर में तीन जगह रहता है, एक यहाँ रहता है, एक यहाँ रहता है, और एक यहाँ रहता है। अब मैंने ऐसे इशारे से बता दिया और नाम नहीं बोला, तो किसी लिखने वाले ने यूँ का यूँ लिख दिया, कि- यहाँ रहता है, यहाँ रहता है, यहाँ रहता है। अब भई! सामने दिखता हो तो समझ भी जाए, किताब में लिखने से क्या पता चले, कि कहाँ रहता है? 'यहाँ' का मतलब क्या? इसलिए पता नहीं चला, कहाँ रहता है। पर तीन जगह लिखा है, यह तो स्पष्ट है। तीन जगह कौन सी? यह स्पष्ट नहीं है।

जीवात्मा के तीन अलग-अलग स्थान हैं। जाग्रत में जीवात्मा कहीं और होता है, स्वप्न में कहीं और होता है, सुषुप्ति में कहीं और होता है। मतलब स्थान बदलता रहता है। इतनी बात तो स्पष्ट है।

एक उपनिषद् है- 'ब्रह्मोपनिषद्'। वैसे तो वो प्रमाणिक उपनिषद् नहीं है। पर कुछ लोग दूसरे उपनिषदों को भी पढ़ लेते हैं। कुछ अच्छी बातें वहाँ

भी मिल जाती हैं। 'ब्रह्मोपनिषद्' में एक जगह पर आत्मा के तीन स्थान बताए गए- एक नेत्र, एक कंठ, और एक हृदय। ये तीन स्थान उसमें नामपूर्वक लिखें हैं। वैसे प्रमाणिक तो नहीं है, फिर भी हो सकता है, वो भी अनुकूल हो। इसलिए कुछ कह नहीं सकते, लेकिन जीवात्मा जगह बदलता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

182. शंका- आत्मा के संयोग से 'जड़-शरीर' चेतन लगता है। 'चेतन-ईश्वर' जड़ पदार्थों, जैसे कि- दीवार, पत्थर आदि में है, तो ये चेतन क्यों नहीं दिखते?

☯ **समाधान-** जड़ वस्तु स्वयं क्रिया नहीं करती। शरीर जड़ है, वो स्वयं हिलता-डुलता, चलता-फिरता नहीं है। जब 'आत्मा' शरीर में जाता है, तब चेतन आत्मा की प्रेरणा से शरीर क्रिया करता है। ऐसे ही दीवार के परमाणुओं में क्रिया हो रही है। सब जगह परमाणु (एटम) घूम रहे हैं। एटम कौन घुमा रहा है? ईश्वर। ईश्वर के संयोग से वहाँ भी क्रिया हो रही है। अनार में हो रही है, केले के अंदर हो रही है, हर वस्तु में हो रही है। जितने एटम्स घूम रहे हैं, उन्हें तो ईश्वर घुमा रहा है। लेकिन जैसे शरीर में हाथ हिलता दिखता है, वैसे दीवार हिलती नहीं दिखती। दीवार हिलती, तो सभी भाग जाते। सोचते कि- कहीं वो हमारे सिर पर न गिर जाये। इसलिए वो ऐसी हिलती हुई नहीं दिखती, चुपचाप स्थिर है। लेकिन उसके अंदर क्रिया होती है। सूर्य में, पृथ्वी में, चाँद में, तारों में, यानि हर वस्तु में ऐसी क्रिया हो रही है। और वो क्रिया चेतन ईश्वर के संयोग से है। चेतन-ईश्वर उसमें क्रिया करता है। वस्तुतः हर वस्तु क्रियाशील है। एक साइंटिस्ट से पूछिये- वो बताएगा, कि क्या क्रिया हो रही है। सेव में, केले में क्रिया होती है। सेव रखा-रखा सड़ जाता है। आपको हिलता तो

नहीं दिखता, मगर सड़ जाता है। ऐसा इसलिये, क्योंकि इसके परमाणुओं में सूक्ष्म-रूप से आंतरिक क्रिया होती है। इलेक्ट्रॉन्स घूमते रहते हैं, एटम्स सारे घूमते रहते हैं, जिसके कारण उसमें वृद्धि-ह्रास होता रहता है। सेव, केले में यह क्रिया तीव्र होती है। सेव, केला दो-तीन दिन में सड़ जाएगा। दीवार में ये क्रिया उतनी तीव्र नहीं होती, उससे बहुत कम होती है। दीवार को टूटने में सौ-दो सौ साल लग जाते हैं। इसमें ज्यादा समय लगता है। प्रत्येक पत्थर, दीवार आदि पदार्थों में गति क्रिया होने के कारण ही वे पदार्थ धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं। और यदि आप यह चाहते हैं, कि दीवार आदि पदार्थ भी चेतन ईश्वर के कारण चलने फिरने लगें, (जैसे-आत्मा के कारण शरीर चलता फिरता है) तो व्यवहार करना कठिन हो जाएगा। क्योंकि ईश्वर तो सभी वस्तुओं में है। तब सभी चीजें चलने लगेंगी। तो आप अपना सामान = (रुपये, सोना, चाँदी, बर्तन, बिस्तर आदि) जहाँ रखकर ऑफिस जाएँगे। और जब शाम को ऑफिस से लौटकर आयेंगे, तब आपका सामान आपको वहाँ मिलेगा नहीं, जहाँ आप रखकर गये थे। सुबह से शाम तक आपका मकान =(घर) भी 5-7 किलोमीटर दूर चला गया होगा। तब बताइये, आपका जीवन-व्यवहार कैसे चल पाएगा।

183. शंका- आदिकाल से सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय होता चला आ रहा है, तो क्या इससे यह मान सकते हैं कि उत्पत्ति व प्रलय का जो क्रम है, कभी उसकी शुरूआत हुई होगी, और इसका अन्त भी आएगा, क्योंकि हर कार्य की शुरूआत और अन्त होता है?

☯ **समाधान-** वर्तमान सृष्टि उत्पन्न हुई, वर्तमान सृष्टि का अन्त होगा। इससे पहले एक सृष्टि थी, उसके पहले भी एक सृष्टि थी, उससे पहले भी थी। जितना पीछे-पीछे चलते जाएँगे, पीछे-पीछे, उतनी सृष्टियाँ पाते जायेंगे। सृष्टि और प्रलय का यह जो क्रम है, इसका कोई प्रारंभ नहीं है। 'पहली सृष्टि' नाम की कोई चीज नहीं थी। जब भगवान ने 'पहली बार' सृष्टि बनाई हो, ऐसी कोई सृष्टि नहीं है। यह अनादिकाल से सृष्टि बन रही है, इस बार भी बनी है। 'प्रथम सृष्टि' कोई नहीं है। यह बात बुद्धि में बड़ी मुश्किल से बैठती है, कम बैठती है। अच्छा एक सिरे की बात समझ में नहीं आई, दूसरे सिरे की बात करेंगे, तो शायद समझ में आ जाये। वर्तमान में

यह सृष्टि चल रही है, इसका विनाश हो जाएगा, यानि प्रलय हो जाएगा। उस प्रलय के बाद फिर यह सृष्टि बनेगी। और फिर अगली दूसरी सृष्टि का प्रलय होगा। फिर तीसरी बनेगी, उसका प्रलय होगा। इस प्रकार भविष्य में नई सृष्टियाँ बनती रहेंगी, प्रलय होते रहेंगे। क्या भविष्य में यह बनने-बिगड़ने का क्रम समाप्त हो जाएगा ? नहीं होगा। भविष्य में कभी इसका अन्त नहीं होगा। बनती रहेगी, बिगड़ती रहेगी। इसका क्रम कभी समाप्त नहीं होगा। अब नियम क्या कहता है, 'जिस वस्तु का आरम्भ होता है, उस वस्तु का अन्त होता है।' अब इस बात को उलटकर बोलिए। 'जिसका आरंभ नहीं होता, उसका अंत भी नहीं होता।' इस आधार पर आपने स्वीकार किया, कि सृष्टि-प्रलय का भविष्य में अन्त नहीं होगा। इस तरह दूसरी बात अपने आप सिद्ध हो गई, 'जब अन्त नहीं है, तो आरंभ भी नहीं है।' अगर भविष्य में इस सृष्टि-प्रलय का क्रम कभी समाप्त नहीं होगा, तो भूतकाल में भी इसका आरंभ नहीं हुआ होगा। इसलिए बनने-बिगड़ने का क्रम न कभी आरम्भ हुआ, और न कभी समाप्त होगा। थोड़ा गहराई से बैठकर मनन करेंगे, तो अच्छी तरह स्पष्ट हो जाएगा।

184. शंका- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालन में स्वतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें। इस नियम का क्या अर्थ है?

☯ **समाधान-** देखिए, हमारे जीवन जीने के दो भाग हैं। एक हमारा व्यक्तिगत क्षेत्र है, और दूसरा सामाजिक क्षेत्र है। व्यक्तिगत क्षेत्र में हम स्वतंत्र हैं, जबकि सामाजिक क्षेत्र में हम परतंत्र हैं। दसवें नियम में यही बात कही गई है। जैसे भोजन की घंटी बजी तो भोजन में सबको एक साथ पहुँचना है, सबको एक साथ बैठाएँगे, एक साथ भोजन परोसेंगे- यह सामाजिक नियम है। यह नहीं कि घंटी बजी, और पाँच आदमी चले गए, पाँच आदमी दस मिनट के बाद गए, पच्चीस आदमी बीस मिनट के बाद गए। इससे तो सारी व्यवस्था बिगड़ जाएगी। इस तरह सामाजिक नियम में हम परतंत्र हैं।

अब कितनी रोटी खाएँगे ? इसमें हम स्वतंत्र हैं। एक आदमी छह रोटी खाये, तो दूसरा भी छह रोटी खाए, यह जरूरी नहीं। इतना हम स्वतंत्र हैं। किसी की भूख ज्यादा है, तो वो छह खाए। किसी की भूख कम है, तो

वो चार खाये। किसी की और कम है, तो वो तीन खाए। कोई केवल खिचड़ी खाए, रोटी न खाए। कोई कुछ भी खाए, यह व्यक्तिगत नियम है। व्यक्तिगत जीवन में हम स्वतंत्र हैं। जैसे समय पर आने का नियम है, तो कक्षा में घंटी बजते ही समय पर आओ। सामाजिक नियम में हम सब परतंत्र हैं। घर से आप शिविर मेंआएँ या न आएँ, उसमें आप स्वतंत्र हैं। यह आपका व्यक्तिगत नियम था आने के लिए। आये तो इस नियम से परतंत्र हो गए। शिविर में आ गए, तो अब यहाँ के नियम का पालन करना ही पड़ेगा। इसी प्रकार से सब जगह आप समझ लेंगे।

185. शंका- पुरुषार्थ-चतुष्ट्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। इसमें 'काम' से क्या अभिप्राय है। क्या मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रारंभ के तीन पुरूषार्थ साधने आवश्यक हैं?

☯ **समाधान-** 'काम' का मतलब है-अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना। 'धर्म' है- वेद के अनुसार आचरण करना। 'अर्थ' है- वेदानुसार आचरण करके धनादि प्राप्त करना यानि ईमानदारी और मेहनत से धन कमाना।' और उससे खाना-पीना, रोटी-कपड़ा, मकान आदि का प्रबंध करना 'काम' है। जब धर्म, अर्थ और काम, ये तीनों चीजें सिद्ध हो जायेंगी, तब उसके बाद ही 'मोक्ष' मिलेगा। जो व्यक्ति 'धर्म' का आचरण नहीं करता, वो 'अर्थ' नहीं प्राप्त कर सकता, वो काम की पूर्ति भी नहीं कर सकता और उसको 'मोक्ष' भी नहीं मिल पायेगा। जो ये तीन ठीक कर लेगा, उसका मोक्ष भी हो जायेगा।

186. शंका- द्रोपदी का चीरहरण चुपचाप देखते रहना, क्या भीष्मपितामह जैसे महान व्यक्ति की कमजोरी नहीं दर्शाता? कहते है, कि कौरवों का अन्न खाने से उनकी बुद्धि मलीन हो गई थी। हम भी इतना दूषित भोजन खाते हैं, तो क्या हमारी बुद्धि भी मलीन हो गई है। फिर योग धर्म कैसे असर करेगा?

☯ **समाधान-** 'महाभारत' में नौ सौ प्रतिशत मिलावट है। जैसे एक आदमी ने दस हजार रुपये घर से लेकर के व्यापार किया। और उसने कुल मिलाकर के एक लाख रुपये कमाया। उसने नौ सौ प्रतिशत लाभ कमाया। महाभारत की स्थिति भी ऐसी ही है। उसमें मूल श्लोक केवल दस हजार थे। व्यास जी ने जब महाभारत का इतिहास लिखा था तब इसका नाम था-'जय। फिर फिर बाद में हुआ-'भारत'। तब इसका नाम 'महाभारत' नहीं था। चीन का इतिहास 'चायना' के नाम से प्रस्तुत है। जापान का इतिहास 'जापान' के नाम से और भारत का इतिहास 'भारत' के नाम से। तो पहले जब मूल रुप से इतिहास लिखा था तब उसमें केवल 10,000 श्लोक थे। और बाद में जब इतिहास की कथा होने लगी। तो कुछ दो, चार, पांच, दस पंडितों ने अपनी कथायें शुरु की और दो श्लोक एक ने डाले, दो दूसरे ने डाले, दो तीसरे ने डाले और वो बढ़ते-बढ़ते आज एक लाख श्लोक हो गए। तो कितनी मिलावट हुई, नौ सौ प्रतिशत। ९० हजार मनगढंत श्लोक इसमें जोड़ दिये गये। अब जो घटना आती है, कि द्रोपदी का चीर हरण हुआ। हमको तो यह सरासर मिलावट दिखती है, ऐसा कुछ हुआ नहीं। ऐसा हो भी नहीं सकता।

यह बेकार की बात पढ़ते हैं, लिखते हैं और टीवी सीरियल में भी दिखा दिया इन्होंने। सब झूठ बाते हैं। आप कल्पना तो करके देखिये, कि- क्या ऐसा हो सकता है। आपके मोहल्ले में, आपकी नजर में एक सामान्य स्तर का व्यक्ति ऑटो-रिक्शा चलाता है। पाँचवी-छटवीं कक्षा पढ़ा हुआ है। कल्पना कीजिए- उसकी पत्नी को कोई आदमी पकड़ ले, और उसके कपड़े खींचने लगे तो क्या वो देखता रहेगा ? वो लड़ मरेगा। वो कहेगा- पहले मुझसे बात करो, बाद में इसको हाथ लगाना। मेरे जिन्दा रहते तुम इसको हाथ नहीं लगा सकते। इसकी रक्षा की जिम्मेदारी मैंने ली है। पहले मुझसे

दो-दो हाथ करो बाद में इधर बात करना। तो वो पांच-पांडव बड़े राजा लोग थे। बड़े वीर धर्नुधारी, बड़े पहलवान, कितने विद्वान और कितने मल्ल स्तर के लोग थे भीम जैसे, अर्जुन जैसे। वो क्या मुंह देखते होंगे ? कल्पना तो करके देखो, कितनी झूठ बात है। एक रिक्शा ड्राईवर भी ऐसी बात को सहन नहीं कर सकता, कि कोई उसकी पत्नी को हाथ लगाये। वो पांच बड़े पढ़े-लिखे, बलवान, योद्धा महापुरूष कैसे सहन करेंगे, कि उनके देखते-देखते कोई उनकी घर की स्त्री को हाथ लगाये। इसलिए चीरहरण तो बिल्कुल कोरी कल्पना है। यह जुआ खेलने की घटना में भी घोटाला है। बहुत कपोल कल्पनायें हैं। जुआ में रुपया हार जाये, जमीन हार जाये, तो बात कुछ समझ में आती है। लेकिन पत्नी को हार जाये, दिमाग में बैठता नहीं है। पत्नी जुअे में, दाव में लगायी जाती है क्या ? वो कोई संपत्ति है, कोई जड़ संपत्ति है, कोई सोना-चांदी है ? वो चेतन व्यक्ति है। चेतन व्यक्ति को कोई भी जुअें में दाव पर नहीं लगा सकता। कानून का नियम है। महारभारत में इतनी मिलावट है, जैसे एक किलो दाल में नौ किलो कंकड़। असली दाल ढूँढने में कितनी मेहनत करनी पड़ेगी। दो-चार मिनिट में फैसला नहीं होगा। पर बैठकर के रिसर्च करनी पड़ेगी। तब पता लगेगा। ये सब बातें काल्पनिक है, झूठ बाते हैं। इसलिए इन्हें बुद्धि स्वीकार नहीं करती।

अगला प्रश्न है, कि 'भीष्म, दुर्योधन का अन्न खाते थे, जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो गई। इसलिए उसका विरोध नहीं कर पाये। हम भी तो दूषित अन्न खा रहे हैं, तो हमारी बुद्धि पर योग का असर कैसे होगा ?' उसका उत्तर यह है, कि यदि हम अच्छा अन्न खायेंगे, अच्छी मेहनत से कमायेंगे, ईमानदारी से कमायेंगे और शुद्ध भोजन खायेंगे। मांस-अण्डे आदि नहीं खायेंगे, सात्विक भोजन खायेंगे, तो योग का असर होगा। जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना लाभ होगा।

 २५४

187. **शंका-"जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन। जैसा पिये पानी, वैसी बने वाणी। जैसा करे संग, वैसा चढ़े रंग।" तो मित्रों के, रिश्तेदारों आदि के घर में भ्रष्टाचार का धन आता है और वहाँ जाना ही होता है। वहाँ का अन्न, पानी ग्रहण न करने पर संबंध बिगड़ते हैं। और यदि स्वीकार करेंगे, तो मन बिगड़ेगा। बताइये क्या करना चाहिये?**

☯ **समाधान-** आपके मित्र-संबंधी, रिश्तेदार जिनके बारे में आपने यह प्रश्न लिखा है, कि वो चोरी से, बेईमानी से, भ्रष्टाचार से धन कमाते हैं ? क्या वो सारा सौ प्रतिशत धन चोरी, बेईमानी से कमाते हैं या फिर कुछ मेहनत, ईमानदारी से भी कमाते हैं। कुछ तो मेहनत से कमाते हैं, कुछ तो ईमानदारी का होता है। मित्रों के यहाँ और रिश्तेदारी में, आना-जाना, खाना-पीना सब कुछ करना पड़ता है। तो जब आपको वहाँ खाना-पीना पड़े तो उनकी जो मेहनत और ईमानदारी की कमाई है, उसमें से खा लेना। बेईमानी वाला छोड़ देना, वो मत खाना। आपका मन भी नहीं बिगड़ेगा और रिश्ता भी नहीं बिगड़ेगा, दोनों ठीक बने रहेंगे। समाधान तो यही है।

इसे और स्पष्ट समझने के लिये एक अन्य उदाहरण देता हूँ। एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा - ' सेठ लोगों का धन कुछ ईमानदारी का और कुछ बेईमानी का (मिला-जुला) होता है। अतः उन सेठों से दान लेना उचित है ? मैंने कहा- 'हाँ, दान लेना चाहिये। दान देना एक पुण्य कर्म है। कोई सेठ पुण्य कमाना चाहे तो क्या उसे पुण्य कमाने का अधिकार नहीं है। यदि है तो वह दान देगा, और संस्था लेगी। वह व्यक्ति बोला- 'सेठ का धन तो मिला-जुला है। संस्था उससे दान लेगी, तो संस्था वालों में भी बेईमानी का दोष आ जायेगा।' मैंने कहा- क्या कोई व्यक्ति अपने जीवन में सारे कर्म अच्छे ही करता है या कुछ बुरे भी करता है ? यदि दोनों प्रकार के करता है तो सेठ जो दान देता है, वह अच्छा कर्म है। और व्यापार में जो थोड़ी बहुत बेईमानी करता है, वह बुरा कर्म है। वह अलग कर्म है। बुरे कर्म का दण्ड उसे भोगना पड़ेगा। आप इन दोनों कर्मो को मिश्रित (मिक्स) मत करिये। सेठ कर्म करने में स्वतंत्र है। वह कुछ काम अच्छे भी करता है और कुछ बुरे भी करता है। ऐसे ही सभी लोग करते हैं। आपको पाप तो तब लगेगा, जब आप मित्रों-संबंधियों के घर जाकर उनकी वस्तुयें चुराकर खायेगें। तब वह बुरा कर्म होगा। यदि वे लोग प्रेमपूर्वक, श्रृद्धापूर्वक आपको भोजन आदि खिलाते हैं, और आप खाते हैं, तो इसमें कोई बुराई नहीं है।

 २५५

188. शंका-आप कहते हैं, कि क्रोध नहीं आना चाहिए। परशुराम, द्रोणाचार्य जैसे तपस्वी लोग क्रोधी थे फिर भी दुनिया उनकी पूजा क्यों करती है?

☯ **समाधान-** हर व्यक्ति में गुण भी होते हैं, दोष भी होते हैं। परशुराम में कुछ गुण भी थे, और दोष भी थे। और द्रोणाचार्य में गुण भी थे, और दोष भी थे। गुणों की पूजा होती है, दोषों की पूजा नहीं होती है। कोई भी व्यक्ति इसलिए परशुराम या द्रोणचार्य की पूजा नहीं करता, कि वे महाक्रोधी थे। उनकी पूजा इसलिये होती है क्योंकि उनमें योग्यता थी। वे विद्वान थे, धनुर्धारी थे, बलवान थे और बड़े वीर थे। किसी भी व्यक्ति की, उसके दोषों के कारण कभी पूजा नहीं होती। रावण के पास बहुत सारे गुण थे, इसलिये दक्षिण भारत के लोग रावण का सम्मान करते हैं। संस्कृत साहित्य में एक कहावत है- 'गुणाः पूजा स्थानम्"। अर्थात् गुण पूजा का स्थान है, व्यक्ति नहीं। गुण जिस व्यक्ति में होते हैं, उस व्यक्ति की पूजा हो जाती है। वो पूजा वास्तव में व्यक्ति की नहीं है, गुणों की पूजा है। दोषों की कभी पूजा नहीं होती। दोषों का हमेशा अपमान ही होता है। परशुराम द्रोणाचार्य के अंदर कुछ गुण थे, इसलिए उनकी पूजा होती हैं। जो दोष थे, उनके कारण पूजा नहीं होती है।

189. शंका- यदि मांसाहार का निषेध कर दिया जाये, तो मांस पर निर्भर लोगों की रोजी-रोटी का क्या प्रबंध है। वो क्या करेंगे?

☯ **समाधान-** बहुत सारे लोग चोरी करते हैं, बहुत सारे लोग डकैती भी करते हैं, तो क्या आप यह कहेंगे, 'कि चोरी डकैती यदि बंद कर दी जाये, तो उनके धंधे का क्या होगा? चोरी, डकैती उनका धंधा है। उनकी रोजी-रोटी मारी जायेगी। चोरी डकैती वो बंद कैसे कर सकते हैं।' चालू रखो। चालू रखो। चलेगा क्या? धन्धा कौन सा करना, व्यवसाय कौन सा करना। वो भी ईश्वर ने बता रखा है। अच्छा धन्धा करो, अच्छा व्यवसाय करो। लूट-मार वाला नहीं, चोरी-डकैती वाला नहीं। मांसाहार का धन्धा ही गलत है। वो धन्धा ही कानून के विरूद्ध है। वो बंद करना पड़ेगा। गेहँ पैदा करो, अनाज पैदा करो, खेती करो, व्यापार करो, मेहनत करो, मकान बनाओ, कपड़ा बेचो, रोटी बेचो, मिठाई बेचो। दुनिया भर की चीजें हैं, एक मांस ही बस है क्या खाने के लिये। चीन देश वाले अपने आप को बौद्ध मानते हैं। और बौद्धों का

२५६

नारा क्या है-अहिंसा परमो धर्मः। और व्यवहार में देखो तो- हिंसा परमोधरमः। चीन वालों ने एक भी प्राणी नहीं छोड़ा, सब खा जाते हैं। कछुए, केकड़े, सांप, बिच्छू सब खा जाते हैं, कुछ नहीं छोड़ा। बताईये, यह अपने आप को अहिंसावादी कहते हैं। तो क्या खाना, क्या नहीं खाना यह भी वेद में बताया है। उदाहरण के लिये- आप एक मोटरसाइकिल खरीदकर लाये उसमें कौन सा फ्यूल डालें, पेट्रोल डालें, डीजल डालें, या कैरोसीन डालें, यह कौन डिसाईड करेगा। कस्टमर करेगा या कंपनी। कंपनी डिसाईड करेगी न, जिस इंजीनियर ने इंजन डिजाइन किया है, वही डिसाईड करेगा, इसमें कौन सा फ्यूल डालना है। ठीक है। मान लीजिये, मोटरसाइकिल का नाम हीरो-होण्डा है। अब आपको पता लग गया इसमें कौन सा फ्यूल डलेगा। फ्रेश पेट्रोल डलेगा। न डीजल डलेगा, न कैरोसीन डलेगा। और पेट्रोल में भी ऑइल मिक्स नहीं करना। फ्रेश पेट्रोल ही टन्की में डलेगा। तो यह डिसीजन किसने लिया? उस इंजन के डिजाईन करने वाले इंजीनियर ने। उसको पता है, कि मैंने कैसा इंजन बनाया है, इसमें कौन सा फ्यूल डालना है। ठीक इसी तरह से, यह जो हमारा मनुष्य शरीर है, यह भी एक मशीन है। और इसके अंदर पाचन संस्थान भी एक इंजन है। तो इस पाचन संस्थान में कौन सा फ्यूल = (भोजन) डालना है, यह कौन डिसाईड करेगा। हम करेंगे या इसका इंजीनियर। इसका इंजीनियर करेगा, जिसने ये बॉडी (शरीर) बनाई है। यह शरीर किसने बनाया, ईश्वर ने। तो यह ईश्वर डिसाइड करेगा, कि हमको क्या खाना है, और क्या नहीं खाना। इस इंजन में कौन सा फ्यूल डालना। तो वेद में ईश्वर ने शाकाहारी भोजन खाने को बताया है। जो मैंने पहले आपको मंत्र भी सुना दिये, बहुत से प्रमाण सुना दिये, यजुर्वेद के, अथर्ववेद के। तो जब ईश्वर कहता है- शाकाहारी भोजन खाने के लिये यह इंजन डिसाइड किया गया है। अगर आप इसमें मांस डालोगे, तो बिल्कुल वैसी ही बात है, कि हीरो-होण्डा मोटरसाइकिल के अंदर आप डीजल भरते हैं। तो इंजन का सत्यानाश हो जायेगा। मांस खाना, शराब पीना और अण्डे खाना, ये सब मनुष्य शरीर में डालना। इसका अर्थ है, कि 'पेट्रोल' इंजन के अंदर 'डीजल' फ्यूल डालना। वो उसका विनाश करेगा। इसलिये मनुष्य को मांस आदि नहीं खाना चाहिये।

२५७

190. शंका- भारत में महिला और पुरुष दोनों को समान दर्जा प्राप्त है। लेकिन विवाह के बाद महिलाओं के पास मंगलसूत्र और सिंदूर रहता है। वो उनकी विवाहित होने की पहचान है। लेकिन विवाहित पुरुषों की क्या पहचान है?

☯ **समाधान-** देखिये पुरुषों के पास भी पहचान है। पर आजकल लोगों ने उनकी पहचान बिगाड़ दी है। हमारे वैदिक शास्त्रों के अनुसार विवाह से पूर्व श्रृंगार करने का अधिकार न पुरुष को है और न स्त्री को। जब विवाह होता है, उस दिन उनको श्रृंगार का अधिकार मिलता है। मातायें श्रृंगार कर लेती हैं, बिंदी लगा लेती हैं, सिंदुर लगा लेती हैं और आभूषण आदि पहन लेती हैं। विवाहित पुरुषों को भी अधिकार मिलता है, कि हाथ में अंगूठी पहनो, गले में चेन पहनो। ये श्रृंगार के साधन हैं। इससे पता लगता है कि यह विवाहित पुरुष है। जिसके हाथ में अंगूठी नहीं है, गले में चेन नहीं है, इसका मतलब है कि वो व्यक्ति अविवाहित है। अब तो अविवाहित लोग भी अंगूठी पहन लेते हैं, चेन पहन लेते हैं। लोगों लोगों ने पहचान में बिगाड़ कर दिया। यह लोगों का दोष है। लोगों को पहचान में बिगाड़ नहीं करना चाहिए। जब श्रृंगार का अधिकार मिले, तभी करना चाहिए, उससे पहले नहीं।

191. शंका- आपने कहा, ईश्वर निराकार है। परछाई (प्रतिबिंब) का आकार दिखता तो है, लेकिन परछाई, (प्रतिबिंब) पकड़ नहीं सकते? फिर हम निराकार ईश्वर को कैसे पकड़ेंगे?

☯ **समाधान-** ईश्वर के प्रतिबिंब को पकड़ नहीं सकते। यह तो अलग बात है। परछाई को पकड़ने की बात तो बाद में। पहले बने तो परछाई। परछाई बनती है साकार वस्तु की। ईश्वर है ही निराकार, तो परछाई बनेगी ही नहीं। अगर परछाई बनेगी ही नहीं, तो उसका प्रतिबिंब सिद्ध ही नहीं होता, तो उसे पकड़ने का प्रश्न ही नहीं है। इसलिए न तो ईश्वर की परछाई है, न ही उसकी परछाई पकड़नी है। निराकार = (साक्षात्कार करना) है। और वह होगा, अष्टांग योग से। उसे करें। ईश्वर को पकड़ना। जीव अलग है, ईश्वर अलग है। ईश्वर निराकार है और जीव भी निराकार है।

192. शंका- ईश्वर को पाने के लिए क्या यह आवश्यक है कि संध्या, उपासना आदि संस्कृत में बोलकर की जाये। अब अगर वेद हिन्दी में लिखे गये हैं, तो मंत्र भी हिन्दी में होंगे। इसलिए संध्या उपासना भी क्या हिन्दी में की जा सकती है?

☯ **समाधान-** आदि सृष्टि में ईश्वर ने संस्कृत भाषा में वेदों का ज्ञान दिया। वेद संस्कृत में थे। तब एक ही भाषा थी, दूसरी कोई भाषा नहीं थी। उस समय संस्कृत में ही लोग बोलते थे, संस्कृत में ही व्यवहार करते थे, संस्कृत में ही वेद मंत्रों के आधार पर ईश्वर की उपासना चलती थी। अब भले ही उसके हिन्दी भाष्य बन गये हैं। परन्तु मूल, मूल ही होता है और भाष्य, भाष्य ही होता है। ईश्वर उपासना मूल मंत्रों से संस्कृत में ही की जानी चाहिए। बाद में आप हिन्दी अनुवाद भले ही कर लें। अगर मूल संस्कृत छूट गई, तो मूल मंत्र छूट जायेगा। और यदि मंत्र छूट गया, तो किसी भी उपासना करने वाले को उपासना करनी ही नहीं आयेगी, वो भटक जायेगा। पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपनी एक पुस्तक में विदेश की घटना लिखी है। विदेश में एक गड़रिया भेड़, बकरी चराने वाला था। और वो बड़ा ईश्वर भक्त था। वहां ठंड बहुत होती थी। वो ओवरकोट पहनकर के भेड़ चराने बाहर जाता था। एक दिन वो पहाड़ पर जाकर के भगवान से प्रार्थना कर रहा था- "ऐ भगवान! मेरी बहुत इच्छा है, कि मैं तुम्हारी बहुत सेवा करूं। भगवान, तुम मुझे कभी मिल जाओ, तो तुम्हारी बहुत सेवा करूंगा। जैसे मैं इन भेड़-बकरियों को चराता हँ। और इन भेड़-बकरियों में कीड़े भी होते हैं, और वो कीड़े मेरे कोट में चिपक जाते हैं। मैं उन्हें साफ करता रहता हूँ। तुम भी भेड़-बकरी चराते होगे, तुम्हारे भी कोट में कीड़े चिपक जाते होंगे। तुम मुझे कभी मिल जाओ, तो ऐसी सेवा करुँ, कि एकदम बढ़िया पूरा कोट साफ कर दूँ।" अब बताइये, संस्कृत वेद मंत्र छोड़ दिया, तो परिणाम क्या निकला। लोग क्या समझेंगे, कि भगवान भी हमारी तरह ही भेड़-बकरी चरा रहा है। इस तरह भगवान का ही स्वरुप समझ में नहीं आयेगा, और लोग भटक जायेंगे। इसलिए वेद मंत्रों से उपासना करनी चाहिए, ताकि पता चले, भगवान कोई भेड़-बकरी चराने वाला गड़रिया नहीं है। भगवान सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान है, कभी शरीर धारण नहीं करता। तो ईश्वर का स्वरुप ठीक बचा रहेगा और उसकी उपासना ठीक हो सकेगी। इसलिए वेद मंत्रों से उपासना करनी चाहिए। आज जो लोग मूर्तियों की पूजा कब्रों की पूजा कर रहे हैं। यह वेद मन्त्रों से ईश्वर उपासना छोड़ देने का ही परिणाम है। देख लीजिये, संसार ईश्वर के सही मार्ग से भटके गया या नहीं!

193. शंका- ईश्वर, उपासना करना कठिन लगता है। जबकि हम दिनभर मन में सांसारिक बातें खूब सोचते हैं। वह सरल लगता है। ऐसा क्यों है?

☯ **समाधान-** हम जिस कार्य का अधिक अभ्यास करते हैं, वो कार्य हमारे लिये सरल हो जाता है। आपने देखा होगा कि कुछ लोग शारीरिक कार्य करते हैं, कोई पैकिंग का कार्य करता है। फटाफट वस्तु उठाई, डिब्बे में डाली। डिब्बे में पैक की और भेज दी। मातायें स्वेटर बुनती हैं, उनको अभ्यास हो जाता है तो फटाफट स्वेटर बुनती हैं, जल्दी-जल्दी सलाई चलती है। तात्पर्य है- जिस कार्य को हम अभ्यास में ले आते हैं, वो कार्य तीव्रता और सरलता से होता है। और जिस कार्य का अभ्यास नहीं होता, वो कार्य मंद गति से होता है और कठिन लगता है। जब कहा जाता है कि- मन में मंत्रोच्चारण करो, वेद मंत्रों को याद करो, ईश्वर की उपासना करो। आपने इसका अभ्यास बहुत कम किया है, इसलिये आपको यह कठिन लगता है। और मन में दिनभर उल्टे- सीधे विचार करते रहते हैं, उसका अभ्यास सारे दिन किया है। बहुत किया है, इसलिये वो सरल लगता है। तो चाहे अच्छी बात हो, या बुरी बात हो, मन में खूब तेजी से होती रहती है। सांसारिक बातें खूब चलती रहती हैं, इसलिए वो सरल लगती हैं। उसका लम्बे समय तक अभ्यास किया गया। और ईश्वर उपासना का, मंत्रोच्चारण का, उनके अर्थों को याद करने का अभ्यास नहीं किया, इसलिये वो कठिन जान पड़ता है। यह अंतर है दोनों में। यदि ईश्वर उपासना के मंत्रों का आप बार-बार अभ्यास करें, तो कुछ समय के बाद वो भी आपको सरल लगेंगे। फिर कठिनाई नहीं आयेगी, अभ्यास की बात है, और दूसरी बात है, वैराग्य की। संसार में राग-द्वेष बहुत अधिक है। वैराग्य है या नहीं। ईश्वर में रुचि है या बहुत कम है। इसलिये इश्वरोपासना करना कठिन लगता है। संसार में राग-द्वेष अधिक होने के कारण सांसारिक विचार उठाना सरल लगता है।

२६०

194. शंका- जब हम वैदिक गणना के अनुसार इस संसार की आयु एक अरब 96 करोड़, इतना वर्ष कहते हैं, तो यह गणना हमारी पृथ्वी अर्थात् सौरमंडल की है अथवा समस्त दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड की?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर है, इस पृथ्वी की गणना तो यह है ही। इस पृथ्वी को उत्पन्न हुये इतना समय हो गया। महर्षि दयानंद जी के ग्रन्थों को देखने से पता चलता है, कि महर्षि दयानन्द जी पूरे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एक साथ मानते हैं और पूरे ब्रह्माण्ड की प्रलय भी एक साथ मानते हैं। ऋग्वेद भाष्य-भूमिका आदि जो ग्रंथ हैं, उनके आधार पर ऐसा लगता है, कि यह सारे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का काल है।

195. शंका- सृष्टि केवल एक है या बहुत सारी हैं?

☯ **समाधान-** वैसे तो 'सृष्टि' शब्द का अर्थ ही पूरा 'ब्रह्मंड' है। पूछना यह चाहिए था, कि सौर मंडल एक है, या बहुत सारे हैं। सृष्टि तो एक ही है। पूरा ब्रह्माण्ड एक सृष्टि है। इसमें बहुत सारे सौर मंडल हैं। उनमें से एक हमारा यह सौर मंडल है, जिसमें हम रहते हैं। एक सूर्य और उसका परिवार, यह हुआ एक सौर मंडल। अरबों तारे =(अरबों सूर्य) और उनके परिवार। यानि अरबों की संख्या में सौर मंडल एक आकाशगंगा में हैं। और ब्रह्माण्ड में ऐसी-ऐसी अरबों आकाशगंगाऐं हैं। तो इतना विशाल यह ब्रह्माण्ड है। इसे हम समग्रतः सृष्टि कह सकते हैं। सृष्टि शब्द से संपूर्ण ब्रह्माण्ड का ग्रहण हो जाएगा। पूरी सृष्टि एक ही है।

२६१

196. शंका- मोक्ष की अवस्था में जीवात्मा को देखने, सुनने आदि के लिए, नेत्र, श्रोत्र बिना शरीर कैसे मिलते हैं?

☯ **समाधान-** आत्मा के पास अपनी देखने,सुनने की शक्तियाँ हैं, परंतु वो बहुत कमजोर हैं। केवल अपनी शक्तियों से वो देख-सुन नहीं पाता। जब बंधन में आता है, तो प्राकृतिक शरीर की सहायता से, इन्द्रियों से वो काम करता है। जीवात्मा जब मोक्ष में जाता है, तो ईश्वर उसको अपनी शक्ति देता है। जैसे छोटा बच्चा चल नहीं पाता, तो माँ उसको गोद में उठा लेती है। और माँ की गोद में बैठकर फिर वह यात्रा करता है। उसके पास शक्ति कम है, इसलिए तब माँ उसकी सहायता करती है, और उसका काम पूरा हो जाता है। ऐसे ही ईश्वर आत्मा को मोक्ष में देखने के लिए, सुनने के लिए, सारे काम करने के लिए अपनी शक्ति दे देता है।

197. शंका- जब संसार प्रलय-अवस्था में चला जाता है, तब परमात्मा कुछ करता है या निठल्ला बैठा रहता है?

☯ **समाधान-** जब संसार प्रलय अवस्था में चला जाता है तो ईश्वर निठल्ला नहीं बैठता। जो आत्मायें मुक्ति में जा चुकी हैं, उनको आनंद देता रहता है। उसका यह काम होता है। बाकि जो बद्ध आत्माऐं हैं, वे प्रलय अवस्था में पड़ी रहती हैं, सोती रहती हैं, विश्राम करती है। ईश्वर बिल्कुल निठल्ला नहीं होता, वो काम करता रहता है। उस समय उसका थोड़ा काम तो घट ही जाता है, क्योंकि तब उसको सृष्टि चलाने का भार नहीं रहता। लेकिन आप ऐसा मत समझिये, कि उसकी मुसीबत छूट गई। इतने दिन छुट्‌टी हो गई। दरअसल, ऐसा नहीं है। वो सृष्टि चला दे, तब भी उसे भार नहीं पड़ता। सहज स्वभाव से बड़ी आसनी से वो सृष्टि का संचालन करता है। जैसे हम आँखें झपकाते रहते हैं, दिन भर आँख झपकाते हैं, कोई भार लगता है क्या ? पता भी नहीं चलता। तो भगवान के लिए सृष्टि का संचालन करना ऐसा ही काम है। जैसे हम श्वास-प्रश्वास लेते-छोड़ते हैं। कोई भारी काम नहीं है। इसीलिए भगवान को कोई फर्क नहीं पड़ता। सृष्टि हो या प्रलय हो, उसको कोई भार नहीं लगता। बस इतना है, कि सृष्टि चलती है, जीवात्मा को कर्मफल देता है, सृष्टि की व्यवस्था करता रहता है। और अगर प्रलय हो जाती है, तो मुक्त आत्माओं को आनंद देता रहता है। उसको कोई फर्क नहीं पड़ता। सृष्टि या प्रलय होने पर हमको फर्क पड़ता है।

198. शंका- हमारे निवास स्थान पर मुण्डकोपनिषद् का एक श्लोक लिखा है, जिसमें ओ३म् को धनुष, आत्मा को तीर और ब्रह्म को लक्ष्य बताया गया है। कृपया इसे स्पष्ट करें?

☯ **समाधान-** दृष्टांत है- मान लीजिए, एक व्यक्ति धनुष बाण ले करके तीर को लकड़ी के खंबे में ठोकना चाहता है। उसकी ऐसी इच्छा है। जैसे बाहर से एक दृष्टांत समझाने के लिए बताया, कि एक लकडी का खम्भा है, वो है- लक्ष्य। और उस लकडी के खम्भे में क्या फेंकना है ? तीर। और फेंकने के लिए साधन क्या है ? धनुष। ठीक है, तो तीन बात हो गईं। एक तीर, एक धनुष और एक लक्ष्य। ऐसे ही ब्रह्म लक्ष्य है, ह्य। प्रणव = (ओ३म्) धनुष के समान है। - आत्मा जो है, वो तो तीर के समान है। जैसे धनुष में तीर को देखते हैं, और फिर धनुष की रस्सी खींच करके, और तीर को छोड़ करके लक्ष्य तक पहुँचा देते है। ऐसे ही ओ३म् है- धनुष, धनुष के समान। और जो आत्मा है, वो तीर (ऐरो) के समान है। और ब्रह्म जो है, वो टारगेट है, वो लक्ष्य है। तो ओ३म् के मंत्र से आत्मा का तीर छोड़ो और ब्रह्म में फिट कर दो। यह उस वचन का अभिप्राय है।

199. शंका-किसी को मारना जीव-हत्या कहलाती है। कीड़े, मच्छर, मक्खियाँ जानबूझकर या अनजाने में मारे जाते हैं, तो क्या ये भी जीव-हत्या कही जाएगी?

☯ **समाधान-** हाँ, बिल्कुल कही जायेगी, क्यों नहीं कही जाएगी। आप मक्खी, मच्छर मारेंगे, तो फिर हत्या तो कही ही जायेगी। ध्यान में बैठते हैं, एक मक्खी आ गई। कान में गुनगुनाती है, तो आप हटा देते हैं। फिर बैठते हैं, तो वो फिर आती है। मक्खी में इतनी बुद्धि थोड़ी है, कि आप हटाना चाहते हैं, तो वो हट जाए। वो तो बार-बार आती है। फिर व्यक्ति को गुस्सा आता है, तो वो फिर क्या करता है ? सोचता है- अच्छा देखता हूँ कि वो फिर कैसे आती है। अब मक्खी आई, यँ मारेगा। मच्छर आया, यूँ मारेगा। वो हिंसा है, पाप है। चाहे जानबूझकर मारे, चाहे अनजाने में मारे, पाप तो पाप ही है। अनजाने में किए गए पाप का दंड थोड़ा कम होता है। जानबूझकर करेंगे, तो दंड अधिक मिलेगा। अरे, मक्खी परेशान करती है, तो हटा दो। आप कमरे में मक्खी-मच्छर को क्यों आने देते हैं। कमरे मे जाली लगाओ। दरवाजे बंद रखो। खिडकी में जाली लगाओ। मच्छरदानी

लगाओ, मच्छर नहीं आने दो। उसका उपाय करो। मारेंगे तो हिंसा होगी, पाप लगेगा।

अगर बिना मारे काम चलता है, तो क्यों मारें। हमारी आदत खराब हो जाएगी। जानबूझकर मारेंगे, क्रोधपूर्वक मारेंगे, तो निःसंदेह हिंसा के भागी बनेंगे। दुष्ट को दंड देने का विधान जरूर है, पर यदि आपने क्रोधपूर्वक दंड दिया, तो आप हिंसक हो जाएंगे। न्यायाधीश जो दंड देता है, वो क्रोध करके नहीं देता। दुष्ट को दंड देता है, पर बिना क्रोध किए। ऐसे ही आप मक्खी को हटा दें। बिना क्रोध किए। मच्छर को हटा दें। और कभी बहुत समझाने के बाद भी मच्छर नहीं मानता। बार-बार समझा दिया, मच्छर हटता ही नहीं। मक्खी को समझा दिया, लेकिन वो हटती ही नहीं। अब उसको दंड देना है। मान लो, चलो मारना ही है, तो बिना क्रोध किए मारो, तब तो ठीक है। जब आप क्रोध में आ के मारते हैं, तो हिंसा हो जाती है। अपने स्वभाव को बिगड़ने नहीं देना। क्रोध मत करना। क्रोध पूर्वक नहीं मारना। अब ऐसा करने में आपको कई साल लग जायेंगे। करो परिश्रम, क्रोध को जीतने के लिये।

200. शंका- क्या ब्रह्माण्ड में इस दुनिया के अलावा कहीं और भी ऐसी दुनिया है, जैसी इस पृथ्वी पर है?

☯ **समाधान-** बिल्कुल है। इसमें कोई शंका नहीं है।

● सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में इस बारे में लिखा है। ईश्वर सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ का कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं होता। आप और हम, जो थोड़ी-बहुत बुद्धि रखते हैं, जब भी कोई काम करते हैं, तो सोच-समझकर करते हैं। हम कोई फालतू काम नहीं करते। अगर कोई काम करने से कुछ भी लाभ नहीं है, तो हम बिल्कुल नहीं करेंगे। जब हम इतनी छोटी बुद्धि रखने वाले होकर भी, व्यर्थ में कोई काम नहीं करते, तो इतनी बड़ी सृष्टि बनाने वाला सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा क्यों करेगा। ब्रह्माण्ड में अरबों-खरबों आकाशगंगायें हैं। एक-एक आकाशगंगा में खरबों-खरबों तारे हैं, उनके अपने-अपने सोलर सिस्टम्स है। तो सवाल उठता है, कि इतनी लंबी-चौड़ी दुनिया जो ईश्वर ने बनाई है, क्या यह व्यर्थ में बनाई है? अगर यहाँ प्राणी न रहते हों, तो इतनी बड़ी सृष्टि बनाना व्यर्थ है। हमारे इस सौर मंडल में कम से कम एक पृथ्वी पर तो जीवन है। यह प्रत्यक्ष दिख रहा है। मंगल पर

जीवन नहीं मिला, बृहस्पति पर नहीं मिला, शुक्र पर नहीं मिला, बुध पर नहीं मिला, शनि पर नहीं मिला, न सही। विभिन्न ग्रहों में से एक ग्रह 'पृथ्वी' पर तो जीवन है। तो इसी हिसाब से अनुमान लगा लीजिये कि जैसे इस एक सौरमंडल में कम से कम एक पृथ्वी पर जीवन है। ऐसे ही प्रत्येक सौरमंडल में कम से कम एक ग्रह में तो निःसंदेह जीवन होना ही चाहिये, अन्यथा वो बनाना व्यर्थ है। तो अनुमान-प्रमाण से सिद्ध होता है, कि और भी करोड़ों अरबों पृथ्वियाँ हैं। वहाँ भी हमारे जैसे ही मनुष्य, पशु-पक्षी, आदि प्राणी रहते होंगे। वहाँ भी इसी ईश्वर का शासन चलता होगा। वहाँ भी ऐसे ही चार 'वेद' होंगे, जैसे हमारी इस धरती पर है।

201. शंका- क्या ईश्वर दयालु है और हम सबका भला चाहता है, तो उसने जीव को काम करने में स्वतंत्र क्यों बनाया? उसने सभी को सुबुद्धि क्यों नहीं दी, ताकि कोई बुरा काम कर ही न सके?

☯ **समाधान-** प्रश्न है, कि ईश्वर ने हमको स्वतंत्र क्यों बनाया? इसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने हमको स्वतंत्र नहीं बनाया है। बल्कि जीवात्मा स्वभाव से ही स्वतंत्र है। ईश्वर ने उसको छूट नहीं दी है। वह अनादिकाल से स्वतंत्र है। जब वह स्वभाव से स्वतंत्र है तो ईश्वर उसकी स्वतंत्रता में बाधक क्यों बने? यह तो अन्याय है। जो अनादिकाल से हमारा गुण-कर्म- स्वभाव है, ईश्वर उस पर लगाम (ब्रेक) क्यों लगाये, उस पर प्रतिबंध क्यों लगाये? तो जीव स्वभाव से स्वतंत्र है, इसीलिये वो स्वतंत्रता से कर्म करता है।

● हाँ, फल भोगने में वो परतंत्र है। इसलिये वेद में ईश्वर क्या कहता है कि- "सच बोलो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, दान दो, सेवा करो, परोपकार करो, अच्छे काम करो"। यह सब ईश्वर का आदेश नहीं है, बल्कि ये उसके सुझाव (सजेशन) हैं। ईश्वर कहता है ये अच्छे काम हैं, इन्हें

करो। और ये बुरे काम हैं, इन्हें मत करो। अच्छे करोगे, तो 'ईनाम' दूँगा। बुरे करोगे, तो 'दंड' दूँगा। आपकी इच्छा है, जो चाहे सो करो। इस तरह फल भोगने में आप परतंत्र हैं।

● अगर ऐसे ईश्वर हमको स्वतंत्र ही न छोड़े, हमारी स्वतन्त्रता पर प्रतिबंध लगा दें, तो फिर हम बुरे काम कर ही नहीं पायेंगे। और बुरे नहीं कर पायेंगे, तो फिर सृष्टि बनाने का उद्देश्य ही क्या रहा? अगर एक विद्यार्थी को कहा जाय, कि आप यहाँ बैठो और तीन घंटे परीक्षा दो और परीक्षा में हम जो कहेंगे, वो ही लिखना है, अपनी मर्जी से कुछ नहीं लिखना। तो बताइये परीक्षा का लाभ क्या रहा, परीक्षा का उद्देश्य ही क्या रहा? जब कोई उद्देश्य ही नहीं रहा, तो सब बेकार है। तो फिर परीक्षा क्यों हुई? जब विद्यार्थी अपनी मर्जी से कुछ लिख ही नहीं सकता, तो फिर परीक्षा व्यर्थ हुई? यही तो परीक्षा है, कि उसको छूट दी जाये। वो जो चाहे सो लिखे, बाद में अगर गलत लिखा पायेगा, तो आप उसके नंबर भले ही काट लेना, पर उसको अभी तो लिखने दो, तभी तो वो परीक्षा है। इसलिये संसार में, यह जीवन भी एक परीक्षा है। जैसे कॉलेज और स्कूल की तीन घंटे की परीक्षा होती है। ऐसे ही यह जीवन की भी तीन घंटे की परीक्षा है। स्कूल, कॉलेज की परीक्षा में तीन घंटे (१8० मिनिट) का समय होता है। जबकि हमारे जीवन की परीक्षा में घंटा कई वर्षों का होता है।

● पहला घंटा- बचपन है, दूसरा घंटा- जवानी है, और तीसरा घंटा- बुढ़ापा है। उसके बाद मृत्यु की घंटी बजने वाली है। उसके बाद नंबर मिलेंगे। अच्छे उत्तर लिखे अर्थात् अच्छे कर्म किये, तो अच्छा जन्म, और बुरे उत्तर लिखे अर्थात् बुरे कर्म किये, तो बुरा जन्म मिलेगा। स्कूल की परीक्षा में ईश्वर वाली परीक्षा में एक और अन्तर भी है। स्कूल की परीक्षा में तीन घंटे पूरे होने के बाद परीक्षा पूरी हो जाती है। तब घंटी बजती है। घंटी के बाद गणना (मार्किंग) होती है। बीच में मार्किंग नहीं होती। तीन घंटा जब तक पूरा न हो जाये तब तक नंबरिंग नहीं होती। परन्तु जीवन की परीक्षा में तो बीच में भी मार्किंग होती है। बीच में ही नम्बर मिलने शुरू हो जाते है। तात्पर्य है कि चालू (इसी) जीवन में ही कुछ कर्मों का फल मिलना शुरू हो जाता है। बचे हुये कर्मों का फल अगले जन्मों में धीरे- ध ीरे मिलता रहता है। जैसे ईश्वर की फल देने की व्यवस्था होती है, उसी के अनुसार फल मिलता रहता है। इसलिये ईश्वर ने हमको 'स्वतंत्र' छोड़ रखा है। वो हमारा स्वाभाविक धर्म है, हमारा स्वाभाविक अधिकार है। ईश्वर सबको अच्छी बुद्धि देता है। सुझाव तो अच्छा ही देता है। फिर हमारी मर्जी है, हम उसे सुनें या नहीं सुनें।

202. शंका- क्या गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण का है। यदि है, तो युद्ध स्थल में इतना अठारह अध्यायों का उपदेश कैसे संभव है?

☯ **समाधान-** इसका उत्तर है कि- जितना लंबा उपदेश आज गीता में उपलब्ध है, यह सारा का सारा उपदेश श्रीकृष्ण जी का नहीं है। और व्यावहारिक दृष्टि से युद्ध के मैदान में इतना लंबा उपदेश संभव भी नहीं है। महाभारत में मूल श्लोक दस हजार थे, और आज मिलते हैं- एक लाख। नब्बे हजार श्लोंको की तो महाभारत में मिलावट है। और महाभारत के ही एक हिस्से का नाम गीता है। गीता कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, अलग पुस्तक नहीं है। देखिये महाभारत के अंदर अठारह भाग हैं। इन भागों को 'पर्व' नाम से कहा गया है। अठारह पर्वो में एक छठा पर्व है, जिसका नाम है- 'भीष्म पर्व'। इस भीष्म पर्व के अठारह अध्यायों का नाम गीता है। जब महाभारत में इतनी मिलावट है, तो गीता में भी उतने ही प्रतिशत (परसेन्ट) मिलावट गिन लो। जब वहाँ दस हजार के एक लाख श्लोक हो गये, मतलब उससे नौ गुनी मिलावट हो गई, तो गीता में भी नौ गुनी मिलावट है। अब जितने श्लोक आजकल गीता में मिलते हैं। उनका दस प्रतिशत निकाल लो, कितना हुआ? साठ-सत्तर श्लोक बनेंगे। बस असली गीता इतनी ही थी। साठ-सत्तर श्लोक का उपदेश था, और वो पन्द्रह-बीस मिनट में हो सकता है। श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को भ्रांति होने पर पन्द्रह -बीस मिनट का उपदेश दिया, उसका दिमाग ठीक हो गया, और उसने कहा- लाओ मेरा गांडीव धनुष, मैं अभी कौरवों को ठीक करता हूँ। हो गई गीता पूरी। और कुछ नहीं है। बाकी सब बाद की मिलावट है, यानि प्रक्षेप है।

203. शंका- ईश्वर और जीव दोनों चेतन हैं। जीव में इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, क्रिया, सुख-दुःख आदि गुण हैं, क्या ईश्वर में भी ये गुण होते हैं?

☯ **समाधान-** हाँ, देखिये विचार कर लेते हैं। ईश्वर में, इच्छा होती है। अच्छा तो यह बताइये, कि ईश्वर सृष्टि बनाता है तो बिना इच्छा के बनाता है क्या? आप जो मकान बनाते हैं, रोटी बनाते हैं, तो क्या बिना इच्छा के बनाते हैं, या इच्छा होने पर बनाते हैं? नहीं। जब आप इच्छा होने पर ही काम करते हैं तो ईश्वर भी इच्छा होने पर ही काम करता है।

- शास्त्रों में लिखा भी है कि ईश्वर में इच्छा होती है। पर वैसी इच्छा नहीं होती, जैसी कि जीवों की इच्छा होती है। ईश्वर की इच्छा में और जीवों की इच्छा में मूलभूत फर्क है। क्या अंतर है?

- जीवों की इच्छा दो प्रकार की होती है। एक, अपनी कमी को पूरा करने के लिये और एक, दूसरे के भले के लिये। जीवों को आनंद चाहिये, सुख चाहिये, रोटी चाहिये, कपड़ा चाहिये, मकान चाहिये। कुछ कमी है हमारे पास, इसलिये हमको अपनी कमी की पूर्ति करने के लिये भी इच्छा होती है और दूसरों की सेवा के लिये भी हमारी इच्छा होती है। हम दूसरों की सेवा भी करते हैं।

- ईश्वर में दो तरह की इच्छा नहीं है। ईश्वर में केवल एक ही प्रकार की इच्छा है- कौन सी? दूसरों के भले की। पहले वाली इच्छा ईश्वर में नहीं है। क्योंकि ईश्वर में स्वयं में कोई कमी नहीं है। जब कमी ही नहीं है तो कमी को पूरा करने का प्रश्न ही कहाँ से आयेगा। परंतु ईश्वर में इच्छा तो है। ईश्वर में परोपकार की इच्छा है। ईश्वर सबका भला करना चाहता है। 'ईश्वर क्या चाहता है', सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है, कि ईश्वर सबके लिए सुख और सबकी उन्नति चाहता है।

- क्या ईश्वर में द्वेष भी है। जी हाँ। परन्तु द्वेष क्या होता है, पहले इसको समझ लीजिये। अनिच्छा का नाम द्वेष है। मैं यह चीज नहीं चाहता, मुझे इसकी इच्छा नहीं है, इसका नाम है- द्वेष। तो ईश्वर को पाप-कर्मों से द्वेष है। समझ में आया। क्या ईश्वर पाप करना चाहता है? नहीं चाहता। तो ईश्वर को पाप से, अन्याय से, बुराई से इन सब चीजों से द्वेष है।

- ध्यान दीजियेगा, द्वेष दो प्रकार का होता है। एक द्वेष ऐसा होता है जिससे व्यक्ति दुःखी हो जाता है। और एक द्वेष ऐसा होता है जिससे व्यक्ति दुःखी नहीं होता। एक मनुष्य को एक कुत्ते ने काट लिया, तो

उस मनुष्य को कुत्ते से द्वेष होता है, उस पर क्रोध आता है, गुस्सा आता है और वह उससे परेशान रहता है, उससे बदला लेने की बात सोचता है, दुःखी होता है। मनुष्य ऐसे दुःखी हो जाता है। ईश्वर ऐसे दुःखी नहीं होता। ईश्वर का द्वेष दूसरे प्रकार का है। बस वो यह चाहता है, कि मनुष्य को पाप नहीं करना चाहिये, बुराई से बचना चाहिये। बस, इतना ही उसमें द्वेष है। लेकिन इस द्वेष के कारण ईश्वर दुःखी नहीं होता।

- टाइमिंग ईश्वर ने डिसाइड की है कि इतने समय के बाद में प्रलय करूँगा, और इतने समय के बाद दोबारा सृष्टि बनाऊँगा। वो ईश्वर बनायेगा, अपने आप होगा नहीं, ईश्वर करेगा। जैसे हम अपनी योजना बनाते हैं। कल हम ये काम करेंगे, परसों ये काम करेंगे, एक वर्ष तक ये जॉब करेंगे, फिर अगले वर्ष ये जॉब करेंगे। और जैसे हम अपनी योजना बनाते हैं, वैसे ही ईश्वर भी अपनी योजना बनाता है।

- साइंस वालों में और आध्यात्म वालों में यही तो फर्क है। साइंस वाले कहते हैं- सृष्टि बनती है। हम कहते हैं- नहीं, सृष्टि बनती नहीं है बनाई जाती है। ईश्वर का द्वेष दुःखदायक नहीं है। जो स्वभाव से उसका गुण है, वो तो रहेगा।

- सोचियेगा, चिंतन कीजियेगा, जरूरी नहीं है, कि सारी बात आज ही समझ में आ जायेगी। जो बात मुझे चालीस साल में समझ में आई, वो बात आपको चालीस मिनट में कैसे समझ में आ जायेगी? आपको भी मेहनत करनी पड़ेगी, तब जाकर समझ में आयेगी।

- दरअसल जो ईश्वर की इच्छा है, उस बारे में स्वामी दयानंद जी का अभिप्राय स्पष्ट है। पर लोग इसका उल्टा अर्थ यह करते हैं-'हे ईश्वर! अब मैंने काम किया सो किया, अब मैं मर रहा हूँ, तो तुम्हारी यही इच्छा है, कि मैं मर जाऊँ, तो बस ठीक है, मैं मरता हूँ। तुम्हारी ये इच्छा पूरी हो।' लोग ऐसा अर्थ करते हैं, यह गलत है। ईश्वर की इच्छा नहीं थी कि स्वामी दयानंद जी मर जायें। ईश्वर की इच्छा थी, कि वेद का प्रचार होना चाहिये, और स्वामी दयानंद जी तो वेद का प्रचार कर रहे थे, वो क्यों मर जायें। और मर जायें, तो ईश्वर की इच्छा के विरूद्ध बात है। यह अनाड़ी लोग ऐसी व्याख्या करते हैं। यह उसका अर्थ नहीं है। सही अर्थ यह है- ईश्वर की इच्छा है, सबकी भलाई और सबकी उन्नति हो। वस्तुतः स्वामी दयानंद का यह विचार है, जो सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है। तो स्वामी दयानंद के इस सिद्धांत के अनुसार उस वाक्य का अर्थ लगाइये। स्वामी दयानंद जी ने कहा- 'मेरा जितना जीवन था मैंने काम किया। देश की, धर्म की सेवा की, और अब मैं शरीर छोड़ के जा रहा हूँ। और ईश्वर की

इच्छा है, कि सबको सुख मिले, सबकी उन्नति हो, तो मैंने जितना किया सो किया। बाकी ये दुनिया वाले लोग अब ईश्वर की इच्छा को पूरा करें। सबकी उन्नति करें, सबकी भलाई करें। यह है उसका सही अर्थ। ईश्वर में इच्छा है, द्वेष है, प्रयत्न है। ईश्वर सृष्टि बनाता है, उसमें प्रयत्न है। क्रिया भी है।

- और रही बात फिर सुख-दुःख की। हाँ ईश्वर में सुख तो है, ईश्वर हमेशा आनंद में रहता है। उपनिषद्कार ने लिखा है- 'रसो वैसः' स्वर्यस्य च केवलं -अर्थात् जिसमें केवल सुख ही है, दुखः बिल्कुल नहीं है, ऐसा है वह ईश्वर। ईश्वर आनंद स्वरूप है। आनन्दं ब्रह्मणों विद्वान् -अर्थात् ईश्वर के आनंद को जानकर के मनुष्य (जीवात्मा) भी सुखी हो जाता है। ऐसे-ऐसे वेद में भी बहुत से मंत्र आते हैं। जिनमें ईश्वर को आनंद स्वरूप बताया गया है। जैस कि रसेन तृप्जः न कुतश्चनोनः ।। अर्थात् ईश्वर आनन्द से परिपूर्ण है, उसमें कोई भी कमी नहीं है। तो ईश्वर में आनंद तो है, पर वो दुःखी नहीं है। दुःख कभी नहीं भोगता। दुःख से हमेशा परे है। इस-इस प्रकार से ईश्वर में भी ये गुण मानने चाहिये।

204. शंका- मृत्यु के उपरांत मस्तिष्क भस्म हो जाता है, हृदय भी भस्म हो जाता है, फिर इसमें संस्कार कैसे संचित रह सकते हैं?

☯ **समाधान-** ये जो 'संस्कार' जमा होते हैं वो 'मन' में होते हैं। मन 'सूक्ष्म शरीर' का भाग है। वो अलग है। और हमारा यह मस्तिष्क 'स्थूल शरीर' का भाग है। यह उससे अलग है। और यह हृदय भी स्थूल शरीर का भाग है। जब मृतक का अंतिम संस्कार करते हैं अर्थात् अग्नि-संस्कार करते हैं तो स्थूल शरीर वाला मस्तिष्क जल जायेगा, हृदय भी जल जायेगा, और पूरा स्थूल शरीर भी जल जायेगा पर 'मन' नहीं जलेगा। मन तो आत्मा के साथ अगले जन्म में चला जायेगा। सस्कार जमा हुये थे, आत्मा और मन में। इसलिये 'संस्कार' आत्मा और मन के साथ चले जाते हैं। इस प्रकार से संस्कार पुर्नजन्म में चले जायेंगे।

205. शंका- किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरूष का जन्म मिलता है?

☯ **समाधान-** भई ये पूरे-पूरे तो मुझे भी समझ में नहीं आये, तो मैं कैसे बताऊँ आपको कि कौन से कर्म करेंगे तो स्त्री बनेंगे, और कौन से कर्म करेंगे तो पुरूष बनेंगे। मुझे इतना समझ में आया कि बस अच्छे से अच्छा कर्म करो। अब भगवान बना देगा, जो बना देगा।

- कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी हुई है, कि स्त्री जन्म अच्छा है। कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी है, कि पुरूष जन्म अच्छा है। जो सत्य है, वो सत्य है। सत्य को जानना चाहिये, समझना चाहिये और सत्य को खुलकर स्वीकार करना चाहिये, उससे हमारी उन्नति होती है।

- वैसे तो स्त्री और पुरूष दोनों एक ही योनि में हैं, मनुष्य योनि में। मनुष्य योनि की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ऊँचा-नीचा नहीं है। क्या स्त्रियों का बस में, रेल में आधा टिकिट लगता है और पुरूषों का पूरा लगता है? इस हिसाब से दोनों भारत के समान नागरिक हैं। सबको समान अधिकार है, वोट देने का अधिकार बराबर है। पाकिस्तान में स्त्रियों का आधा वोट है, वो मुझे पता है। वो गलत बात है। यह वेद के अनुसार अन्याय है। वेद में स्त्री और पुरूष दोनों को बराबर बताया है।

- हाँ, किसी व्यावहारिक दृष्टि से किसी-किसी क्षेत्र में स्त्रियाँ ऊपर हैं, पुरूष छोटे हैं। किसी क्षेत्र में पुरूष बड़े हैं तो स्त्रियाँ छोटी हैं। वो अलग-अलग क्षेत्र हैं। कौन सा क्षेत्र है इसमें? वेद कहता है- जब बालक के साथ माता-पिता का संबंध हो, तो माता बड़ी और पिता छोटा। माता का नंबर पहला, माता सबसे पहला गुरू है। अगर पहला गुरू बुद्धिमान हो, तो बच्चा बुद्धिमान बनेगा। और पहला गुरू ही मूर्ख हो तो बच्चा मूर्ख बनेगा। तो पहला गुरू माता है, तो माता का नंबर पहला। यहाँ पुरूष छोटा और स्त्री बड़ी। यह एक क्षेत्र है।

- और दूसरा क्षेत्र है, पति-पत्नी का। जब पति-पत्नी का आपस में संबंध हो, तो वहाँ पति बड़ा और पत्नी छोटी, वहाँ यह नियम है। अब बताइये क्या चाहिये आपको, एक तरफ ये (पुरूष) बड़े हैं, एक तरफ ये (स्त्रियाँ) बड़े हैं, दोनों बराबर हो गये, बात खत्म। झगड़ा-वगड़ा कुछ नहीं।

- हाँ, यह ठीक है। कहीं व्यावहारिक दृष्टि से कुछ समस्यायें पुरूषों के साथ कम हैं, और स्त्रियों के साथ कुछ अधिक हैं। कुछ हमारी जिम्मेदारियाँ रहती हैं व्यवहार की। तो उसमें स्त्रियों पर बंधन अधिक रहते हैं, पुरूषों पर उतने नहीं होते हैं। पुरूष तो अकेला घूम लेगा, खा लेगा,

कहीं रात को दो बजे प्लेटफार्म पर सो जायेगा, कोई पूछने वाला नहीं। वो तो अकेला ही पूरे देशभर में घूम आयेगा। पर स्त्रियों को इतनी सुविधा नहीं है। उस दृष्टि से हमको स्वीकार करना पड़ता है। बाकी तो मनुष्यता की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ज्यादा हीन भावना (इंफीरियरिटी कॉम्पलेक्स) की जरूरत नहीं है।

● स्त्रियाँ बेशक पढ़ सकती हैं। वेद में लिखा है, 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है, महर्षि दयानंद जी ने लिखा- अगर ईश्वर का प्रयोजन स्त्रियों को पढ़ाने में न होता, तो इनके शरीर में आँख और कान क्यों रखता। वे भी वेद पढ़ सकती हैं, वे भी वैराग्य प्राप्त कर सकती हैं, वे भी संन्यास ले सकती हैं। पर वे संन्यास लेती नहीं, झगड़े करती हैं, संन्यास नहीं लेती, तो हम क्या करें। ये प्रायः झगड़ा ज्यादा करती हैं, राग-द्वेष ज्यादा करती हैं, पढ़ाई करती नहीं हैं, दोष इनका है। बाकी इनका चाँस पूरा है। छूट पूरी है, ये भी पढ़ें, वेद पढ़ें। ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् अर्थात् अथर्ववेद में लिखा है कि- "कन्या को भी ब्रह्मचर्य का पालन करके, वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। और विद्या पढ़कर फिर विवाह करना चाहिये।" तो छूट सबको है सारी। बाकी कोई करें या न करें, वो उसकी मर्जी।

206. शंका- जैसे कार आदि जड़ वस्तु और आँख, हाथ आदि अपने जड़ अंगों को एक बार नियंत्रित करने पर, वो पर्याप्त समय तक नियंत्रित रहते हैं। परंतु मन, जो कि जड़ है, उसको एक बार नियंत्रित करने पर भी वो बार-बार अनियंत्रित होकर हमारे ध्यान में बाधा डालता ही रहता है, ऐसा क्यों? कृपा करके समझा दें?

☯ **समाधान-** एक व्यक्ति कार चला रहा है। और वो कार चलाते-चलाते एक्सीलेटर पर पाँव रखता है। और एक्सीलेटर को थोड़ा दबाता है तो कार भागती है। फिर पाँव थोड़ा पीछे खींच लेता है, तो स्पीड कम हो जाती है। और वो बार-बार ऐसे एक्सीलेटर दबाता रहे तो कार फिर ऐसे ही चलेगी न। झटके मार-मार के, फिर चलेगी, फिर स्लो हो जायेगी, फिर चलेगी, फिर स्लो हो जायेगी। अब बताइये, इसमें किसका दोष है। कार का दोष है , कि ड्रायवर का दोष है। तो आप मन को ऐसे ही करते रहते हैं। उसको बार-बार एक्सीलेटर देते रहते हैं। और कहते हैं -साहब, यह ज्यादा परेशान करता है। वास्तव में मन परेशान नहीं करता है। आप

ही उसको भगाते रहते हैं। आप उसमें विचार उठाते रहते हैं, वो भागता रहता है। जैसे 'कार' जड़ है वैसे ही 'मन' जड़ है।

● गलती हमारी है। हमने मन को ठीक तरह से चलाना सीखा नहीं। अब मन को चलाना भी सीख लीजिये और मन को रोकना भी सीख लीजिये। तो यह समस्या हल हो जायेगी। मन कैसे चलता है, मन में विचार कैसे आते हैं। पहला कारण है- 'इच्छा' और दूसरा कारण है- 'प्रयत्न'। तो लोग जब ध्यान में बैठते हैं, वो मन में दुनिया भर की इच्छायें पैदा करते रहते हैं। कपड़े खरीदने हैं, शॉपिंग में जाना है, फलानी पार्टी में जाना है, बच्चे की स्कूल की फीस भरनी है, कोर्ट में झगड़ा चल रहा है। वो तरह-तरह की इच्छायें पैदा करते रहते हैं। और फिर उन बातों का याद करने का प्रयत्न करते रहते हैं। इच्छा करते रहते हैं, प्रयत्न करते रहते हैं, तो मन में विचार उठते रहते हैं।

● आप उन सब बातों को याद करने की इच्छा को बंद कर दो। और उन सब बातों को याद करने का प्रयत्न बंद कर दो। इच्छा भी नहीं करनी, प्रयत्न भी नहीं करना। इस तरह कोई विचार नहीं आयेगा। मन बिल्कुल आपकी इच्छा के अनुसार चलेगा।

● अगर एक मिनट का प्रयोग करना हो तो अभी कर लो। हाँ जी करेंगे। आप आसन लगाइये, कमर सीधी, गर्दन सीधी, आँखे बंद। पूरी सावधानी के साथ मेरी बात को सुनें, और मन में वैसा ही सोचने का प्रयत्न करें। कल्पना कीजिये, आप अपने घर में बैठे हैं। अपने ड्राइंग रूम में, जहाँ आपके अतिथि लोग आकर बैठते हैं, उस कमरे में बैठे हैं। आपके सामने टेबल पर अखबार पड़ा है। आपने अखबार उठाया और उसकी हेडलाइन पढ़नी शुरू की। कश्मीर में बम विस्फोटः चार मृत, अठारह घायल। दूसरा समाचार- महाराष्ट्र के एक गाँव में चोरी। पाँच लाख की संपत्ति चोर लूट कर ले गये। आपने समाचार पढ़ा। इतने में दरवाजे पर घंटी बजी। आपने अखबार छोड़ दिया, उठकर के बाहर गये, दरवाजा खोला। आपके एक मित्र आये। आपने उनको नमस्ते किया, कहा-आइये, स्वागत है, बहुत दिनों बाद मिले। उनको प्रेम से अंदर लेकर आये। वहीं पर बैठाया, ड्राइंग रूम में। हालचाल पूछा, सब ठीक-ठाक है ? हाँ ठीक-ठाक है। फिर उनको बैठाकर आप रसोई में गये। एक डिब्बे में से आपने चार लड्डू निकाले, प्लेट में लड्डू रखे। दो गिलास पानी भरा, और ट्रे में पानी का गिलास और लड्डू की प्लेट ले आये। उन आये हुये मित्र को लड्डू खिलाया, एक लड्डू मित्र ने खाया, एक लड्डू आपने खाया। दोनों ने थोड़ा-थोड़ा पानी पिया। दस मिनट कुछ बातचीत हुई, कुछ चर्चा हुई, उसके बाद वो मित्र जाने लगे। तो आपने प्रेम से विदाई दी। और उनको बाहर दरवाजे तक छोड़कर आये।

बस, अब आप आँखें खोल सकते हैं। अब बताइये, आपने अपने मित्र को लड्डू खिलाया, कि नहीं खिलाया। खिलाया। और आपने खाया कि नहीं खाया, खाया न। अब बताइये, दूसरा विचार क्यों नहीं आया। अब नहीं आया न। अब वही विचार आया। अब तो दूसरा विचार नहीं आया। और ध्यान में दूसरा विचार क्यों आता है।

- कारण पहले मैं बता चुका हूँ। लड्डू खाने में रूचि है, ईश्वर में रूचि नहीं है, गड़बड़ी यह है। लड्डू खा रखा है, पानी पी रखा है, मित्र को देख रखा है, अपना घर भी मालूम है, ड्राइंग रूम भी पता है, न्यूज पेपर भी रोज पढ़ते हैं। इन सब से हम परिचित हैं और इन चीजों में, कार्यों में खूब रूचि है। इसलिये वहाँ पर मन खूब लगता है। और ईश्वर में रूचि नहीं, ईश्वर का महत्व नहीं जानते, ईश्वर के प्रति श्रद्धा कम है, इसलिये ईश्वर का विचार मन में नहीं टिकता है। तो इस प्रयोग से पता चला, कि हमारी इच्छा से, हमारे प्रयत्न से ही मन में विचार उठते हैं। बस, तो ईश्वर के प्रति इच्छा पैदा करो, ईश्वर के प्रति रूचि बनाओ और उसको स्मरण करने का प्रयत्न करो। तो यह मन ठीक-ठाक चलेगा। कार की तरह चलेगा। फिर दूसरी बात नहीं उठायेंगे, ईश्वर की बात उठायेंगे।

207. शंका- जब शरीर जड़ है, तो इसकी पीड़ा हमें क्यों होती है?

☯ **समाधान-** अच्छा जब आपकी कार टूटती है तो किसको पीड़ा होती है? मकान गिर जाता है, तो किसको पीड़ा होती है? आपको ही होती है न। वो जड़ है। जड़ मकान टूटने पर, जड़ कार के टूटने पर भी आपको पीड़ा होती है। इसलिये होती है कि क्योंकि आपका उससे कोई संबंध है। और जापान में भूकंप आये, पाकिस्तान में भूकंप आये तब पीड़ा नहीं होती। क्योंकि उससे आपका संबंध नहीं है। यहाँ सवाल जड़ और चेतन का नहीं है, सवाल तो संबंध का है। जिस वस्तु से हमारा संबंध है, उस वस्तु के टूटने-फूटने, नष्ट होने पर हमको कष्ट होता है, वो वस्तु चाहे जड़ हो, चाहे जो भी हो। मकान जड़ है, कार भी जड़ है, वो टूट जाते हैं तो पीड़ा होती है, क्योंकि वो हमारी कार है। ऐसे ही यह शरीर हमारा है। शरीर जड़ है, और शरीर में चोट लगती है तो हमको कष्ट होता है। कष्ट तो चेतन को ही होना है। जड़ वस्तु तो सुख-दुख को महसूस करती नहीं। चेतन हैं हम (आत्मा), इसलिए हमको ही कष्ट होता है। तो अब शरीर को जो सामान्य चोट लगती है, उतना कष्ट तो हम सहन भी कर लेंगे। पर ज्यादा गहरी चोट लगेगी, तो उस कष्ट को रोकने का हमारा सामर्थ्य नहीं है। इसलिये

हमको न चाहते हुए भी वो कष्ट भोगना पड़ता है। जैसे- सर दुख रहा है, पेट दुख रहा है, बुखार आ गया, तो उस कष्ट को हम रोक नहीं पाते, जीवात्मा में इतनी शक्ति नहीं है। इसलिये उसको भोगना पड़ता है। और फिर दवाई-चिकित्सा करते हैं तो वो रोग हट जाता है, वो कष्ट मिट जाता है। सार यह हुआ - शरीर के साथ हमारा संबंध होने के कारण हमें पीड़ा होती है।

208. शंका- जीवात्मा निराकार है या साकार? इस प्रश्न के उत्तर में आपने जीवात्मा को निराकार बतलाया था और कहा था कि वो चेतन है। जो चेतन होता है, वो निराकार होता है और जो जड़ होता है वो साकार होता है। अब प्रश्न बना कि ईश्वर निराकार होने से एक है, परंतु जीवात्मा निराकार होने से अनेक क्यों है? क्या कठोपनिषद् के आचार्य ने जीवात्मा को आकारवान माना है?

☯ **समाधान-** निराकार होने से वो वस्तु एक ही होगी, ऐसा कोई नियम नहीं है, और न ही मैंने ऐसा बताया। निराकार होने से वो चेतन है, यह तो मैंने बताया था। ईश्वर निराकार है, वो चेतन है। जीवात्मा निराकार है, वो भी चेतन है। ये दोनों निराकार हैं, दोनों चेतन हैं। दूसरी बात यह है कि- निराकार वस्तु एक भी हो सकती है, अनेक भी हो सकती हैं। जीवात्मा अनेक हैं और ईश्वर एक है। ईश्वर स्वभाव से एक है और जीवात्मा स्वभाव से अनेक हैं। जिस वस्तु का जो स्वभाव होता है, उसके स्वभाव पर 'क्यों' का प्रश्न करना अनुचित है। स्वभाव है, सो है। स्वभाव

का मतलब क्या हुआ? 'स्व' 'भाव', यानि उसकी ओरीजिनैलटी, वो उसका स्वभाव है। अनादिकाल से उसका वैसा ही धर्म है। जो है सो है, अब हम उसमें तोड़-मरोड़ कैसे कर सकते हैं। हमने कहा था- जो निराकार है, वो चेतन है, जिसका आकार है, वो जड़ है। बताइये नियम कहाँ टूटा। पृथवीजड़ है, पृथवी का आकार है, कहाँ नियम टूटा। वायु और आकाश भी जड़ हैं। उनका आकार भी सूक्ष्म है, हम इनको आँखों से देख नहीं सकते। वायु और आकाश तो स्थूल भूत हैं। अभी इससे छोटी सूक्ष्म चीजें और बहुत सारी हैं। मन है, इन्द्रियाँ हैं, बुद्धि है। बिल्कुल नीचे चले जाओ, सत्त्व, रज और तम नामक प्रकृति के मूल तत्त्व, वो भी साकार हैं। पर उनमें आकार सूक्ष्म है। इनको आँखों से नहीं देख सकते, माइक्रोस्कोप से भी नहीं देख सकते। फिर भी वो साकार हैं। सत्यार्थ-प्रकाश में महर्षि दयानंद जी ने लिखा है- यदि प्रकृति निराकार होती, तो उस निराकार प्रकृति से साकार जगत कैसे बनता? जगत साकार है या निराकार? साकार है न। जब साकार जगत है तो प्रकृति भी साकार होगी। जैसे गुण कारण द्रव्य में होते हैं, वैसे कार्य द्रव्य में आते हैं। यह नियम है। प्रकृति साकार है इसलिये जगत साकार है। भले ही प्रकृति का आकार सूक्ष्म है, वो हमको इन आँखों से नहीं दिखता, तो भी साकार है। आत्मा एक नहीं अनेक है, पर वो निराकार होने से चेतन है। और ईश्वर भी निराकार होन से चेतन है। सूक्ष्म शरीर जड़ है। वो निराकार नहीं है। वह साकार है। पर वो सूक्ष्म इतना है, कि हम आँख से नहीं देख पाते। जिन चीजों को हम आँख से देख नहीं पाते, उनको मोटी भाषा में निराकार कह देते हैं। वास्तव में वो पूरी तरह निराकार नहीं है। पूरी तरह निराकार वस्तुयें वो ही हैं, जो 'चेतन' वस्तुएं हैं।

प्रकृति साकार है। परन्तु जड़ होने से वह बन्धन का अनुभव नहीं करती। इसलिये प्रकृति की मुक्ति का कोई प्रश्न ही नहीं है। जीवात्मायें निराकार हैं और वे बंधन में आती रहती हैं। इसलिये उनको मुक्ति की आवश्यकता पड़ती है। ईश्वर निराकार है, परन्तु योगदर्शन व्यास-भाष्य में लिखा है, कि ईश्वर तो हमेशा से ही मुक्त है। वो बंधन में आया ही नहीं। इसलिए उसके लिये कैसे कहेंगे, कि उसको मुक्ति की आवश्यकता है। उसको आवश्यकता नहीं है, वो पहले से ही मुक्त है। अनादिकाल से मुक्त है, आज भी मुक्त है और आगे अनंतकाल तक मुक्त रहेगा। इसलिये ईश्वर को तो मुक्ति की आवश्यकता नहीं है। जीवात्माओं को ही मुक्ति की आवश्यकता है, क्योंकि वो बंधन में आते रहते हैं।

209. शंका- ध्यान करते समय किस चीज या आकृति का मन में ध्यान किया जाये? उस चीज को या नाम को या भगवान का कहाँ पर ध्यान लगाया जाये। उसका स्थान और उसका स्वरूप बताने की कृपा करें तथा किस आसन में तथा किस समय ध्यान किया जाये?

☯ **समाधान-** देखिये, आसन तो यह है, जिसमें हम चौकड़ी मार के बैठें हैं। यह है 'सरल आसन', सबसे आसान। इस आसन में भी आप ध्यान कर सकते हैं। फिर एक है 'स्वस्तिक आसन।' दाँये पाँव को उठाकर के बाँये पाँव की पिंडली पर उल्टा रख लें और बाँये पॉव को इस दाँये पाँव की पिंडली के नीचे रख दें, उल्टा करके। और कमर सीधी, गर्दन सीधी, भुजायें सीधी। यह हो गया स्वस्तिक आसन। इसमें भी बैठ सकते हैं। यह भी सरल है। फिर थोड़ा कठिन 'पद्मासन' है। दायाँ पाँव ऊपर उठाओ, बांयी जंघा पर रखो। फिर बाँया पाँव उठाकर दांयी जंघा पर रखो। अब यह थोड़ा कठिन है। इसको 'पद्मासन' कहते हैं। किसी-किसी को इसमें बैठने का अभ्यास हो तो इसमें भी ध्यान कर ले और नहीं हो तो कोई बात नहीं।

ध्यान का समय आपकी इच्छा पर है। सुबह चार बजे बैठें, पाँच बजे बैठें, छह बजे बैठें, सात बजे बैठें। दिन निकलने से पहले कर लें, तो अच्छा है। उस समय शोर-शराबा नहीं होता। शांति होती है तो मन अच्छा लगेगा। आसानी से ध्यान होगा। शाम को भी सूर्यास्त के आसपास का समय ध्यान करने के लिए अच्छा है। इसके अलावा यदि मजबूरी है, जैसे कि कोई आठ बजे ऑफिस से घर आता है तो आठ बजे कर लो। कोई सात बजे आता है तो सात बजे कर लो। नौ बजे आता है तो नौ बजे कर लो और उसको टाइम ही नहीं मिलता है, तो रात को खाना खाके सोने से पहले कर लो। कुछ तो करो, कभी भी ध्यान करो। ध्यान जरूरी है। अगर प्रॉपर टाइम पर बैठ सकते हैं तो बहुत अच्छा है। सही समय सुबह सूर्योदय से पहले और शाम को सूर्यास्त के आसपास है। यदि सही अनुकूल समय नहीं मिलता तो आगे-पीछे करें।

जहाँ आपको मन एकाग्र करने में सुविधा हो, वहाँ पर ध्यान करें। अधिकांश लोगों को मस्तक के बीच में, मन एकाग्र करने में सुविधा रहती है, आसानी होती है। वे आँख बंद करके अपनी अंतर्दृष्टि से मस्तक के बीच के स्थान को देखें। और रूप, रंग, आकृति, लाइट, कुछ नहीं देखनी, सब हटा दीजिये। बिल्कुल अंधेरा बनाईये, जैसे रात को अंधेरा होता है,

ऐसा खूब गहरा अंधेरा अपने मन में देखिये। फिर अंधेरे के बाद एक लंबा चौड़ा विस्तृत आकाश देखिये। खाली-खाली स्थान और अंधेरा ये दो चीजें देखिये। यह हो गई ध्यान की तैयारी। अब ईश्वर का ध्यान शुरू करेंगे। पर ध्यान का 'प्रैक्टिकल' करने से पहले होती है 'थ्योरी'। पहले थ्योरोटिकल समझ लो, कि ईश्वर कैसा है? लोगों को यहीं झगड़ा है बहुत। अच्छा यह बताइये, ईश्वर एक है या अनेक? एक है, बस है याद रखना। अब ये प्रैक्टिकल के लिए पहले हम थ्योरी तैयार कर रहे हैं। पहले थ्योरी ठीक करेंगे, फिर प्रैक्टिकल करेंगे। तो ईश्वर एक है। दूसरी बात- एक ईश्वर एक जगह पर रहता है, या सब जगह रहता है? सब जगह रहता है। जो वस्तु सब जगह रहती है, क्या उसकी शक्ल, फोटो, आकृति होनी चाहिये या नहीं होनी चाहिये? नहीं होनी चाहिये। अब देखो, बात साफ हो रही है न। हमारी यह थ्योरी तैयार हो रही है। ईश्वर एक है, वो सब जगह रहता है, उसकी कोई शक्ल नहीं है, वो निराकार है। तीन बात साफ हो गई। मेरे साथ दोहराईये पहली बात क्या थी? ईश्वर एक है। दूसरी बात- ईश्वर सब जगह रहता है और तीसरी बात- ईश्वर निराकार है। अब चौथी बात- ईश्वर चेतन है या जड़? चेतन है। तो यह चौथी बात दिमाग में रखनी है कि ईश्वर चेतन है। गॉड इज ओमनीशियन्ट, ईश्वर सर्वज्ञ है, वो सब कुछ जानता है। वो ईंट, पत्थर की तरह, दीवार की तरह जड़ नहीं है। हमारी आपकी तरह चेतन है, सोचता है, समझता है, सबको देखता है, सुनता है, सबके कर्मों का हिसाब रखता है। तो चौथी बात ईश्वर चेतन है। और पाँचवी बात- ईश्वर में आनंद है या नहीं है? है। बस पाँच बात तैयार रखो, ये थ्योरी हो गई। ईश्वर एक है, सर्वव्यापक है, निराकार है, चेतन है, आनंदस्वरूप है। यह थ्योरी तैयार करके और फिर ध्यान करेंगे। हमने ध्यान के लिए मन को एकाग्र किया और ऐसा सोचा कि चारों तरफ खूब गहरा अंधेरा है, और शून्य आकाश है। कुछ नहीं। इतनी तैयारी करने के बाद अब वो पाँच बातें यहाँ दोहरायेंगे। इस पूरे आकाश में एक ईश्वर है और वो पूरे आकाश में सर्वव्यापक है, फैला हुआ है। वो निराकार है उसकी कोई आकृति नहीं है, कोई शेप नहीं, कोई कलर नहीं, कोई फोटो नहीं, कुछ नहीं वो चेतन है। और आनंद का भंडार है। जैसे समुद्र में पानी ही पानी होता है, ऐसे ही ईश्वर में आनंद ही आनंद है। इस तरह से बैठकर पाँच बातें दोहरायें और फिर ईश्वर का ही चिंतन करें। दूसरी बात बीच में नहीं घुसनी चाहिये। खाने-पीने की बात, शॉपिंग की बात, टेलीफोन की बात, बच्चे के स्कूल की फीस की बात, लड़ाई-झगड़े की बात, मुकदमे की बात बीच में कोई नहीं आनी चाहिये। बस यही पॉच बातें दोहराइये। और फिर इसके बाद ओ३म् का जप कर सकते हैं। ओ३म् का

जप अर्थ सहित करें। केवल ओ३म् शब्द बोलें, फिर उसका अर्थ बोलें। दूसरा विकल्प है- ओ३म् के साथ ईश्वर का एक गुण जोड़ दें। जैसे- 'ओ३म् आनंदः'। यह एक मंत्र हो गया। इस तरह से मंत्र बोलें, फिर उसका अर्थ बोलें। तीसरा विकल्प- फिर गायत्री मंत्र का पाठ करें, वो भी अर्थ सहित करें। चौंथा विकल्प- वैदिक संध्या के मंत्रों से ईश्वर का ध्यान करें। मंत्र भी बोलें। मन में, एक-एक शब्द का अर्थ भी दोहरायें, और फिर उसका भावार्थ भी दोहरायें। इस तरह से ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। कोई लाइट, कोई आकृति, कोई फोटो, कोई गुरू जी का चित्र कुछ नहीं रखना। कई लोग गुरूजी का ही ध्यान करते हैं। कोई उनका फोटो लगा लेता है, उसको देखता रहता है। फिर आँख बंद करके उसी का ध्यान करता रहता है। ये आपको मुक्ति नहीं दिलाने वाले। ये जो शरीरधारी हैं, गुरू इनमें से कोई आपको मुक्ति दिलाने वाला नहीं है। ये सब मनुष्य लोग हैं। इनमें से कोई परमात्मा नहीं, किसी के पास शक्ति नहीं, किसी के अधिकार में मोक्ष नहीं। मोक्ष केवल सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान परमात्मा के हाथ में है। अगर आपको मोक्ष चाहिये, आनंद चाहिये तो जैसे अभी हमने थ्योरी पर विचार किया, ऐसे ही ईश्वर का ध्यान करना है और किसी का नहीं।

210. शंका- क्या कुसंस्कार से आत्मा दबता है?

☯ **समाधान-** जी हाँ, कुसंस्कारों से आत्मा दबता है, आत्मा की अवनति होती है। इसलिये कुसंस्कारों का विरोध करना चाहिये।

211. शंका- क्या जब हम समाधि अवस्था प्राप्त करें तब ही ईश्वर का अनुभव होगा?

☯ **समाधान-** जी हाँ, ईश्वर का अनुभव, जो सूक्ष्म अनुभव है, जिसको समाधि कहते हैं, समाधि-प्रत्यक्ष कहते हैं, वो तो समाधि लगाने पर ही होगा। परंतु उससे पहले भी कुछ मोटे स्तर का अनुभव हो सकता है। और वैसे बहुत सारे लोगों को होता भी है, पर वो ध्यान नहीं देते, ध्यान कम देते हैं। कैसे होता है ईश्वर का अनुभव? पहले भी मैंने कहा था, कि जब हम बुरा काम करने की बात सोचते हैं, तो मन में भय, शंका, लज्जा होती है। होती है कि नहीं होती? होती है न। यह जीवात्मा की ओर से नहीं है। यह ईश्वर की ओर से है। ये 'सत्यार्थ-प्रकाश' के सातवें समुल्लास में लिखा है। इस तरह से हम अपने अंदर ईश्वर को अनुभव कर सकते हैं। जब हम अच्छी योजना बनाते हैं, तब आनंद, उत्साह, निर्भयता, ये अंदर से प्रतीत होता तो है। तो महर्षि दयानंद जी लिखते हैं यह ईश्वर का अनुभव है यह एक मोटे स्तर का आंतरिक अनुभव है। और एक दूसरा स्थूल-बाह्य अनुभव भी है, वो कौन सा है। इस प्रसंग में सातवें समुल्लास में लिखा है, गुणों को देखकर गुणी का प्रत्यक्ष होता है। प्रसंग यह चल रहा है, आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो, उसकी सिद्धि कैसे करते हो? तो उत्तर दिया है, कि सब प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से हम ईश्वर की सिद्धी करते हैं। तो प्रत्यक्ष प्रमाण के प्रसंग में महर्षि दयानंद जी ने लिखा है, कि गुणों के माध्यम से गुणी का प्रत्यक्ष होता है। उदाहरण के लिये जैसे यह पृथ्वी है। पृथ्वी एक गुणी है, एक द्रव्य है। और इसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि-आदि ये गुण हैं। जब हम पृथ्वी का प्रत्यक्ष करते हैं, तो आँख से देखकर के रूप के माध्यम से पृथ्वी का प्रत्यक्ष करते हैं या इसकी (मिट्टी की) गंध आती है, तो गंध से हम पृथ्वी का प्रत्यक्ष करते हैं। अथवा हाथ से छूकर के स्पर्श गुण से प्रत्यक्ष करते हैं। इससे पता चला कि किसी पदार्थ का जो प्रत्यक्ष है, वो उस पदार्थ के गुणों के माध्यम से होता है। तो यह उदाहरण देकर महर्षि दयानंद जी आगे कहते हैं कि इस सृष्टि में ईश्वर के 'रचना आदि गुण' इस सृष्टि में देखिये । सूर्य ईश्वर द्वारा रचित पदार्थ है, चंद्रमा ईश्वर की रचना है, पृथ्वी ईश्वर द्वारा रचित पदार्थ है, और फल-फूल, वनस्पतियाँ, पशु-पक्षी, प्राणियों के शरीर, ये किसने बनाये? ईश्वर ने। तो सृष्टि के पदार्थो में ईश्वर की रचना आदि गुणों को सृष्टि में देखो और इस रचना गुण से इनके रचनाकार ईश्वर का प्रत्यक्ष करो। तो यदि हम इन पदार्थों की रचना को ध्यान से देखेंगे, तो भी हमको मोटे स्तर पर ईश्वर का अनुभव होगा, कि हाँ, कोई

न कोई है, जो फूल बनाता है, कलियाँ बनाता है, वनस्पतियाँ बनाता है, पेड़-पौधे बनाता है, और साग-सब्जी बनाता है, प्राणियों के शरीर बनाता है, सूरज-चाँद-धरती बनाता है, कोई न कोई है। इस तरह से मोटे स्तर का प्रत्यक्ष, बिना समाधि के भी हो सकता है। तो यह है दो प्रकार का प्रत्यक्ष। एक तो रचना आदि गुणों को देखकर ईश्वर का मोटा स्तर का अनुभव, और दूसरा अंदर वाला। अर्थात् भय, शंका, लज्जा के माध्यम से ईश्वर का अनुभव। यह दो तरह का अनुभव तो सबको हो सकता है। थोड़ा सा ध्यान देंगे, तो सबको हो जायेगा। बाकी तीसरा समाधि वाला सूक्ष्म है, कठिन है । इसलिए वो लंबे समय के बाद होगा।

212. शंका- मुझे पता है कि ईश्वर सर्वव्यापक और निराकार हैं और वही हमारे वास्तविक माता-पिता, पालक-पोषक और रक्षक हैं। फिर भी मैं ईश्वर को अपने माता-पिता की तरह प्रेम नहीं कर सकती। मुझे क्या करना चाहिये, जिससे मैं परमपिता परमात्मा को माता-पिता की तरह प्रेम कर सकूँ?

☯ **समाधान-** बार-बार ईश्वर के बारे में चिंतन करें, बार-बार सोचें। हम जी रहें हैं। चौबीस घंटे वायु का प्रयोग करते हैं, श्वास लेते हैं। अगर पाँच मिनट शुद्ध वायु न मिले, तो शायद हमारा शांतिपाठ हो जायेगा। हो जायेगा न। शुद्ध वायु पाँच मिनट न मिले, तो शांतिपाठ (मृत्यु) हो जायेगा। जीना कठिन है। इस तरह से सोचिये । कौन है जो हमारे जीवन की रक्षा कर रहा है। एक-एक मिनट, एक-एक सेकंड कौन हमको यह शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) दे रहा है, जिसके कारण हम जी रहे हैं। कौन हमारे लिए हर एक ऋतु में अलग-अलग सब्जियाँ बनाकर भेज रहा है।

अलग-अलग फल बनाकर भेज रहा है। अलग-अलग वनस्पतियाँ, औषधियाँ और तरह-तरह की चीजें बनाकर भेज रहा है। ऐसे ईश्वर के गुणों पर विचार करें। कौन है, जो हमारे कर्मों का हिसाब रख रहा है। एक-एक कर्म का हिसाब रखता है। चौबीस घंटे में हम पता नहीं कितने कर्म करते हैं मन से, वाणी से, शरीर से। कौन है, जो हमारे सारे कर्मों का हिसाब रखता है? कौन है, जो हम पर अन्याय करने वालों को दण्ड देता है? उन अन्यायकारियों से जो हमको नुकसान होता है, हानि होती है, उस नुकसान की पूर्ति करता है, हमारी क्षतिपूर्ति करता है। कम्पन्सेशन देता है। वो कौन है? मनुष्यों में तो कोई नहीं दिखता। और हम जो अच्छे कर्म करते हैं, उन अच्छे कर्मों का फल हमको कौन देता है? हमें मनुष्य जन्म देता है, आगे बार-बार देता है। अनादिकाल से दे रहा है और भविष्य में अनंतकाल तक देता रहेगा। इतने अच्छे-अच्छे लोग संसार में जिसने उत्पन्न किये हैं। अच्छे-अच्छे धार्मिक लोग, देशभक्त लोग, ईमानदार लोग, वीरपुरूष, ऐसे अच्छे-अच्छे साधु, संत, महात्मा, विद्वान लोग, जो धर्म की रक्षा करते हैं, देश की रक्षा करते हैं, दूसरों को सुख देते हैं। सब दुनिया का भला करते हैं। कौन है, उनको भेजने वाला। और यह सब करके भी वो भगवान हमसे कितनी फीस लेता है, कितना शुल्क लेता है? कुछ नहीं। इस तरह से बार-बार सोचें, तो आपके मन में प्रेम बढ़ेगा, रूचि बढ़ेगी। और माता-पिता वाले उदाहरण की बात थी, तो वैसे भी सोचें। जैसे छोटा बच्चा होता है, पन्द्रह दिन का, एक महीने का। उसका सारा काम उसकी माँ ही करती है। खिलाना, पिलाना, सुलाना, जगाना, नहलाना, धुलाना सारा काम उसकी माँ ही करती है। उस बच्चे को तो कुछ होश ही नहीं, वो कुछ कर नहीं सकता। तो उस तरह से भी सोचें। जैसे माता छोटे बालक की सब प्रकार से रक्षा करती है, उसका सारा ध्यान रखती है। ऐसे ही हम छोटे बच्चे की तरह हैं। हमारी बुद्धि क्या है, कुछ भी नहीं है। क्या खाना, क्या नहीं खाना, कुछ भी पता नहीं। उल्टा-सीधा खाते रहते हैं। शरीर को बिगाड़ते रहते हैं। और एक लंबी सीमा तक ईश्वर हमारी रक्षा करता रहता है, रोगों से बचाता रहता है। इतनी व्यवस्था उसने हमारे शरीर में कर रखी है। और जब बहुत ज्यादा सीमा पार हो जाती है, अतिक्रमण बहुत हो जाता है, तब जाकर के भगवान हमारे शरीर में कुछ छोटा सा रोग पैदा करता है। और वो भी सावधान करने के लिये। सावधान! बहुत लापरवाही कर ली, जागो, लापरवाही मत करो। जानकारी करो, क्या खाना, क्या नहीं खाना। और उस हिसाब से खाओ-पिओ, और अपने शरीर की रक्षा करो। तो इस तरह से हम बहुत कम जानते हैं। कैसे जीना चाहिये, कैसे सोचना चाहिये, कैसे बोलना चाहिये,

कैसे व्यवहार करना चाहिये, कैसे उठना-बैठना चाहिये, बहुत कम जानते हैं। और फिर भी ईश्वर हमको पता नहीं अंदर से कैसे-कैसे सूचना देता रहता है चौबीस घंटे यह उसकी बड़ी कृपा है। इस तरह जब हम सोचते हैं तो हमें लगता है कि हम वैसे ही बच्चे हैं, पन्द्रह दिन के, एक महीने के, दो महीने के और हमारी सब रक्षा भगवान ही कर रहा है। कब, कैसी बुद्धि देता है, कब क्या अंदर से सुझाव देता है, और जब हम उसकी बात मान लेते हैं, तो हमारा बहुत अच्छा काम निपट जाता है। हमारा बहुत अच्छा भला हो जाता है। हम अनेक आपत्तियों से, दुर्घटनाओं से बच जाते हैं। इस तरह से सोचें। तो माता-पिता की तरह हमारे अंदर भी रूचि आयेगी, कि जैसे हम माता-पिता को चाहते हैं, उनसे प्रेम करते हैं, उनका उपकार समझते हैं, ऐसे हम ईश्वर का भी उपकार समझेंगे। ऐसा बार-बार सोचें। तो हम उनसे माता-पिता की तरह प्रेम करने की स्थिति भी प्राप्त कर लेंगे।

213. शंका- अनेकता में एकता कैसे हो सकती है?

☯ **समाधान-** बिल्कुल नहीं हो सकती। अनेकता में एकता बिल्कुल नहीं हो सकती। अनेकता बिल्कुल अलग चीज है, एकता बिल्कुल अलग चीज है। दोनों में सौ प्रतिशत विरोध है। यह सब झूठ है, धोखा है। जनता को बेवकूफ बनाते हैं ये नेता लोग जो कहते हैं 'अनेकता में एकता है।' अनेकता में एकता कभी नहीं होती। अनेकता शब्द का अर्थ ही यह है - 'जहाँ एकता न हो।'

214. शंका- क्या गंगा आदि नदियों मृत व्यक्ति की अस्थियाँ विसर्जन करने में जाना उचित नहीं है? यदि नहीं, तो फिर उन अस्थियाँ का क्या करें?

☯ **समाधान-** यह उचित नहीं है। किसी शास्त्र में नहीं लिखा, कि हरिद्वार में जाओ, गंगा जी में उन अस्थियों को डालो, या नर्मदा जी में डालो, या और किसी नदी में डालो। ऐसा कोई विधान नहीं है। बल्कि उससे नुकसान होता है। जल अशुद्ध होता है। लोग वहाँ पर स्नान करते हैं, उनके पाँव में हड्डी टकराती है, तो कितना खराब लगता है। उसका नाम हर की पेड़ी नही है, उसका नाम हाड़पेड़ी है। वहाँ पर हड्डियाँ, ही हड्डियाँ इतनी हड्डियाँ डाल दी गई, कि लोगों को स्नान करना कठिन हो गया। तो वहाँ नहीं डालना चाहिये, ऐसा कोई विधान नहीं है। तो फिर क्या करें ? स्वामी दयानंद जी ने संस्कार-विधि में लिखा है, मृतक का अंतिम संस्कार करने के बाद उसकी अस्थियाँ चयन करके, = (इकट्‌ठी करके) कहीं कोने में गड्‌ढ़ा खोदकर के उसमें गाड़ देनी चाहिये। बस, और इसके बाद कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

215. शंका- क्या जन्म-दिवस (बर्थ डे) मनाना चाहिये?

☯ **समाधान-** जी हाँ, बिल्कुल मनाना चाहिये। कैसे मनाना चाहिये ? केक काटना, मोमबत्ती जलाना, फूँक मारकर बुझाना, और हैप्पी बर्थडे टू यू, ऐसा नहीं। ऐसे नहीं मनाना चाहिये। ये तो वेस्टर्न कल्चर है, पश्चिमी सभ्यता है। **भारतीय सभ्यता से जन्म दिन मनाना चाहिये।** अपने घर में हवन करो। सब मित्र, संबंधी, रिश्तेदारों को बुलाओ, आज मेरा जन्म दिन है। बुलाओ और सबके सामने संकल्प लो, और सोचो, मेरा जन्म क्यों हुआ था ? मैं किस काम के लिये दुनिया में आया हूँ ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हूँ ? बढ़ रहा हूँ तो ठीक है। थोड़ी और गति बढ़ाओ। और यदि नहीं बढ़ रहा हूँ, तो संकल्प लो, अब मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ूँगा। मेरा लक्ष्य क्या है- मोक्ष। ईश्वर प्राप्ति, मोक्ष प्राप्ति, जन्म-मरण से छूटना, यह सबके जीवन का लक्ष्य है। जिसको भी जन्म दिन मनाना हो, इस तरीके से मनाये। ऐसा संकल्प करें, कि आज मैं इस गुण को धारण करता हँू और कम से कम एक दोष को छोड़ें। गुस्सा करना, झूठ बोलना, छल-कपट करना, हेरा-फेरी करना, जो भी हो, कोई भी एक दोष छोड़ें। **एक जन्मदिन पर एक दोष छोड़ें और एक गुण को धारण करें।** अगर आपने बीस साल जन्म दिन मनाया, तो देखिये बीस साल में कितनी

अच्छी उन्नति हो जायेगी। बीस गुण आ जायेंगे, बीस दोष चले जायेंगे। यज्ञ करें, सब लोगों को इकट्‌ठा करें। और सबको अच्छी-अच्छी मिठाई खिलायें, आप भी खायें। इस तरह से जन्मदिन मनाना चाहिये।

216. शंका- चिंतन क्या है और यह कैसे किया जाता है। उसके लिये क्या-क्या चीजें आवश्यक हैं?

☯ **समाधान-** चिंतन का मतलब होता है किसी बात की गहराई में जाना। उसको कई प्रकार से सोचना। जैसे मान लीजिये, आपने प्रवचन में सुना अथवा किसी पुस्तक से पढ़ा कि- ईश्वर कितने हैं ? एक है। सभी लोग कहते हैं। आप बातचीत में किसी से भी पूछो, कि भगवान एक हैं या अनेक ? तो क्या उत्तर देगा -एक। फिर दूसरा सवाल पूछो वो एक भगवान एक जगह रहता है, या सब जगह। सब जगह ? सभी लोग यही कहेंगे- सब जगह। जब दो बात तो उन्होंने ठीक बोल दी, भगवान एक है और वह सब जगह रहता है। और जब तीसरा सवाल पूछेंगे, तो झगड़ा शुरू हो जायेगा। तीसरा सवाल यह है कि जो वस्तु सब जगह रहती है, क्या उसकी शक्ल होनी चाहिये या नहीं होनी चाहिये ? नहीं होनी चाहिये। अब पूछो, आपके घर में शक्ल वाला भगवान रखा है या नहीं रखा है ? रखा है। बस यही गड़बड़ है। जब ऐसी गड़बड़ सामने आये, तब चिन्तन की जरूरत है, तब सोचने की जरूरत है। इसकी गहराई में उतरो, अगर भगवान शक्ल वाला है तो वह सब जगह नहीं रह सकता । और अगर वह सब जगह रहता है, तो शक्ल वाला नहीं हो सकता। ऐसे बैठ करके विचार करना।

- **दो पक्ष बनाकर के तर्क-वितर्क उठाना। फिर प्रश्न उठाना, फिर उसका उत्तर ढँढना, फिर प्रश्न उठाना, फिर उत्तर ढँढना। इसका नाम है "चिन्तन"।** इस चिन्तन के लिये पहली चीज है, अच्छी प्रकार

ध्यान से प्रवचन सुनना। किसी वक्ता का प्रवचन पूरे ध्यान से सुनना। मन लगाकर सुनना, कि उसने क्या बोला। क्या-क्या शब्द बोले? क्या कहना चाहता है? उसके अभिप्राय को ठीक से समझना, पहली बात। और दूसरी बात-उसको थोड़ा दोहराना (रिवाइज) करना। सोचना, उसने क्या बोला था। उसके वचनों का अर्थ क्या था? और फिर तीसरी बात, ऐसे पक्ष-विपक्ष बनाकर के प्रश्न-उत्तर करना, और उस बात की गहराई में उतरना। और अंत में एक निर्णय पर पहुँचना। सारे प्रश्न-उत्तर करके अंत में सार क्या निकला। ईश्वर को शक्ल वाला मानें या नहीं। अगर वो एक है, यह हमने स्वीकार कर लिया। और यह भी स्वीकार कर लिया, कि वो सब जगह रहता है। तो फिर तीसरी बात अपने आप साफ है, जो चीज सब जगह रहती है, उसकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। या तो कोई प्रमाण लाओ, कि अमुक वस्तु सब जगह रहती है, और उसकी शक्ल भी है। यदि कोई ऐसी वस्तु मिल जाये, कि वो सब जगह रहती है और उसकी भी फोटो (शक्ल) है। तब तो हम ईश्वर की फोटो (शक्ल) मान लेंगे। वो भी सब जगह रहता है, उसकी भी फोटो शक्ल है । यदि आप ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं ढँढ पाये, कोई उदाहरण नहीं ढँढ पाये, कि कोई वस्तु सब जगह है और शक्ल भी है। यदि नहीं ढँढ पाये, तो इसका मतलब साफ है, कि ईश्वर सब जगह रहता है, इसलिए उसकी कोई शक्ल नहीं हो सकती। इसका नाम है-'चिन्तन'। इस तरह से करना चहिये। और जो अंत में सार निकले उसको स्वीकार करना चहिये। जब यह प्रमाण से सिद्ध हो गया कि ईश्वर सब जगह रहता है, और उसकी कोई शक्ल, आकृति नहीं है। तो फिर उसको स्वीकार करो। आज के बाद शक्ल वाले की, फोटो वाले की पूजा नहीं करना। वो तो महापुरूषों की फोटो है। रखो घर में, कोई आपत्ति थोड़े ही है। फोटो रखना कोई बुरी बात थोड़े ही है। देखो हमने कितनी फोटो लगा रखी है यहाँ पर। अपने महापुरूषों की, दादा-परदादा की, बड़े-बुजुर्गों की फोटो लगानी चाहिये। देश के वीर पुरूषों की, महारानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस ऐसे-ऐसे वीर पुरूषों की फोटो लगानी चाहिये। अच्छे-अच्छे संत महात्मा, महर्षि दयानंद, महर्षि कणाद, महर्षि गौतम, महर्षि कपिल ऐसे-ऐसे साधु, संतों, ऋषियों के फोटो लगाने चाहिये। फोटो लगाने में कोई आपत्ति नहीं है। उनकी पूजा नहीं करनी, उन की आरती नहीं करनी, उनको खिलाना-पिलाना नहीं है। यह गड़बड़ है। बोलो, अग्नि सब जगह रहती है न। जब वो सब जगह रहती है तो उसकी आकार, आकृति कौन सी है। जो अग्नि लपटों के रूप में दिख रही है। वो सब जगह नहीं रहती। और जो सब जगह रहती है, वो दिखती नहीं। बताईये, आकार कहाँ हुआ? इसलिये दोनों में अंतर है। यह है चिन्तन का स्वरूप।

217. शंका- श्रेष्ठ पुरूषों की संकट से ईश्वर तत्काल रक्षा करता है, या कुछ और है?

☯ **समाधान-** ईश्वर श्रेष्ठ पुरूषों की रक्षा तत्काल करता है। पर वो अंदर से उत्साह देकर, अंदर से कुछ सूझबूझ देकर, ज्ञान-विज्ञान देकर। ऐसे कोई दुष्ट व्यक्ति, श्रेष्ठ व्यक्ति पर हथियार उठाये, तलवार उठाये और ईश्वर यहाँ बीच में ढाल अड़ा दे, ईश्वर ऐसा नहीं करता। ऐसी प्रेरणा ईश्वर सबकी यथायोग्य रक्षा करता है। श्रेष्ठों की भी अन्यों की भी

218. शंका- संस्कार-दोष और इन्द्रिय-दोष में क्या अंतर है?

☯ **समाधान-** आपने सूत्र पढ़ा होगा : -इन्द्रिय दोषात् संस्कार दोषाच्चाविद्या। वैशेषिक. इन्द्रिय दोष का अर्थ है-इन्द्रियों में टूट-फूट, खराबी। आँख बिगड़ गई, आईसाइट कमजोर हो गई या आँख में कलर ब्लाइंडनेस (रंग ठीक न दिखना या रात को न दीखना) आदि कोई रोग हो गया, तो कलर नहीं पहचान पाते, रंगों में अन्तर नहीं समझ में आता। यह इन्द्रिय दोष है।

- संस्कार दोष यह है कि इन्द्रिय बिल्कुल ठीक है, पर वो संस्कार यानी आदत ऐसी पड़ी हुई है, कि इन्द्रिय से ठीक दिखते हुए भी हम आदत के वशीभूत होकर फिर वही गलती कर बैठते हैं। जैसे- चाय पीने की आदत पड़ गई। चाय पीते हैं, सुख मिलता है, फिर दोबारा पीते हैं, सुख मिलता है, फिर तीसरी बार पीते हैं, सुख मिलता है। सैकड़ों बार चाय पी-पीकर उसका जो सुख ले लिया, उससे मन के ऊपर जो छाप लगी कि चाय बहुत अच्छी थी, चाय पीने में बहुत मजा आता है, बढ़िया कड़क चाय होनी चाहिए । तो यह हो गया संस्कार।

● जब हम रोज चाय पीते हैं और एक दिन शिविर में आये तो यहाँ पर चाय नहीं मिली। अब आपको बड़ी बेचैनी होगी, कष्ट होगा। सोचेंगेः- क्या बात है, आज चाय नहीं मिली, क्या जंगल में फंस गए भई, इससे तो घर में ही अच्छे थे। अब यह दुःख हो रहा है न, यह संस्कार के कारण ही हो रहा है। इसका नाम है-संस्कार दुःख। वो चीज नहीं मिल पाई, तो उसके जो संस्कार पड़े हुए थे, अब वो दुःख दे रहे हैं। इसका नाम संस्कार दुःख है।

● और आँख में टूट-फूट हो गई, कान में खराबी आ गई, सुनाई नहीं देता, उसके कारण अविद्या पैदा हो गई, तो यह इन्द्रिय दोष के कारण अविद्या हुई। आदत के कारण चाय नहीं मिल रही है और फिर मन में अविद्या पैदा हो रही है, कि 'चाय बहुत अच्छी (सुखदायक) है, चाय देते नहीं, ये लोग बड़े खराब है।' अब ये जो अविद्या पैदा हो रही है, यह संस्कार दोष से हो रही है। यह दोनों में अंतर है।

219. शंका :- "दण्ड देते समय वाणी में क्रोध लाना पड़े तो लाएँ, किन्तु मन में क्रोध न लाएँ"-ऐसा करना अहिंसा है, ऐसा आपने बतलाया, किन्तु ये असत्य है, क्योंकि मन और वचन की एकरूपता नहीं रही?

☯ **समाधान-** यह तो सत्य है कि एक व्यक्ति के मन में आ गया कि मैं फलां पड़ोसी की टांग तोड़ दँगा और वाणी से भी उसने अपने दोस्त को बोल दिया कि इस पड़ोसी की टांग तोड़ दँगा और शरीर से वह उसकी टांग तोड़ दे, तो तीनों में एकरूपता हो गई। तीनों में एकरूपता होते हुए भी यह अहिंसा नहीं है, यह हिंसा है।

● सत्य का यह अर्थ नहीं है कि मात्र तीनों में एकरुपता हो। मात्र एकरुपता होना, सत्य नहीं कहलाता। उसका प्रयोजन अहिंसा होना चाहिए। अहिंसा आदि 5 यम और शौच आदि 5 नियम हैं।

● अहिंसा के संबंध में व्यास भाष्य में लिखा है- उत्तरे च यमनियमास्तन्मूलाः तत्सिद्धिपरतयैव प्रतिपाद्यन्ते। अर्थात् बाकी के नौ यम-नियम

अहिंसा मूलक हैं। उनका प्रयोग इस ढंग से करना है, कि उनसे अहिंसा की रक्षा होनी चाहिए। हिंसा नहीं होनी चाहिए। अहिंसा का पालन करना हमारा मुख्य प्रयोजन है। अहिंसा का व्यवहार करने के लिए यदि हमको मन और वाणी में कुछ अंतर भी करना पड़े तो कर सकते हैं। प्रयोजन अगर हमारा अहिंसा करना है, दूसरों को धोखा देना नहीं है। जब दूसरे को धोखा दे रहे हैं, तो वो हिंसा और असत्य होता है।

● बच्चे ने जैसे- गड़बड़ कर दी। उसे बार-बार समझाया, लेकिन नहीं मानता। अब उसको ठीक करना है तो हम ऊपर से तो डाँट लगायेंगे, पर मन में उसके प्रति प्रेम-भाव बनाये रखेंगे। अगर मन में प्रेम नहीं है और मार-पीट देंगे, तो ज्यादा पीट देंगे, अन्याय कर देंगे। उसका हाथ-पाँव टूट जाएगा, तो जीवन भर के लिए विकलांग हो जाएगा। ऐसा नहीं करना है। यदि हम ऊपर से डाँटते नहीं, तो वो सुधरेगा भी नहीं। इस सुधार के लिए ऊपर-ऊपर से डाँटना भी है। पर मन में प्रेम-भाव रखना है। इसका नाम अहिंसा है।

● यहां पर दण्ड का प्रयोजन है-सुधार करना। अपना गुस्सा ठंडा करना बिलकुल नहीं। दण्ड इसलिए दिया जाता है, कि बस अपराधी का सुधार हो जाए। न्यायाधीश महोदय कोर्ट में बैठकर के मुकद्मे सुनते हैं, और फिर अपराधियों को दण्ड देते हैं। छः मास की जेल, एक वर्ष की जेल, दो वर्ष की जेल और किसी को फांसी तक भी देते हैं। क्यों जी, क्या जज साहब अपना गुस्सा ठंडा करने के लिए फांसी देते है? वो तो अपराधी केस सुधार के लिए दण्ड देते हैं। ऐसे ही माता-पिता के मन में बच्चे का हित करना ही है। वो मन में हित की भावना रखें, और ऊपर से डाँट लगाएं, ऐसा शास्त्रों में विधान हैं।

220. शंका :- आपने कहा था कि ईश्वर का रंग, रुप आकार कुछ नहीं है। तो ध्यान करते समय निराकार ईश्वर का ध्यान कैसे करें?

☯ **समाधान-** ध्यान करने के लिए ईश्वर की आकृति आवश्यक नहीं है, बिना आकृति के भी ध्यान हो सकता है। आप लोग सुख का ध्यान करते हैं कि सुख मिलना चाहिए। सुख का ध्यान करते हैं न, तो क्या सुख की आकृति बनाकर ध्यान करते हैं या बिना आकृति बनाए? हम बिना आकृति बनाए ध्यान करते हैं और दुःख का भी ध्यान करते हैं, कि 'हे भगवान दुःख न आ जाए।' रोज ध्यान करते हैं, लेकिन दुःख की कोई आकृति नहीं बनाते। इसलिए ध्यान करने के लिए आकृति बनाना आवश्यक नहीं है।

पृथ्वी के अन्दर गुरूत्वाकर्षण (ग्रबिटेशन फोर्स) की कोई आकृति है क्या? उसकी शक्ल, कोई रूप, रंग, कलर, कुछ नहीं है। फिर भी देखो निराकार स्वरुप में उसको लोग पढ़ते भी हैं, पढ़ाते भी हैं, समझाते भी हैं और सारे व्यवहार भी चल रहे हैं। कोई भी साइंटिस्ट (वैज्ञानिक) यह नहीं कहता, कि ग्रेविटेश्न फोर्स की कोई पीली आकृति है, लाल आकृति है या किस रंग की है? और सब मानते हैं, पढ़ते हैं, पढ़ाते भी हैं। ऐसी पता नहीं कितनी चीजे हैं, जिनका कोई रूप, रंग, आकृति नहीं है, फिर भी उनको सब स्वीकार करते हैं। उनको मानते हैं उनके आधार पर सारा व्यवहार भी चलता है।

एक्स-रे नहीं दिखती, अल्फा-रे नहीं दिखती, बीटा-रे नहीं दिखती, गामा रेज नहीं दिखती, ग्रेविटेशन फोर्स नहीं दिखती, इनफ्रारेड लाईट नहीं दिखती, अल्ट्रासाउण्ड नहीं दिखती, पता नहीं कितनी चीजें हैं, जो नहीं दिखती। रेडियो और टेलीविजन का प्रसारण हो रहा है कि नहीं ? यहाँ उनकी किरणे हैं कि नहीं? जो सारे चैनल चल रहे, इस समय भी तो चल रहे हैं न। तो यहाँ पर उनकी सारी किरणें हैं, पर ये नहीं दिखतीं। ऐसी बहुत सारी चीजें हैं, जो होती है, अपना-अपना काम करती है और दिखती एक भी नहीं। और वो सब माननी पड़ती है। ईश्वर भी ऐसा है, कि कोई आकृति नहीं है। बिना आकृति के ही उसका ध्यान करेंगे, धीरे-धीरे अभ्यास करेंगे हो जाएगा ।

221. शंका :- हर नया कर्म करते समय मन में पहले शंका उत्पन्न होती है और उसके साथ बाद में भय भी उत्पन्न होता है। ऐसा क्यों?

☯ **समाधान-** कोई भी नया काम करते हैं तो मन में शंका उत्पन्न होती है, कि-यह ठीक है या गलत। और भय भी लगता है, कि करुँ या न करुँ। अर्थात् सफलता मिलेगी या नहीं ।

- इसका कारण यह है, कि कर्मों के संबंध में हमारी जानकारी कम है। अच्छे से पता नहीं रहता, कि यह काम ठीक है या गलत है। इसलिए हमको शंका होती है, कि करुँ या न करुँ। अथवा हमको जानकारी भी है, कि यह काम ठीक है। और फिर भी हमको शंका होती है। इसका कारण यह हो सकता है, कि आत्मविश्वास की कमी है। हमको अपने पर ही शंका है-पता नहीं कर पाऊँगा या नहीं कर पाऊँगा? फेल तो नहीं हो जाऊँगा? इन दो कारणों को दूर कर दें। यह काम करना ही है, यह काम ठीक है, इसकी जानकारी वेद आदि ग्रंथों से होगी। ईश्वर का बताया हुआ वेद, वही हमारा असली संविधान है। वहाँ से पता लगा लेंगे, कि बात सही है या गलत। इससे आपकी शंका दूर हो जाएगी।

- और दूसरा, अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा कीजिए, कान्फीडेंस लाइए, कि-यह काम ठीक है, मेरी क्षमता के अनुरूप है, मैं यह कर सकता हूँ, मुझमें इतनी क्षमता है। भगवान ने मुझे बहुत शक्ति दी है। बहुत विद्या दी है, बुद्धि दी है, इसलिए कर सकता हूँ । तो आप खुद करेंगे। न कोई शंका होगी, न कोई भय लगेगा, कुछ नहीं होगा।

- काम गलत हो, तो डिसीजन (निर्णय) ले लीजिए, कि नहीं करना। यह कानून के विरूद्ध है। करूंगा तो दण्ड मिलेगा। बस सारी शंका, भय खत्म।

222. शंका :- योग में मन के सभी विचारों को पूरी तरह से नहीं रोक पाते हैं तो क्या उन विचारों को रोककर दूसरी ओर लगाना है। मार्गदर्शन कीजिए?

☯ **समाधान-** जी हाँ योगाभ्यास में मन के सारे विचारों को नहीं रोकना है। कुछ विचार रोक दनते हैं, कुछ चालू रखने हैं । संसार के विचारों को बंद कर देना है और ईश्वर के विचारों को चालू रखना है। सारे विचारों को बिल्कुल बंद कर दें, विचारशून्य हो जाएँ। यह शुरू में बहुत कठिन है। सांसारिक विचारों को बंद कर दीजिए। खाना-पीना, घूमना-फिरना, शापिंग वगैरेह के सारे विचार बंद। ईश्वर के विचार को मन में चालू रखिए। तो इसका नाम-योग है। तो यह कर सकते हैं। है तो यह भी कठिन, लेकिन अभ्यास करेंगे तो यह हो जाएगा।

223. शंका :- ऐसा हम सुनते हैं, कि- सत्य आचरण करने वालों से ईश्वर प्रसन्न होता है। किन्तु देखा गया है कि असामाजिक तत्त्व, असत्य आचरण करने वाले लोग ज्यादा सुखी हैं। आध्यात्मिक सत्य आचरण करने वाले लोगों को कष्ट अधिक सहन करना पड़ता है। ऐसे समय में ईश्वर के अस्तित्त्व पर संदेह हो जाता है। मोक्ष मिलेगा, जब मिलेगा, तब मिलेगा। लेकिन आज तो भगवान के न्याय कार्य के ऊपर से विश्वास उठ जाता है। कृपया इस स्थिति पर मार्गदर्शन करें?

☯ **समाधान-** हम देखते हैं कि सच्चा आदमी, ईमानदार आदमी दुनिया में ज्यादा मार खा रहा है। उसको धन भी कम मिलता है, सम्मान भी कम मिलता है,। गालियां भी पड़ती है, झूठे आरोप भी लगते हैं। और ऑफिस में लोग उसको परेशान भी खूब करते हैं। गंदे व्यापार में भी उसकी पिटाई ज्यादा होती है। हम यह भी देखते हैं, कि जो बेईमान है, छली-कपटी,

धोखेबाज, चालाक आदमी है, वो दूसरों से छीन-झपट के खा जाता है। और वो खूब पैसे वाला, संपन्न दिखता है, सुखी दिखता है। तो ऐसी स्थिति में ईश्वर के अस्तित्त्व पर शंका तो होती है।

● उसका समाधान यह है, कि एक बार तो मार खानी पड़ेगी। चाहे इस जन्म में खाओ या अगले जन्म में खाओ। इस जन्म में हम मनुष्य बनकर इन संसार के लोगों की मार खा लेंगे। अगर ईमानदारी से चलेंगे, तो संसार के लोगों की मार खायेंगे। पर ईश्वर की मार से बच जायेंगे। आगे जन्म बढ़िया हो जायेगा। यदि बेईमानी करेंगे, छल-कपट करेंगे, धोखेबाजी करेंगे तो लोगों से शायद कम मार खायेंगे, लेकिन फिर आगे चलकर ईश्वर की मार खानी पड़ेगी। हमें सूअर, गधा, कुत्ता, बिल्ली बनना पड़ेगा ।

● अब आप सोच लीजिए, कि दोनों में से कौन सी मार खानी है। कोई एक तो खानी पड़ेगी। आप ईमानदारी से चलकर लोगों की मार खा लें, या बेईमानी करके ईश्वर की मार खा लें। विचारणीय यह है कि कौन सी मार सस्ती है।

● विचारेंगे तो पता चलेगा कि - लोगों की मार खानी सस्ती है। इसीलिए ईमानदारी से चलना चाहिए। लोग थोड़ा परेशान करेंगे। उसको सहन करने के तीन शब्द आपको दे दिये- कोई बात नहीं। इससे आपको शक्ति मिलेगी और आप लोगों की मार खा लेंगे, आसानी से सह लेंगे। पर इसके परिणाम स्वरुप आपका अगला जन्म अच्छा होगा। आगे अच्छे मनुष्य बनेंगे और ऐसे पुरुषार्थ कर-कर के मोक्ष भी हो जायेगा। इसलिए ईमानदारी से चलना ज्यादा अच्छा है।

● जो बेईमानी करते हैं, वो बड़े सुखी दिखते हैं। वो केवल सुखी दिखते हैं, लेकिन सुखी हैं नहीं सुखी। ऊपर-ऊपर से सुखी दिखते हैं केवल। हम बड़े-बड़े करोड़ पति, अरब पति, सेठों के यहां पर भी जाते हैं। और वो स्वयं हाथ जोड़कर के बोलते हैं, कि महाराज जी। आप बहुत सुखी हो, हम बहुत दुखी हैं।' तो वो सुखी केवल बाहर से दिखते हैं। अंदर से बेचारे बहुत दुःखी हैं। उनके मन में हमारे प्रति श्रद्धा है, इसलिए अपने दिल की बात वो सबको नहीं बताते, हमको बताते है। वे आपको नहीं बतायेंगे। कुछ पूर्वजन्म के भी कर्म है, इस जन्म के भी है, दोनों मिलजुल कर के वो इतने संपन्न हो जाते हैं। परन्तु वे पैसे के कारण बहुत सुखी नहीं हैं। आपको केवल सुखी दिखते हैं।

● सुख तो अंदर की (मन की) चीज है, बाहर की चीज नहीं है। बाहर तो आपको मोटर-गाड़ी दिखती है, धन दिखता है, भवन दिखता है,

सोना-चांदी दिखता है। बाहर की चीजें अच्छी-अच्छी चमकीली दिखती हैं। उन चीजों से कोई सुख नहीं होता है।

● देखिये, हम जंगल में रहते हैं, यह मकान भी हमारा नहीं है। यह संसार वालों का है। हम तो यहां मेहमान के तौर पर रहते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है। कोई बैंक-बैलेंस नहीं, कोई व्यक्तिगत संपत्ति नहीं। और आप बताइये, हम कितने सुखी हैं। खूब आनंद से रहते हैं, विद्या पढ़ते हैं, योगाभ्यास करते हैं, समाज की सेवा करते हैं, निष्काम भाव से करते हैं, खूब भगवान हमको सुख देता है। जो भी संपत्ति है, सब समाज की है। और भगवान की है और फिर भी हम बहुत सुखी हैं। उनके पास खूब संपत्ति है, फिर भी बेचारे दुःखी हैं। सिद्धांत की बात यह है कि-केवल संपत्ति होने से कोई सुखी नहीं होता। सुखी होता है-विद्या से, सत्संग से, वैराग्य से, आचरण से। इन चीजों से व्यक्ति सुखी होता है। तो वो लोग सुखी जरूर दिखते हैं, हैं नहीं।

● एक बात इसमें आई है, कि कोई अच्छा ईमानदार आदमी दुखी होता है तो ईश्वर के न्यायकारी होने पर शंका होती है। इसका उत्तर यह है, कि जो अच्छे लोग मेहनत और ईमानदारी से काम कर रहे हैं, उनको जो दुःख भोगने पड़े रहे हैं, वो दुख उनको ईश्वर दे रहा है या समाज के लोग दे रहे हैं। समाज के लोग। तो फिर समाज के लोग अन्यायकारी हुये, ईश्वर कहां अन्यायकारी हुआ। ईश्वर पर शंका क्यों? ईश्वर ने थोड़े ही किया अन्याय। वो अन्याय तो समाज के लोगों ने किया। उसका दण्ड उनको मिलेगा। ईश्वर तो पूर्ण न्यायकारी है। वो तो जब फल देता है, ठीक न्याय से ही देता है। अन्याय का जो रूप दिख रहा है, यह तो ईश्वर का किया हुआ है ही नहीं। फिर ईश्वर पर हम क्यों शंका करें। इसीलिए ईश्वर पर शंका नहीं करनी चाहिए। संसार के प्राणियों को देखिये, पता चल जाता है। ईश्वर ने कैसा बढ़िया न्याय किया। जो अच्छे काम करते हैं, उनको मनुष्य बनाता है। और जो बुरे काम करते हैं, उनको कौआ, कबूतर, गिलहरी, सूअर, बंदर इत्यादि बना देता है।

224. शंका- लोग कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा है। और वही लोग कहते हैं, कि ईश्वर एक है। तो जब ईश्वर एक है, तो आत्मा में कैसे आ सकता है? आत्मा तो अनेक हैं। तो आत्मा, परमात्मा कैसे हैं, क्या परमात्मा खंडित-खंडित है?

☯ **समाधान-** आत्मा और परमात्मा एक नहीं है। आत्मा अलग चीज है, परमात्मा अलग चीज है। परमात्मा एक है, और आत्मायें तो अनेक हैं, असंख्य हैं। हम तो गिन भी नहीं सकते हैं। ईश्वर तो गिन सकता है, कि कितनी आत्मायें है । आत्मा का टोटल नम्बर (कुल संख्या) ईश्वर को पता है। हमको नहीं पता है। आत्माओं की इतनी अधिक संख्या है, कि हम दिमाग लगायेंगे, तो भी फैल हो जायेंगे। हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

● ईश्वर और आत्मा दोनों अलग-अलग चीजें है, दोनों में अंतर है। कैसे अंतर है? इलेक्ट्रान और प्रोटॉन में अंतर है या नहीं। है यह कैसे पता चला? उनकी प्रॉपर्टीज (गुणधर्म) से। इलेक्ट्रान में निगेटिव चार्ज है, और प्रोटॉन में पोजिटिव चार्ज है। उसकी प्रोपर्टीज से पता लगता है, कि इलेक्ट्रान अलग चीज है, प्रोटॉन अलग चीज है। इसी तरह से आत्मा और ईश्वर इन दोनों की प्रॉपर्टीज भी अलग-अलग हैं। इनकी प्रोपर्टीज से पता लगता है कि ईश्वर अलग है, आत्मा अलग है। क्या अंतर हैं इनकी प्रॉर्टीज में।

● सोचिये, क्या ईश्वर कभी दुःखी होता है ? नहीं और आत्मा तो रोज दुःखी रहता है। इससे पता लगा दोनों अलग-अलग हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, क्या जीवात्मा सर्वव्यापक है? नहीं। जीवात्मा एक स्थान पर रहता है। ईश्वर को सब कुछ मालूम है, क्या जीवात्मा को सब कुछ मालूम है? नहीं मालूम। जीवात्मा घोटाले करता है, क्या ईश्वर भी घोटाले करता है। यहां तो रोज अखबारों में घोटाले पढ़ते हैं। कोई चार सौ करोड़ खा गया, कोई नौ सौ करोड़ खा गया, कोई पन्द्रह हजार करोड़ खा गया। इसलिए जब दोनों की प्रॉर्टीज अलग-अलग है, तो दोनों चीजें अलग-अलग है। ईश्वर अलग है, आत्मा अलग है।

● ईश्वर एक है, और वो अखंड तत्त्व है। वो टुकड़े-टुकड़े नहीं है। जीवात्माएं अलग-अलग हैं। एक-एक आत्मायें भी स्वतंत्रता पूर्वक अखंड है। आत्मा भी कोई टुकड़ों (पार्टीकल्स) का कॉमबीनेशन नहीं है, खंडों का समुदाय नहीं है। वो भी एक तत्त्व है। लेकिन आत्मा बहुत छोटा है, और ईश्वर बहुत बड़ा है। ईश्वर पूरे ब्रह्माण्ड में और उससे भी बाहर, बहुत दूर-दूर तक फैला हुआ है। इस प्रकार दोनों अलग-अलग है।

225. शंका :- एक समय में एक ही प्रकार का प्राणायाम करना चाहिए। जैसे बाह्य प्राणायाम या आभ्यन्तर-प्राणायाम। दो या तीन प्रकार के प्राणायाम एक साथ क्यों नहीं करना चाहिए। क्या ऐसा करने से कोई हानि है?

☯ **समाधान-** हाँ ऐसा करने से हानि हो सकती है। एक समय में एक ही प्रकार का प्राणायाम करना चाहिए। यदि आपने बाह्य प्राणायाम किया, तो केवल बाह्य प्राणायाम ही करें। दो, तीन, चार, पांच, सात जितने भी करें, बाह्य प्राणायाम ही करें। फिर शाम को उपासना में आप दूसरा बदल सकते हैं। शाम को दो, तीन, चार, पांच अभ्यांतर प्राणायाम कर लें। एक ही समय की उपासना में दो बाह्य कर लिए, तीन आभ्यन्तर कर लिए ऐसा न करें।

226. शंका :- मन एक जड़ पदार्थ है । तो मन, शरीर में किस जगह पर रहता है, और मन को कैसे पकड़ा जाए?

☯ **समाधान-** रात्रि में जो हम शयनकालीन मंत्र पढ़ते हैं, ... (30.04) उन मंत्रों में एक शब्द आता है हृत्प्रतिष्ठम् । अंतिम छठे मंत्र में आता है न। ....तो उससे पता लगता है, कि मन, हृदय में रहता है। वो विद्वान लोग कहते हैं, कि हृदय दो तरह का है। एक छाती में है, एक सर में है। तो अपने चिंतन से, व्यवहार से, सामान्य स्वभाव से हमको ऐसा लगता है कि मन मस्तिष्क वाले हृदय में रहना चाहिए। क्यों रहना चाहिए? मन का काम है- संकल्प-विकल्प, विचार करना। जो हम विचार करते हैं, वो तो मस्तिष्क से ही करते हैं। मन का जो कार्य है विचार करना। विचार करने में जो स्थूल शरीर का भाग है, वो ब्रेन (दिमाग) ही है। इसी से हम विचार करते हैं। आज की मेडीकल साइंस भी यही कहती है। इससे लगता है कि मन-मस्तिष्क में रहना चाहिए।

अगला प्रश्न है - उसको पकड़े कैसे? आंख बंद कर के बैठो और अपने मन के विचारों को पकड़ो। मेरे मन में कौन सा विचार आ रहा है?

वस्तुतः आ नहीं रहा है, हम ही ला रहे हैं। हम कौन सा विचार ला रहे हैं। हम खाने-पीने का विचार ला रहे हैं, घूमने-फिरने का विचार ला रहे हैं, उस विचार को पकड़ लीजिए, बस मन पकड़ में आ गया। गाय के गले में रस्सी बंधी है। अगर गले की रस्सी पकड़ में आ जाए, तो गाय पकड़ में आ गई न। मन का काम क्या है-विचार करना। बाल्टी की तरह पकड़ में नहीं आयेगा वो। विचारों से ही पकड़ में आयेगा। विचारों को पकड़िये, मन आ गया हाथ में।

227. शंका :- इस जन्म में मांस और शराब बुरा समझते हुऐ हम नहीं खाते हैं या इन्हें बुरा मानकर खाना छोड़ दिया है। अगले जन्म में खाना-पीना नहीं चाहते, क्या ऐसा होगा?

☯ **समाधान-** हाँ बिल्कुल हो जाएगा, आप इस जन्म में नहीं खाते और संकल्प भी करते हैं कि यह बहुत बुरी चीज है, हम आगे भी नहीं खायेंगे। तो अगले जन्म में आप नहीं खायेंगे। आपके खाने-पीने के संस्कार बनेंगे ही नहीं। और जो पहले कभी थोड़ा-बहुत खाया भी हो, तो अब उसका आपने प्रायश्चित् कर लिया, और पक्का संकल्प कर लिया कि जो खा लिया, सो खा लिया, वो तो गलती हो गई। अब ऐसी गलती आगे नहीं करेंगे। तो आगे योगदर्शन में एक शब्द लिखा है, दग्धबीज करना'-जिस कार्य को दोबारा करने की इच्छा कभी भी न हो, उसको बोलते हैं-दग्धबीज। तो इस जन्म में तो शायद आप नहीं खायेंगे। बस बात खत्म हो गई। आपको कोई जबर्दस्ती, खिलाये तो भी नहीं खायेंगे। संस्कार अभी तो दग्धबीज जैसा ही हो गया। और यदि बिल्कुल कभी भी इच्छा नहीं होगी खाने की, तो इस कारण से संस्कार दग्धबीज हो गया।

228. शंका- हमारे देश में मूर्ति-पूजा कब से शुरू हुई? हम यदि मूर्ति-पूजा नहीं करते है लेकिन साथ के अन्य लोग कर रहे हैं, तो उनके साथ कैसे रहें?

☯ **समाधान-** आप रेल यात्रा करते हैं, बस में चला करते हैं। जब आपके पड़ोस में बैठे लोग बीड़ी पीते हैं, तब क्या आप लाठी उठा लेते हैं? तब भी उनके साथ बैठे रहते हैं न। उनके बीडी, सिगरेट पीने को सहन करते हैं। और उनको समझाते हैं, कि भई बीड़ी मत पिओ। सामने नो स्मोकिंग लिखा है न। उनको बस समझा सकते हैं, लेकिन लाठी थोड़े मारेंगे। कुछ लोग समझदार होते हैं, मान लेते हैं। कुछ लोग अड़ियल होते हैं, वे नहीं मानते हैं। तब हम मुँह पर रूमाल डाल लेते हैं।

- संसार में बहुत तरह के लोग हैं। कोई मूर्ति पूजा करता है, कोई नास्तिक होता है, कोई झूठ बोलता है। हम उसको प्रेम से समझाऐंगे। समझ जाएगा, तो ठीक है। और नहीं समझेगा, तो अपनी आँखें बंद कर लेंगे।

- सवाल है कि मूर्ति पूजक हमारा लाइफ- पार्टनर ही हो, तब उसके साथ कैसे रहें? उसको भी आप समझाएँ। अगर वो मानता हो, तो बहुत अच्छा। और नहीं मानता हो, तो जब वो मूर्ति पूजा करें, तब आप दूसरी तरफ मुंह करके अपना ध्यान कर लेना। दोनों मिलकर खाऐंगे, एक ही घर में रहेंगे। प्रेम से समझाएँगे, तो कभी न कभी उसकी समझ में आएगा। समय ज्यादा लग सकता है, पर समझ में आएगा। इसलिए झगड़ा नहीं करना। हमारा काम प्रेम से समझाना है, उनसे झगड़ा करना नहीं। उनको समझ में आए तो ठीक, न समझ में आए, तो कोई बात नहीं।

- अगर प्रेम से समझाऐंगे, तो आज नहीं तो कुछ साल में, कभी न कभी उनको समझ में आ जाएगा। झगड़ा करेंगे, तो वह पचास साल में भी नहीं समझेगा। और आपका दुश्मन हो जाएगा। प्रेम से अगर उनको समझ में आता है, तो ठीक है। नहीं आता तो छोड़ दीजिए। लेकिन रहेंगे तो साथ में ही न उनके। वो भी रोटी खाते हैं, हम भी रोटी खाते हैं।

- मूर्ति पूजा जैनियों से शुरू हुई। और जैनियों का समय आज से लगभग चार हजार वर्ष पहले है। जैनियों ने शुरू की, फिर बौद्धों ने शुरू की, बौद्ध पैंतीस सौ वर्ष पहले हुये। तो लगभग साढ़े तीन, चार हजार वर्ष से भारत में मूर्ति पूजा शुरू हुई। और उनकी देखा-देखी अपने आर्य लोगों ने भी शुरू कर दी। उन्होंने अपनी देवी-देवताओं की, महापुरूषों की मूर्तियाँ

बनाना शुरू कीं और पूजा शुरू कर दी। महाभारत से पहले धरती पर भारत में और विदेशों में कोई मूर्ति पूजा (बुतपरस्ती) नहीं थी।

- श्रीकृष्ण जी तो वेद के विद्वान थे। वे गुरूकुल में पढ़ने संदीपनी गुरू जी के पास गये थे। गीता में क्या लिखा हैः- 'ईश्वरः सर्वभूतानां हृदयऽर्जुनतिष्ठति', हे अर्जुन! ईश्वर तो सब प्राणियों के हृदय में रहता है। 'तमेव शरणं गच्छ', उसी की शरण में जा।' यहाँ तो श्री कृष्ण जी कितनी अच्छी बात कह रहे हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, अर्जुन तू उसकी शरण में जा। यह बात बिल्कुल ठीक है। वेद के अनुकूल है। श्रीकृष्ण जी महाराज की ऐसी बात तो माननी चाहिये। **भगवान कभी आता-जाता नहीं। वह सर्वव्यापक है। कहाँ से आएगा और कहाँ जाएगा?**

- वेद ईश्वर का वचन है, और ईश्वर सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ के वचन में कोई भूल नहीं है, कोई भ्रॉंति नही है, कोई संशय नहीं है, कोई गड़बड़ नहीं है। चाहे कोई भी हो, परमात्मा से बड़ा तो कोई भी मनुष्य नहीं है।

- यजुर्वेद के बत्तीसवें अध्याय में तीसरा मंत्र लिखा है - 'न तस्ये प्रतिमा अस्ति'। ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है। ईश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता।

- बहुत से लोग इसका अर्थ यह लेते हैं, कि जब-जब धर्म की हानि होती है, अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब भगवान अवतार लेता है। तब जो भगवान का दर्शन करते हैं, उनकी मुक्ति हो जाती है। क्योंकि भगवान के दर्शन से ही मुक्ति होती है। अगर इसका यह ही अर्थ है, तब तो भगवान के दर्शन करने का बड़ा सरल उपाय है। क्या उपाय है? **खूब पाप करो, खूब अधर्म करो ताकि जल्दी से जल्दी भगवान आयें और उनका दर्शन हो और हमारी मुक्ति हो जाए।** क्या ये बात ठीक है? गलत है। पाप करने से कभी भी मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती। 'पाप करने से मुक्ति होने' की बात को कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति नहीं मानेगा। इसलिए **अधर्म की वृद्धि होने पर भगवान नहीं आता**।

- गीता के अंदर बहुत सारी अच्छी बातें है। परन्तु बहुत सी बातें इसमें गलत मिला दी गई हैं और उसकी परख हर व्यक्ति को नहीं है। सोने में कितनी मिलावट है, इसको हर व्यक्ति नहीं पहचान सकता। कौन पहचान सकता है? सुनार ही पहचान सकता है, कि इसमें कितनी खोट है, कितनी मिलावट है। **शास्त्रों में भी बहुत सी मिलावट है। उसको हर व्यक्ति नहीं पकड़ सकता।** जो उस विषय में अधिकारी है, वो ही पकड़ सकता है।

● आपको आश्चर्य की बात बताऊँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ अध्याय गीता का, जिसमें भगवान का विराट स्वरूप बतलाया है- मैं वेदों में सामवेद हूँ, फूलों में कमल का फूल हूँ, और सितारों में फलाना हूँ, ऋषियों में फलाना अगस्त हूँ, और ये और वो, जो भी विस्तार से लिखा है। इसी विराट स्वरूप में दसवें अध्याय के छत्तीसवें श्लोक में लिखा है कि- 'द्यूतं छलयताम् अस्मि' अर्थात् मैं छल कपट की विद्या में जुआ हूँ।' अब गीता में तो लिखा है कि, भगवान छली-कपटी हैं आप मानेंगे, भगवान छली-कपटी है! या तो भगवान को छली-कपटी मानो, या कहो कि गीता में मिलावट है। बोलो क्या मानेंगे? मिलावट। बस हो गई बात खत्म। तो ऐसी-ऐसी गलत बातें उसमें डाल रखीं हैं। उनको आप हटा दीजिये। गीता में जितनी सही बात है, वो मान लीजिये।

229. शंका :- व्याप्य-व्यापक संबंध का अर्थ समझने में आया। पर उसकी अनुभूति नहीं होती। इसके लिए क्या करना चाहिए?

☯ **समाधान-** इसके लिए अभ्यास करना चाहिए। रोज अभ्यास कीजिए। रोज ऐसे सोचिए जैसे आज हम यहां बैठे हैं। आपके आस-पास चारों तरफ हवा है। आप सोच सकते हैं न। क्योंकि हवा के साथ रहते हुये बहुत दिन हो गये और इसके बारे में बीस बार, पचास बार हमने सोचा भी है कि हवा हमारे चारों तरफ है। तो हवा हमारे चारों तरफ है, यह सोचना सरल है। इसका हमने बहुत बार अभ्यास किया है। 'ईश्वर भी, हमारे चारों तरफ है, हमारे आस-पास है, जैसे हवा है।' हमने इस बात का अभ्यास कम किया। अब इस बात का अभ्यास करें।

जैसे वायु हमारे चारों तरफ है, हमारे अंदर भी है, बाहर भी है, रोज सांस लेते हैं, हर समय लेते हैं। वायु अंदर भी जाती रहती है, बाहर भी आती रहती है। चारों तरफ वायु फैली हुई है। ऐसे ही ईश्वर के बारे में भी अभ्यास करें। 'ईश्वर भी हमारे अंदर भी है और बाहर भी है। चारों तरफ फैला हुआ है ईश्वर। इसका रोज अभ्यास करेंगे। तो दो, चार, छः महीने में

आपको थोड़ा-थोड़ा अनुभव होने लगेगा, कि हाँ ईश्वर हमारे अंदर-बाहर, आस-पास, ऊपर-नीचे, दांये-बांये है,' सब जगह मौजूद है। जैसे वायु सब जगह है, जैसे आकाश सब जगह है। ऐसे ही ईश्वर का भी धीरे-धीरे अभ्यास होने से उसकी सर्वव्यापकता का या ईश्वर के साथ हमारे व्याप्यय-व्यापक संबंध का अनुभव होने लगेगा।

230. शंका :- वास्तविक मृत्यु ईश्वर द्वारा लिखी जाती है, जो कि सौ वर्ष से कम नहीं है। क्या इससे कम जीवन देकर ईश्वर जीव को संसार में नहीं भेजता?

☯ **समाधान-** हाँ इससे कम जीवन देकर भी भेजता है। कर्मानुसार ईश्वर आयु देता है । पहले लोग अच्छे काम करते थे, खान-पान ठीक था, व्यायाम भी ठीक था, ब्रम्हचर्य का पालन भी करते थे, दिनचर्या का पालन भी करते थे आदि आदि। लोग आयु बढ़ाने वाले कर्मों का आचरण करते थे तो भगवान सौ वर्ष की आयु देकर भेजता था। अब वो सारा कुछ बदल गया। खान-पान बिगड़ गया, जलवायु बिगड़ गया, दिनचर्या बिगड़ गई, ब्रह्मचर्य का पालन भी नहीं रहा। और भी कई चीजें बिगड़ गई। इसलिए भगवान अब सौ वर्ष की आयु देकर नहीं भेजता। किसी-किसी को देता है। जिससे के जैसे कर्म होते हैं, उसको वैसी आयु देता है, कम भी देकर भेजता है। पर जितनी आयु देकर भेजता है, उसकी भी गारंटी नहीं है, कि व्यक्ति उतने दिन जी लेगा। तब जी सकता है, जबकि वह दुर्घटनाओं से बचता रहे। एक्सीडेंट होता है, मर जाते हैं, पैदा होते ही मरते हैं, दो साल के भी मरते हैं। उनकी सुरक्षा-देखभाल ठीक से नहीं हो पायी। इंफेक्शन हो गया, मर गये। एक की भूल के कारण दूसरे को नुकसान होता है। हम सड़क पर चलते हैं, ठीक-ठाक चलते हैं। पीछे से ट्रक, कार वाला आकर के हमको ठोकता है। उसकी गलती से हमको नुकसान होता है। ऐसे ही डॉक्टर की भूल से, नर्स की भूल से, मां-बाप की भूल से, बच्चे को नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु हो सकती है, हाथ-पांव, टेढ़े-मेढ़े हो सकते है, कुछ भी हो सकता है।

231. शंका- परमात्मा और जीव को पदार्थ क्यों कहा है, जबकि ये दोनों चेतन स्वरूप हैं, जड़ नहीं?

☯ **समाधान-** आजकल के स्कूल-कॉलेज में चार तरह का द्रव्य पढ़ाया जाता है- ठोस, द्रव, गैस और प्लाजमा। सॉलिड, लिक्विड़, गैस और प्लाजमा नामक, ये चार तरह की वस्तुए पढ़ाई जाती हैं। उनका नाम वस्तु है, पदार्थ है, द्रव्य है, चीज है। 'जो स्थान घेरती है,' जिसमें भार रहता है, वह वस्तु कहलाती है।'

● ईश्वर और जीव तो इस परिभाषा में आता ही नहीं। ईश्वर और जीव न तो ठोस है, न द्रव है, न गैस है, न प्लाजमा है । तो उसको वस्तु क्यों कहा, पदार्थ क्यों कहा? तो इस प्रश्न का उत्तर है कि ये जो सालिड, लिक्विड, गैस और प्लाजमा की परिभाषा है, ये केवल भौतिक-विज्ञान की परिभाषा है। ईश्वर और आत्मा भौतिक विज्ञान का विषय ही नहीं है, उसका क्षेत्र (फील्ड) ही नहीं है। वस्तुतः वो जितनी बात जानते हैं, उतनी ही की तो परिभाषा बनायेंगे। जबकि दर्शन और वेद की वस्तु की परिभाषा इससे और व्यापक है।

● दर्शन और वेद की परिभाषा है- 'जिस तत्त्व में कुछ गुण हों अथवा क्रिया भी हो, उसे पदार्थ कहते हैं। पदार्थ, वस्तु, चीज उसका नाम हैं, जिसमें गुण हों, अथवा गुण के साथ-साथ क्रिया भी हो। क्रिया हो या न हो, वो वैकल्पिक (ऑप्शनल) है, लेकिन गुण अवश्य होना चाहिए। उसको द्रव्य या वस्तु कहते हैं।

● अब इस परिभाषा में देखिये कि-ईश्वर में कुछ गुण हैं, या नहीं? हैं न। तो ईश्वर एक वस्तु हो गयी। आत्मा में कुछ गुण हैं या नहीं है। इसलिए आत्मा भी एक वस्तु है। और प्रकृति में तो गुण हैं ही। प्रकृति में रूप, रस, गंध आदि गुण हैं ही। इसलिए प्रकृति भी एक वस्तु है। तो वेदों के अनुसार, ऋषियों के अनुसार तीन वस्तुऐं अनादि हैं- ईश्वर, आत्मा और प्रकृति। इसलिए ईश्वर और आत्मा भी वस्तु हैं।

● इस आधार पर हम यह कह सकते हैं, कि वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं-एक जड़ वस्तुएँ, दूसरी चेतन वस्तुऐं। तीन में से एक जड़ वस्तु हैं 'प्रकृति'। और दो हैं-चेतन वस्तुऐं- 'ईश्वर' और 'आत्मा'। इसलिए इन दोनों को भी हम वस्तु कह सकते हैं, पदार्थ कह सकते हैं, द्रव्य कह सकते हैं, चीज भी कह सकते हैं।

232. शंका :- हिंसक प्राणियों साँप, बिच्छु, चींटी, काकरोच आदि के साथ कैसा व्यवहार करें?

☯ **समाधान-** जहां तक संभव हो, इनको न मारें। झाड़ू मारके इनको हटा दो, बाहर कर दो। घर में कौऐ घुसते हैं, कबूतर आते हैं, चिड़िया आती हैं, हम बाहर निकाल देते हैं। चोर आता है, उसको भी बाहर निकाल देते हैं। बिच्छू, साँप आयेगा, उसको भी बाहर निकाल देंगे, मारेंगे नहीं। जहाँ तक हो सके, इन प्राणियों को नहीं मारना चाहिए।

● लोग सांप को देखते ही मारते हैं। अगर उनसे पूछें कि क्यों भाई, क्यों मारते हो? तो जवाब देते हैं - ये साँप काट लेगा। हम अगर उनसे पूछें, कि अभी काटा तो नहीं न। तो फिर क्यों मारते हो? तो वे कहते हैं, कि साहब इसकी संभावना है।' तो इसका जवाब है कि 'संभावना के आधार पर आप किसी को दण्ड दे सकते हैं क्या? न्याय का नियम यह है, कि जब तक कोई अपराध न कर ले, तब तक उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता है। हम रेल में चलते हैं, बस में चलते हैं, कितने सारे लागे चलते हैं, तो संभावना तो किसी की भी हो सकती है, कि कोई भी जेब काट सकता है। क्या बिना जेब काटे ऐसे केवल संभावना के आधार पर में सबको पकड़ के जेल के अंदर कर देंगे? ऐसा तो नहीं कर सकते। तो केवल संभावना के आधार पर दंड नहीं दे सकते। जब तक कि वो अपराध न कर लें। '

● अपनी सुरक्षा रखो, खिड़कियों में जाली लगाओ, कौओं, कबूतर, चिड़ियों को मत घुसने दो। मच्छर काटते हैं, मच्छर दानी लगाओ, तो जहाँ तक हो सके, इनको नहीं मारना चाहिए। देखिए, चौबीस साल से हम जंगल में रहते हैं। (हम जंगल में जरूर रहते हैं पर पूरे जंगली नहीं हैं) यहां आस-पास में काफी सांप रहते हैं। और खूब सांप आगे-पीछे, इधर-उधर घूमते रहते हैं। तालाब की तरफ खूब साँप आते हैं। हमने आज तक एक भी सांप नहीं मारा और न साँप ने हमको काटा। हम उनको नहीं छेड़ते, वो हमको नहीं छेड़ते। वो चुपचाप चले जाते हैं। हम अपना चुप-चाप चले जाते हैं, कुछ भी नहीं करते। आप भी ऐसा ही करने का प्रयत्न करें।

● बिल्कुल इमरजेन्सी हो, बहुत मुसीबत आ रही हों, तो मजबूरी में उनको हटा सकते हैं। और मान लो, मारने की बहुत मजबूरी हो, और आपको ऐसा लगता हो कि साँप बिल्कुल आपके ऊपर आक्रमण

करने को तैयार है । और आपको अपनी जान का खतरा है, तो आप भी मार सकते हैं, पर द्वेष के कारण नहीं मारना। अपनी रक्षा के लिए तो मारेंगे तो उसमें थोड़ा दण्ड तो मिलेगा, पर ज्यादा नहीं मिलेगा। द्वेष के कारण मारेंगे तो ज्यादा दण्ड मिलेगा। अपनी रक्षा करने का अधिकार सबको है, इस प्रकार से जहाँ तक संभव हो सके, वहाँ तक किसी को न मारें।

233. शंका :- 'वेद' ईश्वर की वाणी है। ईश्वर ने इसके निर्माण में कैसे सहायता की?

☯ **समाधान-** वेद ईश्वर की वाणी है। इसको इस तरह से समझना चाहिए, कि मनुष्य बिना सिखाए नहीं सीखता। बचपन से माता-पिता ने हमकों उठना-बैठना, खाना-पीना, चलना-फिरना, बोलना आदि सब बात सिखाई, तब जाकर हम सीख पाए। फिर स्कूल में गए। अनेक अध्यापकों, शिक्षकों ने हमें पढ़ाया-लिखाया, तब जाकर हमारी बुद्धि का कुछ विकास हुआ।

- एक मनुष्य के बच्चे को जन्म से ही बड़े से कमरे में रख दिया जाए। जिसमें बहुत बड़ी लाइब्रेरी हो, और बहुत बड़ी-बड़ी मशीनें हों, कम्प्यूटर भी हो, सिखाने वाली सारी चीजें हों। और उसको शिक्षक, टीचर कुछ भी न दिया जाये। तो क्या वो सारी लाइब्रेरी की पुस्तकें पढ़कर विद्वान हो जायेगा ? नहीं होगा न। तो इससे पता लगता है, कि जब तक शिक्षक-अध्यापक (टीचर) न मिलें, तब तक व्यक्ति का विकास नहीं होता।

- आप और हम, आज पढ़-लिखकर बुद्धिमान हो गये। हमें बुद्धिमान बनाया, हमारे अध्यापकों ने। हमारे अध्यापकों को बुद्धिमान बनाया उनके अध्यापकों ने। और उनको-उनके अध्यापकों ने। तो पीछे-पीछे चलते जाइये। सबसे पहले जो मनुष्य पैदा हुये, इनको बुद्धिमान किसने बनाया ? उनको भी कोई अध्यापक-शिक्षक चाहिए। उनकी किसने विद्वान बनाया ? ईश्वर ने। तो ईश्वर ने जो पहली पीढ़ी (फर्स्ट जनरेशन) को जो पढ़ा-लिखा

कर विद्वान बनाया, वो ही चारों वेद थे। उन चार वेदों के माध्यम से ईश्वर ने पहले-पहले मनुष्य को पढ़ा करके बुद्धिमान बनाया।

- और फिर ईश्वर ने उनको पढ़ा कर, उनकी ड्यूटी लगा दी कि मैंने आपको पढ़ा दिया अब आप आगे वाली पीढ़ी को पढ़ाओ। फिर वो आगे-आगे गुरू-शिष्य परंपरा से पढ़ना-पढ़ाना चलता रहा, और आज तक हम पढ़ते चले आ रहे हैं। जब तक लोग ऐसे पढ़ते जायेंगे, तब तक लोग बुद्धिमान बनते जायेंगे। और जब पढ़ना-पढ़ाना छोड़ देंगे, फिर जंगलियों की तरह हो जायेंगे, पशुओं की तरह बन जायेंगे। तो ईश्वर ने सबसे पहले चार वेदों का उपदेश दिया। फिर उन्हीं चार वेदों से सब लोग बारी-बारी से पढ़कर बुद्धिमान हुए।

- अब प्रश्न यह रह जाता है, कि ईश्वर ने यह चार वेदों का उपदेश कैसे दिया। उसकी पद्धति क्या है ? इसको समझाते हैं। प्रश्न है - ईश्वर एक है या अनेक ? उत्तर है-एक । अगला प्रश्न है, वह एक ईश्वर एक जगह पर रहता है, या सब जगह पर ? उत्तर है- सब जगह पर। अगर ईश्वर सब जगह रहता है तो हमारे अंदर भी है, बाहर भी है। तो शुरु-शुरु में जो हजारों मनुष्य पैदा हुए थे। उनमें जो बहुत अच्छे सबसे अधिक बुद्धिमान थे, सुपर जीनियस क्लास में चार व्यक्ति धरती पर भगवान ने सिलेक्ट कर लिये (चुन लिये) । उनको हम 'ऋषि' नाम से कहते हैं । ऋषि-सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति। वो इतने बुद्धिमान कहां से हो गये थे। वो पिछली सृष्टि के कर्म-फल के अनुसार बुद्धिमान थे, उनके ऐसे अच्छे कर्म थे। तब उन चार व्यक्तियों के मन में एक-एक वेद का उपदेश दिया। इस तरह से ईश्वर ने चार व्यक्तियों को चार वेदों का उपदेश उनके मन में दिया। क्योंकि ईश्वर उनके अंदर भी था और बाहर भी था।

- जब अंदर ही अंदर आपको बोलना हो, अपने मन में ही कोई बातचीत करनी हो, योजना बनानी हो, प्लानिंग करनी हो, तो बिना जबान हिलाये, आप मन-मन में खूब योजना बना सकते हैं। और जब ध्यान में बैठते हैं, तो बिना हिलाये चलाये, बिना जबान चलाये मन्त्रपाठ, अर्थ का विचार कर सकते हैं। तो ईश्वर भी उन चार व्यक्तियों के मन में था। और उनके अंदर बैठे भगवान ने चारों वेदों का उपदेश दे दिया और सारी बात अंदर ही अंदर सिखा दी। उसको न जबान की जरुरत पड़ी, न मुंह की जरुरत पड़ी, न होठ की जरुरत पड़ी। उन ऋषियों के नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे। अग्नि को ऋग्वेद का ज्ञान दिया। वायु को यजुर्वेद का, आदित्य को सामवेद का और अंगिरा को अथर्ववेद का। इस तरह ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ में वेद का ज्ञान दिया।

234. शंका :- शास्त्रों के आधार पर प्रेम का अर्थ क्या होता है, क्या प्रेम और राग एक ही हैं या उसमें अंतर है?

☯ **समाधान-** प्रेम और राग में अंतर है। प्रेम का अर्थ है, रुचि, आकर्षण। ईश्वर में प्रेम होना चाहिए, ईश्वर में रुचि होनी चाहिये, ईश्वर में आकर्षण होना चाहिए। लेकिन जो राग है, राग में गड़बड़ है।

- राग में क्या गड़बड़ है? राग में आसक्ति (अटैचमेंट) है, वो अटैचमेन्ट अविद्या से पैदा होती है। जो रुचि, जो आकर्षण 'अविद्या' के कारण पैदा होती है, उसको बोलते हैं-'राग'। और जो रुचि, जो आकर्षण 'विद्या' (तत्त्व ज्ञान) से पैदा होती है, उसको बोलते हैं-'प्रेम'।
- प्रेम सबसे करना चाहिए। गाये से, घोड़े से, पशु-पक्षी, मनुष्य, ईश्वर सबसे प्रेम करना चाहिए। प्रेम करने का विधान है। अहिंसा का मतलब है, 'सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना।'
- प्रेम सबसे करना चाहिए, पर राग किसी से भी नहीं करना चाहिए। धन से, पुत्र से, परिवार से, संपत्ति से, मोटर-गाड़ी, सोने-चांदी आदि किसी भी चीज से राग नहीं करना चाहिए। राग, दुःख-दायक है। प्रेम, दुख दायक नहीं है। क्योंकि राग 'अविद्या' के कारण उत्पन्न होता है, और प्रेम 'तत्त्व-ज्ञान' के कारण उत्पन्न होता है। इसलिए दोनों में अंतर है।

235. शंका:- वेद में विज्ञान है। लेकिन वेद पढ़े बिना कुछ देश या लोग वैज्ञानिक उन्नति कर रहे हैं, तो वेद पढ़ने की वैज्ञानिक दृष्टि से क्या आवश्यकता है?

☯ **समाधान-** वेद की भाषा भी ईश्वर ने बनायी और उसमें व्याकरण के नियम भी साथ में थे। वेद में सारी सत्य विद्याओं का उपदेश है। महर्षि दयानंद जी ने लिखा है, वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। वेद में व्याकरण है, गणित है, भूगोल है, खगोल है, नौका विद्या, विज्ञान विद्या, वायरलेस विद्या, तार विद्या सब है।

- एक पुस्तक है-ऋग्वेदादि, भाष्य भूमिका। इस पुस्तक को पढ़िये? आप को पता लगेगा कि वेदों में कैसी-कैसी विद्या है। सब तरह की सत्य-विद्या वेद में बतायी गयी है। फिर आगे ऋषियों ने एक-एक विद्या को छाँट-छाँट करके अलग-अलग ग्रंथ बना दिये, ताकि लोग आसानी से पढ़ सके, समझ सकें।
- देखिये, ये लोग जो समझ रहे हैं, कि वेद पढ़े बिना ही वैज्ञानिक लोग उन्नति कर रहे हैं, यह भ्रांति है। कोई भी वैज्ञानिक बिना वेद पढ़े विज्ञान की खोज नहीं कर सकता। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रंथों में महर्षि जी लिखते हैं, कि संसार में जितना भी सत्य फैला है, वह सब वेदों में से गया है। 'कोई भी व्यक्ति वेद पढ़े बिना विद्वान नहीं हो सकता। अगर ईश्वर ने वेद न बनाये होते और वेदों को पढ़कर मनुष्य विद्वान न हुए होते तो कोई भी व्यक्ति नयी खोज-नया आविष्कार नहीं कर सकता। जैसे-मैंने अभी निवेदन किया। सृष्टि के आरभ में ईश्वर ने चार वेदों का ज्ञान चार ऋषियों को दिया। उन्होंने अन्य मनुष्यों को पढ़ाया । उन्होंने फिर अन्यों को पढ़ाया। इस प्रकार से पीढ़ी दर पीढ़ी पढ़ते पढ़ते आये। तब बुद्धिमान हुये। हमने बहुत कुछ गुरुओं से, अपने शिक्षकों से, अध्यापकों से पढ़ा।
- भाषा भले ही अंगेजी हो, जर्मन हो, फ्रेंच हो, लेटिन हो, जो भी हो, हमने वेद ही पढ़ा है। जो-जो सत्य विद्या पढ़ी, वो सब वेद है। भाषा बदल जाने से विद्या नहीं बदल जाती है। हिन्दी भाषा में गणित पढ़ाइये **5x8=40** ठीक है। अब इसको अंग्रेजी में पढ़ाइयें- **"5 into 8 equal to forty"** । यहां पर भाषा बदल गई, लेकिन क्या गणित बदल गया? गणित तो वही है, चाहे आप हिन्दी में पढ़ाओ, अंग्रेजी में पढ़ाओ, चायनीज में पढ़ाओ, चाहे जपानी में पढ़ाओ, किसी भी भाषा में पढ़ाओ। तो जितने भी

लोग सारी दुनिया भर में सत्य विद्या पढ़-पढ़ा रहे हैं, उनकी भाषाऐं अलग-अलग हैं। लेकिन वो सारी विद्या वेद में से गयी है। इसलिए दूसरी भाषाओं में दूसरी पुस्तकों के रूप में वो वेद ही पढ़ा रहे है। और गुरु से बिना पढ़े कोई साइंटिस्ट नहीं बन सकता। हजारों साल तक जंगली जीतियाँ, जंगली ही रहीं। उन्होंने कोई भी आविष्कार नहीं किया। कोई उनमें बुद्धि का विकास नहीं कर पाये। अब उनमें से कुछ लोग नगर में आये या उनके लिये शिक्षा का प्रबंध किया गया, तो वो पढ़-लिखकर बुद्धिमान हो गये। जिस भी भाषा में व्यक्ति पढ़ता है, अगर वो सत्य पढ़ता है, सच्ची विद्या ही पढ़ता है, तो वो वेद ही पढ़ रहा हैं। भाषा बदल जाने से वेद नहीं बदलता। इसलिये संसार में जितने भी वैज्ञानिकों ने जितने भी आविष्कार किये, वे सब अपनी-अपनी भाषा में वेद (सत्य विद्या) पढ़कर ही किये हैं ।

236. शंका :- मनुष्य श्रेष्ठ है, ऐसा शास्त्र कहता है पर जो हिंसा चोरी आदि बुरे काम करते हैं, उन्हें अच्छे-बुरे का पता नहीं चलता। उनके लिए क्या उपाय है?

☯ **समाधान-** वैसे पता तो चलता है, लेकिन वो उस पर ध्यान नहीं देते। जब कोई आदमी बुरी योजना बनाता है, तो उसे अंदर से भय, शंका होती है। सबको होती है, सबको पता चलता हैं। उदाहरण के लिये यहां तक कि कुछ पशुओं को भी पता चलता है। आपके घर में रोज कोई बिल्ली निश्चित समय पर आती है, रसोई के बाहर उसका एक बर्तन रखा हुआ है और आप दूध डाल देते हैं। वह दूध पीती है रोज ! एक दिन आपने दूध नहीं डाला। आप किसी काम में व्यस्त थे। और बिल्ली अपने टाइम पर आ गयी। उसने अपना बर्तन देखा, कि उसमें दूध नहीं है। तो आज बिल्ली सोचती है कि आज यहाँ दूध नहीं मिला, तो अंदर घुस के पिऊं। लेकिन जब वो अंदर घुसने लगती है, तो चार बार सोचती है, जाऊं या नहीं जाऊं। इधर देखती है उधर देखती है, और पता करती है, कि कोई आ तो नहीं जायेगा। उसको भी पता

चल रहा है कि आज मैं लाइन क्रॉस कर रहीं हँ। आज गड़बड़ है, आज रेड लाइट एरिये में जा रही हूँ। आज मेरी पिटाई हो सकती है। जब बिल्ली जैसे प्राणी को भी पता चलता है, कुत्ते को भी पता चलता है। तो इंसान को पता क्यों नहीं चलेगा, उसकी बुद्धि तो उनसे ज्यादा है। तो पता तो सबको चलता है। पर लोग उस पर ध्यान नहीं देते हैं। बुरे विचार करते समय, बुरे काम करते समय, भय, शंका, लज्जा होती है, पर ध्यान नहीं देते। और बुरा काम कर डालते हैं। फिर उनको दंड भोगना पड़ता है। और अच्छा काम करते हैं, तो आनंद, उत्साह भी मिलता है। वो भी सबको पता चलता है। जो लोग इस परमात्मा की शिक्षा पर ध्यान देते हैं, वो दुःख से छूट जाते हैं । वो सदा अच्छे काम करते हैं और सुखी रहते हैं।

- तो यह जो शिक्षा मिलती है कि मन में जो भय, शंका, लज्जा और आनंद, उत्साह पैदा होता है, यह जीवात्मा की नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से है। यह सब उसको पता चलता है। मोटा-मोटा तो इससे पता चल जाता है। और अच्छी तरह गहराई से जानना हो, तो उसके लिए वेद पढ़ना चाहिए।

- महर्षि मनु कहते हैं- धर्म को जो अच्छी तरह से जानना चाहते हैं, उनके लिए सबसे ऊंचा ग्रंथ, सबबे ऊंचा प्रमाण वेद है। तो वेद पढ़ के हम पता लगा सकते हैं, कि क्या अच्छा और क्या बुरा है ? इसके अतिरिक्त वेदानुकूल ऋषियों के द्वारा बनाये हुए ग्रन्थां (दर्शन शास्त्रों, उपनिषदों, सत्यार्थ प्रकाश आदि) से भी अच्छे बुरे (सत्यासत्य) का पता चलता है। और जिन शुद्ध अन्तःकरण वाले विद्वानों ने उक्त वेद व ऋषिकृत ग्रन्थों को अच्छी तरह से पढ़ा, समझा और आचरण किया हो, उनसे भी हमें अच्छे बुरे का ज्ञान हो सकता है।

237. शंका- सृष्टि की शुरुआत में लोगों की भाषा कौन सी थी?

☯ **समाधान-** सृष्टि के आरंभ में लोगों की भाषा वैदिक ''संस्कृत'' थी। सबसे पुरानी वैदिक संस्कृत'' भाषा है। इससे पुरानी कोई भाषा है ही नहीं।।

● वेद की भाषा तो सार्वकालिक है, सब कालों में लागू होती है। यह जो आजकल बोली जाने वाली संस्कृत है, वो भी वेद में से ही निकली है। बाकी सभी भाषाएँ संस्कृत के बाद में बनी।

● संस्कृत से ही तैयार हुई वेद भाषा है-नियमों की भाषा। वेद की भाषा, संविधान वाली भाषा है, जैसे-ऐसा करना चाहिए, ऐसा नहीं करना चाहिए, सच बोलना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए। चोरी नहीं करनी चाहिए। झगड़ा नहीं करना चाहिए। और जब हम व्यवहार करते हैं, तो हमको तीन कालों में बदलकर वह भाषा बोलनी पड़ती है। मैंने सत्य बोला,-यह भूतकाल हो गया, मैं सत्य बोलता हूँ-अब वर्तमान काल हो गया। मैं सत्य बोलँगा- यह भविष्यत् काल हो गया। तो ऐसे विधान की भाषा में और व्यवहार की भाषा में इतना अन्तर आ जाता है। इस तरह वेद की भाषा संविधान की भाषा है और व्यवहार की भाषा को तीन कालों से जोड़कर देखा जाता है। वेद की भाषा से हमारी बोलचाल की भाषा संस्कृत तैयार हुई।

238. शंका- ईश्वर ने मांसाहारी योनियाँ क्यों बनाई? उन्हें इतना बलवान भी क्यों बनाया? उन्हें बलवान बनाकर क्या ईश्वर ने अत्याचारी का साथ देने के बराबर काम नहीं किया?

☯ **समाधान-** शेर बनाया, भेडिया बनाया। ईश्वर ने उनको इतनी ताकत दी, कि वे खरगोश,हिरण आदि प्राणियों के उपर हमला कर उन्हें खा जातें हैं। भगवान ने बलवान का, अत्याचारी का साथ दिया, ऐसा लगता है। परन्तु भगवान ने जो किया, ठीक किया। उसकी पॉलिसी (नीति) को समझ पाना हमारे वश की बात नहीं है। जरा सोचिये शाकाहारी प्राणी घास-पात खाकर अपना जीवन जिऐंगे। और जब मर जाऐंगे, तो उनके शव (डेड बॉडीज) से दुर्गंध फैलती रहेगी। तो उनकी साफ-सफाई करने के लिए कुछ प्राणी ऐसे बना दिए, जो प्राणी मर-मरा जाऐं तो उनको खा जाओ ताकि शव साफ हो जाए और दुर्गंध न फैले, रोग न फैले। अब कितने प्राणी मर जाते है, जंगल में तो गिद्ध खा जाते हैं, पक्षी

खा जाते हैं। और ऐसे ही शेर, भेड़िया हैं, वो खा जाते हैं। आपके घरों में कहीं-कहीं कॉकरोच मर जाते हैं, तो चीटियाँ उठाकर ले जाती हैं, साफ-सफाई कर जाती है। छिपकलियाँ बना दी, मकड़ियाँ बना दी। प्राणी जगत के अंदर एक नियम चलता है - 'जीवों वो जीवस्य भोजनम्'। एक जीव दूसरे जीव का भोजन है। यह सारी व्यवस्था ईश्वर ने की है, कुछ सोच-समझकर की होगी। हम नहीं समझ पा रहें हैं वो हमारी कमी है। पर 'जीवो जीवस्य भोजनम्ः' यह नियम सब प्राणियों पर लागू होता है, मनुष्यों पर भी। मनुष्यों का भोजन कौन सा जीव है?

☯ **समाधान-** आप भी शेर-भेड़िया मार-मारकर खाऐं, या गाय को बकरी को मार-मारकर खाऐं और कहें - 'जीवो जीवस्य भोजनम्' ऐसा नहीं है। मांस मनुष्य का भोजन नहीं है । मनुष्य का भोजन तो वनस्पति है। वनस्पति में भी जीव है। मनुष्यों के लिए इतना नियम लागू होता है, कि वह वनस्पति को ठीक तरह से विधिपूर्वक काटकर-पकाकर खा सकता है।

239. शंका- आज वैज्ञानिकों ने जो 'क्लोन' बनाया है, क्या वो वैदिक-सिद्धांत के अनुकूल है?

☯ **समाधान-** अनुकूल नहीं है। क्लोन बनाऐंगे, डुप्लीकेट कॉपी हो जाएगी। डुप्लीकेट कॉपी होगी, तो झंझट हो जाएगा। चोरी कोई करेगा, और जेल में कोई दूसरा जाएगा। घोटाला कोई और करेगा, पकड़ा कोई और जाएगा। इसलिए यह क्लोन बनाना ठीक नहीं है।

● जुड़वां बच्चों (ट्विन्स) में शक्ल उतनी नहीं मिलती, जितनी क्लोन्स में मिलती है। ऐसे बहुत एक्सेप्शनल केसेस (अपवाद) होंगे। दो भाई बिल्कुल एक जैसे शक्ल के हों, करोड़ों-अरबों में एक-आध केस (घटना) ऐसा हो सकता है।

● और क्लोनिंग करके तो यहाँ हजारों गड़बड़ खड़े कर दिए जाएंगे। परीक्षा देने कोई और आएगा, नौकरी किसी और को मिलेगी। जो बेवकूफ होगा, वो परीक्षा देने नहीं जाएगा, उसकी जगह जो पढ़ा-लिखा बुद्धिमान होगा, उसको भेज देंगे। ऐसी बहुत सारी गड़बड़ियाँ होंगी। इसलिए क्लोनिंग करना ठीक नहीं है।

240. शंका- समाधि अवस्था क्या है? हमने सुना है बहुत सारे संत 'समाधि अवस्था' में भगवान के पास गए। यह कैसे संभव है?

☯ **समाधान-** समाधि अवस्था एक ऐसी अवस्था है, जिसमें हम योगदर्शन में बताई गई पांच प्रकार की प्रमाण आदि वृत्तियों को रोक लेते हैं। और ईश्वर की अनुभूति शुरू हो जाती है। ईश्वर का अनुभव प्राप्त हो जाता है। उससे हमें ज्ञान, आनन्द, बल आदि बहुत सारी चीजें मिल जाती है। इसका नाम है 'समाधि'। ऐसी समाधि लगाकर बहुत सारे संत, महात्मा, ऋषि मुनि लोग ईश्वर के पास चले गए और जन्म-मरण के चक्कर से छूट गए अर्थात् उनका मोक्ष हो गया ।

241. शंका- मृत शरीर को वैदिक धर्मानुसार जलाते हैं। कुछ वैज्ञानिक कहते है कि शरीर को गाड़ने से जमीन में अच्छी फसल तैयार होती है, और लकड़ी जो आजकल महंगी है, वो बच जाती है। कृपया इसकी विस्तृत जानकारी दें?

☯ **समाधान-** मृत शरीर को गाड़ना अच्छा नहीं है। वेद के अनुकूल नहीं है। वेद में लिखा है - यजुर्वेद पढ़िये, चालीसवां अध्याय है, उसमें लिखा है -भस्मान्तम शरीरम्। तो वेद में ईश्वर ने बताया है, सबसे बढ़िया तरीका है, अग्नि संस्कार करना।

● ईश्वर कहता है- शरीर को अन्त में भस्म करना चाहिए। यह शरीर का निपटाने का सबसे अच्छा तरीक है। मिटटी में गाड़ते है, तो जमीन खराब होती है। कब्रिस्तान में गाड़ते-गाड़ते इतनी जगह मुर्दों ने ले ली, कि जिन्दों के लिए जगह ही नही बची। जमीन दूषित होती है, खामखां जमीन घेर ली जाती है। सौ आदमी मर गए, तो मरे हुए लोग, सौ जीवित आदमियों के बराबर जगह घेर लेंगे। और अपने यहाँ अन्तिम संस्कार कराने में एक ही चिता पर सौ आदमी जला लो। एक जल गया, दूसरा जल गया,

सौ जल गये उससे जमीन भी बचती है और उसका अच्छी तरह से निपटारा हो जाता है, जलाने से थोड़ी सी दुर्गन्ध भी फैलती है, उसके निवारण के लिए घी का प्रयोग करते हैं। तो उससे दुर्गन्ध का भी शुद्धिकरण हो जाता है।

● रही बात लकड़ी की । उसका उत्तर है- जितने पेड़ काटते है उतने पेड़ और लगाओ, लकड़ी की समस्या हल हो जाती है। फिर कहते हैं, लकड़ी मँहगी हो गई। मँहगाई का उत्तर है, कोई वस्तु यदि आवश्यक है, तो कितनी भी मँहगी हो जाए, उसका प्रयोग तो करेंगे ही । जैसे- पैट्रोल, डीजल, घी, तेल, गेहूँ, चावल आदि क्या मँहगे नहीं हो गये ? क्या उनका प्रयोग करना बन्द कर दिया ? जब इनका प्रयोग कर रहे हैं, तो लकड़ी का भी करेंगे, चाहे जितनी भी मँहगी हो जाये।

242. शंका- साठ वर्ष का पिता रिटायर्ड फौजी है। शराब की आदत है। सारी पेन्शन शराब में उड़ा देता है। क्या शराब छुड़ाने का कोई उपाय है?

☯ **समाधान-** शराब छुड़ाने के लिए सरकारी अस्पताल में संपर्क करें। कुछ प्राइवेट डॉक्टर्स भी होते हैं, कुछ सरकारी हॉस्पिटल होते हैं। वहाँ से आपको दवाई मिल जाएगी। शराब छूट सकती है। पिता को प्रेम से समझायें, बतायें। बुद्धिमत्ता से काम लेना अच्छा है। झगड़ा करना अच्छा नहीं है।

243. शंका- दस वर्ष के लड़के-लड़की ठीक से भोजन नहीं करते। इस तरह के बच्चों का मन ईश्वर में लगाने के लिये उन्हें कैसी शिक्षा दी जाये?

☯ **समाधान-** ये समस्याएँ घर-घर में है। बच्चों से पूछो- क्या खाओगे बेटा ? तो अधिकांश बच्चे बोलेंगे- आलँ अगर पूछें कि- अच्छा, यह बैगन खा लो। तो बच्चे बोलेंगे - न बैगन नहीं खाऊँगा, वो मुझे पसंद नहीं है। ऐसे नखरे घर-घर में बहुत हैं। तो बच्चों के नखरे नहीं सुनना। बच्चों की एक भी गलत बात नहीं माननी। बच्चो ठीक बात बोलें, तो सब मानो। भाई, टिंडे में, दूधी (घिया) में क्या तकलीफ है ? इन्हें खाना स्वास्थ के लिये अच्छा है। नेत्र-ज्योति (आई-साइट) के लिये अच्छा है। पालक, मैथी, सरसों आदि-आदि जो हरी पत्ती वाले साग हैं, वो बच्चे नहीं खाते। इससे आई-साइट कमजोर हो जाएगी। छोटी उम्र में चश्मे लग जाएंगे। इसलिए उनको समझाओ और खिलाओ।

● हम भी छोटे बच्चे थे। एक दिन हमारे घर में टिंडे की सब्जी बनी। वो हमको अच्छी नहीं लगी तो हमने कहा- यह टिंडे की सब्जी हम नहीं खायेंगे। हमारे लिये दूसरी सब्जी बनाओ। माता जी ने कहा- बेटा, हमारे घर में एक ही सब्जी बनती है। खानी है तो खा ले, नहीं तो सो जा। बोलिये, क्या करेंगे ? भूखे सो जायेंगे। हमको खानी पड़ी। एक दिन नखरा किया, दूसरे दिन किया। वो ही जवाब था कि आज तो बैगन की सब्जी बनी है, तुमको यही खानी पड़ेगी, नहीं खानी तो भूखे सो जाओ। यह घर है, कोई होटल नहीं है। तुम्हारे लिये दूसरी सब्जी नहीं बनेगी। दो दिन नखरा किया। तीसरे दिन अक्ल ठिकाने आ गयी। बस, सीख गये। तब से लेकर आज तक जो मिलता है, खाते हैं, सब खाते हैं, कोई नखरा नहीं। भगवान ने सारी सब्जियाँ हमारे स्वास्थ के लिये ही बनाई हैं। अच्छी बनाई हैं। बच्चों को समझाओ और बारह-तेरह साल की उम्र तक जबरदस्ती खिलाओ। तब तक उनको आदत हो जाएगी। आगे फिर अपने आप खायेंगे। उनको इस तरह से खिलाओ।

● ऐसे बच्चों या सभी बच्चों का मन ईश्वर में लगाने के लिये उन पर नियम लगाओ, कि सुबह शाम ईश्वर का ध्यान, यज्ञ, सन्ध्या, गायत्री मन्त्र का पाठ अवश्य करना पड़ेगा । जो नहीं करेगा, उसको नाश्ता, भोजन आदि नहीं मिलेगा। अच्छे खिलौने, फल, मिठाई, कम्प्यूटर आदि की सुविधा नहीं मिलेगी। जो करेगा, उसे सब सुविधाएँ और कभी-कभी विशेष

इनाम भी मिलेगा बच्चों पर ऐसे नियम उनकी 12-13 वर्ष की उम्र तक जबरदस्ती लगायें । अन्यथा आपके बच्चे बिगड़ जाएँगे । भविष्य में वे स्वयं दुखी होंगे और सबको दुख देंगे ।

244. शंका- जब हम शिविर इत्यादि में आते हैं। तब सब कुछ अच्छा लगता है। क्रोध कम हो जाता है। लेकिन जब हम वापस सांसारिक-जीवन में जाते हैं, तो ऐसे नहीं जी पाते, क्या करें?

☯ **समाधान-**

पहला उपाय - तो यह है कि- सांसारिक जीवन में वापस मत जाओ, यहीं रहो। जब यहाँ शांति से जी रहे हो, तो क्यों जाओ बेकार दुनिया में ? वहाँ काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि सब झंझट हैं। इसलिए एक उपाय तो यह है, कि- ऐसे किसी भी आश्रम में रहो, जहाँ व्यवस्था मिले। यहाँ रहने की गारंटी मेरे अधिकार में नहीं है। अधिकारी हैं, उनसे पूछो, कि यहाँ के नियम क्या हैं ? आपकी योग्यता यहाँ रहने की है या नहीं है। वो अधिकारी बतायेंगे। मैंने तो आपको सुझाव दिया, कि यदि ऐसा जीवन अच्छा लगता है, संसार में झंझट होता है, तो वो जीवन छोड़कर किसी भी आश्रम में रहो। जहाँ सुविधा, अनुकूलता हो, वहाँ रहो।

दूसरा - यहाँ से खूब तैयारी करके जाओ, खूब संकल्प करके जाओ, कि हम नगर के जीवन में जायेंगे, लेकिन यह छल-कपट नहीं करेंगे। फिर उसके हिसाब से वहाँ मेहनत करो। यहाँ से जब जायेंगे तो कुछ दिन तक तो आपका वो संकल्प टिकेगा और आप ठीक मेहनत करेंगे। शांति से जी लेंगे। कुछ महीने में आपकी बैटरी डाउन हो जाएगी, तो कुछ महीने बाद चार्जिंग के लिये अगले शिविर में फिर आओ और अपनी बैटरी चार्ज करो। फिर वापस जाओ।

तीसरा- कुछ महीने या वर्ष (जब तक आपकी सांसारिक जिम्मेदारी पूरी हो जाए, तब तक) शिविरों में आ-आकर वानप्रस्थी बनने की तैयारी करो । जब सांसारिक जिम्मेदारी भी पूरी हो जाए, वानप्रस्थी बनने की योग्यता भी बन जाये, तब वानप्रस्थी बनकर किसी आश्रम में रहना शुरु करो । इस प्रकार से दो-तीन विकल्प हैं, जो आपको ठीक लगे, उसको अपनाओ।

245. शंका- क्या किसी भी धर्म, पंथ या देवी-देवता का मजाक उड़ाकर हम अपने आपको श्रेष्ठ कहलवा सकते हैं?

☯ **समाधान-** मजाक बिल्कुल नहीं उड़ाना चाहिये। पर सत्य कहने में कोई आपत्ति नहीं। अगर कोई व्यक्ति गलती कर रहा है, तो उसकी गलती बताने में कोई आपत्ति नहीं है। उसकी गलती (दोष) बतायेंगे। अपनी अच्छाई बतायेंगे। लोगों को उस बुराई से बचायेंगे। लोगों को भटकने से बचाने के लिये, अगर हम किसी का दोष बताते हैं, तो कोई आपत्ति नहीं। और मजाक उड़ाने के लिये खण्डन करते हैं, तो वो गलत है, अपराध है। ऐसा नहीं करना चाहिये । ऐसा करने से हम श्रेष्ठ नहीं कहला सकते ।

246. शंका- हमने सुना है, मुक्त आत्मायें आपस में बातें करती हैं। लेकिन वे स्थूल शरीर के बिना कैसे बातें कर सकती हैं?

☯ **समाधान-** व्यक्ति शरीर के बंधन में होने पर शरीर, इन्द्रियों की सहायता से सारे काम करता है। मोक्ष में ये शरीर, इन्द्रियाँ नहीं रहते। मोक्ष में प्रकृति के बने साधन नहीं होते। वहाँ तो ईश्वर की शक्ति का सहयोग मिलता है। ईश्वर की शक्ति से मुक्त आत्मायें सब जगह घूमती हैं, देखती हैं, सुनती हैं, बातें करती हैं। जो भी मुक्ति का आनंद होता है, वो ईश्वर की शक्ति से भोगती हैं। मुक्त आत्मा, मुक्त आत्मा से बात करेगी, हमसे नहीं। और हम बुद्ध आत्माएँ आपस में बात करेंगे, मुक्तात्माओं से नहीं । और हम बुद्ध आत्माएँ आपस में बात करेंगे, मुक्तात्माओं से नहीं ।

247. शंका- रात्रि को केवल ढ़ाई-तीन घंटे नींद आती है। खाना, बिस्तर ठीक है। क्या तीन घंटे की नींद काफी है?

☯ **समाधान-** ढाई-तीन घण्टे की नींद तो कम है। एक स्वस्थ वयस्म व्यक्ति को कम से कम 6-7 घण्टे तो अवश्य नींद लेनी चाहिए । अच्छी गहरी नींद आये, इसके लिये तीन काम करें। एक तो दिन में खूब मेहनत करें। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक परिश्रम करें ताकि रात को थक जायें। आप अच्छी तरह से थक जायेंगे, तो बढ़िया नींद आएगी।

दूसरी बात है- कि चिंता (टेंशन) कुछ नहीं करें, नहीं तो नींद नहीं आएगी।

तीसरा- सोते समय बिस्तर पर लेटकर कोई चिंतन नहीं करना, कोई विचार नहीं उठाना, कोई योजना नहीं बनानी। अगर इस नियम का पालन करेंगे तो नींद बहुत अच्छी आएगी। और यदि सब विचारों को उठायेंगे, तो आपको नींद पर्याप्त नहीं आयेगी। जो योजना (प्लानिंग) बनानी है, चिंतन-विचार करना है, वह दिन में करो।

स्त्री को मुँह-हाथ धोकर, सोने से पूर्व बिस्तर पर बैठकर, पाँच-दस

मिनट ईश्वर का ध्यान करो। उसके बाद तीन काम करने से बढ़िया नींद आएगी।

<u>पहला काम</u> - लाइट बंद,

<u>दूसरा काम</u> - आँख बंद,

<u>तीसरा काम</u> - विचार बंद।

ये तीन काम करो, बढ़िया नींद आएगी। विचार बंद करने के लिये उपाय है, 'गायत्री मंत्र' का पाठ। बिस्तर पर आप लेटकर, आँख बंद रखें। जब तक नींद न आये, तब तक गायत्री मंत्र का पाठ चालू रखें। ईश्वर का ही स्मरण करें। आपको अच्छी नींद आएगी।

248. शंका- मेरा पड़ोसी प्रायः हर रोज बच्चों को भेजकर साइकिल, प्रेस, पंप, तेल, हल्दी, जीरा, कुकर आदि हमारे घर से मंगवाता है? अब मना करें, तो संबंध खराब होने का डर; और झूठ बोलकर मना करें, तो ईश्वर का डर; और दे दें, तो अंदर मन में दुःख; बताइये क्या करें?

☯ **समाधान-** आपका पड़ोसी जो बार-बार ये चीजें माँगता है, उसे एक-दो बार दे दो। बार- बार आये तो कहो- बस भैया, हमारे पास इतनी ही ताकत है। अब हम रोज-रोज नहीं दे सकते। तुम अपने पैसे कमाओ और अपना खाओ। वह नाराज होता है, तो होये। उसकी चिंता नहीं। हम स्वार्थी नहीं हैं, हम लोभी नहीं हैं। पड़ोसी की सहायता करनी चाहिये। जितनी शक्ति हो, जितना सामर्थ्य हो, उतनी पड़ोसी की सहायता करनी चाहिये। अब जब सामर्थ्य पूरा हो जाये, तो साफ बोल दो, कि भाई अब नहीं कर सकते। हमारी ताकत खत्म। अब तुम खुद कमाओ और खाओ। किसी और के पास जाओ। तुम खुद मेहनत क्यों नहीं करते? तुम्हारे भी तो हाथ हैं। हमारे दो हाथ हैं, तुम्हारे भी दो हाथ हैं। जब हम कमा सकते हैं तो तुम भी कमा सकते हो। अपना कमाओ और खाओ। प्रेम से कहो, झगड़ा नहीं करना। यदि अधिक नहीं कमा सकते, तो थोड़े में गुजारा करना सीखो । रोज-रोज माँगना तो अच्छा नहीं है।

249. शंका- बौद्धिक स्तर पर किसी भी जीव का या आकृति का पोस्टमार्टम कैसे किया जाता है, ताकि आकर्षण खत्म हो जाये?

☯ **समाधान-** इसके लिये कभी-कभी श्मशान घाट में जाया करें और वहाँ जलते हुये शव को देखा करें। इससे आपका आकर्षण कम हो जायेगा। दूसरा, कभी-कभी हॉस्पिटल में जाया करें, जहाँ रोगी पड़े रहते हैं। किसी की टाँग लटकी है, किसी का पाँव टूटा हुआ है, किसी का प्लास्टर चढ़ा हुआ है, किसी को कोई रोग है, किसी को कोई। वहाँ हॉस्पिटल में जाकर अपनी आँख से रोगियों को देखें। तीसरा, वो जो कहीं-कहीं हॉस्पिटल में हड्डियों वाले कंकाल होते हैं, उनको देखा करें। चौथा कभी-कभी मौका लग जाये, तो ऑपरेशन थियेटर में जाकर रोगियों का चीर-फाड़ वाला पेट का ऑपरेशन भी देखें। ऐसे दो-चार उपाय करें। और फिर चार, छह महीने में, सालभर में दो बार-चार बार इसको दोहरायें। और उस तरह के चित्र हमेशा दिमाग में रखें। उनको बार-बार दोहराते रहें। सारा आकर्षण खत्म हो जायेगा।

250. शंका- मानव जीवन की सबसे बड़ी भूल कौन सी है?

☯ **समाधान-** संसार में पूर्ण सुख मानना, यह मानव जीवन की सबसे बड़ी भूल है। यहाँ पूर्ण सुख नहीं है, मगर हम पूर्ण सुख मान बैठे हैं। लोग यहाँ दुनिया में सुख ढूँढ़ते हैं, जो कि बिल्कुल नहीं मिलेगा। लोग दुनिया में न्याय ढूँढ़ते हैं, वो बिल्कुल नहीं मिलेगा। यहाँ तो कदम-कदम पर अन्याय होता है। भयंकर दुख भोगने पड़ते हैं। इसलिये सबसे बड़ी भूल यह मानना है कि- 'संसार में सुख मिलेगा।' इस बात को याद रखें और मोक्ष की तैयारी करें। हाँ, मोक्ष में अवश्य पूर्ण सुख मिलेगा।

<u>संसार में मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है - **भौतिक (प्राकृतिक) सुखों को लक्ष्य बनाना, मोक्ष को लक्ष्य नहीं बनाना। यही हमारे दुःखों का कारण है।**</u>

251. शंका- कर्म का फल भोगने के बाद संस्कार नष्ट हो जाते हैं या बने रहते हैं?

☯ **समाधान-** संस्कार बने रहते हैं। फल तो भोग लिया, संस्कार बने रहेंगे। जैसे- एक व्यक्ति ने चोरी कर ली। चोरी करना कर्म है। अशुभ कर्म अर्थात् चोरी कर ली। पुलिस ने खोजबीन की। चोर मिल गया। चोरी का सामान भी बरामद हो गया। कोर्ट में केस हुआ। जज साहब ने कहा- छह महिने की जेल दी जायेगी। छह माह की जेल हो गई। यह उसका फल हो गया। छह माह बाद वो जेल से छूटकर बाहर आया। चोरी-कर्म का दंड (फल) क्या था? छह महिना जेल में रहना। फल भोग लिया। लेकिन जेल से छूटने के बाद जो चोरी करने का संस्कार है, वो अभी खत्म नहीं हुआ है। जो बिल्कुल पेशेवर (व्यावसायिक) चोर हैं, जिनका धंधा ही चोरी करने का है, वो जेल से छूटते ही चोरी करेंगे। उनको और कोई काम आता ही नहीं, कुछ सीखा ही नहीं, वे मेहनत करना जानते ही नहीं। बस, चोरी करना जानते हैं। तो वो बार-बार चोरी करते हैं। उससे उनको चोरी करने की जो आदत पड़ जाती है, इसका नाम है- संस्कार। तो यह संस्कार नहीं छूटा। चोरी कर ली, उसका दंड भी भोग लिया। छह मास जेल में भी रहा। पर अभी संस्कार नहीं छूटा। वो अभी बाकी है। बाहर जेल से आते ही फिर चोरी करेगा। इस गलत संस्कार को मिटाने के लिये अलग से मेहनत करनी पड़ेगी। उसके लिये संकल्प करना पड़ेगा, कि 'अब बस, बहुत चोरी कर ली। अब नहीं करूँगा।' ऐसा संकल्प करो। कुछ कष्ट उठाओ, थोड़ी तपस्या करो, तो वो संस्कार छूट जाएगा। वरना ऐसे नहीं छूटेगा।

252. शंका- कृपया उपासना शब्द के अर्थ को ठीक से स्पष्ट करके समझाइये?

☯ **समाधान-** उप+आसना = उपासना। सीधा-सीधा तो शब्दार्थ है- 'पास में बैठना' उप माने 'पास' और 'आसन माने बैठना'। किसी वस्तु के पास श्रद्धापूर्वक बैठना ही उसकी उपासना कहलाती है।

- अच्छा हम कैसी वस्तु के पास बैठेंगे, अच्छी वस्तु के या खराब वस्तु के? अच्छी वस्तु के पास बैठेंगे। तो उपासना का अर्थ हो गया अच्छी वस्तु के पास बैठना। अच्छा, जब अच्छी वस्तु के पास बैठेंगे तो उसका गुण हमें प्राप्त होगा या नहीं होगा? होगा न। तो अच्छी वस्तु के गुण को प्राप्त करना यह 'उपासना' का फल हो गया। और खराब वस्तु के पास आप बैठेंगे नहीं। कहीं कचरा पेटी में कूड़ा-कचरा पड़ा हो, दुर्गंध आदि आती हो तो वहाँ तो आप बैठेंगे नहीं। तो खराब वस्तु के पास कोई नहीं बैठना चाहता। जब उसके बैठेंगे नहीं, तो वहाँ की दुर्गंध को भी हम नहीं प्राप्त करेंगे। उस वस्तु को छोड़ देंगे। तो इतनी सारी बातें इस उपासना के अंतर्गत छिपी हुई हैं।

- अब शरीर से किसी वस्तु के पास बैठना, तो उपासना है ही । जैसे-अग्नि के पास बैठना। इसके अतिरिक्त दूसरी उपासना मानसिक है। अर्थात् मन से किसी वस्तु का चिन्तन करना, उसे प्रिय या सुखदाई मानना। यह भी उपासना है। यह मानसिक उपासना है। जैसे-मन से धन को या ईश्वर को प्रिय मानना । व्यक्ति सारा दिन या तो भौतिक वस्तुओं (धन, भोजन, वस्त्र, सोना चाँदी आदि) की उपासना करता है, या जीवों (भाई, बहिन, बेटा-बेटी, पत्नी, मित्र आदि) की उपासना करता है, या ईश्वर की । इन तीनों में से किसी न किसी की उपासना सारे दिन चलती रहती है।

- वेद आदि शास्त्रों के आधार पर ऋषियों का कथन यह है, कि -भौतिक वस्तुओं और जीवों की उपासना नहीं करनी चाहिये । इससे दुख मिलता है और व्यक्ति का बन्धन बना रहता है। इसके स्थान पर ईश्वर की उपासना करनी चाहिये। इससे व्यक्ति जीते जी आनन्दित रहता है, और उसका मोक्ष भी हो जाता है।

253. शंका- पन्द्रह साल का लड़का यदि दुष्ट व्यसन में पड़ जाये तो उसे कैसे सुधारा जा सकता है? कृपया विस्तार से बतलायें?

☯ **समाधान-** पहले यह जान लें, कि सुधार और बिगाड़ का जो समय है, वो पन्द्रह साल के बाद नहीं है। दरअसल, उससे पहले है। अब तो घोड़ा हाथ से छूट गया। पन्द्रह साल का हो गया बेटा। अब तो गया हाथ से। इसका भी उत्तर बतायेंगे।

● जिनके बच्चे अभी पन्द्रह साल से छोटे हैं, वो लोग पहले ध्यान से सुनें। अगर आप अपने बच्चों को अनुशासन में रखना चाहते हैं। और उनको बुराईयों से, व्यसनों से बचाना चाहते हैं, अच्छी बात सिखाना चाहते हैं, अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं, तो शुरु से ही सावधान हो जायें। **सावधानी शुरू से होती है।** जन्म से भी पहले से होती है।

● **विवाह-संस्कार के बाद पहला संस्कार होता है- 'गर्भाधान संस्कार।' वहाँ से बच्चे को तैयारी शुरू होती है। बल्कि उससे भी पहले से होती है।** शास्त्र का नियम तो यह है कि- पहले माता-पिता योजना बनाते हैं, कि हमको कैसी संतान चाहिये। उनके लिए मानसिक-संकल्प करते हैं। वो वैसी मानसिक तैयारी करते हैं। वैसी पुस्तकें पढ़ते हैं। वैसा खान-पान रखते हैं। इतनी तैयारी करके फिर वो 'गर्भाधान-संस्कार' करते हैं। तो उसी तरह की 'आत्मा' ईश्वर भेजता है। वहाँ से शुरूआत हो सकती है। लेकिन लोगों को पता नहीं है। अब कोई व्यक्ति गृहस्थ आश्रम के नियम जानते ही नहीं तो पालन क्या करेंगे?

● दरअसल, गृहस्थ आश्रम उत्तम संतान बनाने के लिये ही निर्धारित किया गया है, मौज-मस्ती के लिये नहीं। आज जितने लोग गृहस्थ में जाते हैं, शादी करते हैं, उनसे आप पूछो- आप शादी क्यों कर रहे हैं? उनके पास कोई उत्तर नहीं है। सारी दुनिया करती है, इसलिये हम भी कर रहे हैं, यह उनका जवाब है। हमारे माता-पिता का दबाव (प्रेशर) है। शादी करो, इसलिये कर रहे हैं। यह उत्तर है, उनके पास। गृहस्थ का उद्देश्य पता नहीं है।

● क्यों शादी करनी चाहिये, संतान कैसी बनानी चाहिये, संतान कैसे बनाई जाती है, कुछ पता नहीं। इसीलिये वो बच्चों को बिगाड़-बिगाड़ के रख देते हैं। सीखा ही नहीं, कि बच्चों को कैसे बनाया जाता है। यह बहुत बड़ा विज्ञान (साइंस) है। आप मकान बनाते हैं। उसके लिये कितनी मेहनत करते हैं। इंजीनियरिंग करते हैं, सिविल इंजीनियरिंग करते हैं। मकान बनाना सीखते हैं। और कितने सालों तक मेहनत करते हैं, तब जाके मकान

ठीक से बनता है। यह तो जड़ वस्तु है। जड़ वस्तु को बनाने, सीखने के लिये कितनी मेहनत करते हैं। कितने सालों तक योजना बनाते हैं। कितनी प्रैक्टिस करते हैं, अभ्यास करते हैं। और एक बच्चे को अच्छा इन्सान बनाना है तो वो तो चेतन वस्तु है, वो तो मकान बनाने से हजार गुना कठिन है। और इंसान को अच्छा कैसे बनाया जाये, यह सीखते नहीं। किसी को पता नहीं। और इसीलिये बच्चों को बिगाड़ के रख देते हैं। और जब बच्चे बिगड़ जाते हैं तो फिर हमारे पास ले आते हैं- महाराज जी यह बच्चा बिगड़ गया, इसको सुधारो। बिगाड़ो आप, सुधारें हम। तो पहले आप बच्चों को बनाना सीख लो। बच्चे कैसे बनाये जाते हैं। इसके कैसे नियम होते हैं। कैसे पालन करना चाहिये।

● गर्भाधान-संस्कार से पहले तैयारी करो। हमको कैसा बच्चा चाहिये। हम उसको क्या बनाना चाहते हैं, पहले से योजना बनाओ। वैसी तैयारी करो, वैसी पुस्तकें पढ़ो। वैसा स्वाध्याय करो। ऐसे लोगों के साथ बैठो। ऐसा चिंतन करो। ऐसा खान-पान रखो। फिर आत्मा को बुलाओ। फिर ईश्वर आपके पास अच्छी आत्मा भेजेगा। और फिर उसको वैसे ही संस्कार देना। वैसा ही सोचना। वैसी ही बात सुनाना, वैसे ही लोरियाँ सुनाना। वैसी ही बातें सिखाना। फिर जब डेढ़-दो साल का बच्चा हो जाये, तब से वो समझने लगता है। फिर उसके सामने अच्छी-अच्छी बातें करना। उसको अच्छी-अच्छी चीज सिखाना। शिष्टाचार से वार्तालाप सिखाना। सभ्यता से उठना-बैठना सिखाना। लेन-देन सिखाना। और उसको धीरे - धीरे सब बातें समझाते जाना।

● उसके सामने झूठ नहीं बोलना। बहुत मातायें देखी गई हैं। जो बच्चों के सामने झूठ बोलती हैं। पिता भी कम नहीं हैं। वो भी बच्चे से झूठ बोलते हैं। और जब बच्चा सीख लेता है तो फिर कहते हैं- यह बच्चा कैसे बिगड़ गया। यह कहाँ से सीख आया झूठ बोलना। हमने तो नहीं सिखाया। अच्छा जी, आपने ही तो सिखाया था। आपको पता भी नहीं चला, कि आपने इसको झूठ बोलना कब सिखा दिया। कैसे सिखा दिया। कल्पना करो एक माता रसोई में काम करती हैं, वहाँ रसोई में चाकू रखा था। दो साल के बच्चे ने चाकू उठा लिया। बच्चा, तो अपनी मनमर्जी करता है। जैसा मन में आता है, वैसा ही करता है। माँ ने देखा, तो कहा बेटा, चाकू छोड़ दो। उसने चाकू नहीं छोड़ा, तो माँ ने उससे चाकू छीन लिया। और छीन करके पीठ के पीछे छुपा लिया। और कहा, वो कौआ ले गया। बोलो ऐसा करते हो या नहीं करते? करते हैं। आप समझते हो, यह बच्चा तो दो साल का है, यह नहीं समझेगा। हम तो इसको उल्लू बना लेंगे, इसको मूर्ख बना लेंगे। आपका यह सोचना गलत है। वो सब समझता है। हाँ बोल नहीं सकता।

अभी वो बता नहीं सकता कि आपने झूठ बोला है। लेकिन वो समझ गया। वो देखता है, कि कौआ तो आया नहीं। ये कहते हैं, कौआ ले गया। पीठ के पीछे छुपाया और बोले कौआ ले गया। फिर उसने दूसरी चीज उठा ली, तो आपने फिर छीन ली, और पीठ के पीछे छिपाकर कहा, वो बंदर ले गया। न कौआ आया, और न बंदर आया। उसने देखा, कि मेरी माँ झूठ बोलती हैं। कभी कहती है, कौआ ले गया, और कभी कहती है, बंदर ले गया। न कौआ आया, न बंदर। झूठ बोलती है। माँ से बच्चे ने झूठ 'बोलना' सीख लिया।

● और दो महीने बाद क्या हुआ। बच्चे ने माचिस उठा ली। माँ बोली- नहीं-नहीं माचिस मत उठाओ। यह मुझे दे दो। अब वही बच्चा माचिस अपनी पीठ के पीछे छिपाकर जवाब देगा, माँ माचिस तो कौआ ले गया। मैंने ऐसा भी देखा है। माँ को बोलते देखा है। और फिर उसी मां के बच्चे को झूठ बोलते भी देखा है। अपनी आँख से देखा है। अब आपको समझ में आया, कि आपने अनजाने में क्या पढ़ा दिया। तो ऐसे नहीं पढ़ाना। आप खुद ही उनको बिगाड़ते हैं। खुद झूठ बोलते हैं। और फिर कहते हैं साहब! बच्चा बिगड़ गया। उसका दोषी और कोई नहीं है। आप हैं। तो ऐसी गलतियाँ न करें।

● उसको चाकू नहीं देना। सच बोल करके उससे चाकू ले लेना। झूठ बोलकर नहीं। चाकू उससे छीन लो। और कहो तुमको चाकू नहीं मिलेगा। चाकू हमारे पास है। हम नहीं देंगे। चाकू उठाके ऊपर रख दो। जहाँ उसका हाथ नहीं पहुँचे। चाकू नहीं मिलेगा। उसको प्रेम या गुस्से से डराते हुए समझायें तुम्हारा हाथ कट जायेगा, इसीलिये चाकू बिल्कुल नहीं मिलेगा। सच बोल करके उसको ब्रेक लगाओ। ब्लेड उठा लिया, ब्लेड छीन लो। तुम्हारा हाथ कट जायेगा। ब्लेड ऊँचा रख दो। ब्लेड नहीं मिलेगा। माचिस उठा ली। माचिस छीन लो, ऊपर रख दो। नहीं मिलेगी। ऐसे बच्चों को सच बोल करके सिखाओ। ये मातायें झूठ बोलती हैं, तो बच्चे झूठ पकड़ते हैं।

● और पिता लोग भी कम नहीं हैं। बच्चा हो गया पाँच-छह साल का। एक बार क्या हुआ, एक व्यापारी आया पैसा लेने। तो पिताजी ने दरवाजे में से देखा कि अरे! ये तो पैसे लेने आया है, और पैसे तो हैं नहीं। तो पिताजी ने बच्चे से कहा उसको जाकर के बोलो, पिताजी घर पर नहीं है। बच्चा बेचारा छोटा था। उसने जैसा सुना, वैसा बोल दिया। पिताजी कह रहे हैं, पिताजी घर पर नहीं हैं। तो वो व्यापारी जो आया था पैसे लेने के लिये, वो भी समझ गया पिताजी घर पर हैं या नहीं हैं।

● बाद में उस बच्चे ने सोचा, कि पिताजी तो घर में हैं। पिताजी घर

में नहीं हैं, यह ये तो झूठ है। अब पिताजी ने तो उसको झूठ बोलना सिखा दिया। फलस्वरूप दो-तीन साल के अंदर वो बच्चा पिताजी को धोखा देने लग गया। दो-चार साल का और बड़ा हो गया। दसं में ग्यारह फिर और बड़ा- चौदह-पन्द्रह साल का हो गया। स्कूल जाता है। दोस्तों के साथ इधर-उधर घूमता रहता है। होमवर्क करता नहीं है, कभी गार्डन में टाइम बर्बाद करता है। तो कभी पिक्चर देखने चला जाता है। और शाम को घर आ जाता है फिर कहता है, मैं तो स्कूल गया था। मैं कहीं गार्डन में नहीं गया था। मैं कहीं पिक्चर देखने नहीं गया था। मैं तो स्कूल गया था। अब बोलो, किसने उसको झूठ बोलना सिखाया? उत्तर है माता-पिता ने। तो अगर आप ऐसी गलतियाँ करेंगे तो आपके बच्चे बिगड़ेंगे। इसलिए कृपया ऐसी गलतियाँ न करें। जो भी बच्चे को सिखाना है सच-सच सिखाओ। हमेशा सच बोलो।

● दस में से आठ बातें बच्चे आपके आचरण से सीखते हैं। आप जो करते हैं, बच्चे आपकी नकल करते हैं। दो बात केवल आपके उपदेश से सीखेंगे। बेटा यह अच्छी चीज है यह करो, ये खराब चीज है यह मत करो। बाकी तो आपके प्रैक्टिकल-जीवन में से सीखते हैं। आप सच बोलेंगे, तो आपके बच्चे सच बोलेंगे। आप झूठ बोलेंगे, तो आपके बच्चे झूठ बोलेंगे। तो **बच्चे बिगड़ते हैं, उसके लिए सबसे बड़े दोषी उनके माता-पिता हैं।**

● और तीसरा दोषी है, स्कूल का टीचर। आजकल टीचर अपना कर्तव्य छोड़ चुका है। केवल सिलेबस पढ़ा देने मात्र से अध्यापक की जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती। उसको चाल-चलन, व्यवहार, बोलना, सभ्यता और मॉरल-एजूकेशन भी देना चाहिये। यह भी टीचर की बड़ी जिम्मेदारी है। पहले के टीचर लोग ऐसा करते थे। लेकिन अब छोड़ दिया। इसलिये दुनिया बिगड़ गई।

● बच्चों के बिगाड़ के बहुत सारे कारण हैं। और भी कई कारण हैं। मैंने अभी केवल तीन मुख्य कारण बतलाये। तीन बड़े कारण हैं। एक माता, दूसरा पिता और तीसरा गुरू, (आचार्य, शिक्षक, टीचर स्कूल का) तो अगर यह तीनों अच्छे हैं। तो बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर ये तीनों खराब हैं, तो बच्चे खराब बनेंगे। तो जिनके बच्चे अभी छोटे हैं, वो अभी से सावधान हो जायें। ऐसा कोई व्यवहार न करें, जिससे बच्चे का बिगाड़ हो।

● अपने व्यवहार को शुद्ध रखें। मेरे पास आते हैं लोग, कहते हैं साहब! मेरे बच्चे रात को बारह बजे, एक बजे तक जागते हैं। मैंने पूछा, अच्छा आप कितने बजे तक जागते हैं। वे बोले, साहब मैं भी एक बजे सोता हूँ। मैंने कहा, जब आप एक बजे सोते हैं तो बच्चे दस बजे क्यों

सोयेंगे? आप क्यों एक बजे तक जागते हो। आप भी दस बजे सोओ न, फिर देखो बच्चे क्यों नहीं सोयेंगे। तो पहले माता-पिता को अपने सुधार की जरूरत है, फिर बच्चे सुधरेंगे। मैंने कुछ मूल-मूल सिद्धांत बतलाये, कि बच्चे का बिगाड़ और सुधार कैसे होता है। उस पर विशेष ध्यान दें। और जो बात आप अपने बच्चे को सिखाना चाहते हैं पहले खुद अपने जीवन में आचरण करें। जिस दोष से बच्चे को बचाना चाहते हैं, पहले स्वयं उस दोष को छोड़ें, स्वयं अच्छे कामों को करें। फिर आपका बच्चा अच्छे काम करेगा।

● पन्द्रह साल का लड़का हो गया, अब छोटा नहीं है, बड़ा हो गया। उसको जिस दुर्व्यसन से बचाना चाहते हैं। उस व्यसन की हानियाँ, नुकसान बतलायें। हानियों की सूची (लिस्ट) बनायें। उसमें लिख-लिखकर बतायें, कि यह आपने जो दुर्व्यसन पकड़ लिया है। ऐसा करने से ये हानियाँ होंगी। और उस दुर्व्यसन से बचकर ठीक काम करेंगे, तो उससे क्या लाभ होंगे? लाभ की दूसरी लिस्ट बनायें। और उससे कहें बेटा, ये जो सूचियाँ हैं, इनको हर रोज तीन बार, चार बार, पाँच बार रोज पढ़ना है। और कुछ नहीं करना, बस सूची को पढ़ना है। जैसे डॉक्टर लोग तीन बार दवा खिलाते हैं ना सुबह, दोपहर, शाम। वैसे ही यह तुम्हारी दवा है। तुमको तीन बार यह दवा खानी है। अर्थात् तीन बार यह सूचियाँ पढ़नी हैं। चार बार पढ़ो, पाँच बार पढ़ो, कोई नुकसान नहीं है। इसमें कोई ओवर डोज (अति) नहीं होती है। पाँच बार पढ़ेंगे जल्दी लाभ होगा। तीन बार पढ़ेंगे, तो कुछ देर लगेगी। तो उसको हानि और लाभ समझायें। उसकी बुद्धि जागने लग जाएगी। बुद्धि जाग्रत होने लग गयी, बुद्धि विकसित होने लग गई। और अब शरीर भी बड़ा हो रहा है। साल दो साल में अच्छी ताकत आ जायेगी।

● जब बेटा-बेटी पन्द्रह साल के हो जायें, या उससे ऊपर सोलह-अठारह के हो जायें, तब उनको प्रेम से समझायें। बुद्धि में डालें, कि यह जो तुम गलती करते हो, इससे क्या-क्या नुकसान हैं। और ऐसा नहीं करोगे, ठीक काम करोगे तो क्या-क्या फायदे हैं। यह उनको समझायें, बार-बार बतायें। और फिर उनके ऊपर छोड़ दें, कि तुम्हें अपना भविष्य अच्छा बनाना हो, तो ऐसा काम करो। और ये काम करोगे तो भविष्य खराब होगा। अब तुम जानो। हमने समझा दिया, हमारी ड्यूटी खत्म। यह पन्द्रह साल की उम्र वाले और उससे बड़ी उम्र वाले बच्चों के साथ व्यवहार होना चाहिये।

● और अगर बच्चे छोटे हैं, छोटे बच्चों का भी समझ लीजिये, कैसा होना चाहिये। छोटे बच्चे पाँच साल से कम उम्र वाले, दो साल, तीन साल,

चार साल, छोटी उम्र के। उनको भी आप प्रेम से बतलायें, बेटा ऐसा करो। ऐसा मत करो। दो बार, पाँच बार, प्रेम से बतलाओ, नहीं मानते, थोड़ा-थोड़ा हल्की डाँट लगा सकते हैं। पर पाँच साल से कम उम्र वाले बच्चों की पिटाई नहीं करना। पीटना नहीं। पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की आप यदि पिटाई करेंगे, तो वे जिद्दी हो जायेंगे। अड़ियल हो जायेंगे, हठी हो जायेंगे। प्रेम से काम चलाओ, उनको कुछ खाने-पीने की चीज दो, कोई मिठाई दो, कोई फल दो। कोई और खाने की अच्छी चीज दो। कोई खिलौना दो और अपना काम चलाओ। जो काम करवाता है, वो काम करवाओ। उनको खिलाओ-पिलाओ और काम करवाओ,

● वही काम कराना है, जो आप चाहते हैं। हम बड़े हैं आपको पता है। क्या ठीक है, क्या गलत है। बच्चे छोटे हैं, उनको पता नहीं। वो तो अपनी मनमानी करेंगे। पर उनकी मनमानी बात नहीं माननी है। जो घर के बड़े लोग हैं, समझदार हैं, वो अपनी मनमानी करवायेंगे। जो उनको ठीक लगता है, वो करवायेंगे। प्यार से, डाँट से, खिला करके, कोई प्रलोभन दे के, कोई ईनाम देकर, जैसे भी।

● कभी-कभी ईनाम भी दिया, नहीं मानता। प्यार से समझाया, नहीं मानता। थोड़ी डाँट भी लगायी, नहीं मानता। छोटे-बच्चों के लिये बहुत बढ़िया उपाय है। जब ये उपाय काम नहीं करें, तो एक अंतिम उपाय है। छोटे बच्चों से बात करना बंद कर दें, बोलना बंद। उनसे कहो, बेटा यह काम करो। वो कहता है, हम नहीं करेंगे। तो बोलो- ठीक है, हम तुमसे बात नहीं करेंगे। ऐसे मुँह घुमाके बैठो। हम बात नहीं करेंगे। छोटे-बच्चे यह नहीं सहन कर सकते। पाँच साल से कम उम्र के बच्चे जब आपकी बात नहीं मानें, तो बोलो- तुम हमारी नहीं मानते, जाओ हम भी तुम्हारी नहीं मानते। हम बात नहीं करेंगे। ऐसे घूम के बैठ जाओ। दो मिनट में दिमाग ठीक हो जायेगा। फटाफट कहेंगे- हाँ-हाँ, आप जो कहोगे, हम करेंगे। वो सीधे हो जायेंगे।

● पाँच साल से बड़ी उम्र के बच्चों और बारह, अधिकतम तेरह तक की उम्र तक यानि पाँच से तेरह, इस ऐज ग्रुप में बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करें? इस पर चर्चा करते हैं।

● आप जो भी काम करवाना चाहते हैं, उसके बारे में, उससे होने वाले लाभ के बारे में उनको समझायें। प्यार से कहें- बेटा यह काम करो। कई तो चुपचाप मान लेंगे। कई अड़ियल होंगे, नहीं मानेंगे। तो दो बार, चार बार प्रेम से बतायें, नहीं मानते, फिर डाँट लगाओ, जबरदस्ती करवाओ। चलो करो, करना पड़ेगा। चलो जल्दी करो, फटाफट जल्दी करो।

उनको ऐसे थोड़ा जबरदस्ती करवाओ। फिर कोई उससे भी नहीं मानेगा तो फिर उसको थप्पड़ लगाओ, कैसे नहीं करेगा। दो थप्पड़ लगेंगे। जल्दी काम करेगा। और थप्पड़ से भी बात नहीं बनी, तो खाना बंद। तुम हमारी बात नहीं मानोगे, शाम को खाना नहीं मिलेगा। खाना बंद कर दो। कैसे नहीं करेगा। बिलकुल करेगा। उसके खिलौने बंद कर दो। 'तुम हमारी बात नहीं मानोगे, हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। तुमको अच्छे खिलौने लाकर नहीं देंगे।' ऐसे-ऐसे उन पर प्रतिबंध लगाओ। जो करवाना है, आप करवाओ। जो आपको ठीक लगता है, वो काम बच्चों से करवाओ। जो ठीक नहीं लगता, वो नहीं करवाना।

● बच्चे चाहे जो भी करें। जो भी मानें, कहें, उनकी गलत बात बिल्कुल नहीं सुननी। हाँ, जो उनकी उचित बात है, वो तो मानेंगे। अगर वो अनुचित बात कहते हैं, गलत बात कहते हैं, नहीं मानेंगे। रोते हैं, तो रोने दो। कोई चिंता नहीं। वो ही करवाना, जो आप चाहते हैं।

● अगर आपने बच्चों की उल्टी-सुल्टी मनमानी बातें स्वीकार करनी शुरू कर दी, फिर वो थोड़े दिनों में अच्छी तरह बिगड़ जायेंगे। फिर वो आपकी नहीं सुनेंगे। और अपनी सब मनमानी पूरी करवायेंगे। फिर आप कहेंगे, देखो साहब! ये कैसे बच्चे हो गये हमारे। हमने इनके ऊपर मेहनत की, इतना समय खर्च किया, इतने पैसे खर्च किये, दिन-रात पसीना बहाया और आज ये बड़े हो गये, हमारी बात ही नहीं सुनते। अरे! आपने स्वयं बिगाड़े। आपका दोष है। आपने बच्चों का संचालन करना सीखा नहीं। उनकी गलत बातें मानते रहे तो वो अपनी ही मनवायेंगे। आपकी बात नहीं सुनेंगे।

● घर-गृहस्थी वाले लोग, सिद्धांत याद कर लें। "बच्चों की गलत बात एक भी नहीं मानेंगे। सही बात सब मानेंगे।" बस, और मान लो कई-कई अड़ियल बच्चे होते हैं, बड़े ढीठ होते हैं, हठी होते हैं, इतना सब करने के बाद भी वे नहीं मानते। मान लो दस साल का बच्चा है। आपने कहा बेटा, यह काम करो- वो कहता है, मैं नहीं करूँगा। अब उसके लिये फाइनल (अंतिम) हथियार है, उसको धमकी लगाओ। यह घर हमारा है। तुमको इस घर में रहना है या नहीं रहना है? वो कहेगा- हाँ रहना है। रहना है, तो जो हम कहेंगे, वो करो। तुम नहीं करोगे, तो भाग जाओ यहाँ से। वो दरवाजा खुला है, भाग जाओ यहाँ से। हम नहीं रखते अपने घर में, निकल जाओ। उसको धमकी लगा दो, दस साल का बच्चा है, ग्यारह साल का है, बारह साल का है। आपकी धमकी सुनकर डर जायेगा। सीधा हो जायेगा। हाँ, एकाध होता है जो सचमुच भाग जाता है। इसीलिये मैंने बारह साल उम्र बताई है। बारह साल से कम उम्र का बच्चा घर छोड़ के नहीं भागेगा।

● यहाँ एक श्रोता ने कहा- हम तो बच्चे को समझाते और डाँडते हैं । परन्तु उसकी दादी बीच में आ जाती है। वह नहीं मानती। तब मैंने कहा- दादी नहीं मानती, दादी को अलग बैठाओ। उसको समझाओ। खराबी बच्चे में नहीं है। खराबी बच्चे की दादी में है। जो नहीं मानती, जो उसको बिगाड़ रही है।

● बच्चे को धमकी लगाओ, यह घर हमारा है। तुमको इस घर में रहना है। तो जो हम कहेंगे वो करना पड़ेगा। और नहीं तो भाग जाओ यहाँ से। 'अब दस-बारह साल का बच्चा छोटा है। उसको पता है, मैं अकेला नहीं जी सकता। अभी मेरे पास इतनी बुद्धि सामर्थ्य नहीं है, ताकत नहीं है, मैं अकेला नहीं जी सकता। अभी मुझे माता-पिता की जरूरत है। तो वो आपकी धमकी सुन करके, सीधा हो जायेगा। वो कहेगा- नहीं-नहीं मुझे यहाँ रहना है। तो बोलो, 'जो हम कहेंगे वो करोगे।' तो यह धमकी चलेगी, थप्पड़ चलेगा, मार-पीट चलेगी। डाँट-धमकी चलेगी, कब तक बारह-तेरह साल की उम्र तक।

● उसके बाद अब चौदह का हो गया, पन्द्रह का हो गया, सोलह-अठारह का हो गया, अब धमकी नहीं देना। अब तो वो भाग जायेगा। तेरह के बाद धमकी नहीं लगाना। बेटा-बेटी बड़े हो जायें, फिर धमकी नहीं लगाना, कि यह हमारा घर है, भाग जा यहाँ से।' फिर तो भाग जायेगा।

● फिर वही जो पहले बताया था। फिर वो करना। अब उसको बुद्धि से समझाओ। 'बेटा! अब तुम बड़े हो गये, तुम समझदार हो गये, जवान हो गये। तुम्हारे पास ताकत भी आ गई। अक्ल भी आ गई। अब अपनी अक्ल से सोचो। सुझाव देना हमारा काम है। क्या करना है, क्या नहीं करना है, वो तुम जानो।' उसके सर पर भार डालो। तो वो थोड़ा सावधान होकर सोचेगा।' अच्छा, अगर मैं ऐसा करूँगा, तो मेरा भविष्य बिगड़ेगा। और ऐसा करूँगा तो ठीक हो जायेगा। तो अब मुझे देखना है, अपना भविष्य ठीक करना है।' कि बिगाड़ना है। बस वो हानि और लाभ वाली लिस्ट पढ़वाओ, और वो स्वयं पढ़ करके, उसको समझ जायेगा, क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। अगर आपने बारह- तेरह- चौदह- पन्द्रह साल तक बच्चे को बचपन से पूरी ट्रेनिंग ठीक-ठीक दी है। यह सही है, यह गलत है, यह करना है, यह नहीं करना है, इसमें लाभ है, इसमें हानि है। तो आगे फिर उसके निर्णय ठीक चलेंगे। और पहले ही पन्द्रह साल तक आपने उसको अच्छा प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) नहीं दिया, सही गलत नहीं समझाया, हानि-लाभ नहीं बताया, उचित-अनुचित का पालन नहीं करवाया, तो आगे फिर उसके निर्णय वैसे ही उलट-पुलट होंगे। फिर आपको नुकसान होगा। तो इस तरह से बच्चों का नियंत्रण करें।

254. शंका-घर के बच्चे कैसे बिगड़ते हैं?

☯ **समाधान-** मान लीजिये छह वर्ष का एक छोटा बच्चा है। उसको एक दिन सर्दी, जुखाम हो गया, हल्का बुखार आ गया । और बाहर गली में आइसक्रीम बेचने वाला आया। उसने आवाज लगाई आइसक्रीम-आइसक्रीम। बच्चे ने सुन लिया, कि बाहर आइसक्रीम बेचने वाला आया है, तो बच्चे का मन करता ही है। वो अपनी माँ से कहेगा- मम्मी, मम्मी, मुझे आइसक्रीम दिलाओ, आइसक्रीम खानी है।

● माँ को पता है, कि आज इसकी तबियत ठीक नहीं है, इसको सर्दी-जुखाम है, बुखार है, आज तो आइसक्रीम नहीं खानी चाहिये, नही तो और अधिक रोगी हो जायेगा। इसलिए माँ ने मना कर दिया। बेटा आज आइसक्रीम नहीं मिलेगी, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। तीन दिन में ठीक हो जाओगे, फिर खिलायेंगे। अब यह बात बच्चे की समझ में थोड़े ही आती है, कि 'आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। मुझे नहीं खानी चाहिये।' वो तो छोटा बच्चा है। उसका मन पर इतना नियंत्रण (कंट्रोल) नहीं है। वो तो कहता है, नहीं, मैं तो अभी आइसक्रीम खाऊँगा।' वो नहीं समझता है, कि आज आइसक्रीम से नुकसान होगा। वो फिर दोबारा रट लगाता है, कि 'नहीं-नहीं, मुझे तो आइसक्रीम खिलाओ।' अब उसको खिलायेंगे, तो रोगी पड़ेगा। इसीलिये माँ ने दोबारा मना कर दिया, कि 'नहीं बेटा, आज नहीं मिलेगी। तीसरी बार फिर माँगी। माँ ने फिर मना कर दिया। बच्चा रोने लगा, 'मुझे तो आइसक्रीम चाहिये।' जमकर रोना शुरू कर दिया।

● इतने में आई बच्चे की चाची। उसने पूछा, बेटा क्यों रोते हो। बच्चे ने कहा- 'यह मम्मी बहुत खराब है।' अच्छा क्यों क्या हुआ ?' मुझे आइसक्रीम नहीं खिलाती।' अच्छा, मम्मी आइसक्रीम नहीं खिलाती। अच्छा चल, तू मेरे साथ चल। मैं तुझे आइसक्रीम खिलाती हूँ। वो चाची आकर के ले जायेगी और उसको बाहर जाकर के आइसक्रीम खिला देगी। समझ लेना, आपका बच्चा बिगड़ेगा। आपके हाथ में नहीं रहेगा। यह गलती की चाची ने। चाची को पहले पूछना चाहिये था, कि तुम्हारी माँ ने तुमको आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई। बिना पूछे ऐसे ही आकर मम्मी के ऊपर आरोप लगा दिया, 'तुम्हारी मम्मी बहुत खराब है, बच्चों का इतना भी ध्यान नहीं देती। बच्चे रोते रहते हैं और उनको आइसक्रीम नहीं खिलातीं। अरे! आइसक्रीम ही तो है न, दो-चार-पाँच रुपये की आइसक्रीम होती है। पैसे किसलिए कमाते हैं। ये किस दिन काम आयेंगे।' ऐसे उसने डाँट-फाँट शुरू कर दी। बच्चे की माँ से यह नहीं पूछा कि 'तुमने बच्चे को आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई। बस यहाँ चाची मार खा गई। उसे पहले आकर पूछना चाहिये

था, कि 'आपने इस बच्चे को आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई।' तो माँ बताती, कि 'आज इसको सर्दी है, जुकाम है, बुखार है, इसीलिये आइसक्रीम नहीं खिलायी।' पहले जानकारी करो। फिर चाहे, चाची खिलाये, चाहे दादी खिलाये, चाहे दादा खिलाये, चाहे चाचा। कोई भी आये, चाहे बच्चों का पिता जी आये। पहले वो माँ से पूछेगा, कि इसको आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई, और माँ बतायेगीं, सर्दी है, बुखार है, इसलिये नहीं खिलाई।' सारी जानकारी करके अब बच्चे को सभी बड़े लोग एक ही जवाब दो- 'बेटा तुम्हारी मम्मी बहुत अच्छी है। बहुत समझदार है। उसने आइसक्रीम नहीं खिलाई, बहुत अच्छा किया। आज तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। आज तुमको आइसक्रीम नहीं मिलेगी।' तो माँ ने भी मना किया, चाची ने भी मना किया। चाचा आया, तो उसने भी मना किया। अब बताइये बच्चा कहाँ जायेगा ? उसको चुपचाप मन मारके रहना पड़ेगा। अगर आप इतना कर सकते हैं, तो समझ लो आपके बच्चे अच्छे बनेंगे, आपके नियंत्रण में रहेंगे। आपके अनुशासन में चलेंगे। अगर आप इतनी मेहनत नहीं कर सकते, जानकारी नहीं करते और खामखां बिना परीक्षण किये ऐसे दोष लगाते हैं चाची के ऊपर, माँ के ऊपर, पिता के ऊपर, तो समझ लेना बच्चे बिगड़ेंगे। माँ ने कह दिया, 'बेटा परीक्षा आ रही है सर पे, बैठ के थोड़ी देर पढ़ लो। अचानक आए पिताजी। उन्होंने कुछ जानकारी की नहीं। और आते ही उसका विरोध कर दिया।' क्या तुम सारा दिन बच्चे को पढ़ते ही रहने दोगी। कभी खेलने की छुट्टी भी तो दिया करो। पढ़-पढ़के पागल हो जायेंगे। जाओ बेटा, जाओ खेलो।' पिताजी ने कह दिया जाओ खेलो। माँ कह रही है, बेटा पढ़ो। बच्चा किसकी बात सुनेगा ? पिताजी की। क्योंकि उसको तो खेलना अच्छा लगता है। वो माँ की नहीं सुनेगा। और फिर माँ चिल्लायेगी- 'देखो मेरा बेटा मेरी बात नहीं सुनता।'

● इस झंझट से बचने के लिये, अपने घर में विधान-सभा लगाओ। जैसे सब राज्यों (स्टेट) की अपनी-अपनी विधानसभा होती है। और जितने मंत्री लोग होते हैं, वहाँ सब बैठके बहस करते हैं, चर्चा करते हैं। समस्याओं को सुलझाते हैं, और सारे मिल करके एक कानून पास करते हैं। और फिर उस कानून को जनता पर लागू करते हैं। तब सरकार चलती है, तब शासन चलता है। जो घर के बड़े लोग हैं, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी, ये सब घर के राजा लोग हैं। और बच्चे आपकी प्रजा हैं। अगर आपको प्रजा पर ठीक शासन करना है, तो घर के जितने बड़े लोग हैं, बैठ करके अपने घर में विधानसभा लगाओ। और बच्चों के लिये कानून पास करो। 'इन बच्चों को क्या खिलाना, कब खिलाना, क्या नहीं खिलाना, कितना खिलाना, कैसे खिलाना, कब सुलाना, कब जगाना, कब स्कूल

भेजना, कब खेलना, कब कूदना, कब टी.व्ही, देखना?' यानि पूरा चौबीस घंटे का टाइम-टेबिल बनाओ।

● माँ कहती है, बच्चा दस बजे सो जायेगा। पिताजी कहते हैं, नहीं बारह बजे तक पढ़ेगा। गलत बात है। बच्चा आपके हाथ में नहीं रहेगा।

● पहले माता-पिता दोनों एक विचार तो बना लो। आपका खुद का एक विचार नहीं है। बच्चा किसकी सुनेगा! उसके मन में जो आयेगा, वो उसकी बात सुनेगा। आपकी बात नहीं सुनेगा। अगर माता-पिता में आपस में मतभेद हैं तो पहले बैठकर के अपने घर की विधानसभा में बहस कर लो। दस बजे सोना ठीक है या बारह बजे। दोनों पहले एक निर्णय कर लो। और फिर वो जो एक निर्णय स्वीकार हो जाये, फाइनल हो जाये। फिर उसको बच्चे पर लागू करो, दो अलग-अलग बात नहीं। एक मंत्री ने कहा कि जमीन के ऊपर तीस प्रतिशत टैक्स लगेगा। दूसरे मंत्री ने कहा नहीं-नहीं पच्चीस प्रतिशत टैक्स लगेगा। बोलो जनता किसकी बात सुनेगी? पच्चीस वाले की। तीस वाले की क्यों सुनेगी। फिर तीस वाला मंत्री चिल्लायेगा, 'देखो साहब, यह जनता कैसी है, मेरी बात ही नहीं सुनती।' आपकी बात तब सुनेगी, जब आप दोनों मंत्री एक बात बोलेंगे। तो बच्चे आपकी जनता हैं, आपकी प्रजा हैं। आप उनके शासक हैं, राजा हैं, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी। आपको जो भी बच्चों को सिखाना है। उसका कानून बनाओ। और फिर सबके सब वो कानून बच्चों पर लागू करो। देखो आपके बच्चे कैसे नहीं बनते। हम गारंटी देते हैं, खूब बनेंगे। और आपने पालन नहीं किया, तो फिर वो खूब बिगड़ेंगे। और बिगाड़-बिगाड़ के हमारे पास ले आओगे। महाराज जी ये बच्चा बिगड़ गया है, अब आप सुधारो।' बिगाड़ो आप, सुधारें हम। आपकी भी तो कुछ जिम्मेदारी है। आप भी तो कुछ मेहनत करो। हम तो करते ही हैं, आगे भी करेंगे।

● 24 घण्टे का टाइम टेबिल बनाओ। रात के दस बजे सोना है, और सुबह पाँच बजे उठ जाना है। इसके बाद कोई नहीं सोयेगा। आज संडे है, तो आठ बजे तक सोयेंगे। और स्कूल जाना है तो पाँच बजे उठेंगे। यह क्या मतलब हुआ भाई, सन्डे को तो स्कूल जाना नहीं, तो क्यों सोओ आठ बजे तक? क्या सन्डे को रोटी नहीं खाते? जब संडे को रोटी खाते हैं, तो आठ बजे तक क्यों सोयेंगे? ऐसे माता-पिता ने बिगाड़ रखा है बच्चों को। तो पहले माता-पिता को सुधरने की जरूरत है। पहले वो अपना कानून ठीक करें।

● सुबह जल्दी उठना इसलिए नहीं होता, कि हमको स्कूल जाना है। दरअसल, अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिये उठना है। स्कूल जाना, नहीं जाना, वो अलग विषय है। सबने सीख रखा है- "अरली टू बैड, अरली टू

३३२

राईज, मेक्स अ मैन, हेल्दी-वेल्दी एंड वाईज"। सबको पता है। लेकिन प्रैक्टिकल उल्टा है- "लेट टू बेड, लेट टू राईज, मेक्स अ मैन, अनहैल्दी, अनवैल्दी अनवाईज।" रिजल्ट भी उल्टा ही आयेगा। अनहैल्दी (रोगी) पड़ेंगे। देखो पूरा देश रोगी हो गया, कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरा देश रोगी है। तभी तो जाते हैं स्वामी रामदेव जी के पास, सुबह-सुबह वो व्यायाम करवाते हैं न। आजकल लोग पाँच बजे टेलीविजन के सामने बैठ जाते हैं। थोड़ा एक्सरसाईज करें, तो ठीक हो जायेंगे। दूसरा परिणाम अनवैल्दी यानि पैसे नहीं कमा सकता। और अनवाईज यानि बुद्धि भी जायेगी। शरीर रोगी हो जायेगा, बुद्धि भी जायेगी, तो फिर पैसा क्या कमायेंगे। तीनों जायेंगे। और आज तीनों बिगड़े हुये हैं। इसीलिये जल्दी सोयें, जल्दी उठें। जल्दी सोने का मतलब, दस बजे सोना। साढ़े नौ दस बजे तक सो जाओ। यह मेडिकल साइंस कह रहा है, मैं नहीं कह रहा हूँ। हाँ, मेरा कोई संदेश नहीं है, यह सब शास्त्रों का संदेश है। नौ, साढ़े नौ, दस बजे सो जाइये। जल्दी उठने का मतलब सुबह चार बजे, साढ़े चार, पाँच बजे तक उठ जाना । बस, पाँच के बाद नहीं। फिर देखो आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

● जो बच्चे रात को देर तक पढ़ते हैं। रात को दस से लेकर बारह, एक, दो बजे तक पढ़ते हैं। क्या रात को पढ़ने से दिन अट्ठाइस घंटे का हो जाता है। दिन के घंटे तो चौबीस ही रहते हैं। आप दिन में पढ़ो, चाहे रात में, घंटे तो उतने ही रहने हैं। तो रात को क्यों पढ़ते हो, सुबह उठके पढ़ो न। पुराने समय में लोग जल्दी सोते थे, जल्दी उठते थे। सुबह-सुबह पढ़ते थे, उससे बहुत अच्छा याद होता था। सात घंटा आप नींद ले चुके हैं, तो आपका माइंड फ्रेश हो जायेगा। सुबह तरोताजा दिमाग के साथ पढ़ाई अच्छी होती है। अच्छा याद रहेगा। स्मृति अच्छी बनेंगी। और देर तक रात को जागेंगे, पढ़ाई अच्छी नहीं होगी, स्मृति अच्छी नहीं होगी। दिन-भर के थके हुए दिमाग से आप रात को पढ़ेंगे, तो पढ़ाई अच्छी नहीं होती। सुबह अच्छी होती है।

● इस तरह से अपना टाइम-टेबिल बनायें। बच्चों का चौबीस घंटे का समय-चक्र कागज पर लिखें। उनके कमरे में चिपका दें दीवार पर। कहें, यह तुम्हारा टाइम-टेबिल है, अब इसके हिसाब से चलना है। और जो पालन नहीं करेगा, उसको दंड मिलेगा।

● दंड के बिना कोई सुधरता नहीं है। यह बिलकुल सही नियम है। धरती पर बुद्धिमान लोगों ने प्रैक्टिकल करके, इसके बड़े अच्छे रिजल्ट देखे हैं। ये सिर्फ किताबी बातें नहीं हैं। आप दंड लागू करो। बच्चे फटाफट ठीक हो जायेंगे। माता-पिता दंड देना नहीं चाहते। वो डरते हैं। सोचते हैं

३३३

कि बच्चे बीमार हो जायेंगे, दुःखी हो जायेंगे। ये भूखे रहेंगे तो कैसे गाड़ी चलेगी। आप दो बार, चार बार, दंड देकर तो देखो। फटाफट सीधे हो जायेंगे। अब मैं आपको अपने घर की बात सुना रहा हूँ। जब मैं छोटा बच्चा था। हमारे घर में ये सारे नियम चलते थे, जो मैंने अब तक आपको सुनाये। दस बजे सोना, सुबह पाँच बजे उठना। हम बचपन से ये काम करते रहे। हमको माता-पिता ने बचपन से सिखा दिया। दस बजे लाइट ऑफ हो जायेगी, कोई नहीं जगेगा। हमारे माता-पिता भी दस बजे सो जाते थे। यदि वो बारह बजे तक जागते होते, तब हम भी बारह बजे तक जागते होते।

● तो पहले आपको सुधरने की जरूरत है। पहले माता-पिता सुधरेंगे, तो बच्चे सुधरेंगे। गृहस्थ-आश्रम मौज-मस्ती के लिये नहीं है, तपस्या के लिये है। बच्चे ऐसे ही नहीं बनते। बहुत तप करना पड़ता है। हमारे माता-पिता ने यह तप किया। वो खुद सुबह चार बजे उठते थे। और हमको पाँच बजे उठाते थे। और पाँच बजे कैसे उठाते थे? पिताजी एक बार आवाज लगाते थे- "हाँ बेटा, पाँच बज गये उठ जाओ।" अब दूसरी आवाज नहीं लगेगी। तुम्हारी मर्जी है, सोते रहो या उठो। और आज मैं देखता हूँ, आधे घंटे तक माता-पिता चिल्लाते रहते हैं, 'बेटा उठो, उठो न।' उठ रहा हूँ। यहाँ से उठके, वहाँ सो जायेगा। 'बेटा स्कूल का टाइम हो रहा है, जल्दी उठो, नहाना भी है, स्कूल भी जाना है।" उठता हूँ, उठता हूँ, फिर यहाँ से उठेगा, वहाँ सो जायेगा। आधा-पौना घंटा तो उठाने में चला जाता है। इतना तो सीख लो कम से कम, यह आधे घंटे तक बच्चों को उठाना छोड़ दो। बिल्कुल नहीं उठाना। एक आवाज लगाना बस, बेटा पाँच बज गये उठ जाओ। न उठे, छोड़ दो, उसको सोने दो, लेट होगा न स्कूल जाने में। एक दिन स्कूल लेट जायेगा, वहाँ होगी पिटाई। फलस्वरूप दूसरे दिन से ठीक हो जायेगा।

● मैं कह रहा हूँ, 'दंड के बिना कोई सुधरता नहीं।' हमारे घर में सुबह छह बजे नहा-धोकर तैयार होके हवन में आना होता था। छह बजे जो हवन में नहीं आता था, उसे नाश्ता नहीं मिलता था, यानि नो ब्रेकफास्ट। भूखे जाओ स्कूल, नहीं मिलेगा नाश्ता। आपमें हिम्मत है, अपने बच्चे को बोल सकते हो, बेटा छह बजे नहा धोकर तैयार हो जाओ और हवन करना है, बिना हवन के नाश्ता नहीं मिलेगा। है हिम्मत? नहीं है। इसीलिये आपके बच्चे नहीं बनते। इतनी हिम्मत जगाओ, घर आपका है। आप घर के मालिक हैं, क्यों खिलाते हो बच्चे को रोटी। जब वो आपकी बात नहीं सुनता। रोटी कब खिलाओ, जब वो आपकी बात मानेगा। आजकल गड़बड़ मम्मी में है, और पापा में है। दोनों में गड़बड़ है। पहले वो सुधरने चाहिये। फिर शाम को हम खेलकूद के आये तो भूख लगी है। माता जी को बोला,

'माता जी, भोजन चाहिये, तो माताजी कहती थीं- सन्ध्या की या नहीं । हम कहते-नहीं की । तो वे कहतीं -भाग जाओ यहाँ से, खाना नहीं मिलेगा, पहले सन्ध्या करो, फिर खाना मिलेगा।' है इतनी हिम्मत आपके अंदर, जो अपने बच्चों को ऐसा बोल सकें। अगर इतनी हिम्मत नहीं है तो भूल जाओ। आपके बच्चे नहीं सुधरने वाले। अगर सुधारना चाहते हैं, तो इतनी हिम्मत बनाओ। सुबह हवन के बिना नाश्ता नहीं मिलेगा, पाँच बजे सुबह उठना पड़ेगा, रात को दस बजे सोना पड़ेगा। चौबीस घंटे का टाइम-टेबिल हमारे पिताजी ने बनाया, हमारे कमरे में चिपका दिया दीवार पर। और कह दिया, इसका पालन करना है। मेरे घर में रहना है तो यह करना पड़ेगा। नहीं तो दरवाजा खुला है, भाग जाओ यहाँ से। ये सब प्रैक्टिकल बातें हैं। हमारे घर में हो चुकी है। तब जाकर हम कुछ ज्ञानार्जन करके आपके सामने बैठकर बोल रहे हैं। इसके पीछे बहुत लंबी तपस्या है। माता-पिता की भी और कुछ हमारी भी। गुरूजनों की, परमात्मा की बहुत कृपा है। इस तरह से बच्चों का निर्माण होता है। आप लोग भी अपने बच्चों के निर्माण के लिये इस प्रकार से प्रयत्न करें ।

255. शंका-जीवात्मा को जीने की उत्कट इच्छा क्यों होती है? अथवा जीवात्मा को जीने के लिये कौन सा तत्त्व प्रेरित करता है?

☯ **समाधान-** जीवात्मा सुख चाहता है। यह सुख की इच्छा उसे जीने के लिये प्रेरित करती है। मुझे सुख मिलेगा, इसलिए जी रहा हूँ। सुख के लिए व्यक्ति जीता है। कभी-कभी उसके जीवन में दुख बढ़ जाता है, तब वो उस दुख से घबरा जाता है। जब उसको दिखता है कि, मेरे जीवन में सुख कहीं नहीं है, दुःख ही दुख है, तो फिर वो जीना नहीं चाहता, फिर वो कहीं नदी में कूद जाता है। कोई कुएं में कूद जाता है, कोई जहर पी लेता है, कोई ट्रेन के नीचे कट जाता है। फिर आत्महत्या (सोसाइड) कर लेता है। आत्महत्या नहीं करनी चाहिए। उस समस्या का हल ढँढ लेना चाहिये। हर समस्या का हल होता है, समाधान होता है। उसको खोजने की आवश्यकता है। स्वयं आपको समझ में नहीं आता तो दूसरे व्यक्ति के पास जाइए, उससे सलाह सुझाव लीजिए, कि- मेरी समस्या का क्या समाधान है? कहीं न कहीं मिलेगा। सोसाइड करना पाप और अपराध है, भारतीय कानून में भी, ईश्वर के कानून में भी। जो कोई ऐसा करेगा, उसको दण्ड मिलेगा।

256. शंका- जीवात्मा शरीर छोड़ने के वक्त कहाँ जाता है? और शरीर छोड़ने के बाद उसकी स्थिति, पुर्नजन्म कैसे होता है?

☯ **समाधान-** जैसे ही आत्मा शरीर को छोड़ेगा, वैसे ही बेहोश हो जायेगा। उसको कोई होश नहीं, कोई शक्ति नहीं। अब आगे नहीं चल सकता। जीवात्मा स्थूल शरीर के बिना कुछ नहीं कर सकता।

- शरीर छोड़ते ही ईश्वर उसको पकड़ लेगा। वह ईश्वर के नियंत्रण में आ जायेगा। अब ईश्वर उसको ले जायेगा। उसके कर्मानुसार रूस में, जापान में, अमेरिका में जहाँ कहीं भी अगला जन्म देना होगा, अथवा भारत में ही कहीं अगला जन्म देना होगा, तो उसको वहाँ तक पहुँचायेगा। फिर वहाँ अगला जन्म देगा। उसके कर्मानुसार यह व्यवस्था रहती हैं।

- यह निश्चित है, कि- भूत-प्रेत बनके नहीं भटकेगा, किसी के शरीर में घुसकर उसको परेशान नहीं करेगा, यह पक्की बात है। यह शास्त्रों में लिखा है।

- फिर चौथा करो, दसवाँ करो, बारहवाँ करो, तेरहवाँ करो। कोई फर्क नहीं पड़ता। वो जो बचे हुए जीवित लोग हैं, वो अपने लिये करते हैं। अंतिम-संस्कार जिसको अंत्येष्टि कहते हैं। यह सोलह संस्कारों में अन्तिम है। तो ये शब्द ही कह रहा है कि अंत्येष्टि हो गयी यानि बात खत्म हो गयी। अंत्येष्टि के बाद मृतक के लिए हम कुछ नहीं कर सकते। आत्मा तो दूसरे जन्म में गया और उसका शरीर भी खत्म हो गया। सारे रिश्ते खत्म हो गये। उसके बाद हम उसके लिए कुछ नहीं कर सकते।

३३६

257. शंका- 'कठोर' शब्द का क्या अर्थ है? कठोर शब्द का प्रयोग कब करना चाहिए?

☯ **समाधान-** कठोर शब्द अर्थात् जो सुनने में बुरा लगे, सुनने में अच्छा न लगे। जैसे एक व्यक्ति कुछ देर से आया। तो उसको हम कोमल शब्द कहेंगे। प्रेम से यँ बोलेंगे कि- 'जी, आप देर से आये, थोड़ा जल्दी आते, तो अच्छा लगता।' ऐसी भाषा बोलेंगे, तो यह 'कोमल' भाषा है। इसी को हम कठोर भाषा में बोलेंगे। 'आपको समझ नहीं आती क्या। यहाँ पर कितनी बार बतायें, अब तक समझ में नहीं आई! लेट आते हो आप, क्या मजाक बनाा रखा है!' ऐसे बोलेंगे, तो यह कठोर भाषा है। यह उसको अच्छी नहीं लगेगी। तो फिर कैसे बोलना चाहिये-

'भाई, आपको जल्दी आना चाहिए, समय का पालन करना चाहिये, आप देर से आते हैं तो सबका नुकसान होता है।' ऐसे प्रेम से भाषा बोलनी चाहिए।

किसी बच्चे को हमने प्रेमपूर्वक कुछ कार्य बतलाया, उसने नहीं सुना। फिर दो बार, तीन बार प्रेमपूर्वक कहा लेकिन उसने बात नहीं मानी। तब हमने जोर से कह दिया, अब तो मान गया। यह कठोर शब्द तो है, पर यह दण्ड-व्यवस्था है। अब यह सामान्य नियम नहीं है। सामान्य नियम यह है कि- पहली बार में आप ऐसा कठोर बोलते हैं, वो ठीक नहीं है। चार बार प्रेम से समझाने के बाद भी नहीं मानता, तो अब दण्ड दे सकते हैं। उससे कठोर बोल सकते हैं। और अगर दो बार कठोर भाषा बोली, तब भी नहीं सुधरा, तो दो थप्पड़ भी लगाओ, यह दण्ड हैं। दण्ड व्यवस्था अलग है, सामान्य व्यवहार अलग है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, उन्हें प्रेम की भाषा समझ में आती ही नहीं। जोर से बोल दो, तो तुरंत सुन लेते हैं। तो चाहे एक महीने तक प्रेमपूर्वक कहते रहो, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। हाँ, तो जो सीधी-भाषा नहीं समझता। उसे कड़क भाषा बोलो, वो वही भाषा समझता है, इसलिए उससे वो ही भाषा बोलनी पड़ेगी।

३३७

258. शंका- ईश्वर को ज्ञान से जानते हैं। और यह ईश्वर-ज्ञान सबके बस की बात नहीं है, तो क्या ईश्वर को जाने बिना केवल अच्छे कर्म करने से 'मोक्ष' की प्राप्ति की जा सकती है?

☯ **समाधान-** बिल्कुल नहीं की जा सकती। ईश्वर को जाने बिना मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर को जानना सबके लिए अनिवार्य (कम्पलसरी) है। सबके लिए मोक्ष प्राप्ति का एक ही मार्ग है, एक ही नियम है, किसी को कोई छूट-छाट नहीं है।

● चाहे लाख जन्म लो या करोड़ जन्म लो, जब तक वेद के अनुसार ईश्वर को नहीं जानेंगे, तब तक मोक्ष नहीं होने वाला। जो परीक्षा में अच्छा उत्तर लिखेगा, उसको अच्छे नंबर मिलेंगे। जो नहीं लिखेगा, नहीं मिलेंगे। वहाँ पर कोई कन्सेशन नहीं है। सबके ऊपर एक ही नियम लागू होगा। जी हाँ, वो तो न्याय की बात है। यहाँ संसार में तो अन्याय चलता है। भगवान के यहाँ अन्याय नहीं चलता, न्याय ही चलता है।

259. शंका- 'ओ३म्' का उच्चारण किस जगह और कितने समय पर किया जाना चाहिए। इसमें दिन और रात देखे जाते हैं या नहीं?

☯ **समाधान-** इसमें स्थान और समय का कोई बन्धन नहीं है। क्या माता-पिता को याद करने में कोई स्थान, समय का बन्धन है! नहीं। ईश्वर भी तो हमारा माता-पिता है। ओ३म् भगवान का नाम है। ओ३म् का उच्चारण कहीं भी कर लो, कभी भी कर लो। भगवान को हमेशा याद रखना चाहिए। इसलिए ओ३म् का उच्चारण हमेशा कर सकते हैं। दिन में करो, रात में करो। भगवान का दरवाजा बंद होता ही नहीं है। वह चौबीस घंटे खुला रहता है।

वेद में तो एक ही देवता है। परमात्मा और 'ओ३म्' उसका नाम है। ईश्वर को ठीक से पहचानिये।

ईश्वर एक है, सर्वव्यापक है, निराकार है, उसकी कोई आकृति नहीं है। उसको प्राप्त करने के लिए कहीं दूर मक्का मदीना, वाराणसी और हरिद्वार में जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने घर में बैठकर शास्त्रों का अध्ययन, मनन, स्वाध्याय कीजिए। हाँ, शिविर में जाइए। वेद

के विद्वानों के पास जाइए। वहाँ सत्संग सुनिए। शंका- समाधान कीजिए। वेदानुकूल पठन-पाठन व्यवहार कीजिए। इससे हमारा कल्याण होगा। इधर-उधर व्यर्थ भटकने से कोई लाभ नहीं।

260. शंका- 'प्रणव' का अर्थ क्या है?

☯ **समाधान-** 'प्रणव' शब्द का अर्थ है, वह शब्द, जिससे ईश्वर की अच्छी प्रकार से स्तुति की जाये। और वह होती है 'ओ३म्' से। तो प्रणव का अर्थ हुआ- 'ओ३म्'।

● इस ओम का जप करना चाहिये। ओम शब्द को बार-बार दोहराना चाहिये और अर्थ सहित दोहराना चाहिये। योग दर्शन के सूत्र 1/27 में लिखा है- 'तस्य वाचकः प्रणवः'। ईश्वर का का नाम ओम है। अगले सूत्र 1/28 में लिखा है, 'तज्जपस्तदर्थ भावनाम्' अर्थात् 'ओ३म्' का जप अर्थ की भावना सहित करो।

● अर्थ की भावना क्या होती है ? अर्थ की भावना करना, ट्रांसलेसन करना नहीं कहलाता। 'सबकी रक्षा करने वाला' यह तो ओ३म शब्द का अनुवाद हुआ। अर्थ भावना नहीं हुई। अर्थ भावना का मतलब है, वैसी हमारी मानसिकता (मेनटेलिटी) भी बननी चाहिए, कि 'ईश्वर सबकी रक्षा करने वाला है। मन-बुद्धि में ऐसा हमको प्रतीत होना चाहिए। वो है 'अर्थ भावना'। मान लीजिए, आप में से एक व्यक्ति मंच पर आ गया। आप उनका परिचय नहीं जानते। पहले-पहले जब आप परिचय नहीं जानते, तो आपको क्या दिखेगा। यह एक व्यक्ति है। चालीस की उमर दिखती है। बस, इतना दिखता है। अब जब उसका यह परिचय कराया जाएगा, कि ये जो व्यक्ति आपके सामने बैठे हुए हैं, ये हाईकोर्ट के जज हैं, तो आपकी दृष्टि बदल जाएगी। अब

आपको वो चालीस साल का जवान नहीं दिखेगा। अब वो कुछ और दिखेगा। अब जो कुछ आपको दिख रहा है, वो है 'अर्थ भावना'। अब आपको वह सामान्य व्यक्ति नहीं दिख रहा है, उसमें एक न्यायाधीश दिख रहा है। हाईकोर्ट का उच्च स्तर का एक बुद्धिमान न्यायाधीश दिख रहा है। तो अब जो कुछ भी दिख रहा है, दरअसल वो है 'अर्थ भावना'।

● ऐसे ही जब ओ३म् का जप करें, तो अर्थ की भावना सहित करें। हम कहते हैं, 'ओम सर्वरक्षक', तो 'ईश्वर सर्वव्यापक निराकार होता हुआ सबकी रक्षा करता है,' ऐसे भाव हमारे मन में होने चाहिए। जब हम कहेंगे, 'ओ३म् आनंदः' तो 'ईश्वर आनंद का भंडार है', ऐसा प्रतीत होना चाहिए। जैसे रसगुल्ले का नाम लेते ही, उसकी याद करते ही मस्तिष्क में विचार आता है - वाह! बहुत अच्छी वस्तु है, मिठाई है, खाने की चीज है। बहुत सुखदाई है। उससे हमको आनंद मिलता है। जैसे रसगुल्ले का स्मरण करने से आनंद मिलता है, ये प्रतीति होती है। ऐसे ही भगवान को आनंद स्वरूप कहेंगे। उसको भी आनंद का भंडार मानना चाहिए। 'इससे हमको आनंद मिलेगा,' इस तरह का भाव यदि हमारे मन में है, तो यह हुई- 'अर्थ-भावना'। इस प्रकार से जप करना चाहिए।

261. शंका- क्या मनुष्यों के अतिरिक्त कुत्ते आदि पशु-पक्षियों को भी कर्म करने की स्वतंत्रता है ? क्या इन्हें पुण्य पाप लगता है ?

☯ **समाधान-** हाँ। कुत्ते आदि अन्य प्राणियों को भी कर्म करने की चार- पॉच प्रतिशत स्वतन्त्रता है। मुख्य रूप से तो वह भोग योनि है। परन्तु गौण रूप से (थोड़ी सी) कर्म करने की स्वतंत्रता भी है। जैसे- पुलिस वाले कुत्ते को ट्रेनिंग देते हैं, और वो ट्रेन्ड कुत्ते चोरों को पकड़वा देते हैं। यह उनकी चार-पाँच पर्सेन्ट की स्वतंत्रता है और इसका उनको ईनाम मिलता है। अच्छा बढ़िया डबल रोटी, बिस्किट खाने को मिलता है। बढ़िया शैम्पू से नहाते हैं, बढ़िया सुविधाओं में रहते हैं।

● आप शांति से अपने रास्ते में जा रहे हैं और एक कुत्ता पीछे से चुप-चाप आता है और आपकी टांग पकड़ लेता है, काट लेता है। तो आप उसकी डंडे से पिटाई करते हैं न। उसने अपनी स्वतंत्रता का दुरूपयोग किया, इसीलिये तो पिटाई हुई। उसने पाप किया, इसीलिए दण्ड मिला। पुलिस के कुत्ते ने चोर को पकड़वाया, पुण्य किया। इसलिए उसको ईनाम मिला। यह है कुत्ते आदि प्राणियों की कर्म करने की दो-चार-पाँच पर्सेन्ट की स्वतंत्रता।

262. शंका- 'ईश्वर' पहले से है।'आत्मा' को किसने बनाया ?

☯ **समाधान-** आत्मा को किसी ने नहीं बनाया। ईश्वर को भी किसी ने नहीं बनाया, दोनों हमेशा से हैं। स्वयं अपनी सत्ता से हैं। और एक तीसरी वस्तु-प्रकृति भी हमेशा से है। इस प्रकार से ये तीनों वस्तुएँ अनादि हैं। इन तीनों को किसी ने नहीं बनाया।

263. शंका- ईश्वर कब और क्या-क्या सहायता देता है, और क्या-क्या नहीं देता?

☯ **समाधान-** ईश्वर बहुत प्रकार की सहायता देता है। एक तो सामान्य सहायता है, जो सबको दे रखी है। जिसने अच्छे कर्म किये हैं, उसको अच्छा फल, जिसने बुरा किया है, उसको बुरा फल देता है। अपने-अपने कर्मों का फल ईश्वर देता है। ये ईश्वर की सहायता है।

● ईश्वर की सहायता के बिना हम स्वयं अकेले अपने कर्मों का फल नहीं ले सकते। भगवान यूँ कहें कि अपना कर्म करो और अपने फल ले लो, मुझे बीच में क्यों चक्कर में डालते हो। क्या आप अपने कर्मों का फल स्वयं ले सकते हो? अपना कैरियर स्वयं बना सकते हो? न हम ध रती अपने रहने के लिये बना सकते हैं, न हम स्वयं फल ले सकते। ईश्वर सबको न्यायानुसार सबके कर्मों के हिसाब से फल देते हैं। ये ईश्वर की सामान्य सहायता है जो सबको दी जाती है।

● जो विशेष-पुरूषार्थ करता है, उसको ईश्वर विशेष सहायता देते हैं। उसको ईश्वर विशेष आनंद देते हैं, विशेष सुख देते हैं, अंदर से उत्साह बढ़ाते हैं। उसकी बुद्धि बढ़िया बना देते हैं। जैसे- जो विद्यार्थी अच्छी पढ़ाई करता है तो गुरूजी उसको विशेष सहायता देते हैं। उसको अतिरिक्त समय भी देते हैं कि- भई, ये मेहनती आदमी है। ईश्वर भी ज्ञान-विज्ञान बढ़ायेंगे, उत्साह बढ़ायेंगे, बुद्धि बढ़ायेंगे और आनंद देंगे। ये ईश्वर की विशेष सहायता होगी। जो ईश्वर के आदेश का जितना अधिक पालन करेगा, ईश्वर उसको उतनी विशेष सहायता देगें।

● सूरज, चाँद, धरती, सितारे, अन्न, औषधि, वनस्पति, साग, फल, फूल, सब्जी, ये सारी चीजें ईश्वर ने बनाकर दे रखी हैं। ये सब ईश्वर की सहायता से हैं। उनके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। न खा सकते हैं, न पी सकते हैं। इस प्रकार से ईश्वर हमारी सहायता करते हैं।

दर्शन योग महाविद्यालय का परिचय

स्थापना

दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रम संवत् २०४३ (१० अप्रैल १९८६) को श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा हुई।

उद्देश्य

(१) महर्षि पतञ्जलि प्रणीत अष्टाङ्गयोग की पद्धति से उच्च स्तर के योग-प्रशिक्षकों तैयार करना, जो देश-विदेश में प्रचलित मिथ्यायोग के स्थान पर सत्य योग का प्रशिक्षण दे सकें ।

(२) विशिष्ट योग्यता वाले वैदिक-दार्शनिक विद्वानों का निर्माण करना, जो सार्वभौमिक युक्तियुक्त, अकाट्य, वैज्ञानिक, शाश्वत वैदिक सिद्धान्तों का बुद्धिजीवी वर्ग के समक्ष प्रभाव-पूर्ण शैली से प्रतिपादन करके उनकी नास्तिकता मिटाकर उन्हें वैदिक-धर्मानुयायी बना सकें।

(३) निष्काम भावना से युक्त, मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर तन, मन, और धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देनेवाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या, अधर्म तथा दु:खों का विनाश करके उसके स्थान पर विद्या, धर्म तथा आनन्द की स्थापना कर सकें ।

प्रवेश के लिए योग्यता

- प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों के लिए। (आजीवन ब्रह्मचारियों को प्राथमिकता)
- वैदिक सिद्धान्तों में निष्ठा होना।
- योगाभ्यास तथा दर्शनों के अध्ययन में रुचि होना।
- संस्कृत भाषा पढ़ने, लिखने, बोलने में समर्थ होना। (व्याकरणाचार्य, शास्त्री या समकक्ष योग्यता वालों को प्राथमिकता)।

- यम-नियमों का श्रद्धापूर्वक पालन करना।
- निष्काम भाव से समाज-राष्ट्र की सेवा का संकल्प होना। त्यागी, तपस्वी,सदाचारी होना ।
- अध्ययन काल में घर से या स्वजनों से सांसारिक सम्बन्ध न होना
- अवस्था १८ वर्ष से अधिक होना।

संस्थान की विशेषताएँ

१. प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित (समान रूप से) भोजन, वस्त्र, दूध-घी, फल, पुस्तक, आसन इत्यादि सभी वस्तुएँ नि:शुल्क प्राप्त हैं ।

२. प्रतिदिन कम से कम दो घण्टे व्यक्तिगत योगाभ्यास (ध्यान) करना अनिवार्य है ।

३. प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामि-सम्बन्ध (ममत्व) को हटाना इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है।

४. यम-नियमों का मनसा, वाचा, कर्मणा सूक्ष्मता से पालन कराया जाता है ।

५. दिन में ५.३० घण्टे का मौन रहता है, जिसमें ध्यान, स्वाध्याय आदि सम्मिलित हैं ।

६. रात्रि में आत्म-निरीक्षण होता है जिसमें दिन भर के दोषों का सब के समक्ष ज्ञापन तथा भविष्य में सुधार हेतु प्रयत्न किया जाता है।

७. वार्तालाप का माध्यम संस्कृत भाषा है ।

८. प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ तथा वेदमन्त्र का स्वाध्याय होता है ।

९. सप्ताह में एक बार आसन-प्रशिक्षण तथा समय समय पर व्याख्यान-प्रशिक्षण का भी अभ्यास कराया जाता है ।

१०. दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली जाती हैं ।

११. प्रात:काल ४ बजे से रात्रि ९-३० बजे तक आदर्श एवं व्यस्त गुरुकुलीय दिनचर्या है ।

विशेष- प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारियों का तीन मास तक बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक परीक्षण किया जाता है । ब्रह्मचारी के योग्य सिद्ध होने पर ही स्थायी प्रवेश दिया जाता है ।

महाविद्यालय के माध्यम से कार्य एवं उपलब्धियाँ

सन् १९८६ से लेकर २०१२ तक महाविद्यालय के २६ वर्षों में लगभग १५ प्रान्तों के स्नातक, स्नातकोत्तर (Graduate, Post Graduate) व्याकरणाचार्य, शास्त्री स्तर के लगभग ५५ ब्रह्मचारियोंको प्रशिक्षण दिया गया। योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त इन दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्यापन हुआ। इन दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली गईं। दर्शनों के अतिरिक्त ईश आदि १० उपनिषदों तथा वेद के चुने हुए अध्यायों का भी अध्यापन किया गया एवं आंशिक रूप से व्याकरण तथा संस्कृत भाषा का भी अध्यापन किया गया।

उपर्युक्त दर्शनों को पढ़ाने की योग्यता प्राप्त करने वालों को दर्शनाचार्य, दर्शन-विशारद तथा दर्शन-प्राज्ञ उपाधियाँ प्रदान की गई तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण देने में समर्थों को योग-विशारद तथा योग-प्राज्ञ उपाधियाँ प्रदान की गईं। ब्रह्मचारियों को वैदिक, दार्शनिक-गम्भीर सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया, जिसके फलस्वरूप अनेक ब्रह्मचारी सूक्ष्म विषयों से सम्बन्धित शंकाओं का समाधान करने, गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखने तथा दार्शनिक व्याख्यान देने में निपुण हुए हैं । यम-नियमों का सदा व्यवहार में प्रयोग कैसे किया जाये तथा निष्काम कर्म कैसे किये जाये इस विषय में भी ब्रह्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। ब्रह्मचारियों ने पर्याप्त मात्रा में इन विषयों को समझा और यथाशक्ति जीवन में उतारा ।

वर्तमान में महाविद्यालय के स्नातक विभिन्न प्रान्तों में संस्कृत-भाषा, व्याकरण,और दर्शन अध्यापन, योग-प्रशिक्षण तथा वैदिकधर्म के प्रचार कार्यों में संलग्न हैं । प्रवेश के इच्छुक पत्र-व्यवहार करें ॥

३४४